श्री गुरु नानक देव जी विशेषांक-१

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही ५४२
नवंबर 2010 वर्ष ४ अंक ३

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

हरि है खांडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥
कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥ (पन्ना १३७७)

भक्त कबीर जी इस पावन श्लोक में अपने गहन अध्यात्म-अनुभव में से मनुष्य-मात्र को इस संसार में विचरण करते हुए अपनी सुरति को ऊंचा रखने तथा नम्रता, विवेक जैसी निर्मल युक्तियों का उपयोग करते हुए मानव-जीवन के अति अमूल्य अवसर को समझदारी से सांसारिकता से अलग रखने द्वारा सफल करने का गुरमति-मार्ग बख्शिश करते हैं।

भक्त कबीर जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य! परमात्मा के नाम को ऐसी चीनी मानो जो रेत में बिखरी पड़ी है। जैसे यदि रेत में चीनी बिखरी हुई हो तो हाथी उस चीनी को एकत्र करने में कभी सक्षम तथा सफल नहीं हो सकता, चूंकि उसके पास मात्र बेहिसाब शारीरिक बल एवं शक्ति तो है लेकिन रेत में बिखरी हुई चीनी को चुनने की युक्ति नहीं है। हाथी यदि ऐसा करने का प्रयास भी करे तो भी उसे सफलता मिल पाना नामुमकिन है, क्योंकि वह तो अपनी सूंढ से फुंकारे ही मारता चला जाएगा जिससे चीनी के दाने जैसी सूक्ष्म वस्तु चुनना उसके वश की बात नहीं रहती। वह केवल स्थूल चीजों को ही एकत्र कर पायेगा सूक्ष्म को नहीं। चींटी अपनी नन्हें-से शरीर को लेकर चीनी के दाने तक सरलता से पहुंच जाती है तथा उसे उठाने का यत्न करने लगती है। इस काम में वो बार-बार यत्न करने के बाद अंततः सफल हो ही जाती है। ऐसे ही परमात्मा का नाम भी कोई स्थूल वस्तु नहीं है। इस प्रसंग में भक्त कबीर जी मनुष्य-मात्र को हाथी जैसा व्यवहार करने की बजाय चींटी जैसा व्यवहार करने का मार्ग सुझाते हैं, क्योंकि परमात्मा का मिलन हाथी जैसी शक्ति से नहीं, चींटी के समान विनम्र होकर यत्नशील बनने से संभव है।

भक्त कबीर जी के कहने का तात्पर्य है कि अध्यात्म रास्ता बनाने वाला सच्चा गुरु इस संबंध में मनुष्य-मात्र के लिए काम आसान कर देता है। अज्ञान अंधकार काटने वाले गुरु ने अच्छी सूझ बख्श दी है कि रेत में बिखरी हुई चीनी को यदि चुनना हो तो चींटी बनना अति आवश्यक है। चींटी बनने के बिना यह कार्य कभी भी पूरा नहीं हो सकता। वस्तुतः चींटी नम्रता, विवेक, अच्छी मति का प्रतीक है और हाथी नासमझी, अज्ञानता तथा अहंकार का। स्मरण रहे कि यह निर्मल युक्ति हमको अन्य जीवन-क्षेत्रों में भी अच्छा दिशा-निर्देश प्रदान कर सकती है।

आओ! गुरु नानक साहिब के निर्मल उपदेशों के अनुगामी बनें।

गुरु नानक साहिब की बहुआयामी तथा बहुपासारी प्रतिभा अद्वितीय एवं बेमिसाल है। आप मध्य युग में उस समय प्रकट हुए जब समस्त संसार को आपकी अति आवश्यकता थी। हमारे इस देश की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। समाज का प्रत्येक अंग घोर गिरावट दर्शा रहा था। अत्यंत गिरावट से उत्थान की तरफ मुहार मुड़ना प्रकृति का नियम है। इसी लिए तो गुरु जी को न केवल कविजनों द्वारा बल्कि आधुनिक प्रमाणिक चिंतकों तथा इतिहासकारों द्वारा भी 'जगत-गुरु' और 'जग-तारक' जैसे समासों से पुकारा अथवा वर्णन किया जाता है।

देश-कौम की अति बिगड़ चुकी ताणी को ठीक करने का अति कठिन कार्य आपने अपने जिम्मे लिया। इस कार्य को आपने जिस प्रकार अंजाम दिया वह केवल आपके ही हिस्से आ सकता था। गुरु जी के अनगिनत परोपकारों का ऋण समस्त संसार के सिर है। हमारा देश भारतवर्ष आपका प्रकट होने का स्थल तो है ही इसके साथ-साथ आपकी मुख्य कर्मभूमि भी बना। हमारे इस देश में जनसाधारण के वर्तमान मानसिक-आत्मिक स्तर के पीछे मुख्यत: गुरु जी के महान अपूर्व प्रयासों की विरासत को देखा, महसूसा व पहचाना जा सकता है।

गुरु नानक पातशाह ही थे जिन्होंने सदियों से बहुप्रकारी गुलामी भोग रहे लोगों को मानवी स्वतंत्रता का संकल्प दिया, उनको सिर उठाकर जीने की युक्ति प्रदान की। मानवता के आधे भाग स्त्री जाति के सम्मान के लिए उस समय के पुरुष-प्रधान समाज में स्पष्ट पैगाम देना गुरु नानक पातशाह के ही हिस्से आ सका।

आप ही थे जिन्होंने अपने युग की जनता को धर्म का सही व सच्चा स्वरूप दर्शाया वरन् पुजारी वर्ग ने धर्म को मात्र कर्मकांडों का एक कभी न खत्म होने वाला सिलसिला बनाकर रख दिया हुआ था। आपने संसार में प्रथम बार एक ऐसे धर्म की नींव रखी जो निर्मल अध्यात्म और स्वच्छ नैतिक मूल्यों से सुसज्जित उस समय की जनता के लिए एक रोशन-मीनार बना। यह धर्म 'सिक्ख धर्म' कहलाया। यह धर्म मनुष्य-मात्र को उम्र भर गुणों का संग्रह करते रहने और अवगुणों का परित्याग करते रहने का निर्मल संदेश

देता है। इससे ऊपर यह पूर्णतः वैज्ञानिक तथा आधुनिकतम धर्म है।

गुरु नानक साहिब द्वारा स्थापित सिक्ख धर्म ने विदेशी मूल के शासकों-प्रशासकों के साथ कदापि समझौता न किया। गुरु जी ने उनके जुल्मो-जब्र, अन्याय को स्पष्ट जाहिर किया और उनको अपने कर्त्तव्य को सही रूप में निभाने का मार्ग दिखाया। जहां लोधी हाकिमों के अन्याय के बरतारे को उजागर किया वहां आक्रमणकारी बाबर को उसके मुंह पर जाबर कहकर उसको जनकल्याण का मार्ग पकड़ने की प्रेरणा तथा सीख बख्शी।

गुरु जी ने सर्वकल्याणकारी गुरमति मार्ग तथा सच्चा अध्यात्म-ज्ञान लोगों को सदा-सदा के लिए उपलब्ध कराने हेतु भाई लहिणा जी को अपने अंग लगाकर अपने जीते-जी गुरु-पदवी पर आसीन किया जिससे समूची मानवता और सिक्ख पंथ को कुल दस सिक्ख गुरु साहिबान की निर्मल अगुआई प्राप्त हुई और सिक्ख पंथ दशमेश पिता के समय खालसा रूप में सुसज्जित हुआ। खालसा पंथ ने देश-कौम की सुरक्षा और विकास-विगास हेतु स्मरणीय कार्य किया, चाहे इसके लिए अनगिनत कुर्बानियां देनी पड़ीं। अंत में देश के उत्तरी-पश्चिमी भाग में एक कल्याणकारी खालसा राज्य कायम हुआ। यह सब परिवर्तन केवल गुरु नानक पातशाह के ही प्रारंभिक योगदान और कृत्यों के कारण संभव हो पाये। इसलिए समस्त देश-कौम को गुरु नानक पातशाह के महान परोपकारों को भुलाने की बजाय सदैव स्मरण रखना चाहिए। वस्तुतः भारतवर्ष की भूमि का कण-कण दसों सिक्ख गुरु साहिबान के महान उपकारों से सरशार है।

गुरु जी का पावन प्रकाश-पर्व गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख तो हरेक वर्ष इस मास में मनाते ही हैं इसके साथ-साथ समस्त संसार भी अपनी श्रद्धा गुरु जी के प्रति अपने-अपने ढंग से व्यक्त करता है जो कि स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक भी है। फिर भी आज हम वर्तमान युग के कई प्रकार के दबावों के चलते गुरु नानक पातशाह के निर्मल उपदेशों को भूलने लग पड़े हैं। आओ! गुरु जी के पावन प्रकाश पर्व पर हम सच्चा संकल्प लें कि हम गुरु जी द्वारा बख्शे निर्मल उपदेशों को अपने हृदय में न केवल संभाल कर रखेंगे बल्कि उनको अपने जीवन-व्यवहार में अधिक से अधिक संभव रूप में कमाने के लिए भी प्रयासरत रहेंगे। गुरु जी के अपूर्व व्यक्तित्व और उनके अद्वितीय जीवन को सदैव सामने रखकर अपना व्यवहार निर्मल बनाना गुरु जी को सहृदय श्रद्धा-सत्कार प्रकट करना होगा। अतः आओ! हम सब गुरु जी के निर्मल उपदेशों के अनुगामी बनें।

संपादकीय नोट

किसी भी पत्रिका को विशाल व व्यापक दायरे वाली एवं लोकप्रिय बनाने के लिए इसमें अपनी अच्छी कृतियों द्वारा भरपूर योगदान डालने वाले लेखक-लेखिकाओं की मुख्य भूमिका होती है। इस बात का हमें हृदय की गहराइयों से अहसास है। 'गुरमति ज्ञान' भाग्यशाली है कि इसको इसके प्रारंभिक चरण में ही अच्छे लेखक-लेखिकाओं, कवियों और कवयित्रियों की तरफ से सकारात्मक प्रतिउत्तर मिलता रहा। एक और अधिक संतुष्टि की बात यह है कि इस पत्रिका के साथ जहां एक बार जुड़े लेखकजन जुड़े रहे वहां नये लेखकजन भी सदैव जुड़ते आ रहे हैं। हमारे विशेष आग्रह पर कुछ एक पंजाबी लेखकजनों ने हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखना आरंभ किया और आज वे 'गुरमति ज्ञान' के लेखक परिवार के सम्मानीय सदस्य हैं। उनके भरपूर सहयोग के आधार पर हमने इस पत्रिका को त्रैमासिक से मासिक किया और इस पत्रिका की मुद्रित संख्या भी निरंतर बढ़ती चली आई है। हमें पाठकों की ओर से मिले पर्याप्त प्रतिउत्तर की खुशी एवं संतुष्टि है। लेखकों और पाठकों की ओर से मिले ऐसे सकारात्मक प्रतिउत्तर के कारण ही 'गुरमति ज्ञान' ने गत वर्ष (२०१०) में 'फरवरी' और 'नवंबर' के अंक क्रमश: 'पर्यावरण विशेषांक' और 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' दिये जिन्हें पाठकों की ओर से बेहद सराहा गया।

उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर 'गुरमति ज्ञान' के विशेष अंकों की एक और श्रृंखला हम नवंबर २०१० से आरंभ करने जा रहे हैं। ये सभी विशेषांक दस सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन-वृत्तांत, उनके गुरगद्दी-काल में सिक्ख धर्म के हुए विकास-विगास, उनके व्यक्तित्व, उनकी उच्चारण की गई पावन बाणियों के विषय-वस्तु एवं संदेश, उनके जीवन के प्राचीन और नवीन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोतों आदि के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देने के प्रयोजन को सामने रख कर प्रस्तुत करने का एक प्रारंभिक प्रकार का प्रयास है। यह प्रयास सही अर्थों में प्रारंभिक मानने में हमें कोई झिझक नहीं महसूस होती लेकिन फिर भी पूर्ण विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि इस प्रयास की पर्याप्त प्रासंगिकता तथा महत्व है और वस्तुत: हमको गत कुछ समय से इसकी आवश्यकता काफी शिद्दत के साथ प्रतीत हो रही थी। आप सबको पहले ही पता है कि 'गुरमति ज्ञान' का मुख्य आशय सिक्ख गुरु साहिबान और उनकी बाणी अथवा श्री गुरु ग्रंथ साहिब, भक्त साहिबान और इस अद्वितीय धर्म ग्रंथ के अन्य बाणीकारों, लासानी सिक्ख इतिहास तथा सिक्ख रहित मर्यादा के बारे में सिक्ख संगत और पाठकों को अवगत एवं सुचेतनता प्रदान करना है। गुरु साहिबान के मानवता को अपूर्व योगदान पर कोई दो राय नहीं हैं। उन पर समय-समय कुछ अच्छे खोज भरपूर आलेख भी हमने अपने लेखक-जनों की ओर से मिले सहयोग से प्रकाशित करने में सफलता प्राप्त की, परंतु विभिन्न गुरु साहिबान के पावन प्रकाश-पर्वों, गुरगद्दी पर विराजमान होने के विशेष अवसरों आदि पर कुछ एक आलेख उनके समस्त जीवन पर दृष्टिगत करते हुए सामान्य कोटि के भी प्रकाशित करने पड़ते हैं, चाहे कि नये पाठकों को उनसे भी काफी कुछ मिलता है। हमारे मन-मस्तक में यह बात सदैव रहती है कि रचनाओं का स्तर और अधिक

ऊंचा हो, नवीनता, विकास तथा विगास का सिलसिला सदा ही बना रहे, कभी रुके न। दरअसल हम सबको यह सच्चाई माननी चाहिए कि हमारा अधिकतर लेखकों का सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन पर उपलब्ध मूल-स्रोतों का अध्ययन उतना व्यापक एवं गहन नहीं जितना होना चाहिए और हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि में गुरमति चिंतन और सिक्ख इतिहास पर कलम चलाने वाले लेखकजनों की यह समस्या अधिक होने की संभावना है। सहज स्वाभाविक रूप में गुरु साहिबान संबंधी सैकंडरी और मौखिक स्रोतों से प्राप्त जानकारी को ही कई बार पुन: प्रस्तुत कर दिया जाता है। अत: हमारी यह विशेष अंकों की श्रृंखला अवश्य ही हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में लिखने-छपने वाले लेखकों को प्राचीन और नवीन प्रमाणिक स्रोतों के बारे में संक्षेप में तत्वसारी जानकारी पहुंचाने का एक अपनी प्रकार का अलग प्रयास है।

प्राचीन और नवीन दोनों प्रकार के स्रोतों का अपना-अपना महत्व है। इस तथ्य को सामने रखते हुए हमारा प्रयास है कि हम हरेक गुरु साहिब के बारे में अधिक से अधिक जानकारी जुटा सकें। चूंकि यह कार्य अपने आप में असीम प्रकार का है इसलिए हम सब इस संबंध में एक सीमा के दायरे में रहने पर विवश हैं। फिर भी यह कार्य धीरे-धीरे पूर्णता की ओर बढ़ता रह सकता है और इन विशेषांकों के पश्चात भी यह अपनी मधुर गति से चलता रहेगा। यह बात भी स्पष्ट करनी आवश्यक है कि विशेषांकों की यह श्रृंखला मात्र लेखकजनों को ही प्रेरित करने के लिए नहीं चलाई जा रही, 'गुरमति ज्ञान' के साधारण पाठक भी इनसे अवश्य भरपूर लाभ उठायेंगे। निश्चय ही इन विशेषांकों के द्वारा सिक्ख गुरु साहिबान के बारे में पहली बार एक साथ इतनी भरपूर जानकारी एवं चिंतन देख-पढ़ कर पाठक संतुष्टि, विस्माद एवं खुशी प्रतीत करेंगे। वे भी लेखक साहिबान द्वारा विचाराधीन स्रोतों को स्वयं प्राप्त करने और पढ़ने के लिए यदि प्रेरित हो सकें तो हमारी विशेषांकों की यह श्रृंखला और अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। हम अपने पाठकों से सनम्र वादा करते हैं कि जिन स्रोतों पर अधिक भरपूर जानकारी वाले आलेख इन अंकों में प्रस्तुत न किये जा सके उन पर पुन: अधिक अच्छे आलेख लिखवाने का हमारा प्रयास होगा।

गुरु नानक पातशाह के जीवन संबंधी प्रकाशित इस विशेष अंक के आलेखों में कुछ दोहराव है परंतु यह दोहराव अकारण नहीं। विभिन्न स्रोतों का विषय-वस्तु वही या मिलता-जुलता होने के कारण ऐसा होना स्वाभाविक था। प्रस्तुत किये स्रोतों की कुछ तिथियों और तथ्यों व घटनावली-क्रम में कुछ भिन्नता भी है जो लेखकों-पाठकों तक पहुंचाना कई प्रकार से लाभदायक ही रहेगा। लेखक-पाठक इन विशेषांकों में प्रस्तुत साम्रगी वाले स्रोतों का अध्ययन गुरमति विचारधारा एवं गुरबाणी की कसौटी को सामने रख कर करें तो अच्छा रहेगा। सारे ही स्रोत महत्वपूर्ण हैं। उनमें दी गई वाद-विवाद वाली, चमत्कारी तथा मिथिहासिक बातों से बचते-बचाते हमने शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री को अपनी जेहन में बसाना है। इसके अलावा और भी कई स्रोत-पुस्तकें या ग्रंथ हैं, उनका भी अध्ययन करते समय इन बातों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा।

इस प्रथम अंक में प्रकाशित आलेखों के सभी लेखक साहिबान द्वारा मिले सहयोग के लिए हम आभारी हैं तथा आगामी अंकों के लिए भी उनसे इसी प्रकार के सहयोग की आशा रखते हैं।

-सिमरजीत सिंघ, संपादक।

सिक्ख इतिहास के पंजाबी स्रोत

*-डॉ. कुलविंदर सिंघ**

सिक्ख इतिहास को समझने तथा लिखने के लिए ऐतिहासिक सामग्री का अब कोई अभाव नहीं है। उदाहरण के तौर पर हमारे पास पंजाबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, मराठी, बंगाली आदि भाषाओं में पर्याप्त मात्रा में स्रोत प्राप्त हैं, परंतु इस मौजूदा आलेख में केवल गुरु साहिबान के जीवन उद्देश्यों तथा प्राप्तियों को समझने व लिखने के लिए प्रमुख पंजाबी स्रोतों का, जो मुद्रित अर्थात् छपे या अप्रकाशित हैं, अंश मात्र ही जिक्र किया जा रहा है।

सिक्ख इतिहास के पंजाबी स्रोत सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक साहिब के जीवन-कार्यों के साथ ही अस्तित्व में आ गए थे भाव गुरु नानक साहिब की अपनी बाणी ही समूचे सिक्ख इतिहास को समझने का मूल स्रोत है। इस प्रकार गुरु नानक साहिब से लेकर सिंघ सभा लहर के प्रभाव अधीन लगभग छ: सदियों में जितना भी साहित्य लिखा गया है उसको ऐतिहासिक और प्रमाणिकता के पक्ष से आठ श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: १) श्री गुरु ग्रंथ साहिब, २) दसम ग्रंथ, ३) हुकमनामे, ४) भाई गुरदास जी और भाई नंद लाल जी की रचनायें, ५) जन्म-साखियां, ६) रहितनामे, ७) गुरबिलास परंपरा के साथ संबंधित रचनायें तथा इसके बाद की ऐतिहासिक रचनायें, ८) सिंघ सभा लहर के प्रभावाधीन लिखा गया साहित्य और इतिहास।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम पावन स्वरूप का संकलन पंचम पातशाह गुरु अरजन साहिब के जीवन का सर्वोत्तम तथा महानत्तम कार्य था, जो आप जी ने भाई गुरदास जी की सहायता लेते हुए अगस्त, १६०४ ई में (रामसर) अमृतसर में संपूर्ण किया। इसमें गुरु साहिबान की बाणी के अतिरिक्त कई पूर्वकालीन और समकालीन भक्त साहिबान, मुस्लिम सूफियों और भट्ट साहिबान की बाणी अंकित है। संपूर्णता के उपरांत इसको पूर्ण सत्कार सहित श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित किया गया। बाबा बुड्ढा जी (१५१८-१६३१) को प्रथम ग्रंथी नियुक्त किया गया। बाद में इस 'ग्रंथ' को करतारपुर ले जाया गया। इस कारण से इसको 'करतारपुरी बीड़' अथवा 'करतारपुर वाली बीड़' भी कहा जाता है। आदि श्री ग्रंथ साहिब के तैयार होने के बाद गुरु अरजन साहिब ने अपने एक सिक्ख भाई बंनो को ग्रंथ साहिब की जिल्द बंधवाने के लिए लाहौर ले जाने का हुक्म किया। भाई बंनो ने इसकी एक नकल तैयार कर ली जिसको 'भाई बंनो वाली बीड़' भी कहते हैं। ख्याल किया जाता है कि यह बीड़ अभी तक भाई बंनो के वंशज के पास ही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की 'दमदमे वाली बीड़' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ जी से १७०६ ई को दमदमा साहिब में तैयार कराई। इसमें पहले पांच गुरु साहिबान की बाणी के अतिरिक्त गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी भी शामिल की गई है। ख्याल किया जाता है कि १७६२ ई के बड़े घल्लूघारे के समय यह बीड़ भी नष्ट हो गई, परंतु उस समय तक इसकी कुछ प्रतियां तैयार

**विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२*

कर ली गई थीं। अतः अब जिस श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन हमें गुरुद्वारा साहिबान में होते हैं, ये 'दमदमा साहिब वाली बीड़' पर ही आधारित हैं।

सिक्ख स्रोतों में दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत 'दसम ग्रंथ' अथवा दशम पातशाह जी का ग्रंथ है। इसका संपादन भाई मनी सिंघ जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हुक्म-सत होने के बाद में किया। आज तक इतिहासकारों में यह विवाद समाप्त नहीं हुआ कि इसमें अंकित सभी रचनायें गुरु साहिब की ही हैं या उन रचनाओं में से कुछ उनके दरबारी कवियों के साथ भी संबंधित हैं। लेकिन यहां हम इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते क्योंकि हमारा मुख्य उद्देश्य तो स्रोत के साथ है। इस पक्ष से इसमें शामिल प्रमुख रचनायें, जैसे कि जापु साहिब, अकाल उसतति, बचित्र नाटक, चंडी दी वार, गिआन प्रबोध, ब्रहम अवतार, रुदर अवतार, शबद हजारे, शसत्रनाममाला, जफरनामा आदि बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। ये रचनायें चार विभिन्न भाषाओं ब्रज, हिंदी, फारसी और पंजाबी में हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन-उद्देश्य, कारनामों, शख्सियत तथा समूची सिक्ख लहर को समझने के लिए यह एक बहुत ही प्रमाणिक तथा महत्वपूर्ण स्रोत है।

गुरु साहिबान द्वारा सिक्खों/संगत को लिखे गए आज्ञा-पत्रों को 'हुकमनामे' के नाम से जाना जाता है। इनको सिक्ख इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तथा प्रमाणिक स्रोत माना जा सकता है। अब तक हमारे पास ८९ हुकमनामे प्रकाशित रूप में विद्यमान हैं। इनमें से ३४ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, २३ श्री गुरु तेग बहादर साहिब और शेष अन्य गुरु साहिबान, माता गुजरी जी, माता सुंदरी जी, माता साहिब (देवां) कौर जी, बाबा गुरदित्ता जी तथा बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ संबंधित हैं। इनमें गुरु साहिबान, सिक्ख धर्म के प्रचार, प्रमुख सिक्खों और कुछ समकालीन घटनाओं के बारे में बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अधिकतर हुकमनामों में तिथियां भी दी हुई हैं, जिससे उस समय की महत्वपूर्ण घटनाओं की तारीखें निश्चित हो सकती हैं।

'वारां भाई गुरदास जी' सिक्ख सिद्धांत और सिक्ख इतिहास को समझने के लिए एक बहुत ही उपयोगी स्रोत है। भाई गुरदास जी (१५५८-१६३९) तीसरे गुरु साहिब के भाई श्री दातार चंद के सपुत्र थे। आप चौथे, पांचवें और छठे गुरु साहिब के बहुत ही करीबी, सुयोग्य तथा श्रद्धालु सिक्खों में से थे। ऊंची कोटि के विद्वान-कवि होने के कारण आपने ३९ वारों की रचना की। इन वारों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तो शामिल नहीं किया गया परंतु इनको श्री गुरु ग्रंथ साहिब की 'कुंजी' का दर्जा अवश्य प्राप्त है अर्थात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी एवं सिक्ख-सिद्धांतों को समझने के लिए भाई गुरदास जी की वारों का अध्ययन अति आवश्यक है। गुरमति सिद्धांतों के अतिरिक्त पहली वार में से गुरु नानक साहिब के जीवन के संबंध में काफी महत्वपूर्ण तथ्य मिलते हैं। इसी प्रकार ग्यारहवीं वार में से पहले छः गुरु साहिबान के सिक्खों के नाम, गोत, निवास-स्थान और काम-काज के बारे में पता चलता है।

'जन्म-साखी' साहित्य में से हमारे पास चार प्रमुख जन्म-साखियां प्राप्त हैं। इनमें से 'पुरातन जन्म साखी', जिसका संकलन भाई वीर सिंघ ने १९२६ ई में किया था, वस्तुतः १७वीं सदी के प्रथम आधे भाग में लिखी गई दो जन्म-साखियों पर आधारित है--'वलायत वाली जन्म-साखी', जिसको हैनरी थामस कोलब्रक १८१५ ई में लंदन ले गया था, १८७२ ई में यह इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी (लंदन) में से अर्नस्ट के हाथ

लगी और फिर यह सिक्खों को प्राप्त हुई। दूसरी हाफिजाबाद वाली या मैकालिफ वाली जन्म-साखी है। इसको भाई गुरमुख सिंघ ने हाफिजाबाद से प्राप्त किया था। इसके अंतिम पृष्ठ गुम हैं। मैक्स आर्थर ने वलायत वाली जन्म-साखी की सहायता से इसको संपूर्ण किया। अत: यह 'पुरातन जन्म साखी' उपर्युक्त दोनों जन्म-साखियों के समायोजन से तैयार की गई थी।

'मिहरबान वाली जन्म-साखी' सोढी मनोहर दास मिहरबान (१५८१-१६४०) की लिखी हुई है जो श्री गुरु रामदास जी के पौत्र तथा काफी पढ़े-लिखे व्यक्ति थे। गुरु-परिवार के साथ संबंधित होने के कारण, गुरु नानक साहिब से संबंधित प्रचलित परंपराओं से आप भली-भांति अवगत थे। गुरु नानक साहिब की उदासियों की विस्तृत विवरण सहित वार्ता जन्म-साखी में मिलती है। इसके अतिरिक्त गुरु साहिब के करतारपुर में निवास के समय के हालात भी काफी विस्तृत रूप में लिखे गए हैं।

'भाई बाले वाली जन्म-साखी' के बारे में माना जाता है कि गुरु अंगद साहिब ने मोखा नाम के व्यक्ति, जो कि पैड़ा जाति का था, से भाई बाला, जो कि गुरु नानक साहिब का साथी था तथा उनकी यात्राओं के समय गुरु साहिब के साथ था, की सहायता से लिखवाई। इस दृष्टि से यह सर्वाधिक प्राचीन तथा विश्वसनीय मानी जाती रही है। परंतु अब तक की खोज ने यह सिद्ध किया है कि उनकी यात्राओं में उनके साथ केवल भाई मरदाना जी ही थे। परिणामस्वरूप यह जन्म-साखी हिंदालियों की ओर से १६५८ में लिखी मानी गई है। इसकी रचना करने का उद्देश्य गुरु साहिब की प्रतिष्ठा को कम करना और भक्त कबीर जी और बाबा हिंदाल की प्रतिष्ठा में वृद्धि करना था।

चौथी तथा सबसे बाद वाली जन्म-साखी भाई मनी सिंघ जी द्वारा लिखी गई। इसको 'गिआन रतनावली' भी कहा जाता है। इसको लिखने का समय सन् १६७५ ई से सन् १७०८ ई के मध्य का ख्याल किया जाता है। यह भाई गुरदास जी की पहली वार और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय में प्रचलित गुरु नानक साहिब संबंधी साखियों पर आधारित है। इसका प्रथम भाग अधिक महत्वपूर्ण है जबकि दूसरे भाग की अधिकतर साखियां भाई बाले वाली जन्म-साखी में से ही ली गई प्रतीत होती हैं। इसमें भाई बाले वाली जन्म-साखी की तुलना में कम गलतियां हैं तथा मनोकल्पित सामग्री भी कम है।

इसके अतिरिक्त १८वीं सदी की 'नानकशाही' नामक 'हस्तलिखित कृति' (मसौदा) गुरु नानक साहिब के जीवन का वृत्तांत प्रस्तुत करती है। इसका अंतिम अध्याय गुरु नानक साहिब के बाद में ५ अन्य गुरु साहिबान के साथ संबंधित है। यह कृति डॉ. गंडा सिंघ द्वारा ढूंढी गई थी जो उनकी व्यक्तिगत लायब्रेरी और खालसा कॉलेज अमृतसर में सुरक्षित है। 'भगत रतनावली' (सिक्खों की भगतमाला) १८वीं सदी के पूरबार्द्ध में रची गई रचना है। 'सिक्खों की भगतमाला' के अध्ययन से सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन, प्रमुख सिक्खों के नाम, जाति तथा उनके निवास-स्थान और उस समय की सामाजिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है।

'महिमा प्रकाश' गद्य रूप की रचना बावा किरपाल दास (महान कोष के अनुसार बावा किरपाल सिंघ भल्ला) द्वारा सन् १७१४ ई में की मानी जाती है। इसमें गुरु साहिबान के जीवन तथा साहसी कार्यों से संबंधित १६५ के लगभग साखियां हैं।

'महिमा प्रकाश' काव्य की रचना सन् १७७६ ई में बावा सरूप दास भल्ला, जो कि श्री गुरु अमरदास जी के वंश में से थे, ने की। इसमें

'महिमा प्रकाश' गद्य की तुलना में गुरु साहिबान के जीवन का अधिक विस्तारपूर्वक वर्णन है। 'गुर रतनावली' और 'साखी पातशाहीआं तिंन' आपकी दो अन्य रचनायें भी मानी जाती हैं।

'बंसावलीनामा' की रचना भाई केसर सिंघ छिब्बर द्वारा १८वीं सदी के दूसरे आधे भाग में की गई मानी जाती है। यह रचना पद्य रूप में है। पहले १० अध्याय सिक्ख गुरु साहिबान के साथ संबंधित हैं।

'परचीआं सेवा दास' भाई सेवा दास के द्वारा रची गई ५० साखियों का संग्रह हैं। इसमें अंकित आठ साखियां पहले आठ गुरु साहिबान के साथ संबंधित हैं।

'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' कृत भाई संतोख सिंघ, जिनको कैंथल के शासक राजा उदय सिंघ का संरक्षण प्राप्त था, एक बहुत ही विस्तृत ग्रंथ है। इसके पूर्बले भाग जिसको 'नानक प्रकाश' के नाम से जाना जाता है, की रचना सन् १८२३ ई में हुई। 'सूरज प्रकाश' की रचना बृज भाषा में है। चाहे कुछ इतिहासकार इसको उच्च कोटि का स्रोत नहीं मानते क्योंकि इसमें बहुत-सी मनोकल्पित कथाओं का भी जिक्र है, फिर भी ध्यान से अध्ययन करने के उपरांत इसमें से गुरु साहिबान तथा बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ संबंधित पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।

'प्राचीन पंथ प्रकाश' कृत भाई रतन सिंघ भंगू १९वीं सदी के पूर्बले आधे भाग की रचना है। भाई रतन सिंघ के पूर्वजों ने १८वीं सदी में खालसा जद्दोजहद में भाग लिया था। अत: इसके लेखक के अनुसार उसने अधिकतर वृत्तांत उनसे सुने हुए थे। इस प्रकार १८वीं सदी के सिक्ख इतिहास को समझने के लिए यह एक उत्तम स्रोत है।

ज्ञानी गिआन सिंघ, जो कि भाई मनी सिंघ जी के वंश में से थे, ने 'पंथ प्रकाश' की रचना की। यह विस्तृत जानकारी देने वाला स्रोत है।

इन स्रोतों के अतिरिक्त प्रो. गंडा सिंघ की 'बिबलिओग्राफी ऑफ सिक्खज़ एण्ड सिक्खइज़्म' और डॉ. हरी राम गुप्ता की 'हिस्टरी ऑफ दा सिक्खस' (पांच Volumes) पर आधारित कुछ मसौदों संबंधी सूचना दी जा रही है। ये मसौदे हैं:

१. सिक्ख इतिहास, खोज विभाग, खालसा कॉलेज, अमृतसर

२. डॉ. गंडा सिंघ कुलेक्शन, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला

३. भाषा विभाग, पटियाला और

४. सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी (शि: गु: प्र: कमेटी) अमृतसर में विद्यमान हैं। संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है:

कोइर सिंघ कलाल : गुर बिलास पातशाही दस, अंम्रितसर महातम दस अवतार दी कथा

दौलत राय भट्ट : गुर प्रकाश बंसावली

ज्ञानी दित्त सिंघ : गुरु नानक प्रबोध जन्मसाखी गुरु नानक साहिब

गनेशा सिंघ बेदी : गुरु नानक चंद्रउदि

भाई गुरमुख सिंघ : गुर प्रणालीआं गुर रतन माला

कवि गवाल सिंघ : सिक्ख इतिहास कवितावली और हकीकत राजे शिवनाब की

हीरा सिंघ (पंडित) : श्री गुरू सिद्धांत पारजात श्री गुर रतनावली

जगननाथ : साखी मक्का दी, मदीना दी, गिआन खंड की ते गुरू दा चरित्तर

जवाहर सिंघ सोढी : तवारीख गुरू साहिबां वा सिक्खां

(शेष पृष्ठ २४ पर)

भाई बाले वाली जन्म-साखी : एक विहंगावलोकन

*-प्रो सुरिंदर कौर**

जन्म-साखियां सिक्ख जगत का अति प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इनका उद्भव और विकास, कैसे, कब, कहां और किसने किया से अधिक महत्वपूर्ण है कि इनका प्रभाव कितना गहन और व्यापक है। सिक्ख धर्म ईश्वर-प्राप्ति के लिए बाहरी कर्मकांडों को महत्व नहीं देता, अत: गुरबाणी-व्यवहारिक जीवन में आध्यात्मिक ऊंचाई तक की उड़ान का मार्ग प्रशस्त करती है। आम जीवन जीते-जीते जीव किस प्रकार से अपने प्रियतम प्रभु तक पहुंच सकता है, यह मार्ग उसे गुरबाणी द्वारा प्राप्त होता है। 'गुरु' सच्चे मार्गदर्शक के रूप में अपने अनुभव-ज्ञान को शब्दों का साकार वस्त्र पहनाकर जगत के समक्ष आदर्श मार्ग की स्थापना करते हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि 'गुरु' ही वो महासेतु हैं जो सिक्ख को लोक से परलोक की यात्रा में सहायक होते हैं। आध्यात्मिक जीवन में 'गुरु' का स्थान अति महत्वपूर्ण है और एक सिक्ख के जीवन में तो वह सर्वोपरि है. क्योंकि शिष्य का अस्तित्व ही 'गुरु' के अस्तित्व से है। जीवात्मा-रूपी-स्त्री को परमात्मा-रूपी-पति से मिलन में 'गुरु' ही मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। फिर वह जीव-रूपी-स्त्री क्यों उस बिचौलिये पर बलिहार न जाए जो उसे इस महान चरम तक ले जाते हैं जहां आत्मा पुकार उठती है :

अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी
ना कदे मरै न जाइआ ॥ *(पन्ना ७८)*

ऐसे मध्यस्थ के लिए ही तो श्री गुरु अरजन देव जी कहते हैं :

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले
जै मिलि कंतु पछाणा ॥

(पन्ना ९६४)

ऐसे प्रेम-रंग में डूबी जीव-स्त्री उस बिचौलिये के बारे में जानने के लिए उत्सुक हो उठती है और सिक्ख के जीवन में यह बिचौलिये की भूमिका स्वयं गुरदेव पिता ही अदा करते हैं, अत: यह स्वाभाविक ही है कि सिक्ख अपने सतिगुरु के जीवन के बारे में सब कुछ जानना चाहता है और यहीं से गुरबाणी से बाहर आकर सिक्ख जगत में कथा-साहित्य आरंभ हुआ।

जन्म-साखियों का आरंभ व विकास

वैसे तो यदि भाई बाले वाली जन्म-साखी के आरंभ में दी गई कथा को मानें तो श्री गुरु अंगद देव जी ने भाई बाला जी से गुरु नानक साहिब जी के जीवन की सारी कथा सुनी जिसे भाई पैड़े मोखे ने कलमबद्ध किया। कई विद्वान इस कथा को प्रमाणिक नहीं मानते। वैसे इस जन्म-साखी के अध्ययन के बाद यह वास्तव में भी गुरु-काल के बाद की रचना लगती है। खैर, हमारा लक्ष्य इस जन्म-साखी की प्रमाणिकता सिद्ध करना, उसके लेखक और लेखन-काल को ढूंढना नहीं है, हमारा ध्येय इस जन्मसाखी के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालना है और इसके पड़ने वाले गहन प्रभाव पर है। अत: यदि हम

**Room No. 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jijamata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob: 80973-10773*

भाई बाले वाली जन्म-साखी को उस (गुरु) काल की न मानें तो यह स्पष्ट है कि पहले-पहल सिक्ख साहित्य में गुरु साहिब के जीवन पर प्रकाश डाला भाई गुरदास जी ने।

भाई गुरदास जी की वारों में गुरु नानक साहिब जी से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी तक गुरु साहिबान की जीवन की घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। साथ ही गुरु साहिबान के समकालीन और उनकी सेवा में रहे गुरसिक्खों का भी विवरण मिलता है। इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि से भाई गुरदास जी की वारें बहुत महत्वपूर्ण हैं।

सबसे पुरानी जन्म-साखी जो मिलती है वो है भाई मिहरबान वाली, जो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय में श्री गुरु अरजन देव जी के भतीजे मिहरबान ने लिखी थी। इसके बाद दूसरी जन्म-साखी मिलती है भाई मनी सिंघ जी द्वारा रचित 'गिआन रतनावली'। इसके बाद तो गुरु साहिब जी के जीवन की कथा लिखने की सिक्ख साहित्य में एक बाढ़-सी आ गई, जिनमें 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ', 'महिमा प्रकाश', 'गुरु सोभा' और 'गुरु नानक चमत्कार' आदि अग्रणी हैं।

श्री गुरु नानक देव जी की जीवन-कथा से संबंधित सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है 'भाई बाले वाली जन्म-साखी'। बेशक नाम जन्म-साखी है, परंतु यह है उनके पूरे जीवन की साखी। यदि कुछेक साखियां, जिनकी प्रमाणिकता पर विवाद है और जो गुरमति के अनुकूल नहीं लगतीं, को छोड़ भी दें तो भी इस जन्म-साखी से श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के बारे में बहुत अधिक और गहरी जानकारी मिलती है। यही कारण है कि जीवन-गाथा साहित्य में यह जन्म-साखी मील का पत्थर साबित हुई।

इस जन्म-साखी की विशेषताएं

सभी प्राप्त जन्म-साखियों में भाई बाले वाली जन्म-साखी सबसे ज्यादा मशहूर है। जहां तक गुरु नानक साहिब जी के जीवन का प्रश्न है तो प्राय: सभी जन्म-साखियां उसे सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर रही हैं। फिर भी केवल इसी जन्म-साखी को इतनी प्रसिद्धि क्यों मिली, इसके कारणों पर विचार कर लेना भी संगत ही होगा।

१) भाषा : भाषा सम्प्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है। जब भी किसी विचार को अधिकतम लोगों तक पहुंचाना होता है तब उन्हीं की समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग श्रेयस्कर होता है। यही कारण है कि जब संस्कृत जैसी संपूर्ण रूप से व्याकरण सम्मत, समृद्ध और महान साहित्यक भाषा आम जनता से दूर हुई तो उसका वर्चस्व समाज में निश्चित ही कम हो गया। यदि हिंदू धर्म-ग्रंथों की रचना इस भाषा में न हुई होती तो कई प्राचीन भाषाओं की भांति कदाचित आज इसका अस्तित्व ही मिट गया होता, परंतु भक्ति-काल में सभी संत-कवियों ने क्षेत्रीय जनभाषाओं के प्रयोग से न केवल सरलता से अपने विचार आम लोगों तक पहुंचाए वरन् आज ये भाषाएं सारे देश में बोली भी जाती हैं। हिंदी का उद्भव इसी संस्कृत से हुआ, पर आज संस्कृत केवल धार्मिक भाषा है और हिंदी राष्ट्रभाषा।

इसी लिए सिक्ख गुरु साहिबान ने भी कभी भाषा का दुराग्रह नहीं किया। गुरबाणी इसका स्पष्ट प्रमाण है। मध्य काल से कुछ पूर्व से किसी न किसी रूप में पंजाबी, पंजाब व अन्य पड़ोसी क्षेत्रों की जनभाषा रही है। इस जन्म-साखी की रचना भी पंजाबी में ही की गई है। भाषा अत्यंत ही सरल है। स्पष्ट है कि यह भाषा वर्तमान पंजाबी के संदर्भ में कुछ पुरानी

लगती है, पर पिछली तीन-चार शताब्दियों से पंजाब की साधारण जनता यही भाषा बोलती है। वास्तव में यह भाषा कुछ हद तक सधुक्कड़ी भाषा से मिलती है, जहां भारी-भरकम शब्दावली की आवश्यकता नहीं है। इस जन्म-साखी में देशज और आम बोलचाल के शब्दों की भरमार है। इसकी मूल पंजाबी भाषा में बृज, अवधी, पूर्वी हिंदी के साथ-साथ दक्खणी, पहाड़ी, अरबी, फारसी, मुलतानी और खास तौर पर पोठोहारी भाषाओं के शब्द भी पाए जाते हैं।

यह जन्म-साखी काव्य में न होकर गद्य रूप में लिखी गई, फिर भी इसकी भाषा बहुत काव्यात्मक है। इस जन्म-साखी की भाषा का एक अपना ही लहका है जो इसे और अधिक सुगम बना देता है। कथा की दृष्टि से भाषा अत्यंत ही रोचक एवं प्रवाहमयी है। इसके वाक्यों में पूर्ण विराम बहुत ही कम नजर आते हैं, अतः इसका प्रवाह निरंतर बन जाता है। इस जन्म-साखी की भाषा का प्रयोग गद्य में अन्यत्र कहीं मिलना कठिन है। इसके शब्दों और लय का समन्वय एक विशेष चमत्कार प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए :

१) "तलवंडी तों बाहर जहां श्री नानक बैठे थे कालू नू लैके जाइ वखाइआ तां कालू ने जाइ कर देखिआ बड़ा क्रोध आइआ पकड़ लीता अते पुछिआ अवो नानक वीह रुपए जो तैनूं दिते सन सो किथे हैनी तां नानक जी अगों चुप कर रहे बोले नाही।" (साखी खरे सौदे दी, जन्म-साखी, पृष्ठ ४८)

२) "गुरु नानक कहिआ मरदाना देख खां खबर प्रसाद केहा कु है तां मरदाने आखिआ जी केडा कु सुआद लवां तां लालो आखिआ तुसां प्रसाद वलों वेखणा नहीं तुसीं असाडी वलों वेखणा तां गुरु नानक कहिआ भाई लालो जी कोई अंम्रित जो आखीदा है उहि प्रसाद विच पाया है तां भाई लालो मत्था टेकिआ आखिओ जी तुध अज मैनूं निहाल कीता है।" (साखी भाई लालो दी, जन्मसाखी, पृष्ठ १०९)

२) शैली : यह जन्म-साखी गद्य कथा-शैली में रची गई है। यह इस जन्म-साखी का वैशिष्ट्य है। काव्य अति मधुर विधा है परंतु फिर भी गद्य आम जनता की समझ में आसानी से आता है। यदि यह रचना वाकई श्री गुरु अंगद देव जी के काल की है तब तो प्रशंसनीय है क्योंकि लेखक ने गद्य में अपनी बात कही है जबकि उस काल में ९९ प्रतिशत रचनाएं काव्य में ही होती थीं और यदि यह उस काल के बाद की रचना है तो भी आधुनिक काल में जहां 'महिमा प्रकाश', 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' आदि के रचनाकार कथा के लिए काव्य-शैली को अपनाते हैं वहीं यह जन्म-साखी गद्य के कारण अधिक सुगम बन गई है। एक और विशेष बात यह है जो केवल इसी रचना में दिखाई देती है, वो यह कि प्रायः गद्य गहन वैचारिक विषयों की विधा मानी जाती है और काव्य मधुर भावों की, परंतु यह जन्म-साखी गद्य में होते हुए भी पूर्णतः माधुर्य का निर्वाह करती है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जन्म-साखी जीवनी और कथा-शैली का एक अनुपम समन्वय है। अधिक विस्तार के भय से इस तथ्य को अधिक वर्णित कर पाना संभव नहीं है। कुल मिलाकर यह जन्म-साखी शैलीगत दृष्टि से बहुत सफल व सुगम है।

३) सभी आयु-वर्गों के लिए समान : प्रायः हर रचना किसी न किसी विशेष आयु-वर्ग को ध्यान में रख कर रचित की जाती है और उसका प्रभाव भी प्रत्येक आयु-वर्ग पर अलग-अलग होता है, पर जब इस जन्म-साखी को पढ़ा जाए तो यह किसी विशेष आयु के लिए ही

उपयोगी न होकर हर उम्र के व्यक्ति को कुछ न कुछ देती है। यह बात अलग है कि इसकी साखियों का आयु वर्ग के अनुसार वर्गीकरण करके इसे और अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है, क्योंकि आयु के अनुसार तीन मुख्य वर्ग हैं जिन पर प्रभाव अपनी आयु जैसा ही पड़ता है, जैसे :

(१) बाल-बोध मन के लिए : सिक्ख-घरों में बच्चे बचपन से ही इन साखियों से अवगत हो जाते हैं, अत: यहां बच्चे होश संभालते ही सच्चा सौदा, भाई लालो जी, कौडा राखश, मज्जिआं (भैंसें) चराने वाली साखी आदि साखियां सुन-सुन कर उनमें निहित नैतिक व धार्मिक मूल्यों को सीखते हैं।

(२) आम श्रद्धालुओं और युवाओं के लिए: हर वो व्यक्ति जो बहुत इतिहास नहीं जानता, पूरी तरह गुरबाणी नहीं समझता या अब यौवन के साथ-साथ वह बाल-साखियों से आगे चलकर विचारधारा समझना चाहता है, वह आसानी से गुरु साहिब जी के जनेऊ धारण न करने वाली साखी, सज्जण ठग, जगन्नाथपुरी, मक्का, मदीना, राजा शिवनाभ, दुनीचंद, सालसराय, बाबर-आक्रमण की साखियों से बहुत कुछ सीख सकता है।

(३) प्रौढ़ व विद्वान वर्ग के लिए : जहां बुद्धि आध्यात्मिक मंडल की उड़ान भरना चाहती है वहां भी या गहन विचारों को समझने में भी इस जन्म-साखी को हम पीछे नहीं पाते। साथ ही विद्वानों, खोजियों और तार्किकों के लिए भी इसमें बहुत-सी सामग्री प्राप्त है, जैसे 'पटी लिखी', 'झंडे बाडी की साखी', 'अजित्ते रंधावे की साखी', 'काजी रुकनदीन सूरा से संवाद', 'सिध गोसटि' आदि साखियां इन्हीं वर्गों के लिए हैं।

इस जन्म-साखी का प्रदेय

१) श्री गुरु नानक देव जी की संपूर्ण छवि को जनमानस में उभारना : कुछ देर के लिए यदि इस जन्म-साखी के कृतित्व को दूर रख कर इसके प्रदेय के विषय में चर्चा की जाए तो अवश्य ही स्पष्ट हो जाएगा कि इस जन्म-साखी ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सबसे बड़ा काम जो ग्रंथ ने किया वो है गुरु नानक साहिब जी की संपूर्ण छवि को आम जनमानस में उभारना। गुरबाणी गुरु साहिब जी द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक ज्ञान को बड़ी ही गहराई से प्रस्तुत करती है परंतु उनके जीवन के सूक्ष्म वर्णन से अधिक वह उनकी अनुभूति पर केंद्रित है।

यह जन्म-साखी जीवनी और कथा-साहित्य दोनों के गुणों को अपने में समाहित करते हुए बड़ी कुशलता से यह कार्य करती है। गुरु साहिब जी के जन्म, शिक्षा, विवाह, संतान, उदासियां, ज्योति-जोत समा जाने का वर्णन पूर्णत: 'जीवनी' विधा की भांति क्रमवार व तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रसंग को पृथक कहानी के रूप में रोचक ढंग से कहा गया है। जहां-जहां आध्यात्मिक या दार्शनिक विश्लेषण आए हैं वहां एक व्याख्याकार के रूप में उनकी प्रभावी व्याख्या भी दी गई है। कुल मिलाकर बाबा नानक जी के व्यक्तिगत, सामाजिक, पारिवारिक व लोकोन्मुखी जीवन को बाखूबी उकेरा गया है। हर गुरु नानक-नाम लेवा तक गुरु नानक साहिब जी के जीवन को एक आदर्श प्रतिरूप बनाने में यह जन्म-साखी पूर्णत: सफल रही है।

२) अन्य प्रचलित धर्मों की मौजूदगी में सिक्ख धर्म की स्थापना के संघर्ष का वर्णन: यह एक महत्वपूर्ण बात है जो हमें पहले-पहल

इसी जन्म-साखी में दिखाई देती है। सिक्ख धर्म विश्व का सबसे आधुनिक धर्म है। गुरु नानक साहिब जी ने जब पहली बार अपने नवीन विचारों को संसार के समक्ष रखा तब जाहिर है कि अन्य सभी धर्म-मतों के लिए ये नई बातें थीं। ऐसा नहीं है कि सभी धर्मों ने उस समय गुरु साहिब जी के विचारों का विरोध किया या सभी ने उन्हें सहर्ष स्वीकार कर लिया हो। बचपन से लेकर उदासियों समेत, जीवन के अंत तक कई-कई बार अनेक मतानुयायियों या उनके प्रचारकों से संवाद हुए, बाकायदा धर्म-मतों की तुलना करके सिक्ख धर्म की विशेषताओं व मौलिक अवधारणाओं का उन्होंने सहज प्रतिपादन किया है। इसमें से कुछेक संवादों को स्वयं गुरु साहिब जी ने गुरबाणी के रूप में संरक्षित भी किया है, जैसे पटी लिखी, सिध गोसटि, जनेऊ संस्कार के समय उच्चारण किए श्लोक जो आसा की वार में दर्ज हैं, आदि।

इस जन्म-साखी में उन सभी प्रसंगों का सविस्तार वर्णन प्रस्तुत है। यह एक महत्वपूर्ण योगदान है जो इस ग्रंथ द्वारा सिक्ख धर्म के उद्भव और विकास की प्रक्रिया पर प्रकाश डाल कर उसे विशिष्ट प्रमाणित भी किया गया है। उपरोक्त वर्णित प्रसंगों के अतिरिक्त जैन साधु से वार्तालाप, जगन्नाथपुरी के पंडों से वार्तालाप, मक्के व मदीने में काजियों से संवाद, कशमीर के पुस्तक-ज्ञाता पंडित से संवाद आदि का बहुत सुंदर वर्णन हमें इस जन्म-साखी में मिलता है।

३) पंजाब की समकालीन परिस्थितियों की झलक : गुरबाणी सर्वकालीन, सर्वदेशीय व सर्वग्राह्य है। वैसे गुरबाणी में अपने रचना-काल की संपूर्ण मानसिकता की झलक स्पष्ट दिखाई देती है, फिर भी गुरबाणी का ध्येय काल विशेष का ज्ञान कराने से अधिक उस अकाल का ज्ञान कराना है। वहीं यह जन्म-साखी जहां गुरु नानक साहिब जी के जीवन का चित्रण करती है वहीं उनके जीवन-काल के आस-पास की परिस्थितियों का बड़ा सजीव वर्णन भी मिलता है। बेशक कुछेक मिथिहासिक साखियों में देश-काल का वर्णन परी-कथाओं से प्रेरित नजर आता है, फिर भी अन्य साखियां अपने काल के धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेष का बहुत सजीव चित्रण करती हैं। पढ़ने वाला केवल बुद्धि द्वारा विषय को ग्रहण नहीं करता वरन् एक तस्वीर उसकी आंखों के आगे खिंच जाती है जिसमें वह अपने प्यारे सतिगुरु को विचरण करता देख सकता है। यह जन्म-साखी बहुत सुंदर, सरस शब्द-चित्र बनाकर गुरु नानक साहिब जी को पाठक के मन, मस्तिष्क व मानस पटल पर सदा के लिए सजीव व अटल बना देती है। यही कारण है कि कृतित्व का प्रश्न महत्वपूर्ण होते हुए भी प्रदेय अधिक प्रभावशाली है।

इस जन्म-साखी के प्रति विवाद या भ्रम के कारण

१) भाई बाला जी के सदैव सानिध्य (साथ) पर भ्रम : इस जन्म-साखी को भाई बाले वाली जन्म-साखी कहने का मुख्य कारण ही यह है जो इस जन्म-साखी की पहली साखी में दिया गया है। इसे श्री गुरु अंगद देव जी की इच्छा व आदेश पर भाई बाला जी ने उच्चारण किया था और भाई पैड़े मोखे ने लिपिबद्ध किया था, परंतु कई विद्वान इस साखी को सही नहीं मानते। उनके अनुसार यह जन्म-साखी गुरु अंगद देव जी के काल में न लिखी जाकर बाद में लिखी गई है। इसके पीछे कई कारण हैं। सबसे पहला प्रश्न तो यही उठता है कि क्या भाई बाला जी हर समय गुरु नानक साहिब जी के

साथ थे, जैसा कि इस जन्म-साखी से विदित होता है, परंतु प्रमाणिक ऐतिहासिक स्रोतों से यह बात स्पष्ट नहीं होती।

यह ठीक है कि भाई बाला जी गुरु नानक साहिब जी के हमउम्र थे और उन्हीं के गांव तलवंडी के निवासी थे और उनका अकाल चलाणा भी गुरु नानक साहिब जी के ज्योति-जोत समा जाने के लगभग दो साल बाद हुआ, अत: वे उनके साथ हो सकते थे, परंतु बचपन उसी गांव में एक साथ बिताने के बाद जब गुरु नानक साहिब जी भाईआ जै राम जी और बेबे नानकी जी के घर सुलतानपुर लोधी गए उस समय भाई बाला जी उनके साथ नहीं थे। इसी जन्म-साखी के आग्रह पर वे स्वयं गुरु नानक साहिब जी का कुशल समाचार लेने सुलतानपुर लोधी आए और तलवंडी लौट गए। सुलतानपुर लोधी में ही गुरु साहिब जी भाई मरदाना जी का परस्पर मिलाप हुआ और यहीं से उदासियां भी आरंभ कीं। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार भाई मरदाना जी प्राय: चारों उदासियों में गुरु साहिब जी के साथ रहे, केवल उस काल को छोड़कर जब गुरु साहिब जी सिंगलद्वीप से अकेले रोहिलखंड गए थे, वहां उन्होंने भाई मरदाना जी को पहले ही पंजाब भेज दिया था, पर भाई बाला जी इस उदासी में इन दोनों के साथ नहीं थे। पंजाब से चलते समय तीन लोग साथ चले थे जिनमें स्वयं गुरु नानक साहिब जी, भाई मरदाना जी और भाई मनसुख जी, सिंगलद्वीप तक साथ रहे थे। फिर सुमेर पर्वत, सिधों से वार्तालाप आदि के समय भी भाई बाला जी उनके साथ नहीं थे। करतारपुर साहिब में भी वे पूरा समय गुरु साहिब जी की हजूरी में नहीं थे। फिर प्रश्न यह उठता है कि जब वे साथ थे ही नहीं तो उस समय का आंखों देखा वृत्तांत वे कैसे वर्णित कर सकते हैं?

वास्तव में भ्रम का कारण वे तस्वीरें भी हैं जिनमें सदा गुरु नानक साहिब जी के आस-पास भाई मरदाना जी और भाई बाला जी दिखाई देते हैं, परंतु यह बात तो प्रमाणित है कि ये चित्र गुरु-काल के नहीं हैं, यह चित्रकारों की कल्पना और श्रद्धा का सुमेल हैं। इन तस्वीरों का मतलब यह नहीं है कि हम यह मान लें कि भाई बाला जी हमेशा गुरु जी के साथ ही रहे। भाई गुरदास जी की रचना पंथ-प्रमाणित है। उनकी पहली वार की पैंतींसवीं पउड़ी में एक पंक्ति आती है *"इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।"* स्पष्ट है कि मक्के-मदीने की उदासी में भाई बाला जी साथ नहीं थे। इसलिए यह तर्क अपने स्थान पर यथावत् बना हुआ है कि इस जन्म-साखी को भाई बाला जी ने नहीं लिखवाया, यह बाद की रचना है।

२) साखियों में वर्णित अति चमत्कारी प्रसंग: जन्म-साखी की कथाएं अति रोचक हैं व कथा-साहित्य के सभी गुणों पर खरी उतरती हैं, परंतु गुरमति विचारधारा की कसौटी पर पिछड़ जाती हैं। गुरमति विचारधारा उन गहन सिद्धांतों को कहते हैं जिन्हें गुरबाणी के आधार पर एक सहज रूप में जीवन में अपनाया जाता है। यह सिद्धांत गुरबाणी द्वारा प्रमाणित हैं। गुरमति किसी प्रकार से अप्राकृतिक क्रिया अथवा चमत्कारों की आज्ञा नहीं देती। समूचे १४३० पन्नों में मौजूद गुरबाणी में से एक भी पंक्ति ऐसी नहीं मिलती जो किसी प्रकार के चमत्कार को दर्शाए, पर इस जन्म-साखी में वर्णित कई प्रसंग गुरमति विचारधारा के प्रतिकूल हैं। केवल आम प्रसंग ही नहीं कई प्रसंग तो ऐसे हैं जहां स्वयं गुरु नानक साहिब जी को भी ऐसे चमत्कार करते दिखाया गया है जिसे उनकी ही बाणी स्वीकार नहीं

करती, जैसे पेड़ की छाया का स्थिर रहना, सर्प की छाया, खेत हरे करना, मोदीखाने के प्रसंग का चमत्कार, कौडे राखश का कड़ाहा ठंडा करना, कलिजुग से मिलना और संवाद, मच्छ की सवारी, सिधों की कथा में मच्छर बनकर पत्थर के नीचे छुपना, लड़की का लड़का बना देना, दुनीचंद के पिता को लकड़बग्घे के रूप में दिखाना, भाई लहिणा जी को शव खाने का हुक्म देना, शव का मिष्ठान के रूप में रूपांतर, कामरूप में भाई मरदाना जी को जादूगर स्त्रियों द्वारा भेड़ बना लेना आदि साखियां न तो गुरबाणी की कसौटी पर खरी उतरती हैं और न ही आधुनिक विज्ञान की। ऐसी साखियां निश्चय ही किसी ऐसे व्यक्ति की उपज हैं जिसमें गुरु साहिब जी के प्रति श्रद्धा तो थी पर गुरमति की समझ नहीं। साफ बात है कि श्री गुरु अंगद देव जी भी ऐसी साखियों को परवान नहीं कर सकते थे।

सिक्ख पंथ की समस्या उन साखियों को लेकर भी है जो 'अर्ध-ऐतिहासिक' और 'अर्ध-काल्पनिक' हैं या दूसरे शब्दों में 'मिथिहासिक' हैं। सिक्ख इतिहास पूर्णत: इतिहास सम्मत है। उसमें मिथिहास के लिए कोई स्थान नहीं है। अर्ध सत्य तो पूर्ण मिथ्य से भी अधिक घातक होता है। सिक्ख पंथ के लिए चिंता का विषय यह है कि ये साखियां इतिहास के धरातल से उभर कर काल्पनिक चमत्कारों की दुनिया में प्रवेश करती हैं। उदाहरणत: मलक भागो और भाई लालो जी वाली साखी। इस साखी से गुरु नानक साहिब जी ने गुरमति दर्शन का एक महान सिद्धांत दृढ़ करवाया था। सच्चे परिश्रम द्वारा आजीविका का उपार्जन (दसां-नौहां दी कमाई) और शोषण, अतिक्रमण व गरीबमार के पतन-मार्ग का त्याग, जिसमें से भाई लालो जी पहले मार्ग पर चलते हैं और मलक भागो का मार्ग दूसरा है। दोनों ही मार्गों के बारे में खुद गुरु नानक साहिब जी ने बार-बार गुरबाणी में कहा है :

पहला मार्ग :

--घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥
(सलोक म: १, पन्ना १२४५)

--गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥
(सिरीराग म: १, पन्ना २२)

दूसरा मार्ग :

--हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(सलोक म: १ वार माझ की, पन्ना १४१)

--जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(सलोक म: १, वार माझ की, पन्ना १४०)

--बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि ॥
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥
(सूही महला १, पन्ना ७२९)

यह गुरमति सिद्धांत गुरु नानक साहिब जी ने मलक भागो द्वारा गरीबों के चूसे हुए खून द्वारा हुई कमाई से कराए गए ब्रह्मभोज का त्याग कर एक सिदकी, परिश्रमी, ईमानदार व संतोषी सिक्ख भाई लालो जी की कोदरे की रोटी खाकर आम लोगों को दृढ़ कराया। यह अपने आप में एक क्रांतिकारी कदम था, पर इस जन्म-साखी में इसी प्रमाणित साखी को आगे बढ़ाते हुए गुरु नानक साहिब जी के हाथ में रोटियों से दूध और खून निकालने का प्रसंग जोड़ दिया गया। जो गुरदेव स्वयं चमत्कारों का विरोध करते हैं वे ही ऐसे चमत्कार करते हुए दिखाए गए हैं। यह आम सिक्ख को भी साखी के मर्म को समझने के स्थान पर चमत्कारों की ओर धकेलता है।

गुरु नानक साहिब जी ने पैदल, दुख, तकलीफ, भूख, प्यास, वर्षा, अंधड़, धूप, शीत सहते हुए सारे संसार का भ्रमण किया। आज के डेरेदारों की तरह आसन लगाकर 'भक्तों' को अपने पास नहीं बुलाया वरन् 'नाम' के 'महाप्रसाद' को जन-जन तक स्वयं पहुंचाया। वहीं इस जन्म-साखी में एक और चमत्कारी बात का उल्लेख कई बार मिलता है--*"फिर बाबा अखिआं मीट कर अंतरधिआन होआ तो मरदाने किआ देखिआ, छिन में सौ जोजन बतीत होइ गए हैं"* आदि ऐसे चमत्कारों को गुरु नानक साहिब जी कभी प्रवानित नहीं करते। पता नहीं कथा में रोचकता लाने हेतु क्यों उनके इस महान संघर्ष को नजरअंदाज कर दिया, जिसके लिए भाई गुरदास जी कहते हैं :

रेतु अक्कु आहारु करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई। (वार १:२४)

अत: ऐसी मिथिहासिक घटनाओं को ग्रहण नहीं किया जा सकता।

३) 'नानक' पद के प्रयोग वाले ऐसे शबद जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज नहीं हैं:

परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ (सलोक महला ३, पन्ना ६४७)

महापुरुष सदा जन-कल्याण में ही अपने वचन मुख से उचारते हैं और गुरु नानक साहिब जी जैसे महापुरुष ने तो सारा जीवन धरत लुकाई को सोधने के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने कभी किसी शबद को केवल साहित्य-रचना के लिए नहीं रचा वरन् यह तो उनका अनुभव-ज्ञान था जो शबदों के रूप में संसार के सामने आया। स्वयं यह जन्म-साखी भी इस बात की साक्षी है और अनेक प्रसंग ऐसे मिल जाएंगे जहां गुरु नानक साहिब जी कह उठते हैं--"मरदानिआ! रबाब वजा, बाणी आई ए।" स्पष्ट है कि गुरदेव ने बहुत सारी बाणी का उच्चारण व्यवहारिक प्रसंगों में किया है, जैसे सैदपुर में बाबर के आक्रमण के समय शबदों का उच्चारण, जनेऊ प्रसंग में उच्चारित बाणी आदि। गुरु नानक साहिब जी की सारी बाणी गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है। वास्तव में बाणी-संग्रह करने का महान कार्य तो गुरु नानक साहिब जी ने ही शुरू किया व अपनी उदासियों में निभाया भी। बाकी गुरु साहिबान को तो बाणी का यह संग्रह गुरतागद्दी के साथ मिलता गया। अब जब गुरदेव पिता बाकी महापुरुषों की बाणी भी इतनी शिद्दत से संग्रहित कर रहे थे तो अपनी भी सारी बाणी उन्होंने स्वयं लिखवाकर सुरक्षित की होगी। जाहिर है कि गुरु नानक साहिब जी द्वारा उच्चारित सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है।

अब इस जन्म-साखी में प्रमाणित बाणी के साथ-साथ ढेरों ऐसे शबद भी मौजूद हैं जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज नहीं हैं। कुछ विद्वान इसे कच्ची बाणी कहकर अपना उत्तरदायित्व समाप्त कर लेते हैं, पर यह बात इतनी सरल नहीं है, यह इस जन्म-साखी का सबसे खतरनाक पक्ष है। यह केवल काव्य रचना नहीं है। यहां दो शबद या पद मिलते हैं उन्हें शत-प्रतिशत गुरु नानक साहिब जी ने नहीं उचारा, नहीं तो वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अवश्य दर्ज होते। (क्योंकि इस जन्म-साखी के कृतित्व को यदि भाई बाला जी का मान लिया जाए तो बात साफ है कि गुरु अंगद देव जी ने इस जन्म-साखी को भी बाणी के संग्रह के साथ गुरु अमरदास जी को सौंपा होता और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना के समय गुरु अरजन देव जी के पास यह अवश्य ही होती और वे इन शबदों को दर्ज भी करते, परंतु ऐसा नहीं है।)

इन शबदों के अंत में 'नानक' पद का प्रयोग केवल चौंकाने वाला ही नहीं वरन् उससे अधिक घातक भी है। 'नानक' पद का प्रयोग तो किसी भी गुरु साहिब ने स्वयं गुरतागुद्दी प्राप्त होने से पहले नहीं किया, जिसके आधार पर पंथ ने गुरु अरजन देव जी के शबद *"मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥"* के साथ लाहौर से चिट्ठी भेजने वाली साखी का खंडन किया था। तब यह कौन है जो इतने धड़ल्ले से इस नाम का प्रयोग कर बाणी में घुसपैठ का प्रयास कर रहा है? केवल इतना ही नहीं, इन शबदों के सिरलेख में रागों का नाम देकर साथ ही 'महला १' का भी प्रयोग किया गया है। उदाहरणत: सालसराय जौहरी की साखी सिक्ख इतिहास की अति महत्वपूर्ण साखी है, जहां सच्चा जिज्ञासु, सच्चे ज्ञान को एक जौहरी की भांति परख लेता है और अपना सर्वस्व उसकी प्राप्ति के लिए अर्पण कर देता है, अपने अहं को गुरु-चरणों पर तुच्छ समझता है। खुद गुरु नानक साहिब जी ने सोरठि राग में अपने प्रियतम की प्राप्ति के लिए उस मध्यस्थ के प्रति यह शबद उचारा था:

तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥
सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ *(वडहंसु म: १, पन्ना ५५८)*

अब इस साखी में तीन शबद मिलते हैं, जिनका सिरलेख, पहली पंक्ति और 'नानक' पद वाली पंक्ति यहां दी गई है :

(१) राग माझ

--लालो लाल उपाइआ लालो लाल दिसंन। . .
--नानक एक आराधीऐ दुख न लगै कोइ। . . .

(२) राग मारू

--प्रीति पकवान सों भोजन कहीऐ। . . .
--नानक भगतां दे संग मिल के उचे पद ठहिराना। . . .

(३) राग बिलावल

--सतिगुर दाता नाम का दीने खोल कपाट। . . .
--सालस बिनवै बेनती तुम सुन लेहु करतार। . . .

ये शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज नहीं हैं। ऐसे अनेकानेक शबद इस जन्म-साखी में मौजूद हैं। लेख अधिक विस्तृत न हो जाए इसलिए सभी का विवरण देना असंभव है।

उपरोक्त वर्णित कारणों के अतिरिक्त भी कई छुट-पुट कारणों पर अभी तक पंथ में विवाद या भ्रम बरकरार है। इस मसले को विद्वानों, लेखकों, तत्व-चिंतकों व प्रत्येक गुरु नानक-नाम लेवा को मिलकर ही सुलझाना होगा।

नि:संदेह पंथ के विद्वानों व चिंतकों को इस विषय पर अवश्य अब कुछ ठोस करने की आवश्यकता है, क्योंकि कहीं ऐसा न हो जाए कि मिथिहास के भ्रम में हम इतिहास का तिरस्कार कर दें या इतिहास को स्वीकार करते हुए गुरमति सिद्धांतों का उल्लंघन करने वाले तथ्यों को पंथ के समक्ष प्रस्तुत कर दें। अत: निर्णय आवश्यक है।

बहरहाल हमें गुरबाणी के इस महान सिद्धांत से सेध लेकर इस जन्म-साखी के सकारात्मक तथ्यों को नहीं भूलना चाहिए :

साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥
(सूही महला १, पन्ना ७६६)

जन्म-साखी 'पंज बी. ४०' के महानायक : श्री गुरु नानक देव जी

-डॉ. निर्मल कौशिक*

जन्म-साखी पंजाबी साहित्य की अत्यंत विलक्षण विधा है। इसमें किसी महापुरुष अथवा महानायक के जीवन के अंतर्साक्ष्यों एवं बहिर्साक्ष्यों द्वारा उसके जीवन और व्यक्तित्व का रेखाचित्र प्रस्तुत किया जाता है। जन्म-साखी परंपरा ऐतिहासिक तथ्यों, तार्किकता और रचनात्मकता का मिश्रण कही जा सकती है। श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के आदर्शों को केंद्रित कर जन्म-साखीकारों ने साहित्यिक और ऐतिहासिक तत्वों का एक ऐसा दस्तावेज तैयार किया जो विश्वसनीय और सार्थक है। इतना ही नहीं, तत्कालीन परिस्थितियों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानने हेतु एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी इसी परंपरा ने तैयार की है। परंपरागत रूप से विधिवत रचित इन साखियों के माध्यम से ही भाषा के स्वरूप और विधाओं के विकास के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। साखीकार अपने युग और परिवेश को साथ लेकर चलता है, जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्राचीन पंजाबी गद्य का आरंभ इसी जन्म-साखी परंपरा से हुआ है। जन्म-साखी विधा गद्य-साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। अनेक साखीकारों ने थोड़े-बहुत परिवर्तन कर नवीनतम जन्म-साखी की रचना कर श्री गुरु नानक देव जी को उस युग का महानायक माना है।

'साखी' शब्द के अर्थ के विषय में महान कोश का कर्त्ता लिखता है कि 'साखी' (संज्ञा) इतिहास अथवा कथा जो आंखों देखी कही गई हो, भाव सिखिआ, नसीहत।

जन्म-साखी साहित्य का कोशगत अर्थ जानने के लिए 'जन्म' और 'साखी' को अलग-अलग जानना होगा। कोश 'हिंदी शब्द सागर' के अनुसार जन्म (संज्ञा-पुलिंग), उत्पत्ति, पैदाइश (जन्म-तिथि, जन्म-भूमि, जन्म-दाता, जन्म-नाम, जन्म-दिन)। 'मानक हिंदी कोश' में 'साखी' शब्द का अर्थ इस प्रकार है--'साखी' (पुलिंग) साक्षिण, गवाह; मुहावरा--'साखी पुकारना', 'गवाही देना'। इस प्रकार अगर हम देखें तो 'साखी' शब्द सामान्य व्यवहार का शब्द है, अतः 'साखी' शब्द का अर्थ गवाही प्रस्तुत करना होता है। 'साखी' रचयिता अपने नायक के जीवन से सम्बंधित घटनाओं को अंतर्साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य के आधार पर प्रस्तुत करने हेतु प्रमाणों को 'साक्षी' या 'साखी' के रूप में जुटाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सुरजीत सिंघ (हांस) के अनुसार 'साखी' केवल लौकिक प्रमाण ही नहीं जुटाती अपितु लौकिक जगत में दैवी शक्ति के दखल की गवाही भी प्रस्तुत करती है। मध्यकालीन साहित्य के अंतर्गत प्रकृति के नियमों को भंग कर लोगों में नायक के प्रति श्रद्धा-भाव उत्पन्न करना था। तत्कालीन साखी-लेखकों ने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को केंद्रित कर उनके जीवन में घटित करामातों के आधार पर उन्हें देव-पुरुष बना दिया। साखी-लेखकों की धारणा के अनुसार जिसकी करामात जितनी बड़ी होती है उसकी आध्यात्मिक शक्ति भी उतनी बड़ी होती है। 'साखी' साहित्य की लोकप्रियता इस कद्र बढ़ती गई कि गुरु नानक साहिब जी के जीवन

*अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सरकारी बृजेन्द्रा कालेज, फरीदकोट-१५१२०३ (पंजाब)।

पर आधारित अनेक साखियां रची गईं। इस विषय में स. शमशेर सिंघ अशोक का कथन दृष्टव्य है--पहले-पहल पुरातन जन्म-साखी में केवल १५-२० साखियां ही थीं लेकिन बाद में इनकी गिनती २५ और फिर लगभग ३० हो गई। फिर क्या था, अनेक अन्य लेखकों ने भी जन्म-साखियां लिखनी आरंभ कर दीं। अपने नायक गुरु नानक साहिब जी के जीवन के उन प्रभावशाली तथ्यों, घटनाओं, करामातों का चित्रण कर उन्हें महानायक बनाने का प्रयास निश्चय ही स्तुत्य है। क्रमानुसार इन जन्म-साखियों को हम इस प्रकार जान सकते हैं--'पुरातन जन्म-साखी', 'भाई बाले वाली जन्म-साखी', 'मिहरबान वाली जन्म-साखी', 'आदि साखीआं', 'पंज बी. ४० जन्म-साखी' तथा 'भाई मनी सिंघ वाली जन्म-साखी'। इनके अतिरिक्त और भी अनेक साखियां उपलब्ध हैं। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हरमहेन्द्र सिंघ (बेदी) ने अपनी पुस्तक "गुरमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन" में भाई बिधी चंद वाली जन्म-साखी और भाई मनी सिंघ वाली जन्म-साखी को भी सम्मिलित किया है। जन्म-साखी साहित्य ने पंजाबी गद्य साहित्य को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस जन्म-साखी परंपरा पर पूर्ववर्ती गद्य का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रो. राजबीर कौर ने 'पुरातन अते नवीन पंजाबी वारतक' में इस जन्म-साखी परंपरा पर सामी और परंपरागत पौराणिक प्रभाव को स्वीकारते हुए कहा है--"इन साखियों के विवरण सामी संस्कृति में सम्बंधित साहित्य से प्रभावित मालूम पड़ते हैं। परन्तु सामी प्रभाव की तुलना में जन्म-साखियों की रचना पर पौराणिक प्रभाव अधिक स्पष्ट दिखाई देता है।" जन्म-साखी साहित्य में गुरु नानक साहिब जी को एक ऐतिहासिक पुरुष के रूप में नहीं अपितु उनके जन्म को एक अवतार के रूप में चित्रित किया गया है। उदाहरणस्वरूप पुरातन जन्म-साखी का उदाहरण दृष्टव्य है:

"... बाबा नानक जनमिआ, वैसाख माह त्रितीया, चानणी रात, अंम्रित वेला, पहिर रात रहिंदी कू जनमिश। अनहद शबद परमेश्वर के दरबार वाजे, तेतीस करोड़ देवतिआं नमसकार कीआ। चौसठ योगिनी, इकवंजा बीर, छिआं जतीआं, चौरासी सिधां, नौंवां नाथां नमसकार कीआ। जो बड़ा भगत जगत निसतारण को आइआ। इसको नमसकार कीजिए जी।"

इस परंपरा का निर्वाह अनेक साखीकारों ने किया और पंजाबी गद्य साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। किसी महापुरुष के जीवन के आध्यात्मिक अनुभवों को संकलित कर उसे जीवन-वृत्त के तथ्यों सहित प्रस्तुत कर जन्म-साखी परंपरा को एक नया स्वरूप प्रदान किया गया। पंजाबी साहित्य की एक गद्यात्मक विधा के रूप में गुरु नानक साहिब जी की जीवन-गाथा को क्रमबद्धता प्रदान कर प्रमाणिक जीवन-वृत्तांत प्रस्तुत करना ही जन्म-साखी रचना का उद्देश्य है। इन साखियों की गद्यात्मकता का स्वरूप खालिस पंजाबी नहीं है।

डॉ. हरमहेन्द्र सिंघ (बेदी) के अनुसार ये जन्म-साखियां पंजाबी गद्य का प्रारंभिक रूप प्रस्तुत करती हैं परन्तु इनकी भाषा शुद्ध पंजाबी नहीं है। इनमें पुरानी हिंदी का भी पर्याप्त अंश है और यह अंश उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। अत: इनमें भाषा का मिश्रित रूप मिलता है।

जन्म-साखी श्रृंखला के अन्तर्गत बी-४० जन्म-साखी का सम्पादन प्रो. पिआर सिंघ, जो गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के पंजाबी भाषा साहित्य और सभ्याचार विभाग के निदेशक थे, द्वारा किया गया है। यह पुस्तक

जिसका नाम "जन्म-साखी श्री गुरु नानक देव जी" रखा गया है, इंडिया आफिस लायब्रेरी (लंदन) की पांडुलिपि बी. ४० की नकल है। यह पांडुलिपि कोलब्रुक वाली जन्म-साखी (पुरातन जन्म-साखी) पंज बी. ६ से भिन्न है। यह पांडुलिपि बीसवीं सदी के आरंभ में लंदन पहुंची। इसमें कुल ५७ साखियां हैं। इस जन्म-साखी की विशेषता यह है कि इसमें हर साखी के साथ चित्र भी बनाए गए हैं। यह जन्म-साखी अपनी प्रमाणिकता के लिए भी प्रसिद्ध है। इसमें लेखक का नाम, लेखनकर्त्ता का नाम तथा रचना-काल, चित्र बनाने वाले का नाम व सबका पता भी दर्ज है।

इस पांडुलिपि की खोज की कहानी भी अद्भुत है। प्रसिद्ध शोधकर्त्ता स. जी. बी. सिंघ (कर्त्ता प्राचीन बीड़) जो "साखीआं दी हकीकत" विषय पर शोध कर रहे थे, का ध्यान इस पांडुलिपि की ओर गया। बीसवीं सदी के पांचवें दशक में एक बार आप लंदन गए। वहां प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों की खोज करते-करते आपकी नजर इस पांडुलिपि पर पड़ी। आपकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। आपने प्रसिद्ध विद्वान प्रो. सरदार प्रीतम सिंघ (पटियाला) को इस अद्भुत खोज की सूचना दी। पत्र पाकर प्रो. प्रीतम सिंघ की जिज्ञासा जागी और तत्कालीन आर्काईज और पंजाबी विभाग, पटियाला के निदेशक डॉ. गंडा सिंघ को इस जन्म-साखी की फोटो स्टेट कापी प्राप्त करने के लिए कहा। प्रो. प्रीतम सिंघ के निवेदन को स्वीकार करते हुए इस पांडुलिपि की एक फोटो स्टेट कापी बीसवीं सदी के छठे दशक में पंजाबी विभाग, पटियाला के लिए मंगवा दी। इस जन्म-साखी की प्राचीनता के विषय में आलोचक अभी तक सर्वसम्मति नहीं बना सके। जो भी हो पुनरावृत्ति के बावजूद भी प्रत्येक साखी अपनी मौलिकता की छाप पाठकों के मन पर छोड़ती है। "पंज बी. ४०" के नाम से जानी जाने वाली इस जन्म-साखी का जन्म-साखी परंपरा में विशेष स्थान है। अन्य जन्म-साखियों की तरह ही इस साखी के महानायक भी गुरु नानक साहिब जी ही हैं। इसमें बनाए गए चित्र भी चित्रकला का उत्कृष्ट नमूना हैं और गुरु नानक साहिब के महानायकत्व की पुष्टि करते हैं। प्रसिद्ध आलोचक प्रो. ब्रहमजगदीश सिंघ के अनुसार, "भाषा तथा बनावट की दृष्टि से पुरातन जन्म-साखी, आदि साखीआं तथा मिहरबान वाली जन्म-साखी में इतनी समानता है कि इनके पीछे किसी एक ही स्रोत होने का आभास होता है।"

हमारी विषयगत वर्णित जन्म-साखी "पंज बी. ४०" के लेखक श्री दयाराम अबरोल तथा चित्रकार श्री आलम चंद की सूचनाएं जन्म-साखी में ही उपलब्ध हैं। इस साखी से यह भी पता चलता है कि कपूरथला से ११ किलोमीटर दूर एक सुर्खपुर नामक गांव में इसका रचना-कार्य हुआ। ऐसा लगता है कि साखी-साहित्य-रचना के और भी कई केन्द्र रहे होंगे।

जन्म-साखी "पंज बी. ४०" में वर्णित महानायक गुरु नानक साहिब जी का व्यक्तित्व का एक अवतारी महापुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। हिंदू और मुस्लिम दोनों ही उन हृदय की गहराइयों से सत्कार करने लगे थे। गुरु नानक साहिब जी सबके अपने थे। आपने तत्कालीन आडंबरों और सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए प्रचलित कर्मकांड-परंपरा से लोगों को मुक्त किया। कर्मकांडों से आम आदमी अंधकार की गर्त में गिरता जा रहा था। गुरु नानक साहिब ने संस्कृत भाषा के स्थान पर जन-भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने की परंपरा का सूत्रपात किया, सांसारिक विषय-विकारों में उलझने की अपेक्षा आध्यात्मिक ज्ञान

प्राप्त करने पर बल दिया। इसका उदाहरण हमें प्रस्तुत जन्म-साखी में स्थान-स्थान पर उपलब्ध होता है।

'पंज बी. ४०' जन्म-साखी का प्रतिपाद्य मुख्य रूप से गुरु नानक देव जी की गौरव-गाथा को प्रस्तुत करना है, अत: गुरु जी के आजीवन घटनाक्रम को बिम्बात्मक शैली में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। बचपन से ही गुरु नानक साहिब जी ईश्वरोन्मुखी हो गए थे। 'खेत हरिआ कीता', 'बिरछ दी छां ना फिरी', 'पांधे नालि साखी' में गुरु जी के कौतुक वर्णित हैं। आपने भैंसें चराते हुए भी अपनी भक्ति को निर्विघ्न जारी रखा। इस भक्ति के प्रभाव के कारण ही भैंसों द्वारा लोगों के खाए गए चारे को फिर से हरा-भरा लहलहाता हुआ कर दिया था। कुछ साखियां 'पंज बी. ४०' में ऐसी भी हैं जिनमें गुरु जी को भक्त कबीर जी, श्री गोरख नाथ जी, श्री शेख सरफ आदि से संवाद (गोष्ठियां) करते हुए दिखाया गया है। एक गोष्ठि में तो गुरु नानक साहिब ने उस निरंकार (ईश्वर) से भी संवाद किया। इस गोष्ठि में ही गुरु नानक साहिब को उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर ईश्वर ने यह वरदान दिया कि *"नानक जाहि तेरा पंथ चलेगा। उन का कहिणा पैरी पवणा सतिगुरु होइआ। तू नानक है तेरा पंथ चलेगा। . . . नानक पंथी होहिगे। त्रै वसतु द्रिड़ावणिआं अपने पंथ कउ नामु-दानु-इसनानु। ग्रिहसथ विच अलेप रहना। नानका गल मेरे मारग की इहु है दुखावना कोई नाही। धरमु महि रहिणा। अपना आप बुझावना लखावना नाही। सभ ते आप कउ नीच सदावना। संजम करना। घालि कमाइ खाणा। मेरे अरथ देना, सतिवादी होना।"*

जन्म-साखी लेखन-शैली की दृष्टि से भी 'पंज बी. ४०' की यह अन्य विशेषता है कि इसके साखीकार ने अपने नायक गुरु नानक साहिब के व्यक्तित्व को एक आध्यात्मिक महापुरुष के रूप में उभारा है। गुरु नानक साहिब की विचारधारा उनकी गुरबाणी की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करने वाली है। गुरु नानक साहिब के बाल्यकाल की घटनाओं से ही यह बात प्रमाणित हो जाती है कि वे अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए गुरबाणी के संदर्भ में प्रस्तुत करते थे। एक बार जब उनके पिता श्री महिता कालू जी उन्हें खेती का काम सौंपने की बात करते हैं तो गुरु जी उत्तर देते हैं कि यह काम तो उन्होंने पहले ही काफी समय से आरंभ कर रखा है। जब उनके पिता को गुरु नानक साहिब की बात समझ में नहीं आई तो उन्होंने स्पष्ट करने के लिए गुरबाणी की शैली में समझाया। 'जन्म-साखी पंज बी. ४०' के अनुसार, *"तब नानक आखिआ पिता जी असां उह खेती वाही है तू आपे सुणेगा। ता बाबे इकु सबदु सोरठि विच उठाइया। राग सोरठि ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ (खेती, वणज, सौदागरी में से)*

'जन्म-साखी पंज बी. ४०' में गुरु नानक साहिब के जीवन को विशिष्ट गुणों से अलंकृत कर प्रस्तुत किया गया है। गुरु नानक साहिब के साथ घटित अनेक घटनाओं में गुरु नानक साहिब को अत्यंत सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है। संवाद करते समय अन्य पात्र उनके समक्ष स्वत: नत्मस्तक हो जाते हैं। उनके स्वभाव और स्वरूप में ऐसा आकर्षण था कि उनके सामने दुष्ट और अत्याचारी तो टिक ही नहीं सकता था। उनका उदार स्वरूप बुरे लोगों का भी भला ही करता है। 'दैंत नूं तारिआ' वाली साखी में दैंत स्वत: ही गुरु नानक साहिब जी के व्यक्तित्व और वार्तालाप से इतना प्रभावित

हुआ कि वह स्वयं गुरु जी के चरणों में आ गिरा। जन्म-साखीकार 'पंज बी. ४०' के अनुसार:

"बाबे डिठा जि देउ आइआ असमान जेडा होइ के आइआ। उहु लोक सहमि गइआ तां बाबे उस देउ वलि डिठा। बाबे दे देखणे नालि इउ उडिआ जिउ वरोले विच खंब उडदा है। तउ उडि के फिरदा फिरदा बाबे दे अगे आइ डिगिआ पर सुधि कछु रही उस नाही। ता बाबा मिहरबानु होइआ।"

भले ही 'पंज बी. ४०' जन्म-साखी से पूर्व अनेक जन्म-साखियां रची जा चुकी थीं तो भी इस जन्म-साखी का अपना विशेष स्थान है। कुल ५७ साखियां गुरु नानक साहिब के आजीवन आचार-व्यवहार और धर्म-प्रचार पर केंद्रित हैं। साखीकार ने अत्यंत निष्पक्ष भाव से गुरु जी के जीवन को प्रेरक और मार्गदर्शक के रूप में बिंबित किया है। संवाद, क्रमबद्धता, मौलिकता, भाषा और शैली, अलंकारिकता एवं प्रमाणिकता की दृष्टि से यह जन्म-साखी अन्य जन्म-साखियों से अलग प्रतीत होती है। गद्य का स्वरूप भी निखर कर सामने आया है। सामान्य जन-भाषा में रचित जन्म-साखी अपने युग की सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक उथल-पुथल को चित्रित करने में सक्षम है।

'पंज बी. ४०' जन्म-साखी ने गुरु नानक साहिब के महानायकत्व को तो चरितार्थ किया है, साथ ही साहित्यिक दृष्टि से भी इसकी देन कम नहीं है। इस जन्म-साखी के रचयिता ने प्रसंगानुकूल भाषा और शैली का प्रयोग किया है जो अत्यन्त अनूठा बन पड़ा है। इस साखी के संपादक डॉ. पिआर सिंघ के अनुसार इसमें गद्य की तीन मिश्रित शैलियां उपलब्ध हैं। पहली निरमले और उदासी संतों की, दूसरी संस्कृत एवं ब्रज भाषा की, तीसरी हिंदी मिश्रित पंजाबी भाषा की।

अंत में हम कह सकते हैं कि जन्म-साखी साहित्य परंपरा में अन्य साखियों के समान ही 'पंज बी. ४०' जन्म-साखी में भी गुरु नानक साहिब के जीवन की विलक्षण घटनाओं द्वारा उनके महानायकत्व को सिद्ध करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। अत: 'पंज बी. ४०' के महानायक गुरु नानक साहिब को हम नमन करते हैं।

सिक्ख इतिहास के पंजाबी स्रोत

(पृष्ठ १० का शेष)

जोध सिंघ (ज्ञानी) : श्री निरंकारी हुलास
भाई काहन सिंघ नाभा: गुर शबद रतनाकर, महानकोश
कंकण कवि : दस गुर कथा
करतार सिंघ ज्ञानी : निरंकारी जोत
स. केसर सिंघ मुलतानी: बीबी नानकी जी दा जीवन
भाई कुइर सिंघ : संत प्रताप
भाई मोती राम : बर तहिवील बाबा नानक जी दी, जनम पत्तरी गुरू नानक
रतन सिंघ (पंडित) : श्री गुरू नानक चंद्रिका
भाई साहिब सिंघ म्रिगंद: श्री गुर रतनमाला
संत रेन : श्री गुरू नानक विजया, गुरु नानक बोध
भाई संत सिंघ छिब्बर : जन्म साखी श्री गुरु नानक शाह जी की
संत सिंघ (ज्ञानी) : श्री गुर चरित्र प्रभाकर
संत सिंघ (मुंशी) : गुरू नानक हुलास
भाई सीता राम : गुरू बंसावली
भाई वीर सिंघ : श्री गुरु नानक चमतकार

सिक्ख भावनाओं की तर्जमानी करने वाले स्रोत 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में गुरु नानक साहिब संबंधी विवरण

*-डॉ. जोगेश्वर सिंघ**

'श्री गुर पंथ प्रकाश' का लेखक भाई रतन सिंघ भंगू १८वीं सदी के प्रसिद्ध सिक्ख जरनैल सरदार मताब सिंघ मीरांकोटिये का पौत्र और करोड़सिंघिया मिसल के सरदार शाम सिंघ का दौहित्र था। उसके दादे के और नाने के परिवारों की सिक्ख पंथ के इतिहास में भूमिका अथवा योगदान से लगभग प्रत्येक सिक्ख को जानकारी है। सरदार मताब का पुत्र और स. रतन सिंघ भंगू के पिता सरदार राय सिंघ खालसा दल में शामिल होकर युद्धों में भाग लेते रहे थे। सरदार रतन सिंघ भंगू की माता करोड़सिंघिया मिसल के सरदार शाम सिंघ की पुत्री थी। लैपल ग्रिफिन के अनुसार सरदार राय सिंघ ने अमृतसर के नजदीक गांव मीरांकोट में एक गढ़ी भी बना ली थी। सरदार राय सिंघ के चार पुत्र हुए जिनमें से भाई रतन सिंघ तीसरे स्थान पर था। भाई रतन सिंघ भंगू को विरासत में कुछ गांवों की सरदारी मिली जिसका प्रसंग लैपल ग्रिफिन ने उसको पंजाब के प्रसिद्ध तथा चुनिंदा खानदानों में गिनकर अच्छी प्रकार से प्रकट किया है।

भाई रतन सिंघ भंगू सूझ-बूझ वाले गुणवान व्यक्ति थे तथा फारसी के अच्छे विद्वान थे। सन् १८०९ ई में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कर्नल डैविड अखतर लोनी के अधीन लुधियाना में अपनी एजेंसी कायम कर ली थी। इसी समय भाई रतन सिंघ भंगू का संपर्क लुधियाना एजेंसी के अंग्रेज अधिकारी कप्तान मरे के साथ हुआ। कप्तान मरे ने मौलवी बूटे शाह को सिक्ख पंथ की उत्पत्ति तथा राज-भाग प्राप्त करने के उपलक्ष्य में एक पुस्तक लिखने के लिए नियुक्त किया हुआ था। भाई रतन सिंघ भंगू को बूटे शाह के कट्टर होने की आशंका थी जो बात उसने कैप्टन मरे को बताई। भाई रतन सिंघ भंगू की दलील ने कप्तान मरे को कायल कर लिया। उपरांत कप्तान मरे भाई रतन सिंघ भंगू से सिक्ख इतिहास की जानकारी लेने लग पड़ा।

'श्री गुर पंथ प्रकाश' में भाई रतन सिंघ भंगू ने सिक्ख इतिहास के लगभग १८३ प्रसंगों अथवा साखियों को कविता का रूप देते हुए व्यक्त किया है। इनमें से लगभग तीस साखियां गुर-इतिहास के साथ संबंधित हैं जिनमें श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दक्खण अथवा दक्षिण यात्रा तक का विवरण अंकित किया गया है। शेष प्रसंगों में सिक्ख इतिहास के अट्ठारहवीं सदी के समय का वर्णन है, जिसमें मुगलों और अफगानों द्वारा सिक्खों पर जुल्म तथा कष्ट ढाने, पंथ-विरोधी ताकतों, शहीदियों, जंगों-युद्धों के लिए खालसा दल का संगठन, पंजाब में सिक्ख राज्य की सत्ता की स्थापना आदि का विवरण है।

कविता की दृष्टि से 'श्री गुर पंथ प्रकाश' कोई उच्च कोटि का नमूना प्रस्तुत नहीं करता। कुछ एक छंदों की काव्य-अभिव्यक्ति अत्यंत साधारण है। काव्य-उड़ानों की बजाय इतिहास वर्णन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है। अधिकतर चौपाई और दोहरे छंदों का प्रयोग किया गया है, परंतु कहीं-कहीं सोरठा, कुंडलियां,

***गांव: नशहरा, मजीठा रोड, जिला श्री अमृतसर*

सवैया, झूलना, पउड़ी, अड़िल और कबित्त का भी प्रयोग किया गया है। अपने युग के दूसरे समकालियों के विपरीत भाई रतन सिंघ भंगू ने पंडताऊ भाषा, ब्रज भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बनाया। साधारणत: प्रसंग की भूमिका के तौर पर आरंभ में दोहरे को सुसज्जित किया गया है। इसी प्रकार निष्कर्ष के रूप में साखी के अंत में दोहरे की मुहर-छाप लगाई है। प्रसंग में आवश्यकतानुसार उप-प्रसंग बयान करने के लिए चौपाइयों के मध्य दोहरे अंकित किये हैं। काव्य-शैली की सरलता और विभिन्नता के कारण लेखक जनसाधारण के साथ संपर्क कायम करके उस तक अपना विचार संचारित करने में सफल हुआ है।

'श्री गुर पंथ प्रकाश' को रचने के लिए कर्त्ता ने लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के स्रोतों का प्रयोग किया है। लेखक को सिक्ख इतिहास के कलासकी साहित्य के अतिरिक्त हिंदू मिथिहास की भी पर्याप्त जानकारी थी। भाई रतन सिंघ भंगू ने गुर-इतिहास के लिए मुख्यत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दसम ग्रंथ, भाई गुरदास जी की रचनायें, जन्म-साखी परंपरा तथा गुर बिलास पातशाही दसवी कृत भाई सुक्खा सिंघ को आधार बनाया है। बाबा बंदा सिंघ बहादर तथा उसके बाद वाले इतिहास को वर्णन करने के लिए लेखक ने मौखिक इतिहास का सहारा लिया है। लेखक का परिवार सिक्ख-संघर्ष का मूलिक साक्षी था। मौखिक इतिहास के प्रयोग के बारे में जानकारी देता हुआ लेखक लिखता है:

अब मैं कहों सिंघन की साखी।
जिह बिध बडन असाडन आखी।
और पुरातन ते भी सुनी।
हुते जु बिरध सिख बहु गुनी ॥२॥

गुरु साहिब के इतिहास का जिक्र करते हुए लेखक जन्म-साखियों, गुर बिलास आदि के बारे में चर्चा भी करता है। स्पष्ट करता हुआ लेखक लिखता है कि यदि किसी ने गुर-इतिहास के बारे में और जानकारी लेनी है तो उसको अन्य स्रोतों को भी देख-खोज लेना चाहिए।

इस विचाराधीन खोज-कार्य के लिए डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों) द्वारा संपादित 'श्री गुर पंथ प्रकाश' को आधार बनाया गया है। सर्वप्रथम इसको भाई वीर सिंघ ने 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के शीर्षक अधीन संपादित किया था। उपरांत सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने डॉ. जीत सिंघ सीतल द्वारा संपादित संस्करण मुद्रित किया, परंतु यहां डॉ. बलवंत सिंघ द्वारा संपादित 'श्री गुर पंथ प्रकाश' को ही अपनी खोज अथवा विचार का आधार बनाया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी के उपलक्ष्य में चर्चा करने से पूर्व 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में भाई रतन सिंघ भंगू ने दोहरे में कप्तान मरे की तरफ से प्रश्न के उत्तर के रूप में लिखा है कि गुरु नानक साहिब का प्रकाश (जन्म) किस वर्ष में हुआ, किस देश और किस जगह हुआ। भाई रतन सिंघ बताता है कि गुरु साहिब का जन्म १५२६ वि. में राय भोय की तलवंडी में हुआ जो कि लाहौर और कसूर के नजदीक है। गुरु साहिब जी की माता का नाम त्रिपता जी और पिता का नाम श्री कालूदास था। परंपरागत विधि में लिखते हुए गुरु साहिब के जन्म को ऊंची कुल, ऊंचे योग, नक्षत्र, रास, दिन और अउसर के साथ जोड़ा गया है। सभी देवी-देवताओं आदि को गुरु नानक साहिब के जन्म के समय खुशी व्यक्त करते दर्शाया गया है, साथ ही माता-पिता का प्रताप भी बढ़ने की चर्चा की गई है। जहां पंडित को बुला कर टेवा लिखने की चर्चा की गई है वहां साथ ही उसके द्वारा गुरु नानक साहिब के प्रतापी होने की और उनको अवतार बताने की बात की गई है।

गुरु नानक साहिब के 'अवतार' और 'पातशाह' आदि होने के बारे में चर्चा लोगों में उनके जन्म समय से ही प्रचलित हो गई थी। लिखा है कि गुरु नानक साहिब के दर्शन कोई जिस आशा के साथ करता उसकी वही आशा पूर्ण हो जाया करती थी। इस प्रकार आप जी का यश सभी ओर फैलना शुरू हो गया था। आप जी को अपने साथी बालकों को भी परमात्मा की भक्ति की तरफ जोड़ने के लिए 'सति नामु करता पुरखु' और 'सति करतार' आदि का जाप कराते बयान किया गया है। आप जी के बालपन की चर्चा को थोड़े शब्दों में समाप्त करने के लिए भाई रतन सिंघ भंगू यह बताते हैं कि यदि अधिक बयान करूंगा तो ग्रंथ के बड़े आकार के हो जाने के डर के कारण टूक मात्र संकेत देना ही उचित समझा गया है। जन्म-साखियों में प्राप्त साखियों के अनुसार केवल टूक मात्र लिखा है कि कैसे गुरु नानक साहिब पर सांप ने छाया की, खेती उजाड़ कर पुनः जमाई तथा जैसे राय बुलार ने सब कुछ देखा और फिर वह गुरु साहिब का श्रद्धालु हुआ, इसकी चर्चा भी की गई है।

गुरु नानक साहिब द्वारा विद्या ग्रहण करने के बारे में चर्चा करते हुए लिखा है कि जब गुरु नानक साहिब ने होश संभाली अथवा आप जी आयु में कुछ बड़े हुए तो आप जी को पांधे के पास पढ़ने के लिए भेजा गया। पांधे के साथ जो वार्ता हुई भाई रतन सिंघ के लिखने के अनुसार उन्होंने कैप्टन मरे को सारी बयान कर दी परंतु लिखी नहीं इसलिए कि ग्रंथ का आकार न बढ़ जाए।

बाबा नानक के विवाह की चर्चा की गई है और गुरु साहिब के घर दो पुत्र होने की बात लिखी गई है। पिता कालू दास जी चाहते थे कि गुरु नानक साहिब जी व्यापार में ध्यान लगायें परंतु आप जी भाई मरदाना जी को संग लेकर रबाब पकड़ कर कीर्तन करने में मग्न रहते हैं। लोग कहने लग पड़े कि गुरु नानक साहिब जी दीवाने अथवा बांवरे हो गए। जब यह चर्चा लोगों में होने लग पड़ी तो आप जी को आपके बहनोई भाई जैराम अपने साथ सुलतानपुर ले गए।

सुलतानपुर का नवाब अमीर-उल-उमरा दौलत खान था। भाई जैराम ने बाबा जी को दौलत खान के साथ मिलाया और मोदीखाने में बिठा दिया। इस साखी को और अधिक बयान न करते हुए भाई रतन सिंघ भंगू अन्य ग्रंथों को वाचने का परामर्श देता है।

इससे आगे बाबा नानक जी के वेईं प्रवेश की चर्चा की गई है। लिखा है कि बाबा उस नदी में जाकर आलोप हो गया। लोगों ने शोर मचा दिया कि बाबा डूब गया, बह गया, पार चला गया आदि। भाई जैराम के घर रोना-पीटना शुरू हो गया। दौलत खान भी बहुत उदास हुआ। भाई रतन सिंघ भंगू के अनुसार जब गुरु बाबे को दो दिन वेईं नदी में आलोप हुए बीत गए तो तीसरे दिन गुरु नानक साहिब नदी में से प्रकट हो गए। गुरु बाबा जी की आमद के बारे में सुनकर जहां लोग और भाई जैराम उनको मिलने आये वहां दौलत खान अत्यंत अचंभित हो गया। दौलत खान ने हकीम बुलवाये। जब गुरु जी ने वैद्य को समझाया तो फिर दौलत खान की आशंका निवृत्त हो गई। मुल्ला काजी आप जी को 'जादूगर' कहने लग गए लेकिन दौलत खान ने उनकी बात नहीं मानी और परिवार सहित गुरु नानक साहिब का श्रद्धालु हो गया। हिंदू और तुर्क दोनों गुरु जी के लिए समान थे। जैसे-जैसे गुरु जी की चर्चा फैली लोग दूर-दूर से आप जी के दर्शनों को आने लगे। भाई रतन सिंघ भंगू के अनुसार

दौलत खान के घर पुत्र गुरु जी की कृपा-दृष्टि के साथ हुए। गुरु जी का प्रताप सूर्य की भांति फैलकर दुनिया को रौशन करने लग पड़ा। जैसे सूर्य को बादल ढांक नहीं सकते इसी प्रकार गुरु जी के प्रताप को फैलने से कोई रोक नहीं सका। जो-जो मनोरथ लेकर लोग गुरु जी को मिलने आने लगे जनसाधारण के वे समस्त मनोरथ पूरे होने लग गए।

गुरु नानक साहिब की प्रचार-यात्राओं को उदासियां कहा जाता है। भाई रतन सिंघ भंगू ने इन उदासियों को किसी ऐतिहासिक क्रम में प्रस्तुत नहीं किया। गुरु बाबा जी भाई मरदाना जी को लेकर कीर्तन करने लगे और देश-देशांतरों के रटन पर निकल पड़े। गुरु बाबा जी समस्त जन-साधारण में से जंत्र, मंत्र, तंत्र, गुग्गा, मढ़ी, मसानों, प्रेत आदि के भ्रमों को दूर करने के लिए चल पड़े। आप जी हिंदू और तुर्क दोनों को कर्मकांडों से तोड़कर सत्य के साथ जोड़ने लग गए।

इससे आगे गुरु बाबा जी के अचल वटाला (बटाला) को जाने की चर्चा की गई है। अचल वटाला में सिधों का मेला लगा हुआ था। गुरु बाबा जी ने गोष्ठि करके सभी सिधों को जीत लिया। सिधों ने गुरु बाबा जी को जेहलम के नजदीक स्थित बाल गुदाई के स्थान पर चर्चा करने के लिए कहा। गुरु बाबा जी वहां भी चले गए। सिधों के मन में अहंकार था कि गुरु जी यहां नहीं जीत सकते।

यहां से गुरु साहिब पाकपटन और उच्च शरीफ गये। यहां आप जी ने सूफी फकीरों के साथ चर्चा करके उनको जीत लिया। गुरु बाबा जी ने सिधों के जहां कहीं भी होने के बारे में सुना वहीं चल कर गये। आपने सिधों द्वारा किये जा रहे पाखंडवाद के बारे में लोगों को सुचेत किया और सत्य का मार्ग दिखाया। आप जी ने सारे पंजाब का भ्रमण किया और लोगों को सत्य के मार्ग पर चलाया। भाई रतन सिंघ भंगू के अनुसार:

इम कर सैल पंजाब की लीने लोक पतयाइ।
कितै मसीत नित साल धरम क्रनि निज धरम दए लाइ ॥६६॥

भाई रतन सिंघ भंगू के अनुसार सारी हकीकत की चर्चा, चूंकि इस ग्रंथ में करना संभव नहीं, इसलिए यदि किसी ने अधिक जानकारी प्राप्त करनी हो तो वह पुरातन जन्म-साखी पढ़ सकता है :

सभी हकीकत उनै की इहां लिखी यौ नाहि।
जनम साखी पुरातनो देखे जिस हुइ चाहि ॥६७॥

गुरु बाबा जी की कलयुग के साथ हुई भेंट को इससे आगे अंकित किया गया है। कलयुग का कर्म है कि मनुष्य नर्क के भागीदार हों लेकिन गुरु नानक साहिब समूह जनसाधारण को इससे मुक्त हुआ देखने की लोचा करते हैं। कलयुग जहां मनुष्यों को विकारों में डुबोना चाहता है वहां गुरु बाबा जी कलयुग के प्रभाव के विपरीत समूह जनसाधारण को इस संसार रूपी भवजल से पार उतारना चाहते हैं। गुरु बाबा जी के प्रताप के आगे कलयुग बेबस था।

उदासियों का वर्णन करते हुए भाई रतन सिंघ भंगू ने सर्वप्रथम दक्षिण की उदासी बताई है। साथ में यह भी बताया है कि तुर्कों ने अधिकतर देवल भाव देव-स्थान ध्वस्त करके मस्जिदों का निर्माण कर दिया था।

इससे आगे जहां दूसरी उदासी का वर्णन आरंभ किया गया है वहां लेखक ने स्पष्ट किया है कि गुरु बाबा जी द्वारा की जा रही उदासियां तथाकथित धर्मियों की ओर से उत्पन्न किये पाखंड सभ्याचार को समाज के सामने उजागर करने के लिए थीं। इस उदासी में गुरु बाबा जी द्वारा हरिद्वार, ऋषिकेश, वलभी, गोरखमता

आदि स्थानों पर रटन का चर्चा किया गया है। गुरु बाबा जी की स्तुति में भाई जी ने लिखा है कि आपने कितनों को ज्ञान दृढ़ कराया और कितने सिक्ख हो गए, उनकी गणना नहीं की जा सकती। गुरु बाबा जी ने जनसाधारण को सत्य का मार्ग दर्शाया, कुमार्गियों को मार्ग पर चलाकर सतिनामु का मंत्र दृढ़ कराया। गुरु जी जहां-जहां भी गये *'सबदि जिती सिधि मंडली'* के अनुसार धर्मसालाओं की स्थापना करके मनुष्यों को शबद के साथ जोड़ा। *'घालि खाइ किछु हथहु देइ'* के संकल्प को बलवान किया और जन-साधारण को दया, धर्म के रास्ते पर चलाया।

पूरब की सच-प्रचार-यात्रा करते हुए गुरु जी बंगाल और कामरूप गये। आप जी ने संगत को सच का दामन थमाया। भाई रतन सिंघ भंगू के अनुसार आप जी उसी जगह गये जहां कूड़ का पासार अधिक था:

उसी देस बाबा गयो जिह बहुते बेईमान।
ते सिख भए संगत बणी सच जान लयो भगवान।

गुरु जी की पूरब यात्रा को संकोच कर लिखते हुए लेखक प्रसंग को संक्षेप में ही समाप्त कर देता है। पश्चिम की उदासी का वर्णन करते हुए 'श्री गुर पंथ प्रकाश' का कर्त्ता स्पष्ट करता है कि गुरु बाबा जी ने अपनी कला से *"मका मदीना सभे निवाइआ।"* कप्तान मरे ने फिर भाई रतन सिंघ भंगू को कारूं के बारे में पूछा, परंतु कर्ता स्पष्ट करता है कि यह साखी पुरानी है इसलिए इसके प्रमाणिक होने पर आशंका है।

इससे आगे उत्तर का प्रसंग लिखते हुए गुरु बाबा जी के 'परबत देस' को जाने की विचार की गई है। आप जी ने देखा कि सिध सत्य की आराधना छोड़कर मढ़ी, मद, लिंग, पत्थर और देवी-देवताओं के पूजक बन गए थे। भाई रतन सिंघ भंगू कप्तान मरे को कहता है कि बाबे की साखियों का अंत नहीं लिया जा सकता:

बाबे की गत बाबो जाणै।
कै जाणै जो नाल फिराणै।
जिसको लोड़ि सुननि की होइ।
और पुसतक तै सुनि लए सोइ।
संसक्रित भाखा पारसी घनी।
बहुत ठौर साखी गुर बनी।
सो सुनि लीजै मन पतीआइ।
रतन सिंघ कही मरी सुनाइ।

इस आधार-स्रोत में गुरु बाबा जी की बाबर के साथ भेंट का जिक्र किया गया है और यह भी लिखा गया है कि बाबर ने गुरु नानक साहिब से हिंदोस्तान का राज-भाग बख्शिश के रूप में प्राप्त किया।

'श्री गुर पंथ प्रकाश' में गुरु नानक साहिब का चित्रण एक मिथिक पात्र का न होकर एक ऐसे व्यक्तित्व का है जो समाज को अनावश्यक कर्मकांड तथा पूजा-आचार से उभरने और समाज के लिए मार्गदर्शक बनने का प्रेरणास्रोत है। गुरु जी अव्यस्त समाज से किरती समाज के उभार हेतु प्रयत्नशील हैं। आप जी मनुष्य को करामातों का सहारा लेने या चाहने की बजाय नैतिक मूल्यों के धारक होने की तरफ प्रेरित करते हैं। भाई रतन सिंघ भंगू को जहां गुरु जी के जीवन और बाणी के बारे में जानकारी प्राप्त है वहां साथ ही तत्कालीन स्रोतों का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त है। इसी लिए 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में बार-बार इस बात की चर्चा हुई है कि यदि कोई अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है तो वह अन्य स्रोतों को पढ़-देख सकता है। अत: कुल मिला कर भाई रतन सिंघ भंगू का 'श्री गुर पंथ प्रकाश' अपने आप में एक ऐसा स्रोत बनकर उजागर होता है जो समय की सिक्ख मानसिकता की तर्जमानी करता है।

ज्ञानी गिआन सिंघ द्वारा रचित 'तवारीख गुरू खालसा' में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन और व्यक्तित्व

-डॉ. परमवीर सिंघ*

ज्ञानी गिआन सिंघ सिक्ख इतिहास के विख्यात विद्वान हैं जिन्होंने अपना अधिकतर जीवन सिक्ख इतिहास की खोज में लगाया। 'पंथ प्रकाश' उनकी महत्वपूर्ण रचना है, मगर काव्य रूप में होने के कारण बहुत-से सज्जन उससे लाभ नहीं ले सकते। 'तवारीख गुरू खालसा' उनकी गद्य रचना है जिसे पंजाबी की जानकारी रखने वाले समूह सज्जन आसानी से पढ़ तथा समझ सकते हैं। भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला से यह दो भागों में मिलता है जिसमें दस गुरु साहिबान का जीवन, शमशेर खालसा (दो-भाग), राज खालसा (दो-भाग) शामिल हैं। ज्ञानी जी ने सिक्ख धर्म के इतिहास की घटनाओं को एक जगह इकट्ठा कर रखने का विशेष कार्य किया है। उनका यह कार्य १९४८ विक्रमी (१८९१ ई) को पत्थर के छापे द्वारा पाठकों के रूबरू हुआ तथा बाद में इसके कई अन्य संस्करण भी सामने आए हैं।

तवारीख का क्या फायदा होता है? इसका उत्तर वे अपनी रचना की भूमिका में देते हुए कहते हैं कि ज्ञान 'तवारीखें' पढ़े-सुने बिना नहीं होता। सियाने आदमी तो तवारीखों से अनेक फायदे उठाते हैं लेकिन लाभ से विहीन कोई अनजान भी नहीं रहता। मुल्क पंजाब, जो अंग्रेजी सरकार की हकूमत से पहले भयानक कष्ट में था तथा तुर्कों के जुल्म के पंजे में खालसे ने किस तरह छुड़ाया तथा कैसा सुख दिया है, यह वृत्तांत केवल इसी पोथी में से मिलता है।

श्री गुरु नानक देव जी सिक्खों के पहले गुरु थे, इसलिए प्रत्येक सिक्ख तवारीख का पहला पन्ना उनके जीवन-काल से आरंभ होता है। ज्ञानी गिआन सिंघ की तवारीख गुरू खालसा का पहला भाग दस गुरु साहिबान की प्रमुख जीवन-घटनाओं को पेश करता है। इस रचना में उन्होंने गुरु नानक साहिब जी के जीवन का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। गुरु साहिब के आगमन के समय भारत के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक हालात का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि भारत में बसते आम लोग हकूमत के रहमो-कर्म पर थे। हिंदू धर्म से सम्बंधित लोग धर्म की आजादी से रिक्त थे। उनके धार्मिक रीति-रिवाज हाकिमों की दया-दृष्टि के बिना सम्पूर्ण नहीं हो सकते थे। हाकिम जमात बुतप्रस्ती के विरुद्ध थी और वे बुतप्रस्ती को कड़े हाथों लेते थे। वे न केवल उनके धार्मिक कार्यों में विघ्न ही डालते थे बल्कि उनकी धार्मिक रस्मों का अपमान भी करते थे। ज्ञानी जी बताते हैं कि उस समय के बादशाह बहलोल लोधी ने हुक्म दे रखा था कि 'हिंदू की कोई बहू-बेटी पहले मुसलमान की भेंट चढ़े बिना हिंदू के घर न बसे। अच्छा वस्त्र, जेवर किसी हिंदू औरत-मर्द को न पहनना मिले।'

श्री गुरु नानक देव जी का आगमन इस समय एक शुभ शकुन की भांति था जिसने लोगों को धर्म के मार्ग से जोड़कर समाज में सच्चाई

*सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो : ९८७२०-७४३२२

तथा परोपकार की भावना को प्रफुल्लित किया। लेखक कहता है, "जैसे वर्षा होने पर तपिश कम हो जाती है उसी तरह इनके (गुरु नानक देव जी के) प्रकट होने से सहजता से आम से आम लोगों के दिलों में दया, धर्म, क्षमा, प्रेम आदि गुण प्रकट हो गए।' पिता महिता कालू चंद तथा माता त्रिपता जी के घर तलवंडी राय भोय में १४६९ ई को प्रकाशमान हुए। गुरु नानक साहिब जी के जीवन के साथ बहुत-सी करामातें जोड़कर बताई जाती हैं, जिनमें खेत हरा हो जाना, सर्प ने छाया करनी, वृक्ष की परछाईं न ढलना आदि प्रसिद्ध हैं। गुरु साहिब जी के प्रारंभिक जीवन में ही ऐसी घटनाएं सामने आती हैं जिनसे उनकी सादगी तथा परोपकार की भावना का प्रकटावा होता है, वस्त्र-गहने आदि फकीरों को दान कर देना तथा सच्चे सौदे वाली साखी उनके जीवन में उक्त भावों को पेश करती है।

गुरु जी हमेशा अकाल पुरख की बंदगी करने पर जोर देते हैं। वे अकाल पुरख को सर्व-कर्त्ता, सर्व-हर्त्ता तथा सर्व-ज्ञाता मानते हैं। वे सांसारिक शिक्षा ग्रहण करने के विरुद्ध नहीं थे। उनका कहना था कि सांसारिक विद्या का सार प्रभु-मुखी होना चाहिए। पंडित तथा मुल्ला के पास पढ़ने जाने वाली साखियां गुरु जी के ऐसे भावों को उजागर करती हैं। सांसारिक कर्मकांड में ग्रस्त जीवन को वे प्रभु-प्राप्ति में रुकावट मानते हैं क्योंकि ऐसा जीवन मनुष्य को सच्चाई तथा ईमानदारी से दूर ले जाता है। इसी लिए गुरु जी को हिंदू धर्म में धर्म-प्रवेश की मानी जाती रस्म करने के लिए कहा तो उन्होंने जवाब दिया कि सांसारिक जनेऊ गंदे हो जाते हैं तथा जल्दी ही टूट जाते हैं। गुरु जी ने ऐसा जनेऊ पहनाने के लिए कहा जो दया, संतोष तथा जत-सत के धागे का बना हो। ऐसा जनेऊ न तो टूट सकता है, न इसे मैल लग सकती है और न ही इसे अग्नि जला सकती है, बल्कि ऐसा जनेऊ जीवन भर साथ निभता है।

गृहस्थ को सिक्ख धर्म में प्रधान माना गया है। सिक्ख धर्म का कोई भी विश्वासी गृहस्थ से दूर नहीं जा सकता। गुरु नानक साहिब जी ने उदासियों वाले वस्त्र धारण कर उदासियां (प्रचार-यात्राएं) की थीं। मगर उन्होंने कभी भी सन्यासी की तरह गृहस्थ से दूर रहने की शिक्षा नहीं दी बल्कि हरेक सिक्ख को गृहस्थ धर्म प्रवान करके ही दुनिया की माया से निर्लेप रहने का उपदेश दिया है। ज्ञानी गिआन सिंघ बताते हैं कि गुरु जी सुलतानपुर में मोदीखाने में नौकरी कर रहे थे जब ७ ज्येष्ठ, सं. १५४५, ८९१ हिजरी, १४८७ ई को परगना गुरदासपुर पक्खो गांव जो रंधावे जट्टों का है, मूल चंद खत्री की सपुत्री माता सुलक्खणी जी के साथ बाबे नानक जी का विवाह हुआ। गुरु जी के घर दो सपुत्र--बाबा सिरीचंद तथा बाबा लखमीचंद पैदा हुए।

गुरु नानक देव जी ने सुलतानपुर में मोदीखाने की नौकरी के दौरान बहुत-से लोगों का भला किया। गरीबों तथा जरूरतमंदों को वे अपने पास से अनाज दिया करते थे। उनके जीवन के साथ 'तेरां-तेरां' वाली जुड़ी हुई साखी उनकी दीन-दुखीयों के प्रति भावना का प्रकटावा करती है। गुरु जी एक दिन वेईं नदी में स्नान करने गए जो तीन दिन तक आलोप रहे। तवारीख का लेखक गुरु जी का यह समय अकाल पुरख की दरगाह में जाना मानता है। वो कहता है कि गुरु जी परमात्मा की दरगाह में गए तो परमात्मा ने गुरु जी से कहा, "नानक निरंकारी! तुझे कलयुगी पुरखों के

उद्धार के लिए संसार में भेजा है, 'सतिनाम वाहिगुरु' जपाकर भक्ति-ज्ञान दृढ़ा, जिससे सहजे ही महापापी भी पवित्र होकर मुक्ति के अधिकारी हों।" गुरु जी के जीवन का यह प्रसंग उनके दैवी पुरुष होने तथा उनके परमात्मा के साथ एक होने का प्रकटावा करता है।

गुरु जी ने परमात्मा का संदेश जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए प्रचार-यात्राएं कीं। इन प्रचार-यात्राओं के दौरान वे जिन जंगलों, पहाड़ों, मरुस्थलों, नदियों, नगरों, कसबों आदि में से गुजरे उनके नाम तथा रास्ते की जानकारी भी हमें ज्ञानी जी की तवारीख में से मिलती है। उनका लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का विलक्षण ही ढंग था। वे पहले ऐसा काम करते जिससे लोगों का ध्यान उनकी तरफ खिंच जाता था। जब लोग उनकी तरफ केंद्रित होते तो सहजे ही वे अपनी बात कर देते जो लोगों को वहमों, भ्रमों, पाखंडों आदि से मुक्त करके परमात्मा के साथ जोड़ने, हाथों से किरत करने तथा बांट कर छकने का उपदेश देती थी। बड़े-से-बड़े राक्षस, ठग, योगी, जती, तपी, सन्यासी उनकी बाणी के सामने पानी-पानी हो जाते थे।

ज्ञानी गिआन सिंघ कहते हैं कि जब गुरु जी प्रचार-यात्राओं पर गए तो भाई मरदाना तथा भाई बाला जी गुरु जी के साथ थे। भाई मरदाना जी बढ़िया रबाब बजाने वाला था। रबाब भाई मरदाना जी को गुरु जी ने लेकर दी थी। लेखक बताता है कि बेबे नानकी जी से सात रुपए लेकर फरिंदा रबाबी से भाई मरदाना जी को रबाब लेकर दिया और चल पड़े। जब गुरु जी बाणी-गायन करते तो भाई मरदाना जी रबाब की धुनों द्वारा उनकी बाणी को आनंदमयी कर देता था। 'संगीत' तथा 'शबद' के सुमेल की एक उदाहरण देते हुए ज्ञानी जी कहते हैं कि प्रचार-यात्राएं करते हुए गुरु जी तथा भाई मरदाना जी सिक्किम के तामलंग शहर में गए तो वहां जब भाई मरदाना जी ने रबाब बजायी तथा गुरु जी ने शबद गाया तो कई आदमियों की भीड़ इकट्ठी हो गई। पशु-पक्षी भी मोहित हो गए। गुरु जी के शबद की शक्ति को देखकर वहां का राजा भी सेवक बन गया तथा अपने देश की जुबान एवं अक्षरों में बाबे नानक की बाणी लिख ली जो अब तक पढ़ते हुए वे लोग 'नानक ऋषि' को मानते हैं। साखीकारों की भांति लेखक ने गुरु जी की शख्सियत को प्रकट करने के लिए भाई मरदाना जी को आम आदमी के पात्र के रूप में पेश किया है, जिसे आम लोगों की भांति भूख ज्यादा लगती है और वस्तुओं का भंडारण कर पछताता है। लेखक बताता है कि एक बार भाई मरदाना जी भूख से तंग आकर पंजाब वापिस आने लगे तो रास्ते में कौडे राक्षस के हाथ आ गया। गुरु जी ने उन्हें छुड़ा लिया। भूख से निढाल भाई मरदाना जी ने जब जिद की तो गुरु जी ने मुस्कराकर अकुआ की तरफ इशारा करके कहा, "इसके फल खा।" भाई मरदाना जी ने कहा, "यह जहर है।" गुरु जी ने कहा, "तू बिना शर्माए खा, मगर पल्ले मत बांधना।" गुरु जी का वचन मानकर वे खाने लगे तो फल सचमुच मीठे लगे।

गुरु जी ने चार प्रचार-यात्राएं कीं। लेखक ने गुरु जी को समूह समस्याओं का हल करते हुए दिखाया है। तवारीख से पता चलता है कि जब गुरु जी उत्तम बुद्धि वाले पुरुषों से मिलते तो उनके साथ गोष्टि करते, जब वे किसी व्यापारी से मिलते तो माया के व्यापार से उसे 'नाम' के व्यापार की बात समझाते हैं; जब वे

किसी मौलवी या पुरोहित को मिलते हैं तो उसके मन में से कर्मकांड की भावना को दूर करके प्रभु-बंदगी में लगाते हैं। गुरु जी सांसारिक जीवन की भटकना में पड़े हुए मनुष्य को मुक्त करने का उपदेश ही नहीं देते बल्कि वे इस भवसागर से बाहर निकलने का मार्ग भी बताते हैं। वे मनुष्य-जीवन को अमूल्य मानते हैं जिसके द्वारा प्रभु-प्राप्ति संभव मानी गई है। जैसे आम मनुष्य हीरे की परख नहीं कर सकता, केवल जौहरी ही इसकी असल कीमत बता सकता है, उसी तरह जीवन की अमूल्यता गुरु के ज्ञान के बिना समझ नहीं पड़ सकती। पटना साहिब में घटित एक घटना का जिक्र करना लाभकारी होगा। लेखक बताता है कि एक बार भाई मरदाना जी ने गुरु जी से कहा कि मनुष्य जीवन अनमोल रत्न की भांति है। उन्होंने भाई मरदाना जी को समझाने के लिए एक पत्थर दिया और कहा कि इसे शहर में ले जा और इसकी कीमत क्या है, हमें आकर बताना। भाई मरदाना जी शहर में गये, उस पत्थर की कीमत डलवाने। सब्जी वाले के पास गये तो उसने कहा कि यह पत्थर मेरे किसी काम का नहीं। फिर हलवाई के पास गये तो उसने आधा सेर मिठाई देने की बात कही, कपड़े वाले के पास गये तो उसने दो गज कपड़ा देना चाहा। फिर भाई मरदाना जी सर्राफ बाजार में गये। कोई सौ रुपया कहे तो कोई उसका मूल्य दो सौ रुपया दे। चार-पांच दिन घूमने के बाद भाई मरदाना जी सालस राय जौहरी के पास गये। जौहरी ने कहा कि इसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती, क्योंकि यह बहुत ही अमूल्य है। उसने सौ रुपया उस पत्थर की दर्शनी-भेंटा दी। लेखक बताता है कि जब भाई मरदाना जी ने गुरु जी को यह बात आकर बताई तो गुरु जी ने कहा कि इसी प्रकार मनुष्य-देह अनमोल रत्न है, तुच्छ विषय-विकारों में लग कर जीव मनुष्य-जीवन गंवा देता है, कद्रदान सालस राय की तरह कोई ही जीवन की कद्र करता है। इस घटना के बाद सालस राय जौहरी ने गुरु जी के दर्शन किये तथा नम्रतापूर्वक उन्हें अपने घर ले गया और लगभग तीन महीने तक उसने गुरु जी की सेवा की।

श्री गुरु नानक देव जी कठिन से कठिन बात को आसान ढंग से समझाने की सामर्थ्य रखते थे। तवारीख का कर्त्ता गुरु जी के मुख से ऐसे गूढ़ विषयों के बारे में वार्ता इतने आसान ढंग से सुनाता है कि वह झट से लोगों के मनों तक पहुंच जाती है।

उदासियों के दौरान गुरु जी अलग-अलग क्षेत्रों में भक्तों एवं फकीरों को मिले थे। कुछ भक्तों के साथ मुलाकात के समय गुरु जी ने उनकी 'बाणी' खुद संभाल ली मगर जो इलाके के संत परलोक गमन कर गए थे और उनकी बाणी का इलाके के लोगों पर प्रभाव था उनकी बाणी को भी गुरु जी ने उनके उत्तराधिकारियों से प्राप्त किया। जिस भी क्षेत्र में से गुरु जी गुजरते थे लेखक ने उस क्षेत्र की जानकारी देने के साथ-साथ उस क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों के बारे में भी जानकारी दी है।

जो व्यक्ति गुरु जी से प्रभावित होकर सिक्खी की तरफ प्रेरित हुआ और उन्होंने गुरु जी से दीक्षा भी ली, गुरु जी ने उनमें से ही किसी न किसी को उस इलाके में सिक्खी-प्रचार की सेवा सौंप दी। दक्षिण की प्रचार-यात्रा के समय गुरु जी कोचीन के इलाके में आए तो वहां का राजा केशोदत्त तथा उसकी रानियां गुरु जी के दर्शन कर बहुत प्रभावित

हुईं। जब गुरु जी वहां से चलने लगे तो उन्होंने पूछा कि आप जी के दर्शन कैसे होंगे? गुरु जी ने कहा कि कड़ाह प्रसाद करके अरदास करनी, संगत में से दर्शन होगा।

ज्ञानी गिआन सिंघ ने प्राचीन नगरों तथा पर्वतों के नामों के साथ-साथ उनके नए नामों का भी जिक्र किया है ताकि आधुनिक समय का खोजी उनसे चकमा न खा जाए। लेखक मणीपुर नगर का नाम असीमफल, नानकमते का नाम गोरखमता तथा गिरनार पर्वत का पुराना नाम रवागिरि बताता है।

श्री गुरु नानक देव जी अपनी दूसरी उदासी के बाद करतारपुर आकर खेती करने लगे। यह वो नगर था जो गुरु जी ने अपनी दूसरी उदासी से वापिस आकर बसाना आरंभ किया था। लेखक बताता है कि अजित्ते आदि प्रेमियों के कहने पर गुरु जी ने एक गांव बसाने की इच्छा धार कर रावी दरिया के दूसरी पार नारोवाल तथा दूदे गांव के मध्य पश्चिम दिशा में जंगल में अनेक दिन ठहराव किया। गांवों के लोगों ने छप्पर छा दिए। धीरे-धीरे गांव बसने लगा, जिसका नाम बाबा नानक ने 'करतारपुर' रखा। यहीं पर गुरु जी का मिलाप बाबा बुड्ढा जी से हुआ तथा इसी स्थान पर भाई लहिणा जी गुरु जी से भेंट कर श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में प्रकट हुए थे। करतारपुर में ही गुरु जी १५९६ विक्रमी (१५३९ ई.) को ज्योति जोत समा गए।

श्री गुरु नानक देव जी की प्रमुख बाणियां

श्री गुरु नानक देव जी को अकाल पुरख द्वारा समय-समय पर अलाही बाणी का संदेश मिला था जिसे वे अपने पास संभाल कर रख लेते थे। गुरु जी अपने पास एक पोथी रखते थे, जिसका वर्णन भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में भी किया है। पोथी में गुरु जी ने अपनी बाणी के साथ-साथ एकत्र की गई भक्त साहिबान की बाणी भी दर्ज की थी। गुरु जी की प्रमुख बाणियों का संक्षिप्त वर्णन करने का यत्न किया जा रहा है:-

जपु : गुरु जी की यह प्रमुख बाणी है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आरंभ में दर्ज की गई है। इस बाणी को सारे श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सार भी कहा जाता है। इस बाणी के आरंभ में मूल-मंत्र लिखा हुआ है जिसमें परमात्मा के असल स्वरूप का वर्णन है। मूल-मंत्र के अलावा 'जपु' बाणी में ३८ पउड़ियां तथा दो श्लोक दर्ज हैं।

आसा की वार : 'आसा की वार' बाणी की २४ पउड़ियां हैं और प्रत्येक पउड़ी से पहले श्लोक दर्ज है। 'आसा' सुबह का राग माना जाता है, इसलिए इस बाणी का गायन प्रात: काल किया जाता है। इस बाणी को 'टुंडे अस राजे की धुनी' पर गाने का आदेश किया गया है।

सिध गोसटि : रामकली राग में श्री गुरु नानक देव जी की यह एक बड़ी बाणी है। इस बाणी के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि यह बाणी सिधों के साथ हुई विचार-चर्चा पर आधारित है। ७३ पदों वाली इस बाणी में सिधों को सत्य तथा आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाया गया है।

बारा माह : तुखारी राग में उच्चारण की गई श्री गुरु नानक देव जी की इस बाणी के बारे में कहा जाता है कि यह गुरु जी की 'अंतिम बाणी' है, जो गुरु जी ने अपने ज्योति जोत समाने के समय करतारपुर में उच्चारण की। यह बाणी जीव के आध्यात्मिक पक्ष को उजागर करती है। प्रभु को 'प्रीतम' माना गया है तथा आत्मा को 'जीव-स्त्री' द्वारा बयान किया गया

है। 'बारा माह' बाणी में सांसारिक शगुनों, अपशगुनों, दिनों, तिथियों, महीनों आदि को सामने रखकर किए कार्यों को कर्मकांड का नाम दिया गया है। हर वो महीना शुभ बताया गया है जब प्रभु याद रहता है।

पटी : 'पटी' लकड़ी की तखती को कहा जाता है जिस पर प्राचीन समय में स्कूल जाने वाले बच्चे अक्षर लिख-लिख कर सीखते थे। तवारीख का कर्त्ता कहता है कि जब सात वर्ष की आयु में गुरु जी पांधे के पास पढ़ने के लिए गए तो गुरु जी ने दुनियावी अक्षरों के आध्यात्मिक अर्थ कर दिए। पांधे ने गुरु जी से विनती की कि ओअंकार की भांति अन्य अक्षरों के भी अर्थ बताओ तो गुरु जी ने उनके कल्याणार्थ सब अक्षरों के अर्थ उच्चारण किए जो 'पटी' शीर्षक अधीन श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें 'ड़' अक्षर का इस्तेमाल भी देखने को मिलता है। इस बाणी के केंद्रीय भाव में उस मनुष्य को पढ़ा हुआ माना गया है जिसने शुभ अमल धारण करके परम-पद की प्राप्ति कर ली है।

मारू सोलहे : मारू राग में 'महला १' के अधीन २२ पदों की बाणी है। इसमें परमात्मा की सिफत-सलाह करने पर जोर दिया गया है। परमात्मा सृष्टि का कर्त्ता है, सब कुछ वो खुद ही है, कोई देवी-देवता उसकी बराबरी नहीं कर सकता।

दखणी ओअंकार : इस बाणी का नाम 'ओअंकार' है तथा दखणी रामकली राग से सम्बंधित है। ज्ञानी गिआन सिंघ यह बाणी गुरु जी द्वारा बचपन में पांधे के पास पढ़ने जाते समय उच्चारण की हुई मानते हैं। वे कहते हैं, "सारे अक्षरों द्वारा परमेश्वर की भक्ति तथा ज्ञान एवं ओअंकार को सर्गुण ब्रह्म ठहराकर सारे जगत की उत्पत्ति इसी से हुई दिखाई, जिसे सुन कर पंडित बाबे जी को सर्वज्ञ ऋषि ब्रह्मवेत्ता मानकर 'सतिनाम' का उपदेशी हो गया। 'पटी' बाणी की तरह गुरु जी द्वारा उच्चारित यह बाणी ब्रह्म-विद्या प्राप्त करके प्रभु के साथ जुड़ने की प्रेरणा करती है।

वार माझ : 'माझ' राग में गुरु नानक साहिब जी की यह एक वीर-रसी बाणी है जो मनुष्य को दुनियावी रसों-कसों से बचाकर परम सत्य के साथ जुड़ने की प्रेरणा करती है। वार में दो योद्धाओं का युद्ध होता है और सच के मार्ग पर चलने वाला आखिर में विजयी रूप में सामने आता है। गुरबाणी में बाहरी युद्ध के साथ-साथ मन के साथ भी युद्ध करने के लिए कहा गया है। जो मन पर काबू पा लेता है उसे वीर माना गया है। २७ पउड़ियों की इस बाणी में श्लोक भी दर्ज हैं।

वार मलार : योद्धाओं का यश वारों के माध्यम से गायन किया जाता है कि लोगों में नायक प्रति जोश व उत्साह पैदा किया जा सके। गुरु नानक साहिब जी ने प्रभु-यश गायन करने को उत्तम माना है। २८ पउड़ियों वाली इस बाणी में श्लोक भी दर्ज हैं, जिनमें बताया गया है कि परमात्मा ने जगत-रूपी अखाड़ा रचा है तथा जीव इसमें कुश्ती कर रहे हैं। जो जीव गुरु की शिक्षा हासिल करते हैं वे मुक्त हो जाते हैं। हउमै को छोड़कर गुरु का हुक्म मानने का आदेश भी इस बाणी में किया गया है।

'श्री गुर नानक प्रकाश' कृत भाई संतोख सिंघ में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-चरित्र

*-स. कुलदीप सिंघ**

'श्री गुर नानक प्रकाश' सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को आलोकित करने वाला चरित-काव्य है, जिसकी रचना सिक्ख धर्म के मर्मज्ञ गुरमुख कवि भाई संतोख सिंघ ने अपने इष्ट देव श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को काव्यमयी अभिव्यक्ति देने के लिए की। यह ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' का प्रारंभिक भाग है तथा इसे श्री गुरु नानक देव जी के नाम पर सम्बोधित किया जाता है। 'श्री गुर नानक प्रकाश' ग्रंथ की रचना श्री गुरु नानक देव जी के परलोक गमन (१५३९ ई) के लगभग तीन सौ वर्ष बाद (१८२३ ई) में की गई। इस अवधि में श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के सम्बंध में गद्य और पद्य में स्फुट प्रयास किये गए जिनसे श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के विविध पक्ष उभर कर सामने आए। भाई संतोख सिंघ ने उपलब्ध सामग्री का समाहार 'स्री गुर नानक प्रकाश' में किया जिससे वे श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के विविध स्तरों को जीवंत रूप में प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने गुरु-यश-रूपी धागे में बाणी-रूपी लड़ी को पिरोया है। जो सिक्ख इन मोतियों की माला को हृदय में पहन ले उसकी शोभा दोनों लोकों में होगी :

मुकता पंकति सरसुती गुरु जसु गुन पुरवाइ।
पहिरे उर द्वै लोक मैं सोभा है अधिकाइ ॥
(उत्तरार्द्ध, १६:१)

भाई संतोख सिंघ ने 'श्री गुर नानक प्रकाश' को विस्तृत फलक प्रदान करने के लिए ब्रज भाषा में लिखा है जो उस समय भारतीय मध्य देश की साहित्यक भाषा थी। श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं अपनी बाणी में पंजाबी के मानक साहित्यिक रूप को तथा ब्रज भाषा को काव्य का माध्यम बनाया है। भाई संतोख सिंघ ने काव्यात्मक रूप में श्री गुरु नानक देव जी के काव्य की भाषा या वस्त्र (चोला = खिलक) का वर्णन किया है। दयालु प्रभु विदेश गये। वहां आकाश से एक चोला उतरा जिसमें भारतीय भाषाओं में हिंदी और संस्कृत के तथा मुस्लिम सम्पर्क भाषायों फारसी, अरबी और तुरकी के शब्द अंकित थे। स्वाभाविक रूप से उस चोले का रंग सुहावना था :

तिह छिन खिलक अकाश ते उतरयो गुर ढिग आइ।
रंग न जान्यो जानहीं अचरज बन्यो बनाइ ॥५॥
सरब भांति के लिखीए अक्खर।
हिंदवी बहुर पारसी तां पर।
अरबी और तोरकी जोइ।
संसकृती जो अक्खर सोइ ॥६॥
सो खिलका ले गुर गर पायो।
रंग कुदरती अधिक सुहायो। . . .
अछर पंज प्रकारहिं जोऊ।
लिखे सरब नीकी बिधि सोऊ ॥१०॥
(उत्तरार्द्ध, भाग १, १७)

'श्री गुर नानक प्रकाश' ब्रज भाषा में रचित महाकाव्य है। गुरमुखी लिपि में लिखा जाने के कारण इसका उल्लेख और प्रचार हिंदी भाषी-क्षेत्रों और हिंदी साहित्य जगत में नहीं

*सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६

हुआ। पंजाबी भाषा-क्षेत्रों में इसकी जानकारी कुछ सीमित कथावाचकों को है जो ब्रज भाषा की सम्यक जानकारी के अभाव में व्याख्या में कठिनाई अनुभव करते हैं।

इस प्रकार हिंदी तथा पंजाबी दोनों क्षेत्रों में 'स्री गुर नानक प्रकाश' ग्रंथ का विधिवत अध्ययन न होने से रचनाकार का संदेश प्रभावी रूप से जनसामान्य तक नहीं पहुंचा है। इस ग्रंथ का मर्म समझने के लिए सिक्ख धर्म के प्रति आस्था तथा ब्रज भाषा के साहित्यिक स्वरूप के ज्ञान की आवश्यकता है।

चरित-काव्य के रूप में 'स्री गुर नानक प्रकाश' १३० अध्यायों में ९७०० छंदों में रचित प्रबंध काव्य की एक इकाई है, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-चरित को समग्र रूप से दिया गया है। ग्रंथ की भाषा का माध्यम ब्रज भाषा है तथा ग्रंथ का रचयिता भाई संतोख सिंघ भारतीय काव्य और मिथिक का विद्वान है। भाषा और मिथिक के माध्यम से कवि का उद्देश्य इष्ट देव के जीवन को निश्छल रूप से उजागर करना है। भाई संतोख सिंघ ने इस ग्रंथ की रचना उस समय की जब पंजाब में महाराज रणजीत सिंघ का वर्चस्व था तथा श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को वे निष्पक्ष रूप से निर्भय होकर प्रस्तुत कर सकते थे। यही कारण है कि भाई संतोख सिंघ के काव्य में श्री गुरु नानक देव जी एक जीवंत चरित्र के रूप में अंकित हुए हैं।

मानवीय तर्क के आधार पर गुरु या आराध्य में चार पक्ष माने जा सकते हैं-- मर्यादित गृहस्थ जीवन, नैतिक उपदेश तथा मार्गदर्शन, आध्यात्मिक पक्ष (आत्मिक-ज्ञान) और इंद्रियातीत पक्ष या चमत्कार। इन चारों के सामंजस्य से एक अनुकरणीय चरित्र की कल्पना होती है। श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के विकास में भाई संतोख सिंघ ने इन पक्षों को कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया है।

श्री गुरु नानक देव जी के मर्यादित गृहस्थ जीवन को बाल्य-काल की आलौकिक शक्ति तथा घटनाओं की पृष्ठभूमि के बाद दिया गया है, जैसे भैंसों से चरे खेत का हरा होना, वृक्ष की छाया का स्थिर होना तथा सर्प द्वारा छाया का प्रसंग। सूर्य-छाया-प्रसंग बसंत ऋतु का है। पश्चिम दिशा में सूर्य के ढल जाने पर धूप मुख-कमल पर पड़ रही थी। शेषनाग ने श्री गुरु नानक देव जी को सोया हुआ जानकर धूप दूर करने का विचार किया। उसने गाय के दूध के समान श्वेत रंग धारण किया, प्रेम सहित प्रदक्षिणा की, सिर की तरफ स्थिर होकर फन का विस्तार किया। वह इतना उज्जल था जैसे गंगा की धारा हो :

स्वेत वरन गोदुगध नवीना।
धरि दूसर तन आव प्रबीना।
सुंदर सुख-मंदर को देखी।
कीनि बंदना प्रीति बिशेखी ॥१६॥
बहुरो तीन प्रदछना दीनी।
सीस दिशा निज इसथिति कीनी।
हेतु छाउं के फन बिसथारा।
अति उज्जल जिव सुरसरि धारा ॥१७॥

(पूरबार्द्ध भाग १, ११)

बचपन में उदार मन और दानशील प्रवृत्ति के कारण पिता के द्वारा व्यापार के लिए दिये धन को साधुओं को खिला दिया, जिससे पिता के क्रोध का शिकार हुए और गांव तलवंडी छोड़कर गांव के मुखिया के निर्देश पर बहन नानकी के यहां प्रस्थान किया। बहन नानकी ने सबसे पहले गुरु जी में परमात्म-तत्व पहचाना :

न आदं न अंतं बिअंतं सरूपं।
पिता है ना माता न बंधं अनूपं।

निजं इच्छ ते देहि धारी दयालं।
उधारनं मंदं जगं जीव जालं ॥५१॥
कली काल मांही बिथारो सुचाली।
मिटावो कुपंथं कुदंभं कुचाली।
सदा ऐस ही महि को दान दीजै।
मतं न बिसारो कबै, यौं प्रणीजै ॥५२॥
(पूरबार्द्ध, भाग १, १६)

तलवंडी से विदाई के समय गांव के चौधरी राय बुलार बाल्य-काल की घटनाओं से प्रभावित होकर श्री गुरु नानक देव जी के स्वभाव से परिचित हैं। गुरु जी के पिता महिता कालू जी श्री गुरु नानक देव जी को एक सामान्य अध्यवसायी इंसान के सांचे में ढालना चाहते हैं तथा माता त्रिपता जी ममतामयी भावना से द्रवित हैं:

किआ मैं निहारों सु पाछै इकाकी।
हुतो सून एको समीपं न तांकी ॥४५॥
करी बंदना मात को रोति छोरी।
पिता को नमो कीनि दो हाथ जोरी। . . . ॥४६॥
(पूरवार्द्ध, भाग-१, १६)

श्री गुरु नानक देव जी ने सुलतानपुर में बहन के पास १७ वर्ष से ३० वर्ष की आयु तक निवास किया। इस बीच धर्म की कमाई करना तथा गृहस्थ-निर्वाह मुख्य घटनायें हैं। सुलतानपुर लोधी के नवाब दौलत खां के भंडार (मोदीखाना) में कार्यकर्त्ता के रूप में उदारता के साथ मर्यादा की सीमा का भी ध्यान रखा। शादी के बाद पत्नी माता सुलक्खणी जी श्री गुरु नानक देव जी के विरक्त स्वभाव की पीड़ा अपनी मां को बताती हैं :

तूं नैहर घर हुती दुलारी।
नहिं जानहि कछु सेव प्रकारी।
अब मन समझ सोच पति कीजै।
भले रिझाइ सरब सुख लीजै ॥६६॥
पति की सेव करति तिय जेती।
सुखी रहित द्वै लोकन तेती।
अस प्रकार की सीख सिखानी।
कितक दिवस रहि चंदोरानी ॥६७॥
(पूरबार्द्ध, भाग-१, २५)

बहन नानकी भतीजे को गोद में खिलाने की इच्छा व्यक्त करती है। श्री गुरु नानक देव जी के दो पुत्र बाबा सिरीचंद और बाबा लखमीदास उत्पन्न हुए, किन्तु उनका वैराग्यमयी स्वभाव और दृढ़ होता गया। वेईं नदी में प्रवेश का सुंदर चित्र कवि ने मनोरम सवैया छंदों में अंकित किया है:

हरि नाम अपार ही फूल लगे निज रूप पछान फलयो फल भारी।
रस पूरन है सुख, आतप म्रित्तु अंम्रित की छाउं टरै नहिं टारी।
पसु मोह चरै नहिं या बिधि सों, सति संगति की चहू पासहि बारी।
खग संत सदा तिह सेवति हैं, पुनि देवति औरन को उपकारी ॥७॥ (पूरबार्द्ध भाग-१, २८)

श्री गुरु नानक देव जी ने आकाशवाणी सुन कर प्रभु से बिना विलंब के मिलने का निश्चय किया। उन्हें प्रभु से मूल-मंत्र प्राप्त हुआ तथा उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने का अभियान शुरू करने की तैयारी की:

कारन या अवतार धरयो भव, कारज जाइ करो अब सोऊ।
है कलिकाल कराल बिसालहि मंदमती मन मानव होऊ।
देवनि पूजति, नाम ते बेमुख, केवल पाप पराइन जोऊ।
भाउ भले भगती प्रगटावहु, भार धरा पर भूर बिगोऊ ॥३॥ (पूरबार्द्ध भाग-१, २९)

प्रयाण से पूर्व भाई संतोख सिंघ ने तीन प्रकार से चरित्र पर प्रकाश डाला है। दंडवत प्रणाम करने वाले मनसुख को व्यापार में

सफलता के लिए भक्ति-भावना से जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया--*"मति नित राखहु भगतिहि बोरी।"* मस्जिद में नमाज के समय मन का रहस्य बताए जाने पर नवाब ने श्री गुरु नानक देव जी की शरण ग्रहण की। उसे आधा धन गृहस्थ में बाबा सिरीचंद को देने तथा आधा धन परोपकार में दान-स्वरूप खर्च करने का निर्देश दिया। तीसरा प्रसंग ससुर भाई मूल चंद और सास माता चंदो रानी का है जिनकी ताड़ना का समाधान भौतिक स्तर पर संभव नहीं था। सिरीचंद बहन नानकी के पास रहे, लखमी दास ने माता सुलक्खणी जी के साथ ननिहाल प्रस्थान किया।

तलवंडी की भांति अब सुलतानपुर से विदा होने का करुण दृश्य उपस्थित हुआ। बहन नानकी चाहती हैं कि भाई मरदाना जी गुरु जी के पास रहें जिससे श्री गुरु नानक देव जी अधिक दूर न जावें। उनके पति भाई जैराम उनको धैर्य और निष्ठा का उपदेश देते हैं:

निकटि रहति आनन अरबिंदा कबि कबि हौं पशयंतू।
जाहिं विदेश न दीसहिं मोहू मन लखि इउं बिलखंतू।
कहि जराम नानकपर निशचा उर थिर गिर सर तेरे।
भ्रम बज्जर ते थरहर डोलयो, धीर नसी इह बेरे ॥२०॥
निताप्रति मुझ को समझावति अब किउं उर महिं भरमी?
स्री नानक अविलंब सदा निज, लखहिं सु तिन के मरमी।
पुन मरदाना जैसे रहि पुरि, तैसे करहु उपाई।
कैसे रिदै उदास भयो है किउं तलवंडी जाई? ॥२१॥

(पूरबार्द्ध, भाग-१, ३६)

श्री गुरु नानक देव जी की यात्राओं के आरंभ में समीपवर्ती ग्राम ऐमनाबाद जाने और वहां से तलवंडी लौटने का वर्णन है। ऐमनाबाद की यात्रा का मुख्य संदेश समाज में शोषण करने वाले मलिक भागो का विरोध तथा परिश्रम की कमाई करने वाले भाई लालो के समर्थन के द्वारा स्पष्ट किया गया है। तलवंडी में निवास पिता के घर पर नहीं दिखाया गया अपितु भाई बाला जी के कूप पर दर्शाया गया है। सुलतानपुर लोधी से विदाई के समय लाहौर के मनसुख को नाम-सिमरन का उपदेश दिया।

इस संदर्भ को अध्याय ४३ में पुन: लिया गया है, जब दासी भोजन के लिए गुरु जी को आमंत्रित करने जाती है तब गुरु जी सोए हुए हैं। दासी उत्सुकतावश अपनी रसना से गुरु जी के चरणों को स्पर्श करती है। उसको तीनों लोकों का ज्ञान होता है, उसे विश्व-रूप-दर्शन होता है। वह ग्राम, नगर, पर्वत और सिंधु देखती है। सागर में मनसुख का जहाज डूब रहा है। उसने गुरु नानक साहिब जी का स्मरण किया और गुरु जी ने जहाज तट पर पहुंचाया :

निज अराधना लखि करि स्वामी।
गए सिंधु महिं अंतरजामी।
तिह जहाज को तट पहुंचावा।
मनसुख देखि रिदे सुख पावा ॥६३॥

(पूरबार्द्ध, भाग-२ ४३)

तलवंडी की समीपवर्ती यात्रा के बाद दूरवर्ती क्षेत्रों की यात्राओं का वर्णन है। पूर्व में कावरू (कामरूप=आसाम,अध्यय ४६) दक्षिण में सिंगलद्वीप (राजा शिवनाभ=उपदेश) तथा वहां से कई द्वीपों से होते हुए गुरु जी मक्का पहुंचते हैं। कामरूप में जादू-टोना छोड़कर सिक्ख-मार्ग के सुगम पथ का वर्णन है :

गुर नानक आनन बैन भनैं गुर सिखी मनजूर करो मन मांही।

ध्रमसाल करो, हरिनाम ररो उर भाउ धरो, हरि कै क्रित याही।
सिख संतन सेवहु होइ भलो तुम, ग्रीव परै नहिं अंतक फाही।
सुनि दीन भए भनिही मुख ते, तुमरे अनुसार बिना हम नांही ॥४४॥ (पूरबार्द्ध भाग-२, ४६)

सिंगलद्वीप में राजा शिवनाभ को दिये गए उपदेश में अष्टांगिक योग के ८ अंगों और उनके भेदों के लक्षण दिये गए हैं। द्वितीय अंग-नियम के अंतर्गत होम का वर्णन अन्न, नाम तथा ज्ञान-यज्ञ के स्वरूप को स्पष्ट करता है:

छुधातुर के मुखपावन।
ब्रहमहोम इह भलो सुहावन।
वाहिगुरू को करहि उचारा।
तां पाछे मुख पाइ अहारा ॥५६॥
बदन देवता पावक कहिये।
सरब सुरन की जिहवा लहिये।
ब्रहम प्रसंन संगि सुख सारे।
त्रिपति होति हरिनाम उचारे ॥५७॥
त्रिती होम है गयान का रस रिखीक के दरब।
गयान अगनि मैं होमही तन हंतादिक सरब ॥५८॥
(पूरबार्द्ध, भाग-२, ४८)

द्वीपों की यात्रा में कवि ने सुवर्णपुरी द्वीप की कल्पना की है जहां सभी प्रकार की आदर्श व्यवस्था है। वहां का राजा कंवल नैन बहुत दयालु है, सभी वस्तुयें बिना किसी मोल के उपलब्ध हैं। भौतिक चकाचौंध के होते हुए भी उसके मन में 'तन हंता' देह-बुद्धि का अहंकार है जो जन्म-मरण के बंधन का कारण है। कवि ने राजा के लिए इरंड वृक्ष का प्रतीक लिया है जिसमें चंदन के समान सुगंध नहीं है:

चंदन से श्री गुर चरन मन इरंड ढिग लाइ।
है सुगंधि मै काम को सीतलता सुख पाइ ॥१॥
(पूरबार्द्ध, भाग-२, ५६)

श्री गुरु नानक देव जी ने द्वैत-भाव को मन से मिटाकर राजा के तन के अहंकार को दूर किया। धर्मसाल (गुरुद्वारा) में प्रभु-कीर्ति होने लगी :

श्री गुर बोले 'सुनहु भुवाला!
राज जोग तुम करो बिसाला।
ठानहु सदा धयान मन मांही।
मैं हों निकट दूर कत नांही' ॥१०९॥
(पूरबार्द्ध, भाग-२, ५६)

'स्री गुर नानक प्रकाश' में गुरु नानक साहिब के मक्का-प्रसंग का वर्णन बहुत विस्तार से किया गया है। निष्कर्ष रूप में कहे गए गुरु जी के वचन में कवि ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के धर्म-समन्वय सम्बंधी दो कबित्तों के भावों को प्रस्तुत किया है :

ऐसे सुनि बैन बोले गुरू ऐन तब,
पंच तत्त साजे सभि देह इक सार ही।
नैन कान नासका बदन कीने एक हूं से,
क्रिया सम भई हाथ पावके मझारही।
देशनि के भेस को प्रभाव धरि रिदै मांहि,
पक्खबाद गाढे है के झगरैं गवार ही।
नाम लिवलाई जाहिं, अधिक वडाई तांहि,
जानिकै सरूप निज उधरै संसारही ॥३७॥ . . .
भ्रम जांके तन नहीं भयो निरमल मन दावे
बांधै पक्ख हूं के रहित संसारही।
हिंदू कि तुरक कौन जानति समान जौन,
भ्रम को बिदार उर देखैं एक सार ही।
राम सो रहीम अलाह सो अकाल रूप,
जानिये खुदाइ सोऊ एक एकंकार ही।
मूढ नहीं पावैं भेद बाद को रचावैं नित,
पाइं दुख भारी जाइं नरक मझार ही ॥४३॥
(पूरबार्द्ध, भाग-२, ५८)

मक्का के बाद गुरु जी मदीना होकर पुन: मक्का लौटे। वहां पानी की कमी थी। गुरु जी ने काबे की दीवार में छड़ी (आसा) से प्रहार किया, जिससे पानी की धारा बह निकली।

काजी नत्मस्तक हुए और गुरु जी से खड़ांव प्राप्त करके श्रद्धा से पूजन करने लगे।

मदीना के बाद गोरखनाथ तथा अन्य सिधों से चर्चा के प्रसंग हैं। मछंदर सिध के प्रश्न के उत्तर में कवि ने शरीर-रचना के छ: चक्रों और दशम द्वार में योग-साधना द्वारा प्रभु-मिलन का सरस वर्णन किया है:

मूल को कमल दल चार हैं अमल लाल,
नाभि तले खट दल पीरो रंग जानिये।
नाभि मैं दसम दल नीलो रंग सोहै जां को,
रिदे दल द्वादश को सेत पहिचानिये।
कंठ को कमल दल सोलां है अमल भेद,
त्रिकुटी मैं दोइ दल धाम सुखदानिये।
भेद इन जाइ, खट चक्र जो अलाइ,
इस द्वार ठहिराइ बाइ, ऐसी बिधि मानिये ॥४९॥

(पूरबार्द्ध, भाग-२, ६०)

श्री गुरु नानक देव जी की यात्राओं का पूरबार्द्ध का उत्थान भक्त प्रहलाद तथा ध्रुव भक्त से मिलन और चर्चा से दर्शाया गया है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी आत्म-शक्ति से ऋषियों के पास शैलगिरि पहुंचे। वहां भाई बाला जी और भाई मरदाना जी रह गए। फिर वे ध्रुव मंडल में भक्त ध्रुव से मिले और अंत में सचखंड में प्रभु से मिले। मिलकर लौटने पर भक्त ध्रुव ने पूछा:

सच्च खंड की देहु निशानी।
कैसा देख्यो प्रभु निरबानी।
कौनै रूप रंग है तिन को?
दरशन जाइ कीन तुम जिनको ॥७॥
आगै भई न कबही ऐसे।
देहि समेत गए ढिग जैसे ॥

गुरु जी ने कहा :

उत्तम भगत ध्रुव तुम सुनीए।
रूप रंग तिन को नहिं गुनीए ॥८॥
भगतनि ध्यान हेतु बिन जौना।
सोहत श्याम सरूप सलोना।
ससि सविता कोटिक उजिआरा।
ब्रहमादिक जिह पाइं न पारा ॥९॥ . . .
सभिनि बिखै जिह जोति समानी।
सदा अलेप सरब को दानी।

कवि द्वारा भक्त ध्रुव से गुरु नानक साहिब के प्रति कहे गए वचन दर्शाए :

सुनि कीनो ध्रुव हरख अपारा।
निरंकार के तुम आकारा ॥१२॥
निशचा मोहि अधिक अति गाढो।
धंन भाग देख्यो ढिग ठांढो।
कलि महिं नाम करहिं उपदेशा।
पावति नर जे अधिक कलेशा ॥१३॥
सहि न सके तिन को दुख भारी।
धरयो रूप तुम परउपकारी।
दीन बंधु हो दीन दयाला।
दीना नाथहि नाम बिसाला ॥१४॥

(उत्तरार्द्ध, भाग १, १)

भाई मरदाना जी द्वारा ध्रुव-मंडल और सचखंड के बारे में जिज्ञासा प्रकट करने पर बताया कि ध्रुव-मंडल की दूरी तो नाप के द्वारा बताई जा सकती है, किन्तु सचखंड की दूरी बुद्धि-गणना से बाहर है :

अप्रमान सो सुनि मरदाने।
तिह की गिनती है न बखाने।
नाम अनंत अलेख अपारा।
ब्रहमादिक इउं करति उचारा ॥२२॥
दया धारि दिखरावहि जेतो।
करयो जंतु देखति है तेतो।
ओरक कहूं न पायो कांहू।
सरब अनंत कहैं मिलि तांहू ॥२३॥

(उत्तरार्द्ध, भाग १, १)

ध्रुव-मंडल की यात्रा के बाद नवखंडों की यात्रा करते हुए श्री गुरु नानक देव जी तलवंडी आए। माता-पिता को उपदेश दिया। कुछ दिनों

के बाद उनके बैकुंठ-गमन के बाद फिर प्रस्थान किया। उत्तरार्द्ध की यात्रा में भारत के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थानों (करुक्षेत्र, हरिद्वार, अयोध्या, काशी और जगन्नाथ) का उल्लेख किया गया है। भूटान, कशमीर तथा कंधार के पहाड़ी स्थानों के प्रसंग हैं। सिधों के साथ पुन: गोष्ठि और लौटते समय ऐमनाबाद में बाबर के युद्ध अथवा उसकी सेना द्वारा जन-साधारण और सभी वर्गों के लोगों को दुखित करने का प्रसंग है।

यात्राओं की समाप्ति के बाद श्री गुरु नानक देव जी ने पुन: गृहस्थ के कर्त्तव्यों की ओर ध्यान लगाया। सन्यास के बाद कवि प्रथम बार माता सुलक्खणी जी (पत्नी) को गुरु के सामने अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर देते हैं:

किउं तुम फिरे मोहि संग लावन।
जे तन भगवो भेख बनावन।
मुझ को कर अनाथ इक बारी।
आइ न कबहूं सुरति संभारी ॥७५॥ . . .
मात पिता देवत हैं गारी।
अपन गरे ते चहित उतारी।
बोल कुबोल देत हैं तांने।
तूं भी करहु फकीरी बाने ॥७९॥ . . .
मुर निणान जो नानकी जब जीवत सुखदाइ।
सिरी चंद तिह सदन महिं सब कुछ पहरति खाइ ॥८१॥ . . .
जब का भा तिन को परलोकू।
हम को भयो सबै बिध शोकू ॥८२॥ . . .
अस कहि आंखन आंसू गेरत।
ऊच स्वास लै धरनी हेरत ॥८३॥

परिस्थिति के यथार्थ को जानकर श्री गुरु नानक देव जी का हृदय करुणामयी हो गया। हे चौणी कुल धन्या! यदि तुम दुख और भूख सहन करने को तैयार हो तो हमारे साथ रहो। माता सुलक्खणी जी ने एक सहधर्मिणी के रूप में इसे सहर्ष स्वीकार किया :

भनै सुलखनी सुनि बच मोरे।
नहिं भूखन जाचों ढिग तोरे ॥८५॥
रिदे बिखै चाहों नित ऐसे।
तुम जिउं हाल होइ मम तैसे।
दुख भुख सहि कै अपन सरीरा।
रहों सदीव तुमारे तीरा ॥८६॥

श्री गुरु नानक देव जी ने माता सुलक्खणी जी की दृढ़ श्रद्धा देखकर बच्चों को लाने का निर्देश दिया। दोनों बच्चे पिता के समीप पहुंचे। सुख के खजाने श्री गुरु नानक देव जी को पाकर जननी तथा पुत्र चिंता-रहित हो गए:

जहिं बैठे अघ ओघ निकंदन।
द्वै सुत कीन चरन पग बंदन।
रहिन लगे निज पित के पासू।
चिंता सगरी कीन बिनासू ॥९१॥

(उत्तरार्द्ध, भाग-२, २९)

श्री गुरु नानक देव जी के ससुराल के गांव पक्खोके के पटवारी अजित्ते रंधावे ने कुछ दिन परिवार की सेवा की। फिर लाहौर के एक सिक्ख व्यवसायी करोड़ी ने करतारपुर में धर्मसाल बनवायी, जहां गुरु जी ने परिवार सहित निवास किया। करतारपुर निवास के बाद यात्रा-क्रम में सियालकोट, पाकपटन, कंधार, मुलतान के प्रसंग दिये गए हैं। यात्रा के उपरांत फकीरी वेष त्याग कर कृषि करना आरंभ किया।

करतारपुर में रहकर सिक्खों को उपदेश के प्रसंग हैं। इसी अवधि में समीपस्थ अचल बटाला में सिधों के साथ हुई गोष्ठि का वर्णन है। अध्याय ४६ में भाई बाला जी के परलोक गमन के बाद का जीवन-वृत्तांत कवि के माध्यम से वर्णित है। इसमें श्री गुरु अंगद देव जी की गुरु जी से भेंट नाटकीय रूप से दिखाई गई है।

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म मत्ते की सराय में हुआ। गांव बाढ़ में बह जाने के

कारण वे गांव खडूर में रहने लगे। वे ज्वाला जी के दर्शन करने जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने गुरु जी से मिलने का निश्चय किया। गुरु जी से श्री गुरु अंगद देव जी ने चारे का बोझ सिर पर धारण किया। उस बोझ से कीचड़ के छींटे उनके निर्मल वस्त्रों पर पड़े। माता सुलक्खणी जी ने गुरु जी के इस निष्ठुर व्यवहार की भर्त्सना की। गुरु जी ने कहा कि यह केसर का छिड़काव है जो करीब से देखने पर प्रकट होगा। इस बोझ से हमने इनके सिर पर राज-मुकुट रख दिया है जिससे ये भवसागर में डूबते लोगों का सहारा होंगे :

गुनखानी सुन बैन उचारे।
'नहीं पंक संग भरयो भारे।
दीन दुनी का छत्र सु दीओ।
अपर न इह सम जग महि बीओ ॥९२॥
पंक जौन तुम को द्रिशटावा।
केसर को हमनै छिरकावा।
अब तुम देख, खरो तुम नेरे।
देखो तो केसर छिरकेरे' ॥९३॥
गुर कहिं 'देखिओ?' कहि 'प्रभु देखा।
तुमरी गति तुम लखहु अलेखा'।
'भव सागर दारुन के मांही'।
गुर कहिं 'नर बह बूडत जांही ॥९४॥
बहु नर को मलाह इह होई।
पार करहि भवसागर जोई'।
तूशन भई सुलखणी सुन कै।
लहणा हरख्यो करुणा गुन कै ॥९५॥
(उत्तरार्द्ध, भाग २, ४७)

श्री गुरु अंगद देव जी भेंट के बाद के अध्याय श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा गुरु नानक देव जी की सेवा तथा उनकी निष्ठा की परीक्षा से सम्बंधित हैं।

गुरु जी ने ज्योति-जोत समाने का समय निकट जान बच्चों और माता सुलक्खणी जी को सूचना भेजी। माता सुलक्खणी जी तुरंत आईं। उनके नेत्रों से अश्रु-धारा बह निकली--*"बार बिलोचन भर भर रोई ॥८४॥"* गुरु जी ने उन्हें सम्बोधित किया :

जो तुझ उर अभिलाख है कर लीजै सो बात।
--मिल कर हौं बोली नहीं--बहुर न कहिं पशचात ॥८६॥ (उत्तरार्द्ध, भाग २, ५४)

श्री गुरु नानक देव जी ने 'शबद' का आश्रय लेने का उपदेश दिया। इस संसार में 'काल' रूपी 'शेर' करुणा रहित और क्रूर है। यह 'काल' 'शबद' को छोड़कर सभी को खा जाता है:

मुझ सों मिलने को जो चाही।
सदा बिछरनो भावै नाहीं।
सो नर सबदि करहिं अभ्यासे।
स्रवन मननि नित प्रति निध्यासे ॥९॥
निरसंदेह मिलैं मुझ संगा।
बहुर न बिछुरैं ह्वै इक रंगा।
बिन करुना ते क्रूर बिसाला। . . .
म्रिग ब्रहमंड केहरी काला ॥२६॥
कमल फूल अदभुत अहै बच्यो तांहि ते सोइ।
नहिं समीप तहिं जावई रहे बिना बल होइ ॥२७॥
शांति मैत्री अंकुर तासू।
चेतनता मात्र परकासू।
इस महिं काल लीन हुइ जावहि।
तिह तजि अपर सरब को खावहि ॥२८॥
तां ते शबद करो अभ्यासा।
सगरो भेद होइ परकाशा ॥२९॥

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन से मानवता का कल्याण हुआ। दैवी शक्तियों के द्वारा श्रद्धांजलि में इसका सार रूप प्रस्तुत है:

भाउ भगति बिसतार गुरू सिक्खी जग कीनी।
पूरब साधन मुकति करत औरै बिधि चीनी।
तिन ते तुमहिं सुखेन कीन इहु रीति नवीनी।
गाडी राहु चलाइ नरन को सुभ मति दीनी।

प्रभू! नमहि नमहि पुन पन नमहि, चरन शरन तारन तरन।
दुख दरन, करन सुख, हरन अघ, स्री नानक कारन करन ॥४४॥ (उत्तराद्ध, भाग-२, ५५)

(पाठकों एवं लेखकों की सुविधा हेतु यह बताना आवश्यक है कि भाई संतोख सिंघ ने 'श्री गुर नानक प्रकाश' सहित 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' उस समय लिखा जब सिक्ख इतिहास में पौराणिक एवं मिथिहासिक कथाओं का समावेश किए जाने का घोर प्रयास किया जा रहा था। ऐसे समय में लिखे सिक्ख इतिहास एवं गुरमति साहित्य के ग्रंथ एवं पुस्तकें कई ऐसी बातों के प्रभाव का प्रदर्शन करती हैं जो गुरमति, असली सिक्ख इतिहास तथा सिक्ख धर्म के उसूलों के बिलकुल विरुद्ध हैं तथा न माननेयोग्य हैं। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने इस बात को गंभीरता से लेते हुए प्रयास आरंभ किया कि एक अलग विभाग की स्थापना की जाए। वहां पंथक सोच रखने वाले वयोवृद्ध एवं सूझवान इतिहासकारों की सेवा लेकर सिक्ख स्रोत ऐतिहासिक ग्रंथों की संपादना या पुनर्संपादना करवाई जाए, जिससे सिक्ख स्रोत ऐतिहासिक ग्रंथों में घुसपैठ कर चुकी गुरमति विरोधी बातों का खंडन कर वास्तविक स्थिति से सिक्ख पंथ को अवगत कराया जाए। 'श्री गुर नानक प्रकाश' से संपादना का काम शुरू किया गया तथा संपादक नियुक्त किए गए प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ किरपाल सिंघ (चंडीगढ़)। उन्होंने 'श्री गुर नानक प्रकश' को चार पोथियों (पूरबार्द्ध भाग १ व २' तथा 'उत्तरार्द्ध भाग १ व २) में बांटकर अब तक श्री गुरु अरजन देव जी (भाग ३) तक 'श्री गुर प्रताप सूरज पंथ' की संपादना कर दी है। इन ग्रंथों का प्रकाशन शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा किया जा रहा है तथा ये सभी ग्रंथ बहुत ही कम कीमत में शिरोमणि कमेटी मुख्यालय तथा शिरोमणि कमेटी अधीन आते ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान पर बने लिट्रेचर हाऊस में उपलब्ध हैं।)

-संपादक।

आपका पत्र मिला

वाकई इसे पढ़कर 'मन की आंखें' खुलती हैं

मैं पिछले करीब तीन साल पहले 'गुरमति ज्ञान' का सदस्य बना। जबसे मेरे निवास पर यह पत्रिका पहुंचती है मानो मेरे अंदर एक खुशी की लहर दौड़ पड़ती है। मैं इस पत्रिका को पढ़कर निहाल हो जाता हूं। इस पत्रिका में सुंदर रूप में गुरुओं की जानकारी पूरे विस्तृत तरीके से लिखी होती है। मैं इस पत्रिका को बड़े ही अच्छे ढंग से अपनी अलमारी में सहेज कर रखता हूं। वाकई इसे पढ़कर 'मन की आंखें' खुलती हैं और बहुत ही संतोष प्राप्त होता है, जो बहुत सारा धन कमा लेने से भी नहीं होगा। इस प्रकार की और भी पत्रिकाएं होंगी तो उन्हें भी मंगाकर मैं अवश्य पढ़ूंगा और ज्ञान प्राप्त करूंगा। बड़ी ही खुशी के साथ आप सभी को धन्यवाद देता हूं।

इस पत्रिका को पढ़ने से सिक्ख ही नहीं अन्य धर्मों के लोग भी इसको पढ़कर बहुत-बहुत खुश होते हैं।

-मंगा सिंघ, भिलाई (दुर्ग)

भाई गुरदास जी की दृष्टि में श्री गुरु नानक देव जी का स्वरूप

-प्रो बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा*

गुरु साहिबान, गुरसिक्ख बाणीकारों, भट्ट बाणीकारों ने श्री गुरु नानक देव जी के स्वरूप का वर्णन बाणी में किया है। जन्म-साखीकारों और भाई गुरदास जी ने गुरु बाबे का स्वरूप-वर्णन अपने-अपने ढंग से किया है। भाई गुरदास जी द्वारा गुरु नानक साहिब जी के संबंध में किया गया जिक्र गुरबाणी के बाद सर्वाधिक विश्वसनीय स्वीकार किया जाता है, चूंकि भाई गुरदास जी गुरु-घर के निकटवर्ती, गुरु-सिद्धांतों को समझने वाले और उनकी व्याख्या करने वाले शिरोमणि कवि माने जाते हैं। यही कारण है कि उनकी रचना को गुरबाणी की कुंजी होने का सम्मान प्राप्त है। भाई साहिब की दृष्टि में जो गुरु-बाबे का स्वरूप है उसको सामने लाने के लिए उनकी वारों और कबित्त सवैयों को आधार बनाया गया है। भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी का स्वरूप चित्रण करने के समय उनके कई रूपों का वर्णन किया है परंतु यह स्वरूप 'गुरु' पर ही केंद्रित किया है। यह रूप अज्ञान, अंधकार, भ्रम के प्रसंग में प्रकाश रूप ज्ञान-ज्योति पर उदय होता है। भाई गुरदास जी की दृष्टि में भारतीय अवतारवाद का सिद्धांत श्री गुरु नानक देव जी पर लागू नहीं किया जा सकता। परमात्मा अवतार बन कर नहीं जन्म लेता, क्योंकि :

जा को नामु है अजोनी कैसे कै जनमु लै,
कहा जान ब्रत जनमासटमी को कीनो है।
जा को जगजीवन अकाल अबिनाशी नामु,
कैसे कै बधिक मारिओ अपजसु लीनो है।
निरमल निरदोख मोख पदु जा के नामि,
गोपीनाथ कैसे हुइ बिरह दुख दीनो है।
पाहन की प्रतिमा के अंध कंध है पूजारी,
अंतरि अगिआन मति गिआन गुर हीनो है ॥४८५॥
(कबित्त सवैये)

दूसरी ओर पैगंबरी इलहाम अथवा ईश्वरीय प्रेरणा किसी रबी फरिश्ते के द्वारा या दैवी पुस्तक पढ़ाने वाली कोई बात भाई गुरदास जी ने नहीं बताई। भाई साहिब जी की दृष्टि में गुरु नानक साहिब का मूल व्यक्तित्व गुरु, सतिगुरु, गुरदेव की भै-भावनी वाला है जो अज्ञान से ज्ञान या अंधकार से प्रकाश की ओर लेकर जाती है। पहली वार की प्रथम मंगलाचरण पउड़ी में उल्लेख है :

नमसकारु गुरदेव को सति नामु जिसु मंत्रु सुणाइआ।
भवजल विचों कढि कै मुकति पदारथि माहि समाइआ। (वार १:१)

सोरठा-
आदि पुरख आदेस, ओनम स्री सतिगुर चरन।
घट घट का परवेस एक अनेक बिबेक ससि ॥१॥

सोरठा-
अबिगति अलख अभेव, अगम अपार अनंत गुर।
सतिगुर नानक देव, पारब्रहम पूरन ब्रहम ॥४॥
(कबित्त सवैये)

अध्यात्म मंडल में श्री गुरु नानक देव जी का स्वरूप बयान करते हुए अकाल पुरख के साथ एकरूपता, एकाकारता दर्शाई गई है। निज

*उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।

स्वरूप अथवा सांसारिक मंडल में श्री गुरु नानक देव जी 'गुरु' अथवा 'ज्ञान स्वरूप' में प्रकट होते हैं। ऐसे स्वरूप का गुणगान किया गया है। पारब्रह्म-रूप अथवा अकाल-रूप किसी अवतारी सिद्धांत की पुष्टि के लिए नहीं है बल्कि यहां भावना प्रभु-मिलाप अथवा परमेश्वर के सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के अर्थों को और अधिक बलपूर्वक दृढ़ कराने की है।

पहली वार में श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पूर्व युगगर्दी की दशा अथवा युग की अत्यंत गिरावट की स्थिति बता कर अकाल पुरख तथा गुरु के परस्पर रिश्ते और आवश्यकता की बात करते हुए बताया है:

जुगि गरदी जब होवहे उलटे जुगु किआ होइ वरतारा।
उठे गिलानि जगति विचि वरते पाप भ्रिसटि संसारा।
वरनावरन न भावनी खहि खहि जलन बांस अंगिआरा।
निंदिआ चले वेद की समझनि नहि अगिआनि गुबारा।
बेद गिरंथ गुर हटि है जिसु लगि भवजल पारि उतारा।
सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचरु धरे न प्रभु अवतारा।
गुर परमेसरु इकु है सचा साहु जगतु बणजारा।
चड़े सूर मिटि जाइ अंधारा॥ (वार १:१७)

भाई गुरदास जी ने गुर-अवतार वाली पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी को अंधकार-युगगर्दी की दशा में से निकाल कर मानवता का कल्याण करने वाला स्वरूप दर्शाया है :

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ।
चरन धोइ रहरासि करि चरणाम्रितु सिखां पीलाइआ।
पारब्रहमु पूरन ब्रहमु कलिजुगि अंदरि इकु दिखाइआ।
चारे पैर धरम्म दे चारि वरनि इकु वरनु कराइआ।
राणा रंकु बराबरी पैरी पावणा जगि वरताइआ।
उलटा खेलु पिरंम दा पैरा उपरि सीसु निवाइआ।
कलिजुगु बाबे तारिआ सति नामु पढ़ि मंत्रु सुणाइआ।
कलि तारणि गुरु नानकु आइआ॥ (वार १:२३)

अकाल पुरख के साथ एकाकारता, मिलाप अथवा उसके साथ बन आने का पहली वार की २४वीं पउड़ी में जिक्र है :

पहिला बाबे पाया बखसु दरि पिछोदे फिरि घालि कमाई।
रेतु अक्कु आहारु करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई।
भारी करी तपसिआ वडे भागि हरि सिउ बणि आई।
बाबा पैधा सचि खंडि नउ निधि नामु गरीबी पाई।

एकता, सुमेलता के कारण ही यह गुरु-स्वरूप धारण करके कलियुग के अंधकार में लोगों को सीधे मार्ग पर लाने का मिशन था श्री गुरु नानक देव जी का। निर्मल पंथ, गुरमुख मार्ग की स्थापना उनके मिशन की आवश्यकता और प्राप्ति थी।

अकाल रूप : भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी को अकाल रूप माना है :

इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
(वार १:३५)

यहां भाव केवल अकाल पुरख के साथ एकाकर, एकरस, घुले-मिले होने का ही है :

निरंकार आकारु करि गुर मूरति होइ धिआन धराइआ। (वार १८:१४)

गुरु परमात्मा का पूर्ण प्रतिबिंब अथवा मूरति होता है :

धिआनु मूलु गुर दरसनो पूरन ब्रहमु जाणि जाणोई।
पूज मूल सतिगुरु चरण करि गुरदेव सेव सुख होई।
मंत्र मूलु सतिगुरु बचन इक मनि होइ अराधै कोई।
मोख मूलु किरपा गुरू जीवनु मुकति साधसंगि सोई। (वार २६:६)

यहां गुर-शबद की बात भी चली है। सतिगुर का शबद ही प्रभु-ज्ञान का रहस्य बताता है। अकाल पुरख, गुरु और शबद अभेद हैं। भाई साहिब भ्रम को दूर करने के लिए कि शारीरिक रूप में भी सतिगुर और शबद एक ही हैं, उल्लेख करते हैं :

जैसे फल सै बिरख, बिरख सै होत फल,
अदिभुति गति कछु कहनु न आवै जी।
जैसे बासु बावन मै, बावन है बासु बिखै,
बिसम चरित्र कोऊ मरमु न पावै जी।
कासटि मै अगनि, अगनि मै कासटि है,
अति असचरज है कउतक कहावै जी।
सतिगुर मै सबदु, सबद मै सतिगुर है,
निरगुन गिआन धिआन समझावै जी ॥५६४॥
(कबित्त सवैये)

श्री गुरु नानक देव जी के पास अकाल पुरख का सच्चा ज्ञान ही नहीं बल्कि उनके जिम्मे यह कारज भी उसी की तरफ से लगा था कि सच्चा ज्ञान प्रकट करके गलत मार्ग पर पड़ी मानवता को गुरमुख-मार्ग का पथिक बनाना है। इस दृष्टि से भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी को किसी एक धर्म विशेष के साथ संबंधित न बताकर कलियुग को पार लगाने के लिए मांझी अथवा मल्लाह की तरह प्रस्तुत किया है :

कलि तारणि गुरु नानकु आइआ ॥ (वार १:२३)

सब लोगों ने यह समझ लिया था कि गुरु नानक साहिब जगत को पार उतारने वाले हैं:

--सभ सिधी इह बुझिआ कलि तारनि नानक अवतारा। (वार १:२९)
--भइआ अनंद जगतु विचि कलि तारन गुरु नानकु आइआ। (वार १:३७)

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी को जगत-गुरु, सच्चा पातशाह, जाहरा पीर के रूप में भी बयान किया है:

--जगतु गुरू गुरु नानक देउ ॥ (वार २४:२)
--सतिगुर सचा पातिसाहु बेपरवाहु अथाहु सहाबा। . . .
जाहर पीर जगतु गुरु बाबा ॥ (वार २४:३)

श्री गुरु नानक जी विश्व-विजेता, शाह सवार थे। भाई गुरदास जी ने विश्व-विजेता के रूप में प्रकट करने हेतु उल्लेख किया है:

गड़ बगदादु निवाइ कै मका मदीना सभे निवाइआ।
सिध चउरासीह मंडली खटि दरसनि पाखंडि जिणाइआ।
पाताला आकास लख जीती धरती जगत सबाइआ।
जीते नव खंड मेदनी सति नामु दा चक्र फिराइआ।
देव दानो राकसि दैत सभ चिति गुपति सभि चरनी लाइआ।
इंद्रासणि अपछरा राग रागनी मंगलु गाइआ।
भइआ अनंद जगतु विचि कलि तारन गुरु नानकु आइआ।
हिंदू मुसलमाणि निवाइआ ॥ (वार १:३७)
--धरी नीसानी कउसि दी मके अंदरि पूज कराई।
जिथै जाइ जगति विचि बाबे बाझु न खाली जाई।
घरि घरि बाबा पूजीऐ हिंदू मुसलमान गुआई।
छपे नाहि छपाइआ चड़िआ सूरजु जगु रुसनाई।
बुकिआ सिंघ उजाड़ विचि सभि मिरगावलि भंनी

जाई।
चड़िआ चंदु न लुकई कढि कुनाली जोति छपाई।
उगवणहु ते आथवणो नउ खंड प्रिथमी सभ झुकाई।
जगि अंदरि कुदरति वरताई ॥ (वार १:३७)

भाई गुरदास जी की दृष्टि में श्री गुरु नानक देव जी एक संस्थापक रूप में भी प्रकट हुए हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने क्षीण हो चुके धर्म की पुर्नस्थापना करते हुए एक नये-निराले धर्म को कायम किया, जिसको गुरमुख मार्ग, निर्मल पंथ आदि कहा है:

--सबदि जिती सिधि मंडली कीतोसु अपणा पंथु निराला। (वार १:३१)
--गुरमुख धरम सपूरणु रीणा ॥ (वार २३:१८)
--मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ। (वार १:४५)
--बारह पंथ इकत्र करि गुरमुखि गाडी राहु चलाइआ। (वार १४:१८)

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी का जो रूप चित्रण किया है उसमें गुरु नानक साहिब, अकाल पुरख और शबद में कोई भेद नहीं है। गुरु नानक साहिब जगत-जलंदे को रबी कृपा के साथ, विकारों की अग्नि में जलने से बचाकर पार उतारने वाले हैं। आप जी नये-निराले धर्म सिक्ख धर्म के संस्थापक, हरेक के लिए अज्ञान का नाश करके ज्ञान का प्रकाश देने वाले गुरु, गुरमुख, सतिगुरु हैं :

सतिगुरु नानकु प्रगतिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।
सिंघु बुके मिरगावली भंनी जाइ न धीरि धरोआ।
जिथे बाबा पैरु धरि पूजा आसणु थापणि सोआ।
सिधासणि सभि जगति दे नानक आदि मते जे कोआ।
घरि घरि अंदरि धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ।
बाबे तारे चारि चकि नउ खंडि प्रिथवी सचा ढोआ।
गुरमुखि कलि विचि परगटु होआ ॥ (वार १:२७)

आपका पत्र मिला

'गुरमति ज्ञान' इक रोशनी है!

'गुरमति ज्ञान' इक रोशनी है, सिक्ख धर्म दे प्रचार दा माध्यम है। एह पत्रिका हिंदी में बड़ी अहम भूमिका निभा रही है। एह पत्रिका सिक्ख अते गैर-सिक्ख, जिन्हां नूं गुरमति दा पता नहीं कि सिक्ख किस तरां बने ते किउं बने, सिक्खां दा आधार की है, उन्हां नूं सारी जानकारी देण दा बड़ा चंगा साधन है। इस पत्रिका दी जितनी वी तारीफ करो घट ही है।

सितंबर महीने दा अंक पढ़िआ, जिस विच पाकिस्तान दे गुरद्वारिआं दी जानकारी मिली। स. सुरजीत सिंघ राजस्थान दा लेख बड़ा ही चंगा है। अरदास विच असीं नित्त मंगदे हां कि "हे वाहिगुरु! श्री ननकाणा साहिब अते होर गुरुद्वारे, गुरधाम, जिन्हां तों पंथ नू विछोड़िआ गइआ है, तिन्हां दे खुले दरशन-दीदार अते सेवा-संभाल दा दान खालसा जी नूं बख्शो।" आप जी पास बेनती है कि होर वी जिहड़े विदेशां विच गुरदुआरे हन, जिवें बंगला देश अते होर पड़ोसी मुल्कां विच, उह वी जानकारी दिओ।

-अवतार सिंघ, फैजाबाद।

भाई वीर सिंघ द्वारा रचित 'गुरु नानक चमतकार' में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-बिंब

*-डॉ. परमजीत कौर**

अज्ञान का नाश करके हृदय में प्यार तथा सत्य की ज्योति जगाने वाले मानवता के मसीहा, सांझीवालता के समर्थक, शांति के पुंज, गरीबों के पोषक, विनम्रता की मूर्ति, समाज-सुधारक, महान वैज्ञानिक श्री गुरु नानक देव जी का आगमन 'गुरु नानक चमतकार' में लिखे अनुसार १५ अप्रैल, १४६९ ई को राय भोय की तलवंडी जिला शेखपूरा पाकिस्तान में पिता महिता कालू जी के घर हुआ। (गुरु जी की जन्म तारीख के बारे में सारे इतिहासकार एकमत नहीं है। कुछ गुरु जी का जन्म कार्तिक की पूर्णमासी/पूर्णिमा वाले दिन मानते हैं।) जब श्री गुरु नानक देव जी का आगमन हुआ उस समय देश तथा समाज की दशा चिंताजनक थी। सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश विदेशियों की तृष्णा का ग्रास बन गया था। उपद्रवों, अत्याचारों से पीड़ित प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। आन, शान, स्वाभिमान से रहित, भयभीत हिंदू राजा गुलाम बन गये थे। हिंदू धर्म का आधार डगमगा गया था। चारों तरफ अपराध, अधर्म, वैर-विरोध, वहम-भ्रम, छुआछूत, पाखंड तथा पराधीनता का बोलबाला था। ऐसे विषम समय में हरदिआल पुरोहित देश तथा राज्य के कष्ट से आहत परमात्मा से प्रार्थना करता है, "हे भगवान! जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तू आता है। अब तो सारी धरती पाप-ग्रस्त हो चुकी है, अब तो आ जा।" उसी समय वन से एक ध्वनि आती है-"धंन निरंकार! धंन निरंकार!" पुरोहित विस्मित होता है, सोचता है, "आ गये रक्षक आ गये।" *(गुरु नानक चमतकार, पूरबार्द्ध, पृष्ठ २९)*

जब महिता कालू ने लग्न कुंडली के विचार के लिये पुरोहित को बुलाया तब दाई ने बताया- 'आकाश-धरती पर खुशी तथा सुख की वर्षा हो रही प्रतीत होती थी। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आकाश में कोई अदृश्य खड़े हैं तथा सुगंधित फूलों और तारों की वर्षा कर रहे हैं। बच्चा ऐसे आया जैसे कोई महापुरुष कहीं से आकर प्रकट हो जाता है। ऐसा लगता था जैसे कोई मंडली आदर के गीत गा रही है। जैसे अवतार प्रकट हुआ है। हंसमुख, सुंदर-सुडौल चेहरा, माथा चौड़ा, नयन रसीले, घुटनों तक लम्बी भुजायें। *(वही, पृष्ठ ३१)*

आप बाल्यकाल से ही दानी प्रवृत्ति के थे। जब चलने योग्य हुये तो जो बालक घर आते, जो वस्तु समीप होती उन्हें दे देते। जब थोड़े बड़े हुये तो द्वार पर आये किसी याचक को खाली नहीं जाने देते। कई बार तो बर्तन तथा आभूषण भी दे दिये। पांच वर्ष की आयु में चुपचाप आंखें बंद करके बैठे रहते। माथा चमकता था, आनंदमयी समाधि लगी हुयी प्रतीत होती थी। आपकी आलौकिकता से प्रभावित बेबे नानकी को आप में दिव्यता का आभास हुआ।

जब पढ़ने के लिये भेजा गया तो ऐसे पढ़ते थे जैसे पहले ही पढ़े हुये हों। कभी एक अक्षर के आगे परमार्थ की बाणी लिख देते, कभी साथी

**H.No. 620, Gali No. 1, Chhoti Line, Santpura, Yamuna Nagar, (Haryana)-135001*

बालकों से 'धंन निरंकार' का जाप करवाते, तो कभी पंडित के मोह-जाल को भंग कर उसे आश्चर्यचकित कर देते तथा पुरानी रीतियों को नया सार्थक रूप दे देते।

जनेऊ की रस्म के समय पुरोहित को समझाया कि मुझे तो कोई ऐसा जनेऊ दो जो आत्मा के साथ जाये। जिसकी कपास दया हो, सूत संतोष का हो, संयम की गांठें हों तथा ऊंचे आचरण के बट हों :

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥

(पन्ना ४७१)

चरे हुये खेतों का हरा हो जाना, सांप द्वारा बालक-नानक जी के मुख पर छाया करना, मुख पर पड़ी छाया का सूर्य ढलने के बाद भी बने रहना आदि विस्मित करने वाले कौतुकों से रायबुलार द्वारा श्री गुरु नानक देव जी के अंदर की दिव्य-ज्योति को पहचान लिया गया। महिता कालू से कहा, "यह महापुरुष है। इसके सदके मेरा शहर बसता है। कालू तू भी निहाल है जो तेरा पुत्र है और मैं भी निहाल हूं जिसके शहर में यह पैदा हुआ है।" *(गुरु नानक चमतकार, पूरबार्द्ध, पृष्ठ ५२)*

पिता महिता कालू द्वारा २० रुपये देकर व्यापार करने के लिये भेजा गया परंतु चूहड़काने में सात दिन से भूखे साधुओं को भोजन खिलाकर खरा सौदा करके लौटे और थप्पड़ खाकर खड़े (गुरु) नानक देव जी को देखकर रायबुलार ने सोचा--"कुमार अवस्था, परमात्मा का नूर, वह जगत की भूख को दूर करने के अपराध में 'दोषी' बना खड़ा है", तो उन्होंने (गुरु) नानक देव जी को बुलाकर उनसे क्षमा मांगी। महिता कालू को वास्तविकता समझायी तो महिता कालू को स्पप्न याद आ गया जिसमें उन्होंने तप से प्रभावित किंतु भक्ति के लिये प्रेरित करती दिव्य मूर्ति से यह मुराद मांगी थी कि "वे जो परमात्मा हैं, जिसको ज्योति-स्वरूप कहते हैं, मुझे मेरे जैसा रूप धारण करके मिले और ऐसे मिले जैसे अपना होता है। वह आयेगा तो सारा जगत देखेगा, अनेकों का कल्याण होगा।" *(वही, पृष्ठ ६०)*

श्री गुरु नानक देव जी को सुलतानपुर भाई जैराम दास के घर भेजने को तैयार हो गये। जाते समय आपने पत्नी माता सुलक्खणी को आश्वासन दिया कि रोजगार का प्रबंध होते ही बुला लेंगे तथा राय बुलार से कहा कि जहां आपका अपने बल से काम न बन सके, हाथ जोड़ कर परमात्मा की शरण में जाना। सुलतानपुर जाकर मोदीखाने में मोदी की नौकरी की पर परमात्मा के रंग में रंगे रहते। नित्य पहर रात रहते वन में जाते, वेईं नदी में स्नान करते, सूर्य चढ़ने तक प्रीतम के रंग में रत रहते। दिन चढ़ने पर मोदीखाने का काम करते। अवसर मिलते ही 'तेरा-तेरा' की धुन में मग्न हो जाते। तलवंडी में समाचार पहुंचे। माता-पिता एक-दो बार आये थे, पर सबसे पहले अपने प्रीतम का यश गाने वाला सखा भाई मरदाना आया, धीरे-धीरे कई सतसंगी आ गये। माता सुलक्खणी जी भी यहीं आ गये थे।

एक दिन वेईं नदी में स्नान करने गये तो लौटे नहीं। तीन दिन बाद लौटे तो इस मानवीय शरीर में परमात्मा स्वयं विद्यमान थे। परमात्मा ने उन्हें इस मनुष्य के शरीर में दर्शन देकर उन्हें अपनी टेक तथा संसार के उद्धार की आज्ञा दी। भाई वीर सिंघ इस घटना का वर्णन करते हुये लिखते हैं--"अरशों से कोई दिव्य ज्योति आयी तथा गुरु जी की आत्मा को वाहिगुरु के देश ले गये। जिस दर देवी-देव,

अवतार, पीर-पैगंबर खड़े सिर झुकाते हैं, उस दरगाह के अंदर सच्चे पुरुष के पास ले गये, अमृत का कटोरा भरकर आज्ञा दी, "हे नानक! यह अमृत मेरे नाम का प्याला है, तू पी।" तब श्री गुरु नानक देव जी ने तसलीम की, प्याला पिया। साहिब मेहरबान हुआ। जो तेरा नाम लेगा सबको मैंने निहाल किया। तू जाकर मेरा नाम जप तथा लोगों को भी जपा। "हे नानक! जिस ऊपर तेरी कृपा उस पर मेरी कृपा।" *(वही, पृष्ठ ९६)* आप सचखंड से आकर सुलतानपुर गये। अपने गृह में जाकर तन के एक साफे के बिना सब कुछ बांट दिया। चेहरा चमक रहा था। चुपचाप बैठे रहे, आठ पहर कुछ नहीं बोले। बेबे नानकी को छोड़कर सबका मन डगमगा गया। सब चिंतातुर हो गये। अगले दिन गुरु जी बोले, *"ना कोई हिंदू न मुसलमान।"* आपके इन वचनों से कोहराम मच गया। काजी ने नवाब से शिकायत की। नवाब के पूछने पर गुरु जी ने समझाया कि हमें तो सच्चे गुणों से युक्त न कोई मुसलमान दिखाई देता है न हिंदू। एक दिन ब्यास नदी के किनारे ध्यान-मग्न बैठे हुये आपने एक प्रेमी सूरत को कीर्तन करते हुये सुना, अपने नयन खोले तथा उठ खड़े हुये कहा, "एक महापुरुष आयेगा, कीर्तन होगा। यहां आबादी बसेगी।" यह कहते हुये आगे चल पड़े। यहां तीसरे सतिगुरु जी आये तथा गोइंदवाल नगर बसाया। इसी तरह चलते-रुकते हुये तीसरे दिन अमृत वेला में बेरी के नीचे एक सुहावने स्थान पर बैठे, कीर्तन हुआ। चलते समय वचन किया, "महापुरुष आयेंगे, हरि-कीर्तन का मंदिर तथा नगर बसायेंगे।" इस स्थान पर चौथे तथा पांचवें सतिगुरु जी द्वारा अमृत सरोवर तथा श्री अमृतसर शहर स्थापित किया गया। *(वही, पृष्ठ १०९)*

गुरु साहिब ने अपने मधुर वचनों तथा आकर्षक ढंग से लोगों को परमात्मा के प्रेम-रंग में रंगते हुये, परमात्मा की सर्वव्यापकता का संदेश देते हुए नाम जपने, किरत करने तथा बांटकर खाने का सन्मार्ग दिखाया और खोखले कर्मकांड एवं पाखंड भरे जीवन से मुक्त किया। ऐमनाबाद (प्राचीन नाम सैदपुर) में बढ़ई भाई लालो जी के घर कोधरे की रोटी खाकर धर्म की किरत का महत्व समझाया तथा अत्याचारी लोभी मलिक भागो की आंखें खोलकर, उसे अज्ञान के अंधकार से निकालकर वाहिगुरु गुरु-मंत्र के सिमरन में लगाया। सज्जण ठग का उद्धार किया। उसने पाप की कमाई को वापिस कर दिया, बांट दिया और अपने घर जिसके गुप्त कक्ष के कुएं जैसे गड्डे में मृतक प्राणियों की हड्डियों के ढेर थे, को तोड़कर धर्मशाला बनायी।

गुरु साहिब के समझाने का ढंग अनोखा था। आप लोगों की गलतियों को उनके मुख से कहलवाते थे। हरिद्वार में पानी के मध्य खड़े होकर पूर्व दिशा की ओर पीठ करके पश्चिम की ओर पानी देने पर लोगों के पूछने पर बताया कि वे अपने खेतों में पानी दे रहे हैं। लोगों ने कहा कि पानी तो गंगा में ही गिर रहा है, इतनी दूर खेतों में कैसे जा सकता है? इस तरह लोगों को अहसास दिलाया कि "पानी सूर्य तक तथा पितृ-लोक कैसे पहुंच सकता है? पांडे उन्हें मूर्ख बना रहे हैं।"

गुरु साहिब महान प्रचारक थे। लोगों के सामाजिक, धार्मिक-जीवन में परिवर्तन करने के लिये, उनको स्वाभिमान तथा इज्जत से जीना सिखाने के लिये दूर-दूर तक यात्रायें कीं। आपकी इन प्रचार-यात्राओं को 'उदासियों' की

संज्ञा दी गयी।

पहली उदासी : आपके प्रचार का ढंग निराला था। लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये आप अनोखा लिबास धारण कर लेते। कभी हिंदुओं का, कभी मुसलमानों का तो कभी दोनों का मिला-जुला। पहली उदासी में एक वस्त्र अम्बुआ, एक वस्त्र सफेद, एक पैर में जूता, एक में खड़ाऊं। गले में कफनी, सिर पर कलंदरी टोपी, हड्डियों की माला, माथे पर केसर का टीका। हिंदू-मुसलमान दोनों का उपहास करने वाली वेशभूषा।*(वही, पृष्ठ १६२)*

पहली उदासी में पूर्व की ओर गये। भाई मरदाना जी साथ थे। गोरखमते में जिस सूखे पीपल के नीचे बैठे वह हरा हो गया। चकित योगियों-सिधों से चर्चा की। उन्हें समझाया कि उठते-बैठते, सोते-जागते, गृहस्थ में रहते मन को परमात्मा में लीन रखना ही योग है। आपका सिधों से हुआ वार्तालाप आपकी सूही राग की बाणी में अंकित है:

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥ *(पन्ना ७३०)*

'गोरखमते' का नाम 'नानकमता' पड़ा। बनारस में बुतपूजक अहंकारी पंडित चतुरदास को परमात्मा की सर्वव्यापकता का अहसास करवाया, समझाया कि परमात्मा मानव-हृदय में विद्यमान है। नाम-सिमरन द्वारा उसकी प्राप्ति हो सकती है। सम्पूर्ण वार्तालाप 'दखणी ओअंकार' बाणी में दर्ज है। प्रसिद्ध विद्वान वेदांती पंडित हरिलाल, कृष्ण लाल तथा अन्य अनेक लोग सन्मार्ग पर आये। पटना में सालिस राय जौहरी को सिक्ख बनाकर प्रचारक का कार्य सौंपा। गंगा पार पटना से तीन मील पूर्व कार्तिक पूर्णिमा के मेले में एकत्र हुए यात्रियों को उनके अज्ञान, भ्रम से निवृत्त कर 'नाम' का दारू बांटा। गया में पांडों को कल्याण का मार्ग बताया तथा महंत देवगिरि को 'नाम' में लगाया। जीवों का उद्धार करते हुये आप आसाम पहुंचे। सन्यासिन नूरशाह के नयन खोले। उसके 'कुफरगढ़' को तोड़ा। उसे सीधे रास्ते पर लाये। ढाके की एक बस्ती में अत्याचारी, चोर होने के साथ-साथ सदावत करने वाले भूमिये का उद्धार किया। बिसीअर देश के लकड़हारे झंडे को परमात्मा के अस्तित्व का विश्वास दिलाया तथा समझाया कि "परमात्मा है, अंदर है, लगातार चिंतन करते हुये चित्त में यह बात बस जायेगी। कोई दिन ऐसा आयेगा कि यह प्रवाह निरंतर चलने वाला हो जायेगा, स्वाभाविक हो जायेगा, अपने आप चलता रहेगा, तब समझना कि परमेश्वर को कुछ जाना है।" *(वही, पृष्ठ २७२)*

पूर्वी बंगाल में भ्रमण करते हुये समुद्र के रास्ते जगन्नाथपुरी पहुंचे, जहां कर्मकांड तथा पाखंड का बोलबाला था। जगन्नाथपुरी की मूर्ति की, हीरे-मोती जड़ित सोने के थाल में धूप तथा चहुमुखी दीये की बत्तियां जलाकर की जा रही आरती को जगत के हाथों में 'अनाथ की अनारती' कहकर 'असल आरती' का अर्थ समझाया :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥
(पन्ना ६६३)

सारी प्रकृति परमात्मा की आज्ञा में चलकर मानो आरती कर रही है। दीये जलाकर आरती

करने का निषेध करके खोखले कर्मों की निरर्थकता सिद्ध की गयी है।

कटक में नगर के हाकिम तथा उसके गुरु चेतन्य भारती को सन्मार्ग दिखाया, उसके द्वारा भेंट की गयी सहारे की टहनी से गुरु जी ने दातुन किया। वह दातुन भारती ने वहां गाड़ दिया। वह प्रफुल्लित हुआ। वहां बहुत पुरातन वृक्ष तथा दातुन साहिब गुरुद्वारा है। आगरा में मूर्ति-पूजा करने पर परमात्मा के दर्शन न पाने से अति व्याकुल रहने वाली माई जस्सी को समझाया कि परमात्मा को प्रेम से याद करो, यही पूजा है। माई जस्सी आगरा में सिक्खी का प्रचार-स्तंभ बन गयीं। रुहेलखंड में दूसरों को आजादी दिलवाने के लिये आप स्वयं गुलाम बने। दो ईरानी घोड़े आपका मूल्य लगाया गया। *(वही, पृष्ठ ३३१)*

रुहेलखंड से घर लौटे। बेबे नानकी से मिले। करतारपुर में घर-परिवार से मिले। तलवंडी में रायबुलार को दर्शन दिये, फिर सुलतानपुर आये।

दूसरी उदासी : सुलतानपुर से दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। इस बार पैरों में काठ की खड़ाऊं थी। सिर, बाहों तथा जांघ में रस्से लपेटे हुये तथा माथे पर टीका था। गुरु जी के प्रचार का यह ढंग था कि दीन का नेतृत्व करने वाले पीरों-फकीरों तथा समाज में पूजे जाने वाले लोगों को सीधा रास्ता दिखाते, जिससे अनुयायियों का उद्धार हो जाता। आप सुलतानपुर से चलकर सतलुज पार धर्मकोट, बठिंडा आदि स्थानों से होते हुये सिरसा पहुंचे। करामाती फकीर ख्वाजा अब्दुल शकूर, फरीदुद्दीन, जलालदीन आदि को दृढ़ करवाया कि तप, त्याग, हठयोग से नाम-जाप शिरोमणि है जो सत्यगुण तथा उससे ऊपर ले जाता है। यदि सहजभाव से इंद्रियों को जीता जाये तो भूख, प्यास, नींद सब अपने आप वश में हो जाते हैं। चालीस दिन तक उनके साथ रहकर अपनी बात को सिद्ध किया । धनासरी देश से जाते हुये रास्ते में मनुष्यों को खाने वाले कौडे भील को मानव-सेवा में लगाया। सिंगलदीप में गोरखनाथ तथा उसके गुरु को काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार को वश में करने का महत्व बताया। सिंगलदीप के राजा शिवनाभ के महल में धर्मशाला बनायी। 'कजली वन' में भरथरि योगी को योग का भेद समझाया, "हमारा योग तो सुख का ठिकाना है। जो सुख निरंकार से मिलकर आता है उसे हम सहज सुख कहते हैं। इस सुख को अनुभव करने को सहज समाधि तथा योग को सहज योग कहते हैं।" *(वही, उत्तरार्द्ध, पृष्ठ ८३)* दूसरी उदासी के बाद गुरु जी करतारपुर आये। अनेक लोगों के साथ अजित्ता रंधावा का उद्धार किया।

तीसरी उदासी : इस बार उत्तराखंड की यात्रा प्रारंभ की। पहरावा अब भी अनोखा था। पैरों में चमड़े का जूता, सिर तथा सारे शरीर पर चमड़ा लपेटा हुआ, माथे पर केसर का टीका। साथ में दो सिक्ख हंसू लौहार तथा भाई सीहा छीपा थे। कशमीर पहुंचे। पंडित ब्रह्मदास से भेंट हुयी जिसने गले में पीला दुपट्टा बांधा हुआ था, छाती पर ठाकुर की पत्थर की मूर्ति लटक रही थी। पीछे-पीछे दो ऊंट थे जिन पर १८ पुरान तथा अन्य पुस्तकें लदी हुयी थीं। उसको गुरु साहिब ने उपदेश दिया : "एक प्रभु ही सबको पालने वाला है। उसका दर ही जीव का अपना स्थान है जहां से उसे कोई दुत्कार नहीं सकता और यहां तक पहुंचने के लिये केवल प्रभु का नाम-सिमरन ही एक सीधा रास्ता है।"

हेको पाधरु हेकु दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥

रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥
(पन्ना १२७९)

ब्रह्मदास गुरु जी के वचनों से इतना प्रभावित हुआ कि उसने पत्थर गले से उतार फेंका, चरणों पर गिर पड़ा तथा नाम जपने लगा, पूर्ण सिक्ख बन गया। कमाल नामक मुसलमान फकीर भी गुरु जी की शरण में आया तथा उसने गुरु जी की आज्ञा से कुरम घाटी में सिक्खी के प्रचार का कार्य संभाला। यहां से चलते हुये गुरु साहिब सुमेर (पर्वत) पर पहुंचे। वहां आपने मानसरोवर पर ठिकाना बनाया। वहां सिधों से मुलाकात हुयी। सिध आपको देखकर विस्मत हुये कि आपको कौन-सी शक्ति यहां ले आयी है। घबराये हुये सिधों ने गुरु जी को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करना चाहा। गुरु जी के साथ चर्चा हुई, परंतु अंत में गुरु साहिब ने उनका मन जीत लिया। उन्हें सारभूत बातें समझायीं। जीभ के साथ जप, मन से सिमरन करना परमात्मा की सेवा है। दूसरों का भला करो, यह सृष्टि की सेवा है।

(वही, पृष्ठ १३५)

तीसरी उदासी के बाद गुरु जी करतारपुर आ गये। अनेक अनुयायी बनाये। (मस्जिद में सुनी गयी बातों से) दुविधा में पड़े हुये वीरां मल्हार की शंकाओं की निवृत्ति की।

चौथी उदासी : गुरु जी ने पश्चिम की तरफ मुसलमानी इलाकों में जाकर प्रचार करने का फैसला किया। वेश भी हाजियों वाला धारण किया। नीले वस्त्र, एक बगल में थैला, जिसमें गुरु-शबदों का संग्रह लपेटा हुआ, दूसरी बगल में मुसल्ला। एक हाथ में डंडा, दूसरे में लोटा। विभिन्न स्थानों पर प्रचार करते हुये मक्का पहुंचे। वहां लोगों का भ्रम तोड़ने के लिये काबे की तरफ पैर करके सो गये। जीवन नामक पंजाबी हाजी द्वारा क्रोध करने पर मधुर आवाज में विनम्रता से कहा कि "जिधर खुदा का घर नहीं उधर पैर कर दो।" हाजी जिधर पैरों को करता मक्का उधर घूमता जाता। इस प्रकार परमात्मा की सर्वव्यापकता को सिद्ध किया। हाजी रुकनदीन के पूछने पर कि "हिंदू बड़ा है या मुसलमान", गुरु जी ने बताया कि "बड़ा 'अमल' है, जिसने धारण किया है वही बड़ा।" बगदाद में कीर्तन करने पर पीर ने आदेश दिया--*"आइस सगरे नगर पठाई। संगसार तिस करीए जाइ। सब चल जाहू न लावहु देरा।"* यह सुनकर कुछ मूर्ख लोग गुरु जी को पत्थर मारने लगे। अब गुरु जी ने देखा कि इनकी नमाज का समय हो गया है पर नमाज पढ़ते समय इनका ध्यान इस ओर नहीं है तो गुरु जी ने मुसलमानों की तरह बांग दी। बांग के अंत में सति श्री अकाल, *चित चरन नाम घरि घरि प्रणाम, प्रभु किरपाल जो सरब जीवाल।*

(वही, पृष्ठ १६२)

पंजाबी का यह बोल सुनकर पीर तथा सभी लोग सुन्न हो गये। गुरु साहिब के कृपा-कटाक्ष से होशियार हुए पीर ने देखा कि सारे लोग समाधि में पड़े हैं, पत्थर हाथ से गिरे पड़े हैं। पीर ने सलाम की। लाखों आकाश-पाताल के बारे में चर्चा होने पर पीर के बेटे को तीनों लोकों का ज्ञान करवा दिया।

कंधार में यारवली को मुरीद बनाया। पठान शाह शरीफ को कफनी, गोदड़ी, वैरागी आदि का अर्थ समझाया।

चौथी उदासी के बाद करतारपुर में आकर आपने फकीरी वेश उतार कर साधारण गृहस्थी वाला लिबास धारण कर लिया तथा लोगों के इस भ्रम को तोड़ दिया कि मनुष्य एक बार साधु बन जाये तो फिर गृहस्थियों वाला लिबास नहीं

पहन सकता। आपने समझाया कि सत्य, सदाचार, धर्म का पालन करने वाला चाहे कोई लिबास भी पहने वह धार्मिक ही रहता है। आपने खेती शुरू कर दी। सिक्ख संगत आती, काम करती। उस किरत से जो अन्न पैदा होता लंगर में बांटा जाता। इस प्रकार संगत को 'हाथ कार (काम) में, चित्त करतार में' लगाते हुए सिखाकर गृहस्थ में निर्वाण के उच्च आदर्श का उपदेश दिया।

कुछ समय बाद अचल वटाले (बटाला) जाकर 'सतिनाम' का छत्र झुलाने की ठानी। करतारपुर से चल पड़े, अजित्ता साथ था। इसे आपकी पांचवीं उदासी भी माना जाता है। सिधों से चर्चा हुयी। सिधों के पूछने पर कि "आपने अतीत अवस्था के बाद संसार की रीति क्यों चलायी" तो आपने उत्तर दिया कि "आप गृहस्थ त्याग कर अपनी मूल आवश्यकताओं के लिये गृहस्थियों पर निर्भर क्यों रहते हैं?" सिधों द्वारा करामात की शक्ति से सिंघ, बाघ, सर्प, टूटे हुये तारों से सबको डराने का प्रयत्न करने पर गुरु जी ने अजित्ते को कहा कि 'वाहिगुरु' का उच्चारण करते हुये लोगों के चारों ओर लकीर खींच दे। गुरु जी के साथ सिधों का यह वार्तालाप 'सिध गोसटि' में अंकित है। सिध शक्ति से रहित हो गये। सिध गुरु जी से करामात मांगते थे पर यह न समझ सके कि आपने यह 'करामात' कैसी दिखायी कि उनकी ताकत हर ली। गुरु जी ने समझाया कि दंभ तथा अपने सम्मान के लिये 'करामात' दिखाना गलत है। यह बात गुरु जी ने सिधों में भी नापसंद की तथा अपने प्रिय सिक्ख अजित्ते में भी। (वाहिगुरु के हुक्म में तथा लोगों के उपकार के लिये गुरु जी ने कई बार करामाती लोगों को शक्तिविहीन किया। गुरु जी की इस कला एवं दक्षता को कइयों ने 'करामात' का नाम दिया है।)

अचल वटाले के बाद गुरु साहिब ने मुलतान के मुसलमान फकीरों पर सत्य विचारों से विजय प्राप्त की। उनके द्वारा भेजे दूध से भरे कटोरे में चमेली डालकर अपने स्थान का आभास कराया। उन्हें सच्ची फकीरी, बंदगी तथा त्याग का मार्ग बताया।

जब वापिस करतारपुर आये तो वहां दरबार लगता, पीर-फकीर सब नाम-अमृत का पान करते। गुरु जी ने ३० से अधिक मंजीआं (प्रचारक) स्थापित कीं।

एक बार जब सतिगुरु जी स्नान करने दरिया में घुसे तो भाई लहिणा जी किनारे पर बैठ कर परमात्मा की बंदगी में लीन हो गये। गुरु जी ने उनकी गोद से वस्त्र लेकर पहन लिये, पास खड़े प्रसन्नता से देखते रहे। भाई लहिणा जी को पता नहीं चला। जब गुरु जी की कृपा से समाधि टूटी तो गुरु-चरणों पर गिर पड़े। गुरु जी प्रेम से भाई लहिणा जी की बांह पकड़ कर धर्मसाल ले आये तथा संगत एकत्र कर पुत्रों-परिवार वालों के समक्ष अपने स्थान पर भाई लहिणा जी को बैठने का आदेश देकर उन्हें गुरगद्दी दे दी।

कुछ समय बाद उस ज्योति का परमात्मा में लीन होने का समय आ गया--"तदहूं गुरु बाबा सरीह तले जाइ बैठा। सरीह सुका खड़ा था, सो हरिआ होआ, पात फुल पए। तब श्री गुरु अंगद (देव जी) पैरी पइआ। तब माता जी वैरागु लगी करणि। तित महिल सबदु होइआ, भाई बंधु परवारु सब लगे रोवणि। तदहु राग वडहंसु विच सबदु होइआ। तब संगत लगी सबद गावण अलाहणीआं।" *(वही, पृष्ठ ३२०)*

भाई नंद लाल जी का अनंदपुर साहिब तक का जीवन-सफर, गुरबाणी-चिंतन तथा गुरु नानक-महिमा

*-जनाब हुसन-उल-चराग**

भाई नंद लाल जी अफगानिस्तान के पश्चिमी प्रांत के शहर गजनी में पैदा हुए और वहां से मुलतान, रोपड़ और दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार अनंदपुर साहिब में पहुंचे। उनका सफर बड़ा रोचक, गंभीर तथा विचारणीय है। भाई नंद लाल जी ने जो गुरु-महिमा लिखी है उस पर विचार करने से पहले अगर उनके जीवन तथा परिस्थितियों के बारे में जान लिया जाए तो हमें भाई जी की लिखतों को समझना आसान होगा। आरंभ करने से पहले इस बात की इजाजत चाहूंगा कि गजनी, काबुल, कंधार, अफगानिस्तान के मुख्य नगर हैं और महाराजा अशोक के समय से यहां और इसके भी आगे मध्य एशिया तक बुद्ध धर्म का प्रभाव फैल चुका था। कबाइली इलाकों को छोड़ अफगानिस्तान तथा ईरान के लोग अधिकतर आर्य-वंशी क्षत्रिय लोग थे। सातवीं सदी में शंकराचार्य के पश्चात् वैदिक धर्म फिर प्रफुल्लित हुआ, मगर साथ ही साथ ६२२ ई से इस्लाम बड़ी तेज रफतार से चारों तरफ फैलने लगा। एक सौ साल के भीतर ही यह भारत में ७११ ई में सिंध प्रांत और इससे पहले ईराक, ईरान, सीरिया, अरब तथा अफ्रीकी सहिरा के तमाम मुलकों में फैल चुका था, मगर काबुल पर अभी ९९५ ई तक हिंदू राजा का शाही खानदान राज कर रहा था। ९९६ में महमूद गजनवी के पिता, जो गजनी का नवाब था, ने काबुल पर हिंदू शाही खानदान को खदेड़ कर कब्जा कर लिया। राजा की पत्नी, जिसका नाम दीदा (डीडा) था, वो बच्चों सहित कशमीर श्रीनगर पहुंच गई। ९९७-९८ ई में पिता के देहांत के पश्चात महमूद गजनवी ने पूरे अफगानिस्तान का राज संभाल लिया और भारत पर १८ बार लूट-मार के हमले किये। इसके पश्चात् या तो हिंदू देश छोड़ गये या इस्लाम में दाखिल हो गये, मगर कुछ लोग जो हिंदू ही बने रहे, उन्हीं कुछ क्षत्रिय परिवारों में से यह एक परिवार कौम दुरड़ क्षत्रिय श्री छज्जू राम जी थे और उस समय के राजा मुअयन-उद-दीन के दीवान थे। लगभग १६३३-३४ में जब छज्जू राम खुद ५१ वर्ष के थे तो उनके घर भाई नंद लाल जी का जन्म हुआ। उससे पहले उनके जो संतान हुई वह जाया अथवा प्रारंभिक बाल अवस्था में ही मृत्यु का ग्रास हो जाती रही।

उस समय शिक्षा देने वाले मौलवी जन हुआ करते थे और समय आने पर भाई नंद लाल जी को भी स्थानीय मौलवी के पास भेजा गया। यहां इन्होंने जल्द ही फारसी, जो क्षेत्रीय जुबान थी तथा अरबी जो अब इस्लामी शास्त्र का दर्जा हासिल कर चुकी थी, में काबिल-ए-तारीफ महारत हासिल कर ली। दिन-ब-दिन फारसी और अरबी पर इनकी पकड़ बढ़ती चली गई और यह फारसी में नजम व अरबी में आयतों का तजुर्मा करने लगे।

बालक भाई नंद लाल जी ने पारिवारिक रीति के कर्मकांड का विरोध किया। घटना इस

**14-C, Race Course Road, Sri Amritsar. Mob: 98151-88810*

प्रकार है, जैसे ईसाई मत में बापिस्ता की रीति, इस्लाम में सुन्नत की क्रिया, सिक्खों में दस्तारबंदी अथवा अमृत-पान कराना प्रचलित हैं, उसी तरह हिंदू धर्म में अनेकों संप्रदाय होने के कारण वे अपने बच्चों को, यहां कोई जनेऊ, कोई मुंडन, कोई तिलक, तो कोई तावीज आदि धारण करवाते हैं। हिंदुओं का एक वैरागी मत है जो रामानंद जी का चलाया माना जाता है। बालक नंद लाल के पिता श्री छज्जू राम इसी मत को मानते थे और इसके अनुसार उन्होंने वैरागी मुख्य 'संत' को बुला, पारिवारिक रीति निभानी चाही, मगर जब वैरागी मत का चिन्ह जो एक तावीज यानि कि कैंठीनुमा गले में धारण किया जाता है, जब वे भाई नंद लाल जी के गले में डाला जाने लगा तो उन्होंने उसका कारण पूछा? 'संत' ने समझाया कि इस कैंठी को धारण करने का अर्थ है कि आज से तुमने हमें 'गुरु' मान लिया। बालक ने तुरंत स्पष्ट किया कि अभी तक मैंने तो 'गुरु' धारण करने का कोई फैसला नहीं किया। जब 'गुरु' पा लूंगा तो धारण भी कर लूंगा, इसलिये मैं इस कैंठी को धारण करने में असमर्थ हूं। भाई नंद लाल जी ने कहा कि रही रीति-रिवाज की बात, वह भी ठीक नहीं, जैसे कहा गया है कि :

लीक लीक गाड़ी चले, लीके चले कपूत।
तीन जो लीके न चले, वे सूरा, सिंघ, सपूत।

जब भाई नंद लाल जी १६-१७ वर्ष के थे तो उनकी माता का देहांत हो गया और दो साल बाद उनके पिता गुजर गये। इस तरह भाई नंद लाल जी अकेले पड़ गये और राजा के दरबार में भी उन्हें पिता का स्थान न प्राप्त हुआ, क्योंकि अभी तजुर्बा न था। वे गजनी में अपना लेना-देना चुकता कर, घर बेच, अपने परिवार के एक हिंदू मित्र के काफिले के साथ अपना सामान लाद मुलतान आ पहुंचे।

मुलतान भी उन दिनों अफगानिस्तान का ही एक सूबा बन चुका था और शहर व्यापार तथा धार्मिक केंद्रों का गढ़ था। यहां सूफी फकीरों और उदासी संतों के अपने-अपने प्रसिद्ध डेरे थे। मुलतान सिंध, राजस्थान व गुजरात का द्वार माना जाता था। सिंध और मुलतान में उस समय गुरु नानक-नाम लेवा अनेकों सिक्ख परिवार मौजूद थे। सूफी, संत इस्लामी प्रचार करते थे वैसे ही उदासी डेरों से सिक्खी का प्रचार हो रहा था। मुलतान में भाई नंद लाल जी ने पूरब में एक खुली जगह पर घर बनाया और फारसी व अरबी के माहिर होने की वजह से अपनी लियाकत के बलबूते पर वे मुलतान के हाकिम (गवर्नर) के मीर मुंशी (दीवान) के ओहदे पर काम करने लगे। भाई नंद लाल जी योग्य व्यक्ति थे और उनकी योग्यता को देखते हुए यहां के एक क्षत्रिय (खत्री) परिवार में आपकी शादी हो गई। मुताबिक भाई राम कृष्ण सिंह के, गुरबाणी का अध्ययन उन्होंने एक उदासी डेरे से किया, मगर कुछ भी हो भाई नंद लाल जी की पत्नी और उनका परिवार गुरबाणी का पाठ करते थे और गुरबाणी का प्रभाव भाई नंद लाल जी पर उनकी पत्नी से अधिक पड़ा, जैसे कि उनकी पत्नी नित्य-प्रतिदिन गुरबाणी का पाठ किया करती थी और भाई नंद लाल जी गुरु-घर के प्रेमी हो गये। अगर यह दूसरा विचार सही है तो भाई नंद लाल जी का जीवन भाई रूपा जी के जीवन से जा मिलता है। भाई रूपा जी की शादी भी उस परिवार में हुई जो गुरसिक्ख थे और उनकी पत्नी को गुरबाणी से घनिष्ठ लगाव था। शादी होने के बाद जब बारात लौट रही थी तो पता चला कि छठे पातशाह श्री गुरु

हरिगोबिंद साहिब डरोली भाई (नजदीक मोगा, पंजाब) में कियाम किए हुए हैं तो भाई रूपा जी की पत्नी ने गुरु-दर्शन की फरमाइश की जो भाई रूपा जी ने स्वीकार की और वे गुरु जी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये गुरु जी के पास पहुंचे। इस तरह भाई रूपा जी अपनी पत्नी द्वारा गुरसिक्ख बने और गुरु जी के आशीर्वाद से भाई रूपा जी (भाई रूपा) के नाम से सिक्ख इतिहास में प्रसिद्ध हुए। आप खुद और अपने परिवार को साथ लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दक्षिण के लिये प्रस्थान करने तक गुरु-घर की सेवा में लगे रहे।

ईर्ष्या आदि-काल से मनुष्य के साथ चली आई है। कुछ ईर्ष्यालुओं की ईर्ष्या का शिकार भाई नंद लाल जी भी हो गये। योग्यता और ईमानदारी के कारण इनकी प्रशंसा होने लगी और कुछ एक दरबारी इनसे ईर्ष्या करने लगे। जब यह हद से बढ़ने लगी तो इन्होंने नौकरी छोड़ दी। अपना घर-परिवार मुलतान में ही छोड़ घूमते-घुमाते आप आगरा पहुंच गये। यहां इनकी फारसी और अरबी की योग्यता को देखते हुए आगरा के सूबेदार बहादुर शाह, जो औरंगजेब का बेटा था, उसने भाई नंद लाल जी को अपने दरबार में नौकर रख लिया। कहा जाता है कि औरंगजेब को कुरान शरीफ की एक आयत समझ नहीं आ रही थी और इसके बारे में औरंगजेब के बेटे बहादुर शाह ने भाई नंद लाल जी से इस आयत के मायने करने को कहा। भाई नंद लाल जी द्वारा आयत के किये गये तजुर्मे अथवा अर्थ को सुनकर सब हैरान रह गये। जब यह सब कुछ औरंगजेब को पता चला तो उन्होंने ऐसे काबिल-कामिल शख्स को इस्लाम में दाखिल होने को कहा। इसे नामंजूर करते हुए वे नौकरी छोड़ अनंदपुर साहिब की ओर चल पड़े। जब आप रोपड़ पहुंचे तो ख्याल आया कि हमारे पास तो कुछ भी नहीं बचा, हम गुरु जी को क्या भेंट करें? फैसला लिया, क्यों न अपने गुरु-प्रेम को कविता के रूप में प्रकट कर एक किताब की शक्ल में भेंट किया जाए? और फिर भाई नंद लाल जी ने वैसा ही कर दिया। किताब का नाम रखा 'बंदगी नामा' और जा पेश की गुरु जी को। जब गुरु जी ने भाई जी के 'बंदगी नामा' को सुना तो उन्होंने भाई जी से कहा कि इसे 'बंदगी नामा' की जगह 'जिंदगी नामा' कहा जाए। इस रचना के बारे में भाई संतोख सिंघ ने अपने ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में भी लिखा है :

नंद लाल ने भेंट चढ़ाई।
बीच फारसी बैंत बनाई।
सतिगुर सिफत ब्रहम को गयान।
जुगति उकति बहु रीत बखान। . . .
रचयो 'बंदगी नामा' जोई।
अहै 'जिंदगी नामा' सोई।

भाई नंद लाल जी की इस पुस्तक, जो फारसी में थी, को गुरमति साहित्य की पुस्तकों में शामिल कर लिया गया और 'नंद लाल' को 'भाई नंद लाल जी' का दर्जा दिया गया। उन्हें गुरु जी ने अपने ५२ कवियों में स्थान देकर मान बख्शा। अब से भाई नंद लाल जी अनंदपुर साहिब में रहने लगे और फारसी में गुरु-महिमा की रचना करने लगे। इन्होंने आठ किताबें लिखीं, जिनके नाम इस तरह हैं--१) दीवान गोया (गजलें-रुबाइयां), २) जिंदगी नामा, ३) जोति-विगास, ४) गंज नामा, ५) तौसीफो सना, ६) खातमह, ७) दसतूर-उल-इनशा, ८) अर्ज-उल-अलफाज। अनंदपुर साहिब छोड़ते हुए गुरु जी ने भाई नंद लाल जी को वापिस

सुलतानपुर जाकर सिक्खी का प्रचार करने को कहा। यहां उनका ७२ साल की आयु (लगभग १७०५ ई) में देहांत हो गया।

भाई जी के जीवन-स्रोतों में मुख्य स्थान 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' रचियता भाई संतोख सिंघ हैं। उसके पश्चात भाई राम कृष्ण सिंघ जी इतिहासकार हैं जिन्होंने इनके जीवन के बारे में शाहमुखी में लिखा। तीसरे भाई मेघ राज जी हैं जिन्होंने गुरमुखी में इनके जीवन पर रोशनी डाली है।

भाई साहिब का गुरबाणी-चिंतन/महिमा

आजकल एक नया सवाल पैदा हो चुका है और संसार के विद्वानों में बहस चली है कि "क्या आदमी के विचार (सोच) भाषा के अनुकूल पैदा होते व विकास करते हैं?" अभी तक इस प्रश्न का पूरा हल आदमी नहीं खोज पाया, मगर इसका प्रभाव अगर हम भाई नंद लाल जी पर देखें, जैसे कि उनकी शिक्षा केवल फारसी और अरबी में हुई, तो इन भाषाओं का प्रभाव भाई जी के जीवन पर स्पष्ट दिखाई देता है जो आगे चलकर उनकी तमाम लिखतों में नजर आता है। उनका कर्मकांड से इंकार, रीति को लकीर के फकीर कहना, एक ईश्वर को मानना, गुरु को पार उतारने वाला (मुर्शिद) और खुद को मुरीद समझना, प्रेम (इश्क) के जरिये मुर्शिद के हवाले होकर अकाल पुरख तक पहुंचना उनकी उल्लेखणीय प्राप्तियां हैं। उन्होंने हिंदू कर्मकांड, रीति-रिवाज के तरीकों को न अपनाते हुए अस्वीकार किया। वे किसी दूसरे धर्म में भी शामिल न हुए। जब आगरा में उन्हें इस्लाम कबूलने की सलाह दी गई तो उन्होंने इस्लामी दरबार की नौकरी त्याग दी। सामने कष्ट दिखाई देते थे मगर वे आगरा छोड़ अनंदपुर साहिब गुरु-दरबार में आ गये। यहां उन्होंने अपना सारा समय गुरु-उपमा तथा गुरबाणी-महिमा को फारसी भाषा में लिखने में लगा दिया। भले ही वे जैसे थे वैसे बने रहे। मगर महिमा 'गुरबाणी' की और उपमा 'गुरु' की ही करते रहे। यहां आगे हम उनकी कुछ एक रचनाओं के आधार पर केवल गुरबाणी से प्राप्त उनकी संवेदना तथा गुरु नानक-महिमा पर विचार करेंगे।

जिंदगी नामा, दीवान-गोया और गंज नामा से कुछ चुनिंदा (शेअर) गजलों रुबाइओं तथा बैंतों को लेकर, जिनकी संख्या ६० गजलें, १९ रुबाइआं और ५ बैंत हैं, की शुरुआत यूं करते हैं। पहली गजल के कुछ शेअर हैं :

हवा-ए-बंदगी अवुरद दर वजूद मरा।
वगरनह जौकि चुनीं आमदन नबूद मरा।१। . . .
बगैर याद-ए तो गोया नमे तवानम जीसत।
बसूए दोसत रिखाई दिहंद जूद मरा।६।

इस गजल का सार है कि प्रभु-मिलन और मुक्ति को तड़पती इच्छा मुझे आदमी के जामे (शरीर) में लाई है वरना मुझे संसार में आने का कोई शौंक न था। जीवन का वही पल अच्छा है जो प्रभु-भक्ति में बीते नहीं तो अथाह नीले अकाश के नीचे उम्र बिताने का क्या लाभ? जैसे एक बालक भीड़ में अपने पिता की उंगली पकड़े रखता है तो उसे सारे नजारे नजर आते हैं और अगर उंगली छूट जाए और बच्चा भीड़ में खो जाए तो साथ छूट जाता है, बच्चा और बाप दोनों परेशानियों में पड़ जाते हैं। इसी प्रकार गुरु का साथ बना रहे तो अच्छा है वरना गुरु के साथ बिना तो अंधेरा व मुसीबतें ही हैं। *बगैर याद-ए तो गोया . . .* गुरु जी तेरी याद के बगैर (गोया तखल्लस) भाई नंद लाल जी कहते हैं, मैं जी नहीं सकता, जैसे गुरबाणी में फरमाया है :

परमेसर ते भुलिआं विआपन सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
(पन्ना १३५)

गजल सं. ३८ का केंद्रीय शेअर है :
तालबे मौला हमें शाह जिंदा असतु।
बर जवानश नाम-ए-सुबहानसतु बस।२।

जो सदा वाहिगुरु (मौला) की हजूरी (ताबिया) में रहता है वह सदा के लिये जिंदा, असतु-जीता-जागता बना रहता है, क्योंकि मनुष्य-शरीर विनाशी है मगर प्रीत अविनाशी है। प्रेमी सिमरन (याद कर-कर के) जीते हैं और अगर सिमरन की तार (लय) टूट जाए तो ऐसे लोग जीवित होकर भी एक मृतक के समान जीवन जीते हैं, जैसे: *"आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥"* अर्थात् अगर तुझे याद करता हूं तो मैं जिंदा हूं और अगर भूलता हूं तो प्रीतम के लिये 'मैं' मरे इंसान के बराबर हूं। For Separation, does not destory relation if one keeps on remembering but if one ceases to remember it does.

Full many a man finds friendship end,
For lack of converse with his friend.
(1157a34-6-27) Bk-8.

गजल सं. ३९ के चुनिंदा शेअर:
बा सूए गैर मयफगन नजर कि बे बसरी।
तमाम चशम शौ ओ सुए दोसत व बेमाश।२।

गैरों की तरफ मत देख। अपने मन की आंखों की तमाम रौशनी को अपने प्रीतम को देखने (दीदार) में लगा दे। मगर जो आदमी अपना ख्याल किसी हसीना अथवा लब-लोभ की तरफ ले जाएगा वह चशमदीन होकर भी एक अंधे व्यक्ति के समान होगा और वह सोचना भूल जाएगा।

तीसरा शेअर है :
न गोयम त कि सूए दैर या हरम मे रौ।

मैं तुम्हें कहता हूं कि तू दौर (मंदिर) या हरम (मसजिद) में जा।

ब हर तरफ कि रवी जानिबे ख़ुदा मे बाश।
३९(४)

जिस रास्ते भी तू जाना चाहे चला जा मगर ख्याल रखना वो रास्ता सिर्फ खुदा अर्थात् प्रीतम की तरफ जाए। अब आखिरी गजल ६०(१)का शेअर :

बेवफा रेसत कसे गर तु वफादार शवी।
वकत आनसत कि बर वकत खबरदार शवी।१।

अगरचे तू वफादार है तो कोई भी तुमसे बेवफा न होगा। यह वक्त है, मौका संभाल ले। वक्त खबरदार (चौकन्ना) रहने वालों का साथ देता है।

गजलों के सिलसले के बाद १९ रुबाइयां हैं जो फारसी जुबान में कविता का खास नुमाया रूप हैं।

भाई नंद लाल जी की रचनाओं में गुरु-महिमा इस प्रकार आरंभ होती है :
दिलो जानम ब-हर सबाहो मसा।
सरो फरकम जि रूए सिदको सफा।
बाद बर मुरशिदे तरीके नसार।
अज सरे इजज सद हजारां बार।

दिल करता है कि अपनी दिलो-जान व जिहन-ओ-कर्म की सच्चाई-सफाई से एक आजिज आश्रित की तरह हर रोज सुबहो-शाम लाखों बार। सद का मतलब है १०० और हजार का १००० यानि कि १,००,००० बार बराबर है लाख के अपने गुरु पर न्यौछावर यानि कि कुर्बान होने को।

जि इनसां मलक नमूरसत ओ।
इज्जत-ए-खाकीयां फजूदसत ओ।

तूने आदमी (इनसां) को फरिश्ता (देवता) कर दिया और माटी के शरीर वाले आदमी को इतना ऊंचा उठा दिया कि आदमी तमाम जीवों में सर्वश्रेष्ठ जीव हो गया, जैसे कि : *"जिनि माणस ते देवते कीए . . . ॥"* इसी विचार को महाकवि होमर ने इलीयड में यूं बयान किया है: . . . nor seemed to be, the son of mortal man, but of a god. (Iliad XXIV 258).

सलतनत-ए-अव्वल यानि कि पातशाही पहिली:

जैसे भाई गुरदास जी ने लिखा : *"मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।"* इसी तरह भाई जी फारसी में लिखते हैं कि बेशक हजार सूर्य-चांद अपनी रोशनी फैलाएं *(गर फरोजद हजार मिहरो माह)* तो भी दुनिया में बिना गुरू के अंधेरा है, जैसे *"आलमे दां जुज ओ तमाम सियाह।"*

'गंज नामा'--गंज का मतलब होता है खजाना। 'गंज नामा' केवल गुरु-महिमा ही नहीं बल्कि गुरु-मार्ग व जीवन-जाच का भी खजाना है जिसमें भाई जी ने गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक उनकी बाणी के आधार पर दसों गुरु साहिबान की महिमा लिखी है और प्रत्येक गुरु को 'सलतनत' का नाम दिया है। यहां यह स्पष्ट करते चलें कि पंजाबी में प्रत्येक गुरु को 'पातशाही' तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'महला' का नाम दिया गया है। 'बादशाही' व 'पातशाही' दोनों शब्द फारसी से आये हैं। 'बादशाही' का मतलब 'हकूमत' तथा 'राज करने' से है और 'पातशाही' का अर्थ है आध्यात्मिक प्रभाव-क्षेत्र (मीरी-पीरी), धुर की बाणी अनुसार व्यवस्था। सलतनत का मूल तुर्की भाषा से है, जिसका भाव है ईश्वरीय तथा ईश्वर रचित रचनाओं की सांसारिक व्यवस्था करना तथा उन्हें संभालना यानि राज-प्रबंध करना। असल में इसी उसूल के मद्देनजर इस्लामी राज कुरान की विधि पर कायम करना था, मगर आदमी ने अपनी कार-करदगी बदल ली और हर जगह आदमी ने पृथ्वी तथा वस्तुओं को व्यवस्थित करने की बजाय उन पर कब्जा व हकूमत करने लगा। शब्द 'सलतनत' के मायने वही बरकरार हैं और भाई जी ने इस शब्द का उसी हुक्म-ए-रजा के मुताबिक इस्तेमाल किया है और गुरु साहिबान को सलतनत-ए-अव्वल, दोइम . . . आदि नाम दिया है। यहां हमारा विषय गुरु नानक साहिब तक ही महदूद रहना है, इसलिये पूरे महिमा-पाठ से कुछ चुनिंदा शेअरों को लेकर इस लिखत को समाप्त करूंगा।

भाई साहिब गुरु नानक साहिब जी की महिमा में लिखते हैं *"सलतनत-ए-अव्वलश फरोगे अनवारे . . .।"* पहली पातशाही की रोशनी से आदमी को यकीन बन आया है और दुनिया में सच्चाई पैदा होने लगी है, जैसे *"मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।" "कि; हक्क-ऊल-सुबहां, वा लामिआ।"* दुनिया से वहमों-भ्रमों को दूर किया है। यह सबको रोशन करने वाली है। *"अफरोज-ए-इलमे हक्को ईकां। अलम फराजे दवाम आगाही।"* यह पातशाही आदमी को हमेशा के लिये रास्ता दिखाने वाली है। *"अलम फराजे दवाम आगाही। वा जुलमतबर अंदाजे जलालतो गुम राही।"* गुमराह लोगों को रास्ता दिखाने वाली है। जो लोग अंधेरों में जी रहे थे इस पातशाही के नूर से उनके अंधेरे दूर होंगे और फजूल के कर्मकांडों और रीति-रिवाजों को हटाएगी। *"कलामे हर रूबअ वा सुदमे कुदशी अज तौसीफश कासिर।"* इसका सार यूं है-- कलामे (वाणी), रुबअ मायने है चार यानि कि चारों वेद और सुदसे के मायने है छै यानि छै (खट) शस्त्रों की बाणी भी पहली पातशाही की

उसतति करने में असमर्थ है। और . . . *"व लिवा-ए-नूर आमाइश बर हर दो आल मनासिर।"* यानि कि उस नूर का पैगाम-ए-परचम (झंडा) दोनों जहानों में बरकरार लहरा रहा है। *"खिताबे हक्कश मुरशिद-उल-आलमीना।"* पहली सलतनत श्री गुरु नानक देव जी को बतौर *"दोनों जहां के गुरु"* का खिताब *"मुरशिद-उल-आलमीन"* उस अकाल पुरख ने खुद दिया है और *"व जात बर हकश रहिमत-उल-मुजनबीन।"* वह रहम करने वाला है।

भाई नंद लाल जी ने प्रत्येक गुरु के नामों में आए अक्षरों को लेकर उनके अर्थ और भाव का सम्बंध अकाल पुरख के साथ जोड़ कर भी उनकी बोहद भावभीनी सिफ्त-सलाह की है। पंजाबी अक्षर 'न' फारसी लफज 'नून' है और 'आ' की मात्रा (ा) अलफ लिखी जाती है और 'क=काफ' लिखा जाता है। इस तरह 'नानक' शब्द में आए दो 'न=नूर' से नईम जिसका अर्थ है दात देने वाला यानि कि हर समय सहायी होने वाला। दूसरे 'नून' से='नसीर' जिसका अर्थ है मदद देने वाला। जो बीच में 'आ' की मात्रा है उससे बनता है 'अहद' यानि कि 'एको-एक', अकाल पुरख ੴ और अक्षर 'क' से बनता है 'कबीर=बड़ा' अर्थात् बड़ों में बड़ा। गुरु नानक साहिब जी फकीरों के फकीर भाव कमाल के फकीर (फकर-ए-कमाल) दोनों जहां में मौजूद (हर दो आलम शामल) है।

"नामे ओ शाहे नानक हक्क केश। कि निआयद हमचू नूं दिगर दरवेश।" अर्थात् उस पीरों के पीर का नाम 'नानक' है जो ईश्वरीय अकाल पुरख की नेहमतों से भरपूर (पूर्ण) है तथा उसके तुल्य और कोई पीर-फकीर नहीं है। इस तरह गुरु नानक-महिमा में कहे गये एक के बाद एक बंदों की गिनती ५३ है। इस प्रकार भाई साहिब ने गुरु जी के महान परोपकारी व्यक्तित्व तथा उनकी रची गुरबाणी की व्यापक व्याख्या तथा गुरु-प्रशंसा की है। उनकी रचनाएं उच्च कोटि की हैं जिसमें उन्होंने गुरबाणी-संदेश को फारसी भाषा में बड़े कमाल से उतारा है और गुरु-मर्यादा के मुताबिक सिफ्त-सलाह की है। उन्होंने गुरबाणी में विद्यमान कुछ भावों को फारसी में जैसे उतारा उसी शिद्दत के साथ हम मांग करते हैं कि भाई जी की फारसी रचनाओं को पंजाबी, हिंदी या अंग्रेजी में उतारा जाए वरना हम उनकी लिखतों का नुकसान कर बैठेंगे। सच्ची बात है कि हमें उनकी फारसी भाषा में रची रचना के भावार्थ को अच्छी प्रकार से समझना होगा और इसके लिए हरेक संभव प्रयास होना चाहिए।

"सलतनत-ए-अव्वल" के आखिरी बंद (५३) का हवाला देकर मैं इस लेख को यहीं बंद करूंगा। आखिरी बंद यूं है: *"हादी ओ रहनुमाए जुमलह तुई। राहबर-ओ-दिल गराए जुमलह तुई ।१५३।"* जिसका सार यूं है : "हे वाहिगुरु! अकाल पुरख! तू ही पथ-प्रदर्शक है, तू ही अगवाई करने वाला है, तू ही रास्ता दिखाने वाला है और तू ही दिलों को बदल देने वाला है।
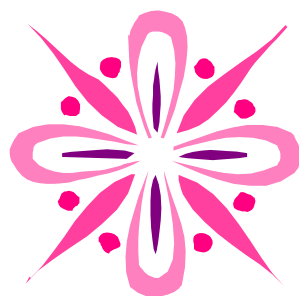
'गिआन रतनावली' के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी का चरित्र-चित्रण

*-डॉ. जसबीर सिंघ साबर**

'गिआन रतनावली' में श्री गुरु नानक देव जी का जन्म, परमेश्वर के हुक्म से वैसाख वदी तीन संवत् १५२६** को माता त्रिपता जी और पिता कालू जी के घर होना अंकित है। यह सूचना 'पुरातन जन्म साखी', 'आदि साखीआं' और 'मेहरबान वाली जन्म साखी' का अनुसरण करती है।

'गिआन रतनावली' में लिखा मिलता है कि आलौकिक पुरुष रूप में श्री गुरु नानक देव जी के अवतार धारण करने के समय उनके आगे तेंतीस करोड़ देवी-देवते, ५२ बीर, सिध, नाथ योगी आदि नमन करते हैं। बालपन से ही आप जी का शांत स्वभाव, सहज मनोस्थिति, पोथी का सत्कार और धुर से ज्ञान प्राप्त किया प्रकट होता है। *"चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई"* के अनुसार आप जी विभिन्न दिशाओं की चार उदासियां करते हैं। इन उदासियों के समय तत्कालीन समाज की व्यवस्था के प्रति आप जी का दृष्टिकोण, विरोधी विचारधारा वालों के साथ आपकी हुई ज्ञान-चर्चा और सामाजिक परिस्थितियों की जटिलता का समाधान करते हुए साखियों की पृष्ठभूमि में आप जी का जो जीवन-बिंब उभरता है वो इस प्रकार है:

१. अकाल रूप/जगत गुरु

श्री गुरु नानक देव जी को परमेश्वर ने अपना स्वरूप प्रदान करके सृष्टि-सुधार के लिए भेजते हुए कहा--"मैं 'ओअं' हूं तथा तू 'सोहं' है; मैं तेरा 'गुरु' तू जगत का गुरु"।[१]

२. आलौकिक पुरुष

जैसा कि उपर्युक्त भी उल्लेख हुआ है कि श्री गुरु नानक देव जी के अवतार के समय आप जी को अदृष्ट संसार में से आए तेंतीस करोड़ देवी-देवताओं, ५२ बीरों, योगनियों आदि की ओर से नमन किया जाता है।[२] देश-रटन के समय आँख के झपकने के साथ एक से दूसरे स्थान पर बिना किसी वाहन के पहुंचने[३] वाली शैली की साखियां आप जी को आलौकिक पद प्रदान करती हैं।

३. ब्रह्मज्ञाता

बालपन में ही श्री गुरु नानक देव जी को सपत सलोकी गीता का उच्चारण करके अर्थ करते हुए दर्शाया गया है।[४] पांधे और मुल्ला के पास पढ़ने जाते समय आप जी द्वारा उल्टा उनको पढ़ाते दर्शाया गया है।[५] वैद्य के साथ चर्चा[६] और ८ साल की आयु में आसा की वार का उच्चारण[७] करना आदि आप जी को ब्रह्मज्ञाता सिद्ध करते हैं।

४. आज्ञाकारी

साधारण संसारी पुरुषों की भांति आप जी माता-पिता की आज्ञा मानते हुए भैंसें चराते[८] हैं और उदासी भेष उतार देते हैं।[९]

५. गृहस्थी

गुरु नानक साहिब ने चारों धर्मों अथवा जीवन-ढंगों (ब्रह्मचारी, वानप्रस्था, सन्यासी और गृहस्थ) में से गृहस्थ धर्म को अधिक मान्यता दी है[१०], इसलिए आप जी ने स्वयं गृहस्थ धर्म धारण

***अन्य कई स्रोतों में यह तारीख कार्तिक की पूर्णिमा भी लिखी मिलती है। -संपादक*

**१३, गुरु तेग बहादर नगर, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर।*

करते हुए शादी कराई। आप जी के दो सपुत्र बाबा सिरीचंद और बाबा लखमीदास थे।

६. ईमानदार

'गिआन रतनावली' में यह अंकित है कि आप जी ने सुलतानपुर में मोदीखाने का कार्य ईमानदारी के साथ किया और पहले मोदी द्वारा जो लूट-खसूट की जाती थी वो आप जी ने बंद करवा दी। मोदीखाने का हिसाब-किताब करने के समय आप जी के हिसाब में बढ़े पैसे आप जी का ईमानदार होना प्रकट करते हैं।[११]

७. गरीब परवर

'गिआन रतनावली' दर्शाती है कि गुरु साहिब के मन-मंदिर में निर्धनों के प्रति सहानुभूति बसी हुई थी। वे अपने साथी भाई मरदाना जी की सपुत्री की शादी के लिए आर्थिक सहायता करते हैं।[१२]

८. अनथक यात्री

सृष्टि-सुधार के लिए गुरु साहिब बिना किसी वाहन के देश-रटन करते हैं। वस्तुत: आप जी ने बहुत-से स्थानों की यथार्थक यात्रा की थी ।[१३]

९. तर्कशील

इस स्रोत के अनुसार देश-रटन के समय आप जी पंडितों, योगियों, सिधों, नाथों, पीरों, फकीरों आदि के साथ ज्ञान-गोष्टि करते थे। आप जी की तरफ से प्रस्तुत की जाती विचारधारा से विरोधी विचारधारा वाले प्रभावित होकर आप जी की सर्वोच्चता स्वीकार कर लेते थे।[१४]

१०. समाज-सुधारक

धर्म-स्थानों पर घटित हो रही कुरीतियां और पुजारी वर्ग के आचरण में आई गिरावट पर आप शक्तिशाली चोट लगाते हुए उनको सच-मार्ग अपनाने का उपदेश देते थे। समाज में प्रचलित अनैतिकता, कामुक रुचियां, राहजनी, ठगी, बदकारी आदि तथा अन्य कुकर्मों के बारे में आप जी समाज को सुचेत करते हैं और उनको अधर्म-मार्ग छोड़ कर धर्म का मार्ग ग्रहण करने तथा गुणात्मक विकास की तरफ चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

११. अत्याचार-विरोधी एवं लोगों के हमदर्द

बाबर के आक्रमण के कारण हुए विनाश को देखकर आप जी का कोमल हृदय पुकार उठता है--*"एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥"* बाबर की कैद में उसके साथ हुई भेंट के समय आप जी सभी कैदियों को रिहा कराते हैं।[१५] पर्वतों पर छिप बैठे योगियों तथा सिधों-नाथों को आप जी कहते हैं कि आप संसार में जाकर लोगों को अधर्म से हटा कर धर्म का मार्ग दिखाओ।

१२. पांच विकारों से रहित

यह स्रोत सिद्ध करता है कि गुरु साहिब पांच विकारों--काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से रहित थे। राजा शिवनाभ के बाग में सुंदर नर्तकियों की भाव-अभिव्यक्तियों का आप जी के निर्मल मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।[१६] त्रिया राज में जादूगरनियां भी आपको मोह न सकीं। देश-रटन के लिए चलते समय पत्नी का प्यार और पुत्रों का मोह आप जी के उद्देश्य में बाधा नहीं बन पाये ।

१३. नम्र-भाव

पीरों-फकीरों के साथ चर्चा के समय और सिधों, नाथों, योगियों के साथ हुई गोष्ठियों के समय आप जी विरोधियों की तलखी का उत्तर बहुत नम्रतापूर्वक देते हैं। गुरु जी द्वारा पटना की रानी की बहू को भी गहिर-गंभीर होकर निव चलने का उपदेश दिया गया था।[१७]

१४. कर्मकांडों का विरोध

'गिआन रतनावली' हमें ज्ञान देती है कि गुरु साहिब समाज में प्रचलित अधिकाधिक कर्मकांडी कुरीतियों, जात-पात, सूतक-पातक और

बाहरी अथवा दिखावटी धार्मिक चिन्हों का विरोध करते हैं।

१५. स्त्री की महानता

गुरु साहिब ने स्त्री की दुर्दशा का गंभीर नोटिस लिया। आप जी इसको राजे-महाराजे पैदा करने वाली बता कर *"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान"* का उपदेश देते हैं।[१८]

१६. त्यागी

कलयुग की ओर से की गई अनेकों दुनियावी पदार्थों की पेशकश को गुरु जी स्वीकार नहीं करते और इसी प्रकार सिंगलद्वीप के राजा की रानी की तरफ से पेश किया मोतियों का हार भी आप जी कबूल नहीं फरमाते।[१९]

१७. मुक्ति-दाता

कौडा राक्षस भी आप जी के दर्शन और आप जी द्वारा ज्ञान-गोष्ठि करने से और इसी प्रकार कई जोजन लंबा मच्छ आप जी का चरण-स्पर्श प्राप्त करके मुक्ति को प्राप्त होता है।[२०]

१८. सर्वशक्तिमान

संसार के सभी धार्मिक अगुओं, ब्राह्मणों, पीरों, फकीरों, मुल्ला, मौलानों, काजियों, योगियों, जतियों, जंगमों, सरेवड़ों आदि तथा अमानुष योनियों, पराभौतिक व आलौकिक शक्तियों की ताकत गुरु नानक साहिब जी के व्यक्तित्व के समक्ष क्षीण हो जाती है। वे सभी बलहीन हो आप जी के व्यक्तित्व के समक्ष सिर झुका देते हैं।

१९. सांझा गुरु

गुरु साहिब जी के तत्कालीन समाज की दोनों मुख्य कौमों (हिंदू, मुसलमान) के धार्मिक अगुआ और जनसाधारण आप जी की विचारधारा से प्रभावित होते हैं। यहां तक कि आप जी के परलोक गमन के समय पीछे रही दो-पट चादर को हिंदू और मुसलमान परस्पर बांटते हुए उसको गुरु नानक साहिब का प्रतीक मान कर अपने-अपने अकीदे के अनुसार अंतिम क्रिया करते हैं।[२१]

इस प्रकार 'गिआन रतनावली' में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-बिम्ब परमेश्वर-रूप, आलौकिक पुरुष, ब्रह्मज्ञाता, आज्ञाकारी, गृहस्थी, ईमानदार, गरीबों के हमदर्द, अनथक यात्री, तर्कशील, समाज-सुधारक, जुल्म-विरोधी, नम्रभाव, कर्मकांड के विरोधी, स्त्री को महान बताने वाले, सब्र-सिदक वाले, शाकाहारी, त्यागी, मुक्ति-दाता, सर्वशक्तिमान तथा सबका सांझा हो सम्पूर्ण होता है।

संदर्भ सूची :

१. 'गिआन रतनावली' डॉ. जसबीर सिंघ साबर (संपा.) गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पत्तरा २६/अ-२७/उ।

२. वही।

३. वही, पत्तरा १९८/अ

४. वही, पत्तरा ३१/अ

५. वही, पत्तरा ३५/अ

६. वही, पत्तरा ७७/अ

७. वही, पत्तरा ४५/अ

८. वही, पत्तरा ७६/अ

९. वही, पत्तरा ३०३/अ

१०. वही, पत्तरा ०५/अ

११. वही, पत्तरा ९१/अ

१२. वही, पत्तरा ८०/अ

१३. वही, पत्तरा १३५/अ

१४. वही, पत्तरा १४१/अ

१५. वही, पत्तरा १८९/अ

१६. वही, पत्तरा १६८/अ

१७. वही, पत्तरा १५६/अ

१८. वही, पत्तरा ८८/अ

१९. वही, पत्तरा १६८/अ

२०. वही, पत्तरा २११/अ

२१. वही, पत्तरा ३५७/अ

पंथ प्रकाश कृत ज्ञानी गिआन सिंघ के आधार पर श्री गुरु नानक देव जी के जीवन पर एक दृष्टि

*-ज्ञानी हरबंस सिंघ**

सर्वसांझे, मानवता के सच्चे पथ-प्रदर्शक, जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश दिवस गुरु नानक नाम-लेवा जगत बहुत श्रद्धा तथा उल्लास के साथ मना रहा है। श्री गुरु नानक देव जी की आमद पर विभिन्न विद्वानों, डॉक्टरों, खोजियों, कवियों तथा कवीशरों ने अपनी सोच, बल-बुद्धि, अपने-अपने अकीदे तथा विश्वास के अनुसार उनका जगत में आने का कारण, मानवता के प्रति किये उपकारों, उनकी उदासियों अथवा जीवन-यात्राओं अथवा प्रचार-फेरियों और उनके इस धरती पर विचरण करते हुए किये कार्यों का वर्णन किया है। उनकी कीर्ति प्रत्येक कौम के लोगों ने की। सिक्ख इतिहास की जानकारी देने वाले कई ग्रंथ लिखे गए जिनमें 'पंथ प्रकाश' नामक ग्रंथ भी शामिल है। वस्तुतः इस नाम के दो ग्रंथ मिलते हैं। पहला 'पंथ प्रकाश' प्रसिद्ध सिक्ख जांबाज योद्धा स. महिताब सिंघ के पौत्र भाई रतन सिंघ भंगू ने लुधियाना के मुकाम पर कैप्टन मरे के कहने पर सिक्ख इतिहास सुनाया तथा संवत् १८८६ (सन् १८२९ ई) में छंदाबंदी में लिखा। यह पुस्तक रूप में संवत् १८९८ (सन् १८४१ ई) में प्रकाशित हुआ। दूसरा 'पंथ प्रकाश' गांव लौंगोवाल (संगरूर) निवासी ज्ञानी गिआन सिंघ जो कि पंजाबी, हिंदी, उर्दू-फारसी के अच्छे विद्वान थे, ने संवत् १९२४ (सन् १८६५ ई) में गुरु साहिबान तथा सिक्खों का इतिहास छंदाबंदी में लिखा जिसका प्रथम संस्करण संवत् १९३७ (सन् १८८०) में मुद्रित हुआ अथवा छपा था।

भले ही बहुसंख्या में विद्वानों ने गुरु नानक साहिब के जीवन को अपने-अपने दृष्टिकोण, ढंग-तरीके के साथ लिखा, लगभग सभी के लिखने का मुख्य कारण श्री गुरु नानक देव जी की स्तुतियों का गायन करना है। ज्ञानी गिआन सिंघ जी उच्च कोटि के विद्वान और पंथ की शान को कायम रखने के लिए, पंथ की खातिर बंद-बंद कटवा कर मर-मिटने वाले अमर शहीद भाई मनी सिंघ के पौत्र और भाई भाग सिंघ दुलट्ट के सपुत्र थे। आप जी ने कई ग्रंथ लिखे जिनमें से मुख्य ग्रंथ 'तवारीख गुरू खालसा' है जिसको दो भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में गुरु साहिबान का जीवन लिखा है और दूसरे भाग में सिक्ख इतिहास को गद्य रूप में लिखा है।

'पंथ प्रकाश' में ज्ञानी गिआन सिंघ ने बहुत ही सुंदर कविता रच कर सिक्ख गुरु साहिबान और सिक्ख इतिहास को अच्छी प्रकार से बयान किया है। इसके विभिन्न संस्करण देखने-पढ़ने को मिलते हैं। एक संस्करण श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के रह चुके मुख्य ग्रंथी और श्री अकाल तख्त साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार आदरणीय सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ ने बहुत ही परिश्रम के साथ कठिन शब्दों के पद-अर्थ और नीचे टूकों सहित जहां कोई गुरमति-विरोधी बात लगी वहां अपनी ओर से सटीक टिप्पणियां देकर संपादित किया और छपवाया। उसी के आधार पर गुरु नानक साहिब के जीवन पर दृष्टि डालने का प्रयास

**L-६/९८६, गली नं: ३, ब्रांच २, न्यू शहीद ऊधम सिंघ नगर, श्री अमृतसर।*

किया गया है। अत: ज्ञानी गिआन सिंघ रचित 'पंथ प्रकाश' (संपादक ज्ञानी किरपाल सिंघ) के आधार पर गुरु जी के अद्वितीय जीवन के कुछ चुनिंदा अंश प्रस्तुत किये जा रहे हैं :
"जगत के कल्याण के लिए समय की आवश्यकतानुसार गुरु-अवतार हुए। जिस आदर्श की पूर्णता की आवश्यकता पड़ी अकाल ने उसी प्रकार के व्यक्तित्व को गुरु-रूप में मूर्तिमान किया। श्री गुरु नानक देव जी का अवतार ऐसे नाजुक समय में हुआ जब भारत में धार्मिक और राजनैतिक तौर पर अत्यधिक गड़बड़-घोटाला मचा हुआ था।" (ज्ञानी प्रताप सिंघ जी, भूतपूर्व जत्थेदार, श्री अकाल तख्त साहिब)

ज्ञानी जी ने तीसरे बिस्राम से लेकर बारहवें बिस्राम तक श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-प्रसंग लिखा है। तीसरे बिस्राम में गुरु जी के आगमन की कथा है। चौथे में हिंदोस्तान में गुरु जी के आने से पूर्व के हालात हैं। गुरु नानक साहिब के आने से पहले के हालात के बारे में ज्ञानी जी लिखते हैं :

अति दुखी ह्वै हिंदु अपारैं।
हित रखिआ ढिग ईस पुकारैं।
गुरु नानक तबि ही अवतरियो।
दे उपदेस सुदेस सुधरयो ॥३०॥ (बिस्राम ४)

उस समय हिंदोस्तान में जो हालात थे उनका चित्र ज्ञानी जी इस प्रकार खींचते हैं :

राजनीति राजन ते छूटी।
निस दिन करैं कुक्रित अनूठी।
दुराचारि मंत्री सभ होइ।
लोलप लोभी काम विगोइ ॥३९॥
छुटी धरम की सबि मरयादा।
परजा की न सुनैं फरिआदा।
काजी बाढी खाइ बिगारैं।
साचे को झूठा करि मारैं ॥४०॥
कामी कपटी चोर जुआरी।
दुखदाई जन बढे अपारी।

कहते हैं, उस समय धरती बहुत दुखी हुई और उसने देवताओं के आगे पुकार की :

होइ दुख्यारी धरा बिचारी।
धाइ सुरन ढिग जाइ पुकारी।

फिर सभी देवताओं ने मिलकर अकाल पुरख के समक्ष बहुत अधीनगी के साथ विनती की। आगे से उत्तर में परमात्मा ने कहा:

जब जब होवति धरम गिलानी।
तबि तबि मैं तन धरौं महानी ॥५२॥

अकाल पुरख ने इन सबको विश्वास बंधाते हुए कहा :

अबि खत्री कुल मै अवतरहौं।
धरम विथार अधरम बिदरहौं।
दस बपु थप करि गुरू कहावौं।
लोगन कौ सुभ पंथ चलावौं ॥५३॥

जब-जब इस धरती पर पाप, जुल्म, अत्याचार, कुकर्म बढ़ जाते हैं उस वक्त कोई रूहानी पथ-प्रदर्शक, गुरु, युगपुरुष दुनिया पर मनुष्य-जामे में आ प्रवेश करता है तथा जुल्म के साथ टकराता है और जुल्म को जड़ से समाप्त करके उसे खारे समुद्र में फेंक कर वापस चला जाता है :

जब जब होवति धरम गिलानी।
तबि तबि मैं तन धरौ महानी ॥५२॥ . . .
प्रभ जी आप गुरू बपु धरि कै।
प्रगट भए जग सम दिनकर कै ॥५९॥

बार देस तथा तलवंडी के लोगों के बारे में लिखा है कि यह क्षेत्र ऐसा है जहां एक ओर चनाब दरिया बह रहा है तथा दूसरी ओर जेहलम बह रहा है। इस क्षेत्र में बसने वाले मनुष्य निर्मल मन और छल-कपट से रहित हैं।

गुरु जी का आगमन

श्री गुरु नानक देव जी बाबा कलिआण चंद जी और माता त्रिपता जी के घर संवत्

१५२६ बि. (१४६९ ई) को प्रकट हुए। इस स्रोत में लिखे अनुसार समय की रीति के अनुरूप राम दयाल नामक पंडित को बुला कर अपने सपुत्र का नाम रखने के लिए कहा। उसने बाल-गुरु जी के दर्शन करके माथे और हाथों की रेखाओं की अच्छी प्रकार से जांच-पड़ताल की और कहा, "कलिआण चंद जी! आपका पुत्र बहुत महान तथा कोई बलिष्ठ पुरुष है, यह बहुत बड़ा 'शाह' कहलाएगा। समस्त लोकाई इसका सत्कार करेगी। इसके शीश पर चंवर-छत्र होगा। यह जहां भी जाएगा विजय प्राप्त करेगा। हिंदू और मुसलमान दोनों इसकी पूजा करेंगे :

सुत तुमरो यहि भयो बली कोऊ अवतारी।
शहिनशाह कहाइ खलक मानैगी सारी।
पुन ढुरै चवर सिरि छत्र वर करै दिग बिजै धरम धर।
इस पीछै हिंदू तुरक बहु भव सागर को जाहिं तर।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन का क्षेत्र पर प्रभाव

जबि ते गुरु नानक अवतार भइओ तिस देस मझारी।
सुख संपति सब भई मेघ बरसैं बहु बारी।
धरम पराइण भए नारि नर करैं भगति हरि।
बदकामी नट कुटल दुखी नहि रहयो देस भर।
नर धरम क्रित करि खाहिं सभि करैं भगति हरि द्योस निसि ॥७॥
सात ईति औ भीति की भीती रही न चीति किस।
यहि प्रताप तबि भयो गुरू का प्रथम देस पर।

साथ खेलने वाले बच्चों पर ऐसा प्रभाव हुआ कि वे सभी रब्बी प्यार में रंगे गए :

तिन कौ या बिधि खेल वीच उपदेशैं ठीकैं।
आसन लगाइ लोचन मिलाइ ध्यान धराइ पुन ईस कौ। . . . ९॥

भैंसें चराना

थोड़े-से और बड़े हुए तो भैंसें-गायें चराने के लिए दूसरे बच्चों के साथ भेज दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने जंगल-बेले जाकर बच्चों को भी परमात्मा की भाव-भक्ति का उपदेश दिया, जिसका उन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि वे बच्चे समाधि लगाकर सिमरन करने बैठ गए। उनकी भैंसें-गायें खड़ी फसल में जा घुसीं। गेहूं के पौधों की बालियां पशुओं ने सब साफ कर दीं। इतने में खेत का मालिक जिमींदार वहां पहुंच गया। अपना खेत उजड़ा देखकर उसने चीख-पुकार की और क्रोधित हो गया कि चलो आज तुम्हें (गुरु जी को) राय बुलार से दंड दिलाता हूं। गुरु जी ने जिमींदार को कहा, "क्यों व्यर्थ उलाहने देते हो?"

उपालंभ क्यों देत हो, नाहि हम खेत उजारयो।

जिमींदार ने राय बुलार के पास जा शिकायत की। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा, "हमने इसके खेत का कोई नुकसान नहीं किया।" राय बुलार ने जांच करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे। जब उन व्यक्तियों ने जाकर देखा तो सभी आश्चर्यचकित हो गए कि खेत तो जैसे के तैसे हरे-भरे खड़े थे। बच्चे समाधि में बैठे देखे। यह क्या हो गया? शिकायत करने वाला जिमींदार भी आश्चर्यचकित और लज्जित-सा हो गया। यह बात जब राय बुलार को पता चली तो वह भी हैरान हो गया। इस घटना का राय बुलार के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

वृक्ष की छाया का एक जगह स्थिर रहना

लिखा गया है कि एक दिन गुरु जी गाय-भैंसें चराने के लिए बेले में गये। दोपहर का समय था। धूप बड़ी तीक्ष्ण थी। एक वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे निद्रा का प्रभाव महसूस हुआ। लेटने का मन किया और लेट गए। आंख लग गई। सूर्य का रुख बदलने से सभी वृक्षों की छाया ढल गई परंतु गुरु नानक साहिब जी जिस

वृक्ष के नीचे आराम कर रहे थे उसकी छाया नहीं ढली।

सांप ने छाया करना

यह भी लिखा मिलता है कि एक दिन राय बुलार शिकार खेलने गया। गुरु जी एक वृक्ष के नीचे लेटे हुए थे। दोपहर ढल गई, गुरु जी के चेहरे पर धूप आ गई। इतने में एक काला फन वाला सांप निकला जिसने फन फैलाकर गुरु जी के चेहरे पर छाया कर दी। राय बुलार ने वापस आते हुए जब दूर से देखा तो क्या देखता है कि एक आदमी सोया हुआ है, जिसके सिर पर सांप फन फैला कर खड़ा है। सोचने लगा कि इस व्यक्ति को अवश्य ही इस सांप ने डस दिया होगा। जब राय बुलार नजदीक आने लगा तो घोड़े की टापों की आवाज से वह सांप वहां से चला गया। गुरु जी उठ बैठे। वह गुरु जी को देख कर हैरान हो गया। अल्लाह का शुक्राना किया और यह समझ लिया कि यह अवश्य ही कोई औलिया है और राय बुलार ने सत्कार सहित झुककर नमन किया। घर जाकर महिता कालू को बुलाया। सारी घटना सुनाई और कहा, "यह वली पीर है। तूने आज से इसको कुछ नहीं कहना। यदि तेरा कोई नुकसान भी करे तो उस नुकसान की भरपाई तुम मुझसे कर लेना।"

भली भांति इह ठई बात, को बली भयो यहि।
आइ धाम गुरु पित बुलाइ सबि बात सुनाई।
'महिता तूं भो धन्य जाहि सुत बली महाई।
पुर देस और मैं धन्य भो अबि तूं मुझ को तिह दास लख।
नहि करीए कब ही रंज तिह चहीए जितो ले जाइ रक्ख ॥१६॥

"महिता! मुझे नानक का सेवक जान। कभी भी उनको तंग न करना। जितने भी पैसों की आवश्यकता है मुझसे ले जा। महिता कलिआण चंद! तू धन्य है। मैं भी धन्य और मेरा देश भी भाग्यशाली है। तेरा पुत्र बहुत बड़ा वली है।"

ठगों पर प्रभाव

एक दिन गुरु नानक साहिब प्रातः काल सैर करने जा रहे थे। गुरु जी के हाथों में सोने के कड़े पहने हुए थे। रास्ते में आपको कुछ ठग मिले और उन्होंने अकेले देख कर सोने के कड़े तथा अन्य नकदी इत्यादि देने को कहा। गुरु जी ने उनको सब कुछ दे दिया। जब वे यह सब लेकर थोड़ी ही दूर गए तो उनको आंखों से दिखाई देना बंद हो गया। यदि वे पीछे देखते हैं तो सब कुछ दिखाई देता है। यदि आगे को पांव उठाते हैं तो फिर कुछ भी दिखाई नहीं देता। वे हारकर वापस आ गए तथा गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े। कहने लगे, "हमको क्षमा कर दो।"

गुरु नानक साहिब ने उन ठगों को कहा, "जाओ आज तुमको क्षमा किया। यह सामान अब तुम्हारा है, तुम ले जाओ, परंतु आगे के लिए यह काम कभी नहीं करना। लूट-खसूट करना बंद करो। नाम जपो, किरत करो तथा बांट कर छको।"

अंध भए सूझै नहीं परे पगी पुन आए।
कह्यो गुरू ले जाहु अबि फेर गए वहि धाइ ॥३२॥

सच्चा सौदा

एक दिन श्री गुरु नानक देव जी के पिता ने कहा, "बेटा! अब आप बड़े हो गए हो, ऐसे खाली बैठे गुजारा कैसे चलेगा? आपको अब कोई काम-धंधा करना चाहिए। चलो यूं कीजिये, मैं आपको बीस रुपये देता हूं, आप कोई अच्छा-सा व्यापार कर देखिये, जिसमें आपको अधिक लाभ हो।"

लै हम तै जाहु बित्त जाइ तुम सौदा ल्यावो।
नफा होइ जिस मांहि अधिक पुन सुख भी

पावौ ॥३८॥

श्री गुरु नानक देव जी व्यापार करने के लिए चले गए। रास्ते में जाते हुए साधुओं की एक जमात दिखाई पड़ी। वे कई दिनों से भूखे थे लेकिन भक्ति में मग्न थे।

गुरु जी ने वे पैसे उन साधुओं को लंगर छकाने में खर्च कर दिये। जब घर पहुंचे पिता जी काफी खफा हुए। गुस्से में बुरा-भला कहने लगे।

गुरु जी : भला पिता जी इसमें खफा होने की कौन-सी बात है? आपको धन चाहिये, ले लो।

पिता जी : चल पुत्र! जल्दी बता, वो धन कहां है?

गुरु जी : बस पिता जी! आप आंखें बंद कीजिये और देखिये, आपके घर में कितना धन पड़ा है।

बाबा कलिआण चंद जी ने आंखें बंद कीं तो क्या देखा कि घर के सारे आंगन में सोना ही सोना है। देखकर हैरान हो गए:

पुनि कालू ससि नैन मूंदि करि पेख्यो जबही।
जितक धरन अर सदन पिखे हाटक के सबि ही।

इस साखी में स्रोत के कर्त्ता ने गुरु जी के साथ भाई बाला जी के होने का भी जिक्र किया है।

तुलसां दासी

गुरु जी अपने पलंग पर आराम कर रहे थे। तुलसां दासी घर का काम-काज कर रही थी। अचानक माता त्रिपता जी ने आवाज दी, "तुलसां! 'नानक' को उठा कर बाहर भेज। रोटी ठंडी हो रही है।"

तुलसां गुरु जी को जगाने के लिए भीतर गई। पहले तो गुरु जी के दर्शन करके निहाल हो गई। देखा कि सृष्टि का मालिक आराम कर रहा है। एक चरण चादर से बाहर है जो कीचड़ से लथ-पथ हुआ पड़ा है। उसने एक अद्‌भुत दृश्य देखा कि एक जहाज डूब रहा है और गुरु नानक साहिब उसको कंधा लगाकर धकेल रहे हैं। यह सब कुछ तुलसां की समझ से बाहर था परंतु वह यह हजम न कर सकी। झट माता जी को कहने लगी, "माता जी! तेरा पुत्र तो किसी का जहाज पार लगा रहा है!"

तुलसां की यह अजीब-सी बात सुनकर माता क्रोध को वश में करने का प्रयास करती हुई भीतर गई। जा बांह पकड़ी तथा कहा, "पुत्र! उठ, हाथ-मुंह धो और रोटी खा, ठंडी हो रही है। तेरी तरफ देख-देख कर तो अब नौकर भी परिहास करने लग पड़े हैं। देख तुलसां क्या कह रही है!"

गुरु जी : मां! क्या कह रही है तुलसां?

माता जी : पुत्र! वो कहती है कि तेरा पुत्र किसी सिक्ख का जहाज किनारे लगा रहा है। भला यह कैसे हो सकता है?

एक चरन मै कीच लग्यो पुन ताहि निहारा।
निज रसना के संग प्रेम धरि भले उतारा।
दिब्य द्रिशटि तिह भई पिख्यो अजब तमाशा।
चौदस लोकन केर हाल सभि ताहि प्रकाशा ॥४५॥
बूडति एक जहाज सिंधु ते गुरू निकास्यो। . . .

यह सुनकर गुरु जी ने तुलसां दासी की ओर बहुत गहरी दृष्टि के साथ देखा :

तबि गुरि दासी ओर नजर पसारी।
लई शकति सभि छीन करी बिन शकति बिचारी ॥४७॥

कुछ समय तलवंडी में गुरु जी द्वारा अजब खेल करने के बाद गुरु जी की बहन बेबे नानकी का विवाह भाई जैराम जी के साथ सुलतानपुर (रियासत कपूरथला) में हो जाता है। बेबे नानकी जी अपने छोटे भाई गुरु नानक देव जी को साथ ले जाती हैं। वहां गुरु जी को मोदी की नौकरी मिल जाती है। यहीं रहते हुए आपका विवाह हो जाता है।

सुलतानपुर

श्री गुरु नानक देव जी ने जीवन के लगभग चौदह वर्ष सुलतानपुर में व्यतीत किये। यहीं गुरु जी ने मोदी का काम किया। जिम्मेदारी भरी सरकारी ड्यूटी करते हुए गुरु जी सबके साथ समान बर्ताव करते। वेतन के जितने पैसे मिलते उनमें से अधिकतर हिस्सा जरूरतमंद निर्धनों में वितरित कर देते। कई बार गुरु जी का हिसाब चेक हुआ परंतु हर बार गुरु जी का ही अधिक बकाया निकलता रहा। वे रहते पैसे जरूरतमंदों में वितरित कर देते।

वेईं नदी में स्नान

आप प्रतिदिन वेईं नदी में स्नान करने जाते। यह क्रम लम्बे समय तक चलता रहा। एक दिन स्नान करने गए और अचानक गुम हो गए। तीन दिन आलोप रहने के बाद गुरु जी नदी में से बाहर आये। जैसे-जैसे लोगों को पता चला सभी गुरु जी का दर्शन करने आये। हर धर्म, हर जाति, हर कौम के बच्चे, बूढ़े, युवा, स्त्री-पुरुष गुरु जी के पास पहुंचे। सबके कान गुरु जी के वचनों को तरस रहे थे, जो सुनते वे ही निहाल हो जाते। गुरु जी का सबको यही संदेश होता : "रब्ब का नाम जपो, उसकी भक्ति करो, केवल परमात्मा ही सत्य है, उसकी ओट लो। मरघट, शमशान-भूमि, गुग्गा पीर, कब्रों की पूजा करने से लोगों को रोकते। बाहरी लोक-लुभाऊ ख्याल, पाखंड, लोक-दिखावा, छोड़कर एक अकाल पुरख का ध्यान धरो और उसी की पूजा करो :

नाम ररो भगति करो ब्रहम उपासो।. . .
पाहन मूरति भैरव मीरां।
गोर मढ़ी मठ पीर फकीरा।
कूरे यहि पूरे दिखराए।
मंनण ते सबि लोग हटाए ॥९०॥

छठे बिस्राम में गुरु जी पूरब की पहली उदासी अथवा प्रचार-यात्रा आरंभ करते हैं। ऐमनाबाद में भाई लालो जी के साथ पहली बार मिलते हैं। यहीं आपने एक अहंकारी मलिक भागो के ब्रह्मभोज की पोल खोली और ईमानदारी से कमाये सादा भोजन खाने का समर्थन किया:

तुमरा खाना खून अलूदा।
लालो की रोटी सम दूधा।
यहि कहि टुक्कर लै कर दोई।
दूध लहू टपकायो सोई ॥१४॥

यहीं आप जी का बाबर के साथ मिलाप हुआ। इसके आगे कुरुक्षेत्र, पिहोवा सूर्य-ग्रहण के अवसर पर नानू पंडित के साथ ज्ञान-चर्चा की। इससे आगे पानीपत में शेख शरफ को मिल कर दिल्ली में मजनूं टिल्ले जा पड़ाव किया। दिल्ली में आपको जेल-यात्रा करनी पड़ी जहां आप जी को सवा मण गेहूं पीसने के लिए दी जाती थी। 'पंथ प्रकाश' में लिखे अनुसार रब्बी प्यार में रंगे गुरु जी कीर्तन में मस्त हो जाते थे और चक्की स्वत: चलती देख किसी ने राजा को जा खबर दी। राजा जेल के अंदर आकर देखता है और तत्काल गुरु जी के चरणों पर गिर कर क्षमा मांगता है। गुरु जी ने उसको कहा:

भेख अलेख रूप पहिचानो।
साधु संतावनि बुरा पछानो।
जिनि जिनि जग मै साधु दुखाए।
तिन के बंस खुदाइ गमाए ॥९३॥

उसकी कैद से सब फकीरों को मुक्त करा कर गुरु जी निजामुद्दीन के फकीरों को मिलकर इटावा, प्रयाग, काशी पहुंचे। काशी में आप विद्वानों के साथ ज्ञान-गोष्टि करते हैं। यहीं कुछ कर्मकांडी कहने लगे, 'हमारे साथ संस्कृत में चर्चा कीजिये।'

संसक्रित तुम बोलहु बानी।

गुरु जी ने एक कुत्ते की ओर संकेत

करके कहा, "यह तुम्हारे साथ चर्चा करेगा। यहां तक लिखा गया है कि गुरु जी साथ ही कहने लगे कि यह भी तुम्हारा ही भाई है।" कुत्ते को संबोधित करते हुए कहा, "इन अपने भाइयों को संस्कृत सुनाओ।" उस समय कुत्ता संस्कृत बोलने लग पड़ा :

पूरब जनम तुमार बिरादर।
अए करो चरचा इनि सादर।
पाइ हुकम गुर का सग ग्यानी।
बोलन लग्यो संसक्रित बानी।

काशी के उस समय के निवासी हैरान हो गए और गुरु जी का जयकार करने लग गए। गुरु जी ने कुत्ते की समस्त पूर्बली व्यथा सुनाई कि यह किस कारण कुत्ता बना।

काशी से चलकर गुरु जी ने बिहार प्रदेश के पटना शहर में सेठ सालस राय को निहाल किया। बंगाल कामरूप में भाई मरदाना जी को जादूगरनियों ने भेडू बना लिया था। भाई जी को उनसे मुक्त कराया और उनको भी जीवन का सही मार्ग बताया। आप देवलूत से मिले। भाई मरदाना जी को अकुला की ककड़ियां खिलाईं :

खाधो स्वै सुधा मुख पायो।

गुरु जी यहां से चल कर उड़ीसा पहुंचते हैं। आपने कौडे भील जिसको राक्षस करके लिखा गया है के साथ भेंट की और उसको सही रास्ता दिखाया। 'पंथ प्रकाश' में गुरु जी रानापुर, सोनामद, सुग्घा, कोटकंटक, बीजापुर, रामटेक, नागपुर, अंगोला, बुरहानपुर होते हुए जबलपुर, चित्रकूट की सैर करते दिखाई देते हैं।

आठवें बिस्राम में दूसरी उदासी का विवरण है। इस उदासी में गुरु जी पीरों-फकीरों, साधु-संतों, कनफटे योगियों से मिले। उनको फकीरी के वास्तविक सिद्धांत बताये। योगियों को गुरु जी ने योग की सही प्रक्रिया समझाई। यहीं भरथरी नामक योगी को मिले।

नौवें बिस्राम में गुरु जी दक्षिण भारत तथा श्रीलंका का भ्रमण करते दिखाये गए हैं। संगलादीप में आपकी राजा शिवनाभ के साथ भेंट दर्शायी गई है। गुरु जी ने यहां वास्तविक गुरु की विशेषता समझाई।

दसवें बिस्राम में गुरु जी की उत्तर प्रदेश की तीसरी उदासी का विवरण दिया गया है। सुलतानपुर से भाई बाला जी और भाई मरदाना जी को साथ लेकर कीरतपुर में बुड्ढण शाह मिलते हैं। भेखियों-पाखंडियों को सीधे रास्ते पर डालते हुए, साधुओं-सन्यासियों को मिलते हुए पंजौर, जौहड़सर, नीमखार, सीतापुर जिले में से होते हुए नैनीताल से नेपाल, सिक्किम, भूटान आदि क्षेत्रों का भ्रमण करते दर्शाये गए हैं।

ग्यारहवें बिस्राम में चौथी उदासी करने के लिए गुरु जी इस्लामी देशों का रटन करने के उपरांत वापस करतारपुर आ जाते हैं। यहां कृषि करते हुए, ओस-पड़ोस के क्षेत्रों में गुरमति के मिशन का प्रचार करते हुए आप जी ने समय व्यतीत किया। कवि के लिखने के अनुसार पुन: कहीं दूर-दराज के क्षेत्र में नहीं गए:

फेर कबहूं न कित दूर देस गए हैं।

कुछ समय के बाद संवत् १५९६ (सन् १५३९ ई:) आश्विन वदी दशम को ज्योति-जोत समा जाते हैं।

ज्ञानी जी ने इस प्रकार तीसरे बिस्राम से लेकर बारहवें बिस्राम तक गुरु जी का संपूर्ण जीवन-चरित्र चित्रण करने का प्रयास किया है। सिक्ख पंथ को ऐसे ऐतिहासिक स्रोतों से विस्माद से लबा लब भरपूर गुरु-इतिहास की झलक मिलती है, लेकिन प्रस्तुत स्रोत तथा अन्य स्रोतों को गुरबाणी एवं गुरमति विचारधारा की कसौटी पर परख करके इनमें से सार-सिद्धांत लिया जा सकता है।

'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' के अनुसार गुरु नानक साहिब का जीवन-वृत्तांत

-बीबी अमरजीत कौर*

गुरु-इतिहास पर प्रकाश डालने के लिए बहुत-से स्रोत उपलब्ध हैं जिनमें गुरु नानक साहिब जी के व्यक्तित्व का वर्णन किया गया है। इनमें से 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' भी एक महत्वपूर्ण रचना है। इस रचना में गुरु नानक साहिब जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक का गुरु-इतिहास वर्णित है। यह एक काव्य रचना है और कवि ने इसमें गुरु-जीवन के अहम तथ्य पेश करने का यत्न किया है। इस रचना का रचनाकार प्रसिद्ध इतिहासकार कवि भाई केसर सिंघ छिब्बर है।

भाई केसर सिंघ का सम्बंध गुरु-घर से आपके पूर्वज भाई गौतम दास से जुड़ता है। बाबा गौतम के तीन बच्चे थे--भाई पैड़ा, भाई पिरागा तथा भाई सरसुती। भाई पैड़ा जी भाई चौपा सिंघ के पिता जी थे जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को खेलाने वाले थे। भाई परागा जी श्री गुरु हरिगोबिंद सिंघ जी के वीर योद्धा थे जिन्होंने रुहेले की जंग (१६२१ ई) में चंदू के पुत्र करम चंद तथा कान्हे के पुत्र भगवाने तथा पौत्र रतन चंद को मार कर शहीदी पाई।[१] भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, "भाई पिरागा जिला जेहलम के कड़िआल गांव का निवासी छिब्बर ब्राह्मण था जो महात्मा गौतम का पुत्र था।[२] भाई परागा का पुत्र दवारका दास तथा दवारका दास का पुत्र दरघा मल था। आगे दरघा मल का पुत्र धरम चंद तथा उसका पुत्र गुरबख्श था जो भाई केसर सिंघ छिब्बर का पिता था। बंसावलीनामे के अंदर की गवाहियां इस प्रकार हैं :

तिस धरम चंद का हउ नाती सिंघ केसर मेरा नाउ।
बचन कीता चउपा सिंघ, दुहां नूं सिरोपाउ पहिनाउ।

भाई केसर सिंघ के जन्म-स्थान तथा देहांत के बारे में स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं। कवि ने बंसावलीनामे के अलावा अन्य पुस्तकें--"गुर प्रणाली, सोभा श्री अमृतसर जी की, बारां माह केसर सिंघ, थिती, सतवार" आदि की रचना की। विद्वानों में आपकी रचनाओं के बारे में एम मत नहीं है।

भाई केसर सिंघ की रचना 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है जिसमें ढाई हजार से अधिक छंद हैं। प्रो. प्यारा सिंघ पदम द्वारा संपादित यह पुस्तक श्री अमृतसर के धार्मिक एवं ऐतिहासिक पुस्तकों के प्रकाशन 'सिंघ ब्रदर्स' द्वारा प्रकाशित की गई है। हर अध्याय को 'चरण' का नाम दिया गया है तथा कुल चौदह चरण हैं। दस गुरु साहिबान के अलावा 'बाबा बंदा सिंघ बहादर, मुतबंना जीत सिंघ, माता साहिब देई तथा पंथ के समाचार' से सम्बंधित अध्याय भी इस स्रोत में शामिल किए गए हैं।

पहले चरण के १५३ बंदों में से श्री गुरु नानक देव जी के महत्वपूर्ण पक्षों का वर्णन करने का यत्न किया है। दोहिरा, चौपई, अड़िल

*सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।

तथा सांत छंद का इस्तेमाल बहुत खूबसूरती से किया गया है।

कवि अन्य सभी गुरु साहिबान में गुरु नानक पातशाह की ज्योति को ही विद्यमान हुई मानता है। कवि के अनुसार गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी को गुरगद्दी देकर अपना रूप बख्शा। इसी तरह आगे नौ गुरु साहिबान तक यह गुरगद्दी चली जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब को दे दी। कवि 'दस गुरु-एक ज्योति' के सिद्धांत को मानता है। श्री गुरु नानक देव जी खुद परमात्मा का रूप थे और यही तत्व आगे गुरु साहिबान तक संचारित हुआ। कवि बताता है:

एह दस जामे बाबे नानक जी आप हैन धारे।
यह दसे महल बाबे ते नहीं निआरे।४९।

कवि ने गुरु नानक साहिब को एक दिव्य पुरुष के रूप में चित्रित किया है। वे बहुत-सी शक्तियों के मालिक तथा पूजनीय हैं। सारा ब्रह्मांड गुरु नानक साहिब की उपमा करता है:

धरती होरु परै होरु होरु है आखी।
किउ जो बाबा सभनों का है साखी।
सुते सिध होता ही आइआ।
सभ धरती मै जापु बाबे साहिब दा है गाइआ।४७।

बाबे (गुरु जी) ने मानस-जन्म में धरती पर आना किया है। वे खुद त्रिलोकी के मालिक हैं तथा सभी जंजालों से परे अकाल रूप हैं, जैसे:

मानस जामे जो बाबा है आइआ।
पर संतां इसनूं मानसु करि नही ठहिराइआ।
है अनादि आदि ते परे।
कलि मै दस जामे साहब ए धरे।५०।

कवि श्री गुरु नानक देव जी के अवतार धारण करने के बारे में भी लिखता है।

वेदीआं बचन अपना पूरा कीआ।
नानक नाम अउतार कलिजुग मै आनि लीआ।. . . ११०।

गुरु साहिब जहां भी जाते थे सभी को खुशियां बांटते थे : *"सभ सिक्खन को सुखु दए, जह जह भए सहाइ।१०१।"* गुरु साहिब किरत-प्रेमी थे। आपने सारी दुनिया को किरत करने के लिए उपदेश दिया। आप सच्ची-सुच्ची किरत को सबसे उत्तम मानते थे, इसलिए आपने 'नाम' जपने के साथ-साथ किरत को ही महानता दी। अपनी उदासियां पूरी करने के बाद आप जी ने करतारपुर नामक नगर में आकर किसानी अथवा कृषि का व्यवसाय किया। इस प्रकार गुरु साहिब किरत की परिपक्वता करने के लिए जनसाधारण के सामने खुद प्रेरणास्रोत बने:

किरत किरसाणी दा कीता आरंभ।
करन कारन दीन दुनीआ दे थंम। . . . १३१।

श्री गुरु नानक देव जी को कवि सच्चा उपदेशक तथा सर्वोत्तम मार्गदर्शक बताता है। उसके अनुसार गुरु जी जैसा 'गुरु' कोई नहीं मिल सकता जो लोगों को उपदेश द्वारा अलाही मार्ग पर चला सके। गुरु नानक साहिब की प्रशंसा करता हुआ वो लिखता है:

ना इह जनमु ऐसा हथि आवैगा।
अते ना ऐसा गुरू बाबे नानक जेहा पावैगा।११२।

लेखक गुरु नानक साहिब की उदासियों का भी जिक्र करता है। गुरु साहिब भाई बाला जी तथा भाई मरदाना जी के साथ घर से चलते हैं। लेखक एक कवि होने के नाते काव्य-कल्पना के अंदाज में लिखता हुआ गुरु जी की उदासियों के विशाल मंतव्य को विश्व की 'सैर' का रूप समझाता है और समझदार पाठक 'सैर' का अर्थ 'प्रचार-यात्रा' अच्छी तरह समझते हैं। वो लिखता है:

आप साहिब उठ परदेस सैल करन नूं गए।१२६।

गुरु साहिब की शख्सियत तथा शक्ति का प्रदर्शन करता हुआ कवि एक अन्य पारंपरिक तथ्य पेश करता है जो कि गुरमति के अनुसार मानने के योग्य नहीं है। वो कहता है कि गुरु साहिब का दाह-संस्कार किया गया तो उस समय गुरु साहिब की चिता में कोई 'फूल' (हड्डी आदि) न मिला। गुरु साहिब शरीर सहित ही सचखंड चले गए। यह सब कर्त्ता द्वारा गुरु साहिब के प्रति उस समय प्रचलित भ्रांतियों के कारण ही लिखा गया प्रतीत होता है। वस्तुत: गुरु जी की महानता को हर कोई अपनी ओर से बढ़-चढ़कर दर्शाना चाहता है और सभी लेखकों की विद्वता का पैमाना अपना-अपना ही था।

गुरु साहिब खुद प्रकृति-प्रेमी थे तथा आज भी बाणी द्वारा प्रकृति के नियमों के अनुसार जीवन जीने का उपदेश देते हैं।

वास्तव में यह 'बंसावलीनामा' रूपाकार में रची गई रचना है, इसलिए इसमें शख्सियत उभारने से बंसावली पर ज्यादा जोर दिया गया है, जिसमें गुरु साहिब के माता-पिता, बहन-बहनोई, पत्नी एवं पुत्र-पोतों के नामों के अलावा उनके पूर्वजों का भी जिक्र मिलता है। गुरु साहिब के जीवन से सम्बंधित संवत् तथा तिथियों का भी विवरण दिया गया है। कवि ने गुरु नानक साहिब की जन्म-तारीख कार्तिक की पूर्णमासी अथवा पूर्णिमा लिखी है।

इस प्रकार गुरु साहिब की जो शख्सियत 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' में से उभर कर सामने आती है, कुछेक भ्रमपूर्ण बातों को छोड़कर शेष सारी सामग्री प्रशंसनीय है। वह समय भी तो पूर्णत: वैज्ञानिक युग न था जिसमें कवि ने रचना की।

सामूहिक रूप से हम कह सकते हैं कि कवि ने 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' के पहले चरण में गुरु नानक साहिब के जीवन के प्रमुख पक्षों पर प्रकाश डाला है। भले ही यह रचना परंपरावाद तथा मिथिहास का प्रभाव अधिक स्वीकार करती है मगर फिर भी इसके ऐतिहासिक महत्व को नजरंदाज नहीं किया जा सकता।

भक्त कबीर जी का विचार है कि अगर रेत में खंड (चीनी) बिखर जाये तो उसे हाथी अपनी बलशाली सूंढ़ से नहीं चुन सकता जबकि चींटी एक-एक दाना चुग लेती है। इसी तरह समझदार विद्वान ऐसे स्रोतों से इतिहास को, जो कि मिथिहास में घुलमिल गया है, उसमें से ठीक पक्षों को चुनकर पाठकों को सही ज्ञान प्रदान कर सकता है।

पाद-टिप्पणियां :

१. पदम, पिआरा सिंघ (संपादक), भाई केसर सिंघ छिब्बर कृत 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का', सिंघ ब्रदर्स, अमृतसर, १९९७, पृष्ठ १४.

२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, 'महान कोश', नेशनल बुक शाप, दिल्ली, १९९८, पृष्ठ ७५०

आपका पत्र मिला

भारत अभी भी कॉमनवेल्थ का सदस्य

यद्यपि भारतवर्ष १५ अगस्त, सन् १९४७ में स्वाधीन हो गया था और २६ जनवरी, सन् १९५० को एक लोकतंत्र भी घोषित हो गया है; फिर भी हमारा देश अब भी 'कॉमनवेल्थ' का सदस्य बना हुआ है। ४ अक्तूबर से १३ अक्तूबर, २०१० तक दिल्ली में आयोजित 'राष्ट्रमंडल खेलें' उसी का परिणाम हैं।

-डॉ. नवरत्न कपूर।

'महिमा प्रकाश' में गुरु नानक साहिब का जीवन

-बीबी किरनदीप कौर*

'महिमा प्रकाश' (पद्य में) अट्ठारहवीं सदी का सिक्ख इतिहास का अत्यधिक महत्वपूर्ण साहित्यक स्रोत है। भाई केसर सिंघ छिब्बर द्वारा रचित 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' (१७६९ ई.) के बाद, बाबा सरूप दास भल्ला रचित 'महिमा प्रकाश' ही ऐसी रचना है जिसमें दस गुरु साहिबान का इतिहास लिखा मिलता है। बाबा सरूप दास भल्ला की पृष्ठभूमि गुरु-परिवार के साथ जुड़ती है और वे श्री गुरु अमरदास जी की नौवीं पीढ़ी में से थे। आप को गुरमति के अतिरिक्त भारतीय धर्मों तथा दर्शन की भी जानकारी थी। आपका जन्म १८०० वि: (अनुमानित) मुताबिक १७४४ ई को बाबा बाहड़ मल जी के गृह में गोइंदवाल (जिला अमृतसर) में हुआ।[१]

'महिमा प्रकाश' के कई हस्तलिखित मसौदे मिलते हैं। 'महिमा प्रकाश' नाम वाली दो रचनायें मिलती हैं। विचाराधीन 'महिमा प्रकाश' वाली रचना से पहले 'महिमा प्रकाश' गद्य में १८०० वि: मुताबिक १७४४ ई में रचा गया था।[२] 'महिमा प्रकाश' में अंकित है :

दस असट सहस्र बिक्रम संमत असिद तेतीस।
सरूप दास सतिगुर कही महिमा प्रकाश बखसीस।[३]

'महिमा प्रकाश' (पद्य) के दो भाग हैं। पहले भाग में गुरु नानक साहिब के जीवन-वृत्तांत के साथ संबंधित ६५ साखियां मिलती हैं।[४] दूसरे भाग में शेष नौ गुरु साहिबान के महत्वपूर्ण जीवन-वृत्तांत काव्य रूप में ही अंकित किये गए हैं। 'महिमा प्रकाश' का सर्वप्रथम संस्करण १९७० में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक स. गोबिंद सिंघ (लांबा) और स. शमशेर सिंघ अशोक थे।[५]

इसके उपरांत सन् १९९९ में डॉ. उत्तम सिंघ (भाटिया) द्वारा 'महिमा प्रकाश' का संपादन किया गया। 'महिमा प्रकाश' का महत्व इसके अट्ठारहवीं सदी के दूसरे अर्द्ध के पंजाब के सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक स्रोत होने में है। 'महिमा प्रकाश' में दिये गुरु साहिबान के नाम और घटनाओं की तिथियां इस स्रोत के महत्व को बढ़ाती हैं। बाबा सरूप दास ने पौराणिक तपस्वी ऋषियों-मुनियों और भक्त साहिबान के बारे में संकेत दिये हैं। इन संकेतों का प्रतीकों के रूप में प्रयोग करते हुए 'महिमा प्रकाश' में गुरु नानक साहिब के व्यक्तित्व और उनके जीवन के साथ जुड़ी स्मृतियों, रीतों, रस्म-ओ-रिवाजों को संभाला गया है, जिनसे दिशा लेकर साधारण लोग भी अपने जीवन को ऊंचा उठाते हुए पवित्र बना सकते हैं। बाबा सरूप दास ने गुरु साहिब की जीवन-घटनाओं का वर्णन करते हुए साथ ही सिक्ख-सिद्धांतों का भी उल्लेख किया है।

इस रचना की एक विशेषता इसमें बाणी की, की गई व्याख्या है। स. करम सिंघ हिस्टोरियन के अनुसार 'महिमा प्रकाश' शुरू तो बनारस में हुआ, परंतु इसकी संपूर्णता श्री अमृतसर में हुई।[६]

'महिमा प्रकाश' में श्री गुरु नानक देव जी के जीवन तथा व्यक्तित्व के कई महत्वपूर्ण गुणों

*सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।

के बारे में जानकारी मिलती है।

रब्बी पुरख : 'महिमा प्रकाश' के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी अकाल पुरख का स्वरूप थे। सतिगुरु जी का प्रकाश होने से सभी ओर प्रकाश हो गया। गुरु जी जगत को तारने के लिए आये हैं, जिनके दर्शन करने से सभी के दुख दूर हो जाते हैं। राय बुलार गुरु साहिब के सब कारनामे देखकर गुण गायन करता हुआ कहता है कि गुरु जी बहुत बड़े वली हैं जो कि सब सुख देने वाले तथा सब गुणों से भरपूर हैं:

नानक जी जाना वली पछाना।
अत मन माना गुन गाए।
भइआ राइ सुभागा कदमन लागा
अते अनरागा मन माना ॥५६॥ (पृष्ठ ८३)

'महिमा प्रकाश' में गुरु साहिब के व्यक्तित्व का स्वरूप-वर्णन एक साधारण व्यक्ति से हट कर 'रब्बी पुरख' के रूप में सामने आता है। गुरु जी की सुरति हर समय परमात्मा के साथ जुड़ी रहती है। उजड़ा खेत हरा-भरा करने वाली साखी ऐसा संकेत करती है। गुरु साहिब का यह कौतुक ही था जिससे भैंसों द्वारा उजाड़ा गया खेत हरा-भरा हो जाता है :

इह अचरज चलित्र दिआल के,
लखै न कोऊ भेद।
संतन महिमा अति अमित है,
भेद ना पावै बेद ॥१७॥ (पृष्ठ ८३)

गुरु साहिब के रब्बी पुरख होने के बारे में बाबा सरूप दास गुरु साहिब का गुण गायन करते हुए पातशाह, पैगंबर, फकीर, परम पुरख, वली आदि कई नामों के साथ संबोधित करते हैं:

सभ लोक कहै,
इह वडा कोई अवतार है।
मसतक जग मग जोत,
कुल को निसतार है ॥१६॥ (पृष्ठ ८३)

आत्मिक ज्ञानी : श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व में आत्मिक ज्ञानी होने के पक्ष के बारे में भी हमें ज्ञात होता है। बाल-रूप गुरु नानक साहिब जी अपनी अल्प आयु में ही बहुत बड़ी सोच के स्वामी थे। पांधे वाली साखी में गुरु साहिब पांधे को सही विद्या के बारे में ज्ञान देते हुए समझा रहे हैं कि "हे मनुष्य! तू मोह को जलाकर, घिसाकर स्याही बना ले, प्रेम को कलम तथा मन को अपना लेखारी बना ले। गुरु की शिक्षा लेकर प्रभु के गुणों की विचार कर।"

जल मोह घसु मसु करि मत कागद करि सार।
भाउ कलम करि चित लखारी गुर पुछ लिख बीचारि ॥१०॥ (पृष्ठ ७६)

इसी प्रकार बाल-रूप गुरु नानक साहिब मुल्ला को भी प्रभावशाली बातों के द्वारा प्रभावित करते हैं। अल्प आयु में ही उनकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी। गुरु साहिब महान आत्मिक ज्ञानी थे। गुरु साहिब का वार्तालाप जब वैद्य के साथ होता है तो आप जी वैद्य को कहते हैं कि "हे वैद्य! तू मेरी स्थिति को कैसे जान सकता है?"

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह।
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥
(पन्ना १२७९)

सच्चे किरती : गुरु नानक साहिब के व्यक्तित्व में एक सच्चे किरती वाले गुण शामिल थे। जब आप जी नवाब दौलत खां के मोदीखाने में मोदी की नौकरी करते थे तो वहां बहुत ईमानदारी के साथ काम करते थे। जब भी कोई भूखा-प्यासा या जरूरतमंद आता, उसकी सहायता करते थे।

आपणे हाथ जा को दए तां की दुख भुख जाइ।
दरसन प्रताप सभ दुख हरे बरकत आवै धाइ ॥१४॥
(पृष्ठ १०७)

गुरु साहिब की सच्ची किरत के बारे में साखी आती है कि जब गुरु साहिब के पिता जी उनको कुछ पैसे देते हुए सौदा मंगवाते हैं तब

गुरु साहिब रास्ते में भूखे साधुओं को भोजन छका देते हैं। गुरु साहिब के अनुसार यही असल व्यापार है जो इस लोक में ही नहीं परलोक में भी सहायक सिद्ध होता है :

ऐसा बिवहार धन का हम कीना।
लोक परलोक लाहा हम लीना ॥९॥ (पृष्ठ ९०)

दिखावे तथा पाखंडों के विरोधी : 'महिमा प्रकाश' के अनुसार गुरु साहिब बाहरी दिखावे के विरोधी थे। गुरु साहिब अंदरूनी निर्मलता के धारणी थे। गुरु साहिब की संगत करने से सज्जन नामक ठग सही मार्ग पर आ गया था जो कि भोले-भाले लोगों को ठगता था। गुरु साहिब उसका सुधार करते हैं और उसको आंतरिक रूप से निर्मल होने का उपदेश करते हैं:

कोठे मंडप माड़ीआ पासो चिटवीआ।
ढठीआ कंम न आवनी, विचों सखणीआ ॥२॥
(पृष्ठ १२९)

गुरु साहिब ने अपनी शिक्षाओं के द्वारा सबको सच का मार्ग दर्शाया तथा सब प्रकार के पाखंडों का नाश भी किया। साखी कारमक साधु वाली में गुरु साहिब एक वैष्णो साधु, जो कई कर्मकांडों में बुरी प्रकार से फंसा हुआ था, के मन से विकारों की मैल को दूर करके जीवन जीने का उपदेश देते हैं।

सब्र-संतोष के धारक : 'महिमा प्रकाश' में श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व में धैर्य एवं संतोष के धारक होने का भी एक महत्वपूर्ण गुण होने का वर्णन किया गया है। गुरु साहिब सबको इस गुण के धारक होने का उपदेश देते हैं। अपनी प्रचार-यात्राओं के दौरान आप जी शाह शरफ नामक मुस्लिम फकीर को मिले। शाह शरफ गुरु साहिब के आगे विनती करता है कि मुझ पर कृपा कीजिए और मेरी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ दो। तब गुरु जी उसको धैर्य एवं संतोष रख कर प्रभु का नाम जपने के लिए कहते हैं कि धैर्य वालों के पास भरोसे तथा धन्यवाद की और गुरमुखों के पास धैर्य एवं संतोष की राशि होती है। अत: वे पूरे प्रभु के दर्शन कर लेते हैं। जो मात्र बातें ही करते हैं उनको कोई जगह नहीं मिलती :

सिदक सबूरी सादगा सबर तोसा मसाइका।
दीदार पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥१॥
(पृष्ठ १८३)

इससे आगे जब कलयुग गुरु जी को भ्रम में डालने के लिए कई प्रकार के भयानक रूप धारण करता है इसलिए कि गुरु साहिब उसकी बातों अथवा प्रभाव में आ जाएं, तब गुरु जी उसको भी सच की पहचान कराकर सीधे मार्ग पर डालते हैं। गुरु जी कहते हैं कि प्रभु के नाम के बिना किसी प्रकार की पूजा-आराधना किसी काम नहीं आती। 'महिमा प्रकाश' में गुरु जी की पावन बाणी इस प्रकार अंकित है :

पत विणु पूजा सत विण संजम
जत बिन कहा जनेऊ।
नावहु धोवहु तिलक चड़ावहु
सचु बिन सोच न होई ॥६॥ (पृष्ठ १७७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'रामकली महला १ असटपदीआं' शीर्षक तले अंकित इन पावन पंक्तियों का वास्तविक स्वरूप उपयुर्क्त से थोड़ा भिन्न होने के कारण देना यहां उचित होगा :

पति विणु पूजा सत विणु संजमु
जत विणु काहे जनेऊ ॥
नावहु धोवहु तिलकु चढ़ावउ सच विणु सोच न होई ॥ (पन्ना ९०३)

सच्चे मार्गदर्शक तथा उपदेशक : 'महिमा प्रकाश' के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी उच्च कोटि के मार्गदर्शक थे। जब गुरु साहिब शेख बराहिम को मिलते हैं तो शेख उनको अपने (शेख के) मन का भ्रम दूर करने के लिए

कहता है कि हिंदू कहता है कि मेरा रब्ब सही है और मुसलमान अपने खुदा को सही कहते हैं, जबकि अकाल पुरख तो एक है, फिर मैं किसी स्तुति करूं भाव किसको सही कहूं? गुरु साहिब उसको बहुत स्पष्ट शब्दों में समझाते हुए उसके सभी भ्रम दूर करते हैं :

दूजे काहे सिमरीऐ जंमे ते मरि जाइ।
एको सिमरो नानका जल थल रहिआ समाइ ॥१॥
(पृष्ठ १४८)

इस प्रकार गुरु साहिब के सच्चे उपदेशक होने के बारे में ज्ञात होता है। शाह मुकीम वाली साखी में जब शाह मुकीम को गुरु साहिब के आने के बारे में ज्ञात होता है तो वह गुरु जी को मिलने के लिए व्याकुल हो जाता है। गुरु साहिब उसको उपदेश देते हैं। इस प्रकार जब गुरु साहिब की भेंट सिधों के साथ होती है तो सिध गुरु साहिब को कई प्रकार की करामातें दिखाते हैं, इसलिए कि गुरु साहिब प्रभावित हों, परंतु ऐसा बिलकुल नहीं होता, बल्कि सिध ही गुरु साहिब के व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं। गुरु साहिब सिधों की उचित अगुआई करते हुए उनके कई प्रश्नों के उत्तर देते हैं। अत: गुरु साहिब ने सिधों को प्रभु के मिलने का रास्ता बताकर उनकी योग्य अगुवाई की:

आदेस सबद कर सभ चले
आलोप भए ना दिखाए।
पवन मो पवन सुंन मो सुंनं
ऐसे कौतक लखिओ ना जाइ ॥ (पृष्ठ ३०४)

मुक्ति-दाता : श्री गुरु नानक देव जी का संसार-आगमन जगत-निसतारन के लिए हुआ है, इसलिए जन-साधारण सतिगुरु जी को मुक्ति-दाता के रूप में मानता है। 'महिमा प्रकाश' में वर्णित इंद्र के श्राप वाली साखी में इसका वर्णन मिलता है जिसमें गुरु जी श्राप आरोपित देवता का उद्धार अथवा कल्याण करते हैं। साखी में जब इंद्र गुरु साहिब के दर्शन करता है तब उसको मुक्ति मिल जाती है। 'महिमा प्रकाश' में इसके बारे में अंकित है:

इंद्र सराप असुर तब पाइआ।
गुर दरसन देख सुर तन भई काइआ।
जब सतगुर तिस दरसन दीना।
मुचत सराप अनंद रस भीना ॥२॥ (पृष्ठ २९४)

उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि 'महिमा प्रकाश' में गुरु नानक साहिब के जीवन तथा व्यक्तित्व के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है जिससे ज्ञात होता है कि गुरु साहिब ने अपनी यात्राओं के दौरान कई भूले-भटके लोगों को सही रास्ता दिखाया।

प्रसंग तथा टिप्पणियां :

१. (भाटिया) उत्तम सिंघ (डॉ.), (संपा.), ,महिमा प्रकाश', भाग पहला, भाषा विभाग, पंजाब (१९९९), पृष्ठ-१

२. Ganda Singh (Dr.), (Ed.), 'A Bibliography of the Punjab', Panjabi University, Patiala (1967), Page-208

३. (लांबा) गोबिंद सिंघ (संपा), 'महिमा प्रकाश' (भाग दूसरा), भाषा विभाग, पंजाब (१९७१), पृष्ठ-१८

४. गुरमेल सिंघ (संपा), 'गुरु अंगद देव स्रोत-पुस्तक', प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला (२००६), पृष्ठ-२०४

५. (भाटिया) उत्तम सिंघ (डॉ.), (संपा.), 'महिमा प्रकाश' (भाग पहला), भाषा विभाग, पंजाब (१९९९), पृष्ठ-११

६. हिस्टोरियन करम सिंघ, 'कत्तक कि विसाख', लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, तिथि रहित, पृष्ठ-२२०,२२

'दस गुर कथा' में गुरु नानक साहिब का व्यक्तित्व

*-बीबी रविंदर कौर**

गुरु नानक साहिब का अवतरण मानवता के कल्याण के लिए हुआ। गुरु जी ने बाणी के द्वारा जन-साधारण को ज्ञान देकर उसका सही मार्गदर्शन किया। आपके बाद लोगों में गुरु बाबे के जीवन-इतिहास को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई तथा सतिगुरु जी के कारनामों और रहमतों को पढ़ने-सुनने का चाव उत्पन्न हुआ। सीना-ब-सीना चलती कथा-कहानियों से मौखिक इतिहास का आरंभ होता है। इस मौखिक इतिहासकारी में गुरु नानक साहिब और उनके बाद आने वाले गुरु साहिबान के जीवन, इतिहास को भी जानने की उत्सुकता उत्पन्न हुई। इस उत्सुकता ने ढेर सारा साहित्य सृजने का आरंभ किया। इस आवश्यकता ने जन्म-साखियां, गुरू बिलास, पंथ प्रकाश आदि जैसे स्रोत हमारे सामने प्रस्तुत किये। ये स्रोत सिक्ख इतिहास के ऐसे तथ्य हैं जिनके बिना सिक्ख इतिहास से अवगत नहीं हुआ जा सकता। इसी साहित्य शृंखला में कवि कंकण कृत 'दस गुर कथा' भी शामिल है।

'दस गुर कथा' जैसे कि नाम से संकेत करती है कि यह दस गुरु साहिबान के जीवन की कथा है, इतिहास है। इस रचना के कुल २३४ बंद हैं। इसमें जहां दस गुरु साहिबान के जीवन के प्रमुख अंशों का वर्णन हुआ है वहां उस समय की परिस्थितियों के बारे में भी कुछ एक संकेत मिलते हैं।

साधारणत: इस रचना का रचनाकार कवि कंकण को माना जाता है। 'महान कोश' में कवि कंकण का उल्लेख हुआ है। भाई काहन सिंघ नाभा ने 'गुर महिमा रतनावली' में कंकण नाम के दो कवियों का जिक्र किया है। पहला कंकण वह है जिसकी रचना हिरदे राम के 'हनुमान नाटक' में मिलती है। दूसरा कंकण कवि 'दस गुर कथा' का लेखक है। पंजाबी साहित्य के महान विद्वान डॉ. मोहन सिंघ ने 'पंजाबी साहित दी इतिहास रेखा' में कवि कंकण के बारे में बताते हुए लिखा है कि "गुरु-घर के साथ संबंधित अंतिम कवि कंकण हुआ है, परंतु पता नहीं यह उसका नाम था या उपनाम। इसने 'दस गुर कथा' लिखी। यह प्रथम सिक्ख कवि है जिसने बैंत छंद का प्रयोग किया है। इसने कई पक्की तथा नयी बातें बताई हैं।"

डॉ. किरपाल सिंघ ने 'दस गुर कथा' को प्रथम बार संपादित किया और इसकी भूमिका में कवि कंकण को 'दस गुर कथा' का रचनाकार माना है। डॉ. सुरिंदर सिंघ (कोहली) ने 'पंजाबी साहित दा इतिहास' पुस्तक में भी 'दस गुर कथा' का लेखक कवि कंकण को माना है। वे लिखते हैं : "गुरु गोबिंद सिंघ का एक समकालीन कवि कंकण हुआ है जिसने गुरु साहिबान का जीवन कविता में लिखा। ऐतिहासिक तौर पर यह रचना बहुमूल्य है।"

परंतु डॉ. धरम सिंघ 'दस गुर कथा' का कर्त्ता कवि सौंधा को मानते हैं जिसने 'गुर उसतति' की रचना भी की है।

**क्राउन एन्कलेव, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर।*

'दस गुर कथा' के बारे में जानकारी देते हुए जिस पुस्तक को इस आलेख में आधार बनाया गया है वह डॉ. किरपाल सिंघ द्वारा संपादित की गई है और इसको खालसा समाचार, हाल बाजार, अमृतसर द्वारा १९६७ में प्रकाशित किया गया है। महां सिंघ ज्ञानी संपादक, खालसा समाचार की प्रारंभिक विनती भी इस पुस्तक के आरंभ में शामिल की गई है। उन्होंने अपनी विनती में लिखा है कि इस स्रोत का हस्तलिखित मसौदा लाहौर पब्लिक लायब्रेरी में 'ब-२२६' इंदराज तले सुरक्षित था। यह लिखित मसौदा सर अतर सिंघ भदौड़ वालों के पुस्तकालय में शामिल था। महां सिंघ ज्ञानी ने १९४५ ई के दिसंबर में इस स्रोत के हस्तलिखित मसौदे को लाहौर पब्लिक लायब्रेरी में देखा था। इसके पश्चात जब डॉ. किरपाल सिंघ १९५६ में लाहौर गये तो वहां से इस मसौदे की फोटो-कापी साथ ले आये जो इस समय खालसा कॉलेज, अमृतसर के सिक्ख इतिहास विभाग में सुरक्षित है।

'दस गुर कथा' के रचना-काल के बारे में भी विद्वान एकमत नहीं हैं। भाई काहन सिंघ नाभा इस रचना को १८वीं सदी के मध्य की रचना मानते हैं। डॉ. मोहन सिंघ दीवाना, डॉ. सुरिंदर सिंघ (कोहली) और डॉ. मोहन सिंघ ने इस रचना को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की समकालीन रचना माना है। डॉ. राय जसबीर सिंघ 'दस गुर कथा' को बाबा बंदा सिंघ बहादर के समय की बताते हैं। डॉ. धरम सिंघ इसको १८वीं सदी के अंतिम चरण की रचना मानते हैं। प्रो. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा ने अपने खोज पत्र में कवि कंकण को 'दस गुर कथा' का कर्त्ता और इसको १८वीं सदी के अंतिम चरण अथवा १९वीं सदी के आरंभ की रचना माना है।

'दस गुर कथा' में दस गुरु साहिबान के जीवन-इतिहास को संक्षिप्त रूप में कलमबद्ध किया गया है। प्रत्येक गुरु साहिब के बारे में संक्षिप्त जानकारी ही दी गई है। गुरु नानक साहिब सम्बंधी इस रचना में कुल छ: पद्य ही लिखे गए हैं। चाहे कि यह बहुत ही कम जानकारी है फिर भी यह दस गुरु साहिबान के बारे में जानकारी देने वाला एक महत्वपूर्ण स्रोत है, अत: इसको अनदेखा नहीं किया जा सकता। 'दस गुर कथा' में कवि ने गुरु नानक साहिब के जीवन के बारे में बताते हुए सर्वप्रथम गुरु नानक साहिब को परमात्मा द्वारा गुरु-रूप में स्थापित करके दुनिया में भेजने का उल्लेख किया है।

'दस गुर कथा' में श्री गुरु नानक देव जी की महिमा करते हुए बताया है कि श्री गुरु नानक देव जी को करता पुरख परमात्मा ने 'नानक' रूप देकर गुरु स्थापित किया :

स्री गुर थपए करतारा।
नानक रूप धरा संसारा।

वाहिगुरु जी और सतिगुरु नानक जी एक रूप हैं:

एकै रूप अनूप सरूपा।
देवी देव चहित जिह भूपा।

गुरु जी के आगमन का एक उद्‌देश्य था। उस समय संसार में अधर्म का व्यापक प्रचलन था। जनसाधारण धार्मिक पुजारी श्रेणी द्वारा पीसा जा रहा था। जगत का पार-उतारा अथवा कल्याण करने वाले तो लूट-खसूट करके वीराने का कारण बन गए थे।

'दस गुर कथा' का रचनाकार गुरु जी के आगमन को जगत-निस्तारन के मनोरथ से संबंधित बताता है:

सति सरूप जिन एके सुमारा।
नानक जनम जगत निसतारा।

सगल भवन का तारक जानो।
सत सरूप परमातम मानो।

इससे आगे कवि ने गुरु जी के जगत में स्थापित तेज-प्रताप को भी बयान करने का यत्न किया है और उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के बारे में चर्चा करते हुए स्पष्ट किया है कि वे महाशक्तिमान हैं। आप जी इतने सक्षम हैं कि दुनिया का प्रत्येक जीव उनसे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा करता है। यही कारण है कि कवि गुरु जी को परमात्मा के तुल्य बयान करता है :

सति सरूप परमातम मानो।

'दस गुर कथा' में कवि ने सतिगुरु नानक देव जी को प्रेम और अमृत की खान बताया है:

केवल प्रेम की अंम्रित खाना।
नानक रूप धरा जग आना ॥२॥

कवि कंकण गुरु नानक साहिब को प्रेम और अमृत की खान बताते हुए बयान करता है कि चाहे विभिन्न समयों में हिंदू मिथिहास के अनुसार परमात्मा ने २४ अवतार धारण किये हैं परंतु गुरु नानक साहिब ने जनसाधारण को परमात्मा के अनेकेश्वरवाद से मुक्त करके एकेश्वरवाद के साथ जोड़ा है, क्योंकि परमात्मा ही है जो आदि से अंत तक स्थिर है। परमात्मा के सत्य स्वरूप को बयान करता हुआ कवि स्पष्ट करता है कि गुरु जी का दुनिया पर आगमन मात्र जगत-उद्धार के लिए ही है।

इससे आगे कवि ने दोहरे का प्रयोग करते हुए गुरु जी की चर्चा को आगे चलाया है। कवि बताता है कि परमात्मा ही सबका प्रतिपालन करने वाला और सबके दिलों की जानने वाला है। इसी कारण से गुरु नानक साहिब ने अपनी पावन बाणी में केवल परमात्मा के गुणों का ही बयान किया है और केवल उसको ही उपमायोग्य वर्णन किया है।

'दस गुर कथा' के अनुसार गुरबाणी को गुरमुखी अक्षरों में रचकर गुरु नानक साहिब ने दुनिया के लोगों पर सबसे बड़ा उपकार यह किया कि गत समय में परमात्मा के बारे में कठिन भाषाओं में किये गए उसके वर्णन को साधारण लोगों की भाषा में वर्णन किया है। गुरु साहिब के ऐसे कार्य के साथ अब साधारण लोग भी परमात्मा के ज्ञान को प्राप्त करने के सक्षम हो सके हैं। अंत में सवैया और दोहरा लिखते हुए कवि स्पष्ट करता है कि गुरु जी ने बाणी की रचना करके शबद का ऐसा पुल बांध दिया है जिससे सारी मानवता इस भवजल रूपी संसार से पार उतरने के योग्य हो सकेगी:

सवैया :

एहु किया उपकार बडा गुर अच्छर बेदन के पलटाए।
गुरमुखि अखयर कीनै तबै जब कैसिओं को नर कशट न पाए।
ऐसी हुती जग न कदाचित मो से गरीब को कौन सिखाए।
खशट ही मास मेन होत परापत बुधि बिहीन को कौन बताए ॥५॥

दोहरा :

धंन धंन नानक गुरू कीना पर-उपकार।
अच्छर का पुल बांधिकै भ्रिशटि उतारी पार ॥६॥

उपर्युक्त विचार-चर्चा से चाहे हमको 'दस गुर कथा' में गुरु जी के जीवन के बारे में अधिक विचार की गयी नहीं मिलती परंतु फिर भी कवि ने सिक्ख इतिहास में प्रथम संस्थापक तथा दैवी ज्योति गुरु जी के साथ जुड़े प्रमुख सरोकारों को अपनी रचना में शामिल किया है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सिक्ख

(शेष पृष्ठ ८६ पर)

'गुर कीरत प्रकाश' में वर्णित श्री गुरु नानक देव जी का जीवन एवं शख्सियत

*-बीबी रणजीत कौर पंनवां**

'गुर कीरत प्रकाश' (लघु-चरित्र काव्य-संग्रह) काव्य-जगत की एक महत्वपूर्ण रचना है, जिसके रचनाकार कवि वीर सिंघ बल हैं। कवि वीर सिंघ बल के बारे में कोई ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध नहीं, क्योंकि न तो कवि ने अपने बारे में खुद कोई विस्तृत वर्णन दिया है और न ही कोई बाहरी तथ्य प्राप्त होते हैं। आप जी द्वारा रचित श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में 'सिंघ सागर' रचना में वर्णन मिलता है कि आप चंद्रवंशी राजा सांतुल की कुल में 'बल' गोत्र के चंद सिंघ के पोते और बखश सिंघ के पुत्र थे:

सोम सुवंस विखै निपु सांतलु तां कुल मै जगदेव पवारा।
ता कुल मै बलु गोत्र भइयो सभा सिंघ लइयो जिस मै अवतारा।
तास सपूत भइयो बखत सिंघ जु जास को धामु पुरी सठीयारा।
तां सुतु वीर म्रिगिंदु भइयो सिंघ सागर ग्रिंथ जिसै बिसतारा।११३।

'गुर कीरत प्रकाश' के अनुसार वो ब्यास नदी के किनारे से पश्चिम दिशा की तरफ तीन कोस की दूरी पर सठियाले नगर का रहने वाला था:

सरता तट पच्छम दिसा वीर सिंघ कवि ग्रिांमु।
विआस गंग ते कोस त्रै सठीआरा तहि नांमु।

कवि वीर सिंघ बल की जन्म-तारीख १७९०-९३ ई के मध्य अनुमानी जा सकती है, क्योंकि आपकी ज्ञात (पहली रचना) 'किस्सा हीर रांझा' (१८१२ ई) में लिखी गई :

ठारां कथी मै साल उणतरै मैं,
लिखी आण तिरानवें साल भाई।

इसलिए संभव है कि यदि वो २०-२५वर्ष की आयु में भी लिखने लगा तो यह जन्म-तारीख १७९०-९५ ई के लगभग बन जाएगी।[१] 'गुर कीरत प्रकाश' में से मिलते हवाले के अनुसार इसकी रचना पटियाला में १८९१ वि. (१८३४ ई) में हुई। उस समय राजा करम सिंघ का राज-काल था :

रचिआ ग्रिंथ पुरी पटआरे।
करम सिंघु जिंहि निरपु उदारे। . . .
ठारां सै ऐकानवैं साल बिक्रम ब्रिख रासु।
कीआ संपूरण ग्रिंथु कवि गुर कीरत परगासु।१०।४१।

कवि वीर सिंघ बल ने अपने कैरियर का आरंभ पंजाबी काव्य-रचनाओं से किया, लेकिन बाद में पटियाला दरबार का कवि बन जाने पर उस समय की साहित्य-सृजना की रुचि के अनुसार ब्रज भाषा में भी लिखना शुरू किया। आप जी की कुल छ: रचनाएं प्राप्त हैं--"हीर रांझा (१८१२ ई), बारां माह, गुर कीरत प्रकाश (१८३४ ई), सिंघ सागर (१८२७ ई), गोपी चंद वैराग शतक (१८३२ ई), सुधा सिंधु रामायण (१८५१)।" इनमें से 'गुर कीरत प्रकाश' तथा 'सिंघ सागर' रचनाएं पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला द्वारा संपादित करवाकर प्रकाशित की गई हैं।

'गुर कीरत प्रकाश' में कवि ने दस गुरु साहिबान का चरित्र-चित्रण संक्षिप्त चरित्र-शैली में लघु प्रबंधों (छोटे भागों) में काव्य-रूप में

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

बयान किया है। इन चरित्रों में सम्बंधित गुरु साहिब का समूह जीवन चित्रित किया नहीं मिलता।

कवि ने कुछ चुनिंदा मगर महत्वपूर्ण घटनाओं द्वारा गुरु साहिब के जीवन को पेश किया है। यह रचना दस गुरु साहिबान के लघु प्रबंधों का संकलन है। कवि ने इस रचना को दस चरित्र होने के कारण दस हुलासों[२] (भागों) में बांटा है।

प्रथम हुलास में श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित १४१४ पद हैं, जिनमें श्री गुरु नानक देव जी की शख्सियत का वर्णन किया गया है। 'गुर कीरत प्रकाश' की आरंभता में मंगलाचरण दिया गया है, फिर 'दस गुरु एक ज्योति' का सिद्धांत दृढ़ करवाया गया है और दस गुरु साहिबान की कीर्ति की गई है:

नानक अंगद हे अमरा गुर ग्रिंथ रचो तुमरे भरवासे।
राम गुरू गुर अरजन जू हरिगोबिंद हे हरि रा सुखरासे।
स्री हरिक्रिशन जू तेग बहादर गोबिंद सिंघु कटे दुखफासे।
वीर म्रिगोसु प्रणामु कहे गुर मंगल देहु अमंगल नासे।१।५।

श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश से पूर्व हिंदोस्तान की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक अवस्था बहुत दूभर हो चुकी थी। उस समय की जनता महाराजाओं के अत्याचारों से व्याकुल हो चुकी थी। उस समय की जलालत भरी जिंदगी का वर्णन 'गुर कीरत प्रकाश' में यूं वर्णित है:

सीस मूछ मुड लिंग कटाए।
निज कुल धरम सभै बिस राए।
गाइत्री संधिया तिआगी दोऊ।
जग्ग होमु जपु करे न कोऊ।५८।
देंहि बांग चढ ऊच मुनारे।
पसु पंखीहन करें अहारे।
पंथु मलेछु भइयो वहु देसा।
तुक भए नर नार नरेसा।१।५९।

कवि वीर सिंघ बल के अनुसार दुखों के भार से पीड़ित हो चुकी धरत लोकाई को तारने के लिए निरंकार ने महिता कालू जी के घर श्री गुरु नानक देव जी को भेजा। कवि वीर सिंघ ने गुरु जी के प्रकाश होने का कारण, गुरु जी के द्वारा पूर्व-जन्म में की गई अद्वितीय नाम-आराधना करना बताया है:

साल अनेक कीओ तपु जौ नभु आइ निरंजन एहु अलाई।
मैं परसिंन भइयो तुम पै बरु मागहु जो तुमरे मन भाई।१।७१।

श्री गुरु नानक देव जी ने राय भोय की तलवंडी में माता त्रिपता जी की कोख से पिता महिता कालू जी के घर जन्म लिया। आप जी का बचपन बहुत सरल एवं लाड-प्यार से बीता:

तिलवंडी राइ बुलार दी, गुर धारियो अवतार।
सुनो संत मन दै सभै, कथा कहों बिसतार।७६।
सालु दुसाल तिसाल भए गुर दावन लै सुख सों दुलराइयो।
चारक पांच छि सात समें भए बालक लै संग खेल सिधाइयो।१।७७।

चौदहवां साल चढ़ने पर (तिरह साल पूरे होने पर) गुरु साहिब जी का विवाह शहर बटाला में करने की तैयारी हुई। बारात सजी और माता सुलक्खणी जी को ब्याह कर अपने धाम ले आए:

बैठे आइ अवास निज, स्री गुर पलघु बिछाइ।
सुहाई साथ सुलक्खणी, ढिग गुर नानक राइ।१।७९।

कुछ वर्ष बीत जाने पर गुरु साहिब के घर दो पुत्रों (बाबा सिरीचंद तथा बाबा लखमीदास)

का जन्म हुआ। जग तारने के लिए गुरु जी प्रचार-यात्राओं पर चल पड़े। 'गुर कीरत प्रकाश' के पहले हुलास में कवि ने गुरु जी का कुरुक्षेत्र, गंगा, प्रयाग, त्रिवेणी, गया, बंगाल, उड़ीसा आदि जगहों पर जाना और वहां राजा सुधरसेन, शिवनाभ को ज्ञान देना बताया है। लंका, रामेश्वर, तिलगंजी, द्वारावती, हिंगुलाज, सुमेर आदि प्रसिद्ध धर्म-धामों पर जाना तथा उपदेश देना आदि वर्णन देने के साथ-साथ योगियों एवं सिधों द्वारा करामातें दिखाने पर गुरु जी द्वारा उनके साथ गोष्ठियां करने और उन्हें शिक्षा देने की जानकारी मिलती है। मदीना की यात्रा के समय कारूं बादशाह के साथ चर्चा करना तथा खालसा पंथ की भविष्य-बाणी करने के बारे में वर्णन दिया है:

तब कहियो स्री मुख वाक गुर दै सुनों कारू कांन।
जब धरो दसवां तेज जामा बीच एस जहांन।
मम नामु स्री गोबिंद सिंघु सभ भाख है संसार।
तब रचोंगा मैं खालसा औरंगराज मझार।१।२३७।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा अलाही बाणी उच्चारण करने तथा भाई मरदाना जी द्वारा रबाब बजाने के उल्लेख मिलते हैं:

इह भई सुहरत सहिर मैं उत गुरू जी इम बोलिओ।
मरदानिआं रबाबु लै कर गाउ सबद अमोलिओ।१।१७२।

प्रचार-यात्राएं करने के बाद महान समाज-सुधारक गुरु जी करतारपुर में रहकर जीवन व्यतीत करने लगे। करतारपुर में रोजाना संगत जुड़ती, कथा-कीर्तन होता, लंगर बंटता। वहीं गुरु जी संसारी लोगों की भांति खेतीबाड़ी आदि करने लग गए। 'गुर कीरत प्रकाश' के कर्त्ता ने यूं वृत्तांत दिया है:

वैजु पुसाक बदेस की सो तब धरी उतार।
पहिर पुसाक अनूप गुरू बैठा पुर करतार।१।२४४।

श्री गुरु नानक देव जी का मिलाप भाई लहिणा जी के साथ हुआ। कवि वीर सिंघ बल ने भाई लहिणा जी के पिता का नाम भाई फेरू चंद जी, माता का नाम माता दया कौर तथा पत्नी का नाम माता खीवी जी बताया है:

पिता चंदि फेरू माता दइआ कौरं।
महिलु मात खीवी जिसै राज तौरं।१।२६२।

भाई लहिणा जी ने जब अपना नाम 'लहिणा' श्री गुरु नानक देव जी को बताया तो गुरु साहिब ने कहा कि "आपने लेना है हमने देना है।" गुरु साहिब ने भाई लहिणा जी का नाम बदल कर 'अंगद' रखा:

जब स्री गुर ए सुणे सु बैठा।
तुम लहिणा हम तुम को दैणा।
ऐसे कहि गुर नानक राइ।
लहिणा लइयो बेग गल लाइ।२७६।
अंगद धरियो नामु तिहिं काला।
बुध बारधु तन तेजु बिसाला।
अंग लाइ अंगदु ठहिराइयो।
जनु दूजा नानकु गुरु आइओ।१।२७७।

'गुर कीरत प्रकाश' के कर्त्ता ने श्री गुरु नानक देव जी का मिलाप बाबा बुड्ढा जी तथा अजित्ते रंधावे के साथ होने का भी जिक्र किया है:

सुग्गे सुतु बूड़ा मम नांउ।
कत्थू दा नंगलु मो ग्राउ। . . .
बाला संधू सेवकु बांको।
अजित्ता गोतु रंधावा जा को।
इन आदक सिख अवर अपार।
सेवत स्री गुर चरन उदार।१।३४६।

कवि वीर सिंघ बल ने भाई लहिणा जी को गुरगद्दी मिलने से पहले की घटनाओं

(परीक्षा) का बाखूबी वृत्तांत दिया है, जैसे- लोटा कीचड़ में से निकालना, रात कितनी शेष है, घास की गांठ उठाकर लाना आदि साखियां, जिनमें भाई लहिणा जी को सफल होते दर्शाया गया है।

'गुर कीरत प्रकाश' के कर्त्ता के अनुसार गुरु जी ७० वर्ष ७ दिन गुरगद्दी पर विराजमान रहे और सं. १५९६ दसवीं वदी को ज्योति जोत समा गए:

सत्र बरस अर सात दिन पांच मास पुन औरु।
राज कीया नानक गुरू ढुलै छत्र सिर चौर।४१०।
पंद्रां सै अर छिआंनवै दसमी वदी मासकु आर।
तिस संबत नानक गुरू जोत मिली करतारु।१।४११।

कवि वीर सिंघ बल ने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन से सम्बंधित महत्वपूर्ण घटनाओं का बाखूबी वर्णन करते हुए गुरु जी के जीवन-चरित्र को उभारा है, मगर गुरु जी की पढ़ाई, बहन नानकी के साथ सुलतानपुर लोधी में गुजारा समय, मोदीखाने की नौकरी आदि वृत्तांत की कमी भी महसूस होती है। फिर भी हमें श्री गुरु नानक देव जी से पहले के समय से लेकर श्री गुरु अंगद देव जी तक के काल के बारे में जानकारी पहले हुलास में से मिलती है, जो ज्ञानवर्धक है।

पाद-टिप्पणियां :

१. डॉ. गुरमेल सिंघ (संपा.), गुरु अंगद देव स्रोत पुस्तक, प्रो. साहिब सिंघ, गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, २००६, पृष्ठ २७०

२. 'हुलास' संस्कृत के 'उलास' शब्द का तद्भव रूप है, जिसका भाव किसी नायक के चमत्कारी जीवन के कांड, पर्व या अध्याय से होता है। (महान कोश, नेशनल बुक शॉप, दिल्ली, पृष्ठ १८)

'दस गुर कथा' में गुरु नानक साहिब का व्यक्तित्व

(पृष्ठ ८२ का शेष)

संगत गुरु-आशय को समझने के सक्षम थी। भारतीय धर्म-दर्शन परंपरा में चाहे कि एकेश्वरवाद का सिद्धांत विद्यमान नहीं था लेकिन फिर भी गुरु साहिब ने अपनी पावन बाणी में उसको साधारण जन-जीवन की भाषा में प्रस्तुत किया और समूह जनसाधारण इस नई दर्शन-धारा को समझने के सक्षम हो सका। गुरु साहिब ने किसी भाषा पर किसी वर्ग विशेष के गलबे को पूर्णत: समाप्त कर दिया और परमात्मा के अस्तित्व को भाषा, स्थान, वर्ण और समय की सीमा से मुक्त कर दिया। यही इस स्रोत का गुरु नानक साहिब के जीवन के साथ जुड़ा प्रमुख संदेश है, जिसको कवि साधारण लोगों के ज्ञान हेतु दर्शाना चाहता है। 'दस गुर कथा' सिक्ख इतिहास का अहम स्रोत है। इस आलेख में इस स्रोत के बारे में जानकारीनुमा जिक्र करते हुए श्री गुरु नानक देव जी की कवि कंकण द्वारा की गई उपमा का संक्षिप्त वर्णन किया गया है और अधिक जानकारी के लिए गुरमति साहित्य के लेखकों एवं पाठकों को इस स्रोत-पुस्तक को विशाल स्तर पर अध्ययन कर लेना लाभकारी रहेगा।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि गुरु नानक साहिब निरंकार के हुक्म से इस दुनिया में आए और जगत का उद्धार परमात्मा ने गुरु जी के माध्यम से करवाया।

प्रो. करतार सिंघ द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-परिचय

*-स. ऊधम सिंघ**

इतिहास कौमों के लिए एक रोशनी की तरह होता है जिसके साथ किसी कौम का अतीत और भविष्य देखा जा सकता है। जिस कौम का कोई इतिहास नहीं वह कौम अपना नाम जीवी जागती कौमों में शामिल करने में सक्षम नहीं है। जिसका इतिहास और जिसकी पृष्ठभूमि शानदार होती है वह कौम सदा जीवित और चढ़दी कला वाली हुआ करती है।

सिक्ख कौम का इतिहास सबके सामने है। सिक्ख कौम के इतिहास को प्रकट करती हमें कई पुस्तकें मिल सकती हैं, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रकाशित सिक्ख इतिहास की पुस्तक बहुत ही प्रमाणिक स्रोत पुस्तक है। इस पुस्तक के लेखक प्रो. करतार सिंघ एम. ए. हैं, जिन्होंने बड़ी सूझ-बूझ तथा लियाकत से सिक्ख इतिहास लिखा है।

प्रो. करतार सिंघ द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास दो भागों में उपलब्ध है। पहले भाग में दस गुरु साहिबान की जीवनी को संवत् और तिथियां आदि देकर प्रकट किया गया है। लेखक ने इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी, भाई गुरदास जी की वारें और पुरातन ग्रंथों के हवाले देकर बड़ी खूबसूरती से इसे लिखा है। प्रो. करतार सिंघ ने इसमें फुटनोट देकर मुश्किलों को भी हल करने का प्रयास किया है।

दूसरे भाग में पहले चार सिक्ख व्यक्तियों--भाई मरदाना जी, बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई नंद लाल जी के जीवन के अलावा बाबा बंदा सिंघ बहादर, महाराजा रणजीत सिंघ, सिक्खों और अंग्रेजों के युद्ध, सिंघ सभा लहर, अकाली लहर के इतिहास को बड़ी खूबसूरती से लिखा है।

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के बारे में प्रो. करतार सिंघ ने २० खंडों में बांट कर बड़ी खूबसूरती से गुरु जी के जीवन की हरेक घटना को उजागर किया है। इस सिक्ख इतिहास में गुरु जी के जीवन के हरेक पहलू, घटनाओं, बाल-लीलाओं, विवाह, नौकरी, गृहस्थ जीवन, उदासियों और अंतिम समय में करतारपुर में रह कर की धर्म की कार, बांट कर खाना और परमात्मा का नाम जपने के उपदेश के द्वारा लोगों को सीधे रास्ते पर लाने तथा परमात्मा की बंदगी करने को बड़े सुचारू ढंग से पेश किया गया है।

प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु नानक देव जी के जन्म से पहले के हालात और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अस्तित्व में आने तक की प्रत्येक घटना तथा इतिहास को बड़ी बारीकी से पेश किया है।

प्रो. करतार सिंघ ने सबसे पहले श्री गुरु नानक देव जी की जगत-फेरी का हाल संक्षेप में बताया है। उन्होंने गुरु जी का जन्म वैसाख सुदी ३ (२० वैसाख) संवत् १५२६ मुताबिक १४ अप्रैल, १४६९ को पिता महिता कलिआण दास जी के घर माता त्रिपता जी की कोख से राय भोय की तलवंडी (अब श्री ननकाणा साहिब, पाकिस्तान) में हुआ बताया है। यहां पर यह बताना जरूरी है कि गुरु नानक पातशाह की

*V. P. O. Chawinda Devi, Distt. Amritsar.

जन्म-तारीख के बारे में सारे सिक्ख इतिहासकार एकमत नहीं हैं, कुछ गुरु जी का जन्म कार्तिक की पूर्णमासी वाले दिन मानते हैं। वर्तमान काल में संगत इसी दिन गुरु जी का जन्म-पर्व मनाती है।

प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु नानक देव जी की पूरी जीवन-यात्रा को २० कांडों में लिखा है। उन्होंने कांड १ और २ में श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले के हालात और उस समय उपजी पुकार को बड़े कुशल तरीके से लिखा है। आपके अनुसार श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले संसार के लोगों की हालत बहुत ही दर्दनाक थी। चारों ओर पाप और अधर्म का बोलबाला था। दुखी मानवता का दर्द बांटने वाला कोई नहीं था। आप भाई गुरदास जी की पहली वार का हवाला देकर बताते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले भारत में प्रचलित हुई पापगर्दी और उससे उपजी मानवी अधोगति को दूर करने के लिए जनता की पुकार पर गुरु जी को परमात्मा ने इस संसार में भेजा :

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ। *(वार १:२३)*

प्रो. करतार सिंघ ने इस पुकार को छह भागों में बांटा है कि कैसे यह पुकार दुखी इंसानों के हृदयों से दिन-रात उठ रही थी और कैसे यह अनेक कुर्लाहटों, मिन्नतों और दुहाइयों से संयुक्त आवाज थी। आपके अनुसार पहली पुकार सबके दिल हिला देने वाली थी, वो थी प्रजा की हकूमत के विरुद्ध पुकार। जनता जालिमों-जाबरों के पैरों तले कुचली जा रही थी। किसी में उन जालिमों के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस नहीं था। मन ही मन सभी इस जुल्म के विरुद्ध पुकार जरूर करते थे और दुहाई देते थे।

दूसरी पुकार आम जनता की उन धर्म के ठेकेदारों के विरुद्ध थी जो धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगते, लूटते और अंधेरे में फेंकते थे। पाखंड और झूठे कर्मकांडों में जनता को फंसाया जा रहा था।

तीसरी पुकार किरती गृहस्थियों की थी। जोगी, सन्यासी, वैरागी साधु आम जनता पर भार डाले हुए थे और मजदूरों-किसानों के साथ-साथ गृहस्थ धर्म अपनाने वालों के लिए मुसीबत बने हुए थे।

चौथी पुकार में सांप्रदायिकता तथा कट्टरता की आग के खिलाफ गुस्सा था, जो कि धार्मिक आगुओं द्वारा फैलाई जा रही थी। उससे भी आम जनता बहुत दुखी थी।

पांचवीं में तथाकथित नीची जाति के लोगों की थी जिनके विरुद्ध तथाकथित ऊंची जाति के लोग नफरत, अहंकार और धक्केशाही का व्यवहार करते थे।

छठी पुकार मेहनती-किरती किसानों की सरकारे-दरबारे अपना असर-रसूख रखने वाले लोगों के विरुद्ध थी जो उनकी कमाई का ज्यादा हिस्सा खुद हड़प कर जाते थे और किसानों को कुछ नहीं देते थे।

इस प्रकार प्रो. करतार सिंघ ने बताया कि उस समय किस प्रकार चारों ओर अंधेरगर्दी फैली हुई थी तथा कूड़ प्रधान हो गया था। इस तरह यह आम जनता और गरीबों की पुकार थी कि कोई ऐसा महाबली, महापुरख पैदा हो जो 'कूड़ अमावस' में 'सच चंद्रमा' को चढ़ा कर, अज्ञान का अंधेरा दूर करके संसार में सच-धर्म की ज्योति जगाए। समय की मांग और मानव जाति की पुकार तथा संसार की जरूरत से प्रेरित हो सृजनहार प्रभु ने श्री गुरु नानक देव जी को इस संसार में भेजा।

तीसरे कांड में प्रो. करतार सिंघ ने गुरु जी के जन्म और बाल-लीला के बारे में बताया है।

विद्वांनों द्वांरा गुरु जी के जन्म के बारे में पाये हुए भुलेखों को प्रो करतार सिंघ ने पूरी तरह से नकार कर पूरे विस्तार से सारी उलझनों को दूर कर दिया है। आपने गुरु जी के पिता महिता कलिआण दास और माता त्रिपता देवी जी के बारे में विस्तार सहित लिखा है। श्री गुरु नानक देव जी से बड़ी उनकी बहन बेबे नानकी थी, जो गुरु जी से बहुत प्यार करती थी। प्रो करतार सिंघ के अनुसार बेबे नानकी का जन्म सं: १५२१ को गांव चाहल, तहसील लाहौर में ननिहाल में हुआ। बेबे नानकी का विवाह सुलतानपुर लोधी के दीवान भाई जैराम के साथ हुआ।

प्रो करतार सिंघ के अनुसार गुरु साहिब बाल-आयु में आम बालकों जैसे नहीं थे। वे छोटी आयु में ही संतों जैसी और चिंतनशील वृत्ति के थे। जब गुरु जी अपने साथियों के साथ बैठते तो वे ध्यान में मग्न हो जाते। गुरु जी को संतों-फकीरों के साथ विशेष रूप से प्रेम था और जरूरतमंदों की हमेशा मदद करते थे।

कांड ४ में आपने श्री गुरु नानक देव जी की विद्या-प्राप्ति का जिक्र किया है। बताया है कि जो लोग कहते हैं कि गुरु जी अनपढ़ थे वे भूलते हैं। उनके अनुसार गुरु जी 'धुर दरगाह' से ज्ञान प्राप्त करके आए थे और वे दुनिया के लोगों को पढ़ाने आए थे। गुरु जी ने इसी अलाही ज्ञान को संसार के विभिन्न हिस्सों तक पहुंचाना था। गुरु जी ने मौलवियों, फकीरों, पंडितों, योगियों, सन्यासियों आदि से चर्चा की और उन्हें सीधे रास्ते पर चलाया। फिर भी गुरु जी के पिता महिता कालू जी ने गुरु जी को संवत् १५३२ में गोपाल पहले पांधे के पास पढ़ने भेजा। गुरु जी ने इस उस्ताद का मान रखा और उससे मुनीमी और देवनागरी सीखी। पांधे के पढ़ाए हर पाठ को गुरु जी बहुत जल्दी सीख जाते। एक दिन गुरु जी ने अपनी तख्ती पर एक 'अलाही गीत' लिखा। जब पांधे ने देखा तो वह गुरु जी को सिर झुका कर नमस्कार करने लगा। उसने गुरु जी को अपना उस्ताद मान लिया। इसके बाद गुरु जी और पांधे में कुछ वार्तालाप हुई जिसे प्रो करतार सिंघ ने बहुत बारीकी से लिखा है।

इसके बाद महिता कालू ने गुरु जी को शास्त्र पढ़ने संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान के पास भेजा। आचार्य जो कुछ भी गुरु जी को पढ़ाना चाहते थे गुरु जी वो सब पहले ही 'धुर दरगाह' से प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने अपने सच्चे ज्ञान से आचार्य (पंडित) को भी निहाल किया।

फिर गुरु जी को मौलवी के पास फारसी पढ़ने के लिए मदरस्से भेजा गया। जो कुछ भी मौलवी से सीखना था वह जल्दी ही सीख लिया। गुरु जी ने पांधे और पंडित की तरह मौलवी को भी अल्लाह का पैगाम देकर निहाल किया।

प्रो करतार सिंघ ने यहां एक अन्य इतिहासकार का हवाला देकर लिखा है कि गुरु जी ने सय्यद मुहम्मद हसन नामक एक दरवेश से इस्लामी साहित्य भी पढ़ा। 'पुरातन जन्म साखी' में लिखा है : "जब नानक बरसां नौवां का होआ तब फिर तोरकी (फारसी) पढ़ने पाइआ, वत घर बहि गिआ।"

प्रो करतार सिंघ ने अगले खंड में लिखा है कि जब गुरु जी पंडित, पांधे और मौलवी को परमात्मा का ज्ञान देकर घर में बैठ गए तो गुरु जी के पिता महिता कालू ने उन्हें गऊओं और भैंसों को चराने के लिए जंगल-बेलों में भेज दिया। गुरु जी को इन जानवरों से बहुत प्यार था। वे इन्हें लेकर जंगल-बेलों में चले जाते और इन्हें खुला चरने को छोड़ देते। आप परमात्मा की बंदगी में एकांत में बैठकर लीन हो जाते। इससे गुरु जी के पिता बहुत खुश होते

कि उनका बेटे का काम-काज में ध्यान जुड़ गया है, लेकिन वे क्या जानते थे कि गुरु जी का ध्यान किस तरफ लगा है।

एक दिन जब गुरु जी प्रभु-ध्यान में मग्न थे तो पशुओं ने एक खेत का बहुत नुकसान कर दिया। जब खेत वाले ने गुरु जी के साथ गिला किया तो गुरु जी ने उसे शांत हो जाने को कहा। जब वह फिर भी शांत न हुआ तो वह गुरु जी की शिकायत लेकर राय बुलार के पास गया। राय बुलार ने खेत के मालिक की शिकायत सुनी और एक आदमी भेजकर उसके खेत के नुकसान का पता लगाना चाहा। देखा कि सारा खेत लहलहा रहा था। राय बुलार को जब इस बात का पता चला तो वह हैरान रह गया। राय बुलार ने पहले ही सुना हुआ था कि गुरु जी कोई साधारण इंसान नहीं, वे प्रभु-परामात्मा के भेजे हुए 'अलाही पुरख' हैं। वह गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। गुरु जी ने उसे सीने से लगाया तथा अपना सिक्ख बनाया।

कांड ६ में प्रो. करतार सिंघ ने जनेऊ पहनने की रस्म को बड़े विस्तार के साथ लिखा है। पुराने रीति-रिवाज के अनुसार उनके पिता ने इस रस्म को करवाना चाहा और पंडित हरदिआल को अपने घर बुलाया। महिता कालू ने अपने सभी रिश्तेदारों और साक-संबंधियों को बुलाया। जब गुरु जी को बुलाया गया और पंडित द्वारा उनके गले में जनेऊ पहनाया जाने लगा तो गुरु जी ने पंडित की बांह पकड़कर उसे रोक दिया। प्रो. करतार सिंघ ने गुरु जी और पुरोहित के बीच हुए वार्तालाप को बड़े विस्तारपूर्वक लिखा है। उन्होंने लिखा है कि गुरु जी ने पुरोहित से कहा कि मुझे ऐसा जनेऊ पहनाओ जो मेरे साथ अगले जहान तक जाए। ऐसा मैं कोई जनेऊ नहीं पहनूंगा जो घस-घस कर टूट जाए और दोबारा पहनना पड़े। गुरु जी ने पुरोहित की हरेक दलील को ठुकरा कर फरमान किया:

दइआ कपाह सतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥
(पन्ना ४७१)

अगले कांड (७) में पिता महिता कालू ने गुरु जी की हालत देखकर अनुमान लगाया कि उन्हें कोई रोग लग गया है जिससे उनका किसी भी काम में मन नहीं लगता। फिर वैद्य बुलाकर गुरु जी को दिखाया गया परंतु वैद्य को भी किसी मर्ज का पता न लगा और गुरु जी ने कहा कि यह रोग कोई आम नहीं है जो तेरी समझ में आ जाए, यह परमात्मा के नाम का रोग है। इस तरह वैद्य की भी आंखें खुल गईं और गुरु जी का फरमान *"वैदु बुलाइआ वैदगी . . ."* सुनकर वो निहाल हुआ।

इस कांड में प्रो. करतार सिंघ ने गुरु जी के सच्चा सौदा करने वाली घटना को भी अंकित किया है। महिता कालू जी ने पूरे बीस रुपए गिन कर गुरु जी को दिए और गुरु जी अपने साथ भाई बाला को लेकर चूहड़काणे की ओर निकल गए। प्रो. करतार सिंघ ने भाई बाले को इस घटना में गुरु जी का साथी लिखा है। गुरु जी और भाई बाला जब दस-बारह कोस चल कर गए तो उन्हें कुछ साधुओं का झुंड दिखाई पड़ा। गुरु जी शुरू से ही साधुओं से बहुत प्यार करते थे। गुरु जी उनके पास बैठ गए। गुरु जी और साधुओं के मुखिया के बीच कुछ वार्तालाप हुआ। गुरु जी को ऐसा अनुभव हुआ कि साधुओं ने चार-पांच दिनों से कुछ नहीं खाया और वे चार-पांच दिनों से भूखे हैं। गुरु जी ने वे बीस रुपये जो उनके पिता जी ने उन्हें कुछ व्यापार करने को दिए थे, साधुओं

को देने चाहे लेकिन साधुओं के मुखी ने रुपए लेने से इंकार कर दिया और कहा कि अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो कुछ रसद-पानी लाकर हमें दे दो। गुरु जी ने उन्हीं बीस रुपयों से रसद लाकर उन्हें भोजन करवाया।

ये खरा सौदा कर गुरु जी वापस घर मुड़ आए। वे खुश थे कि उन्होंने भूखे साधुओं की भूख दूर कर 'खरा सौदा' किया है, लेकिन जब वे गांव के पास पहुंचे तो उन्हें सूझ गया कि घर में पिता जी उन पर बहुत क्रोधित होंगे। यही सोच कर उन्होंने भाई बाले को घर भेज कर सब कुछ सच बता देने को कहा। यह सुनकर पिता महिता कालू जी बहुत गुस्से में आए और गुरु नानक साहिब को बुरा-भला कहा तथा मारा भी। बहन नानकी ने आकर पिता जी के क्रोध को शांत किया। जब राय बुलार को इस बात का पता चला तो उन्हें बहुत दुख हुआ और उन्होंने महिता कालू को समझाया कि गुरु नानक साहिब जी कोई साधारण 'बालक' नहीं, वे अगंमी ज्योति हैं। प्रो. करतार सिंघ ने इस कांड में राय बुलार तथा महिता कालू जी के वार्तालाप को बहुत बढ़िया ढंग से लिखा है।

कांड ८ में प्रो. करतार सिंघ ने गुरु जी के व्यवहारिक और गृहस्थ जीवन के बारे में लिखा है। जब महिता कालू गुरु जी से नाराज रहने लगे तो राय बुलार के कहने पर गुरु जी को सुलतानपुर लोधी में उनके बहनोई भाई जैराम के पास भेज दिया गया। वहां पर गुरु जी को एक मोदीखाने में मोदी की नौकरी पर लगवा दिया। यह बात संवत् १५४१ की है। गुरु जी मोदीखाने में मोदी का काम पूरी ईमानदारी से करते और साथ-साथ परमात्मा की बंदगी में भी ध्यान लगाते। यहां एक जन्म-साखी का हवाला देकर बताया है कि एक बार गुरु जी के पास एक साधु आटा खरीदने आया। गुरु जी तराजू से आटा तौलने लगे। जब बारह धारनें तौलाने के बाद गुरु जी तेरह पर आए तो गुरु जी परमात्मा के नाम को संबोधित कर सब कुछ 'तेरा ही है', 'तेरा' (तेरह) पर अटक गए और धारनें अधिक तौल दीं। साधु हैरान हो गया। इस बात की खबर मोदीखाने के नवाब को लगी कि गुरु नानक देव जी तो सारा अनाज गरीबों और साधुओं में लुटाए जा रहे हैं। मोदीखाने के सारे सामान की तफ्तीश हुई। हिसाब बराबर निकला और गुरु जी की रकम नवाब की तरफ अधिक निकली। इस तरह सभी चुगलखोरों और निंदकों के सिर झुक गए।

प्रो. करतार सिंघ के अनुसार गुरु जी का विवाह संवत् १५४४ में बटाला निवासी बाबा मूलचंद की सपुत्री बीबी सुलक्खणी जी के साथ हुआ। गुरु जी के घर दो सपुत्रों--बाबा सिरीचंद (संवत् १५५१) और बाबा लखमीदास (संवत् १५५३) ने जन्म लिया।

कांड ९ में प्रो. साहिब ने गुरु जी के वेईं नदी में स्नान करने के बाद मिले परमात्मा के उपदेश के बारे में बताया है। गुरु जी अपने नित्य के नेम की तरह एक दिन वेईं नदी पर स्नान करने गए। गुरु जी ने ऐसी डुबकी लगाई कि काफी देर बाहर नहीं निकले। सभी लोग हैरान रह गए कि गुरु जी कहां गए और क्यों गए। गुरु जी की अपनी बाणी, भाई गुरदास जी की रचना और परातन जन्म-साखी से पता चलता है कि गुरु जी वेईं नदी में बैठ परमात्मा की बंदगी में लीन थे और उनकी आत्मा सचखंड में करतार (प्रभु) की हजूरी में पहुंची थी। वहां गुरु जी को हुक्म हुआ कि "एक जगह बैठे रहना काफी नहीं। सारा संसार झूठ, वैर-विरोध, ईर्ष्या, क्रोध, अहंकार की आग में जल रहा है। उसको अमृत-नाम का छींटा देकर शांत करो और संसारी जीवों को एकता,

प्यार, परोपकार वाली सुच्ची रहिणी की जाच सिखाओ।" गुरु जी ने यह हुक्म पाकर नीचे पृथ्वी की ओर देखा तो सारी धरती जल-बल रही थी। भाई गुरदास जी के अनुसार:

बाबा देखै धिआनु धरि जलती सभि प्रिथवी दिसि आई।

बाझु गुरू गुबारु है, है है करदी सुणी लुकाई।

सचखंड की यात्रा के तीन दिन बाद गुरु जी वापस आए। गुरु जी ने गरीबों के लिए सभी द्वार खोल दिए और कहा कि जिसे जो कुछ चाहिए ले जाए। जब भी कोई गुरु जी से बात करे वे यही कहें--*"ना कोई हिंदू न मुसलमान ॥"* इससे वहां का नवाब और काजी काफी नाराज हुए। गुरु जी ने उनसे भी विचार-चर्चा कर निरुत्तर कर दिया। फिर कुछ दिनों बाद गुरु जी ने सारे परिवार को पास बिठाकर कहा कि मुझे परमात्मा का हुक्म हुआ है कि 'सतिनामु' के उपदेश को सारी दुनिया तक पहुंचाओ। यहां तक कि गुरु जी परिवार को समझाकर परमात्मा के उपदेश को सारी दुनिया तक पहुंचाने के लिए भाई मरदाना को साथ लेकर घर से चल पड़े।

कांड १० और ११ में प्रो. करतार सिंघ ने गुरु जी का पंजाब के दौरे का जिक्र किया है। सबसे पहले गुरु जी चलते-चलते सैदपुर जिला गुज्जरांवाला में भाई लालो के घर ठहरे जो धर्म की किरत करता और अपने परिवार का पालन करता था। उस समय छुआ-छूत का बहुत जोर था। वहां पर एक मलक भागो नाम का अहिलकार था जो बहुत ही अहंकारी और जाबर था। उसने एक ब्रहमभोज किया और उसमें सभी साधु-संतों तथा फकीरों को बुलाया। उसने गुरु जी को भी बुलाया। गुरु जी मलक भागो के घर नहीं गए। मलक भागो ने इसमें अपना अपमान समझा और अपने पिआदे भेजकर गुरु जी को बुलाया। गुरु जी ने मलक भागो के पकवान में से लहू और भाई लालो की सूखी रोटी से दूध निकाल कर समझाया कि "तुम गरीबों के खून-पसीने की कमाई को जबरदस्ती निगल जाते हो, उनको पूरा हक नहीं देते। जो दोनों हाथों से मेहनत करके ईमानदारी से खाता है वह भोजन पवित्र है। मैं गरीबों और ईमानदारों का मित्र हूं।" यह सुनकर मलक भागो गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा कि मेरे पिछले अवगुण बख्श दो, मुझे माफ कर दो। गुरु जी ने उसे सिक्खी-दान बख्शिश किया और भाई लालो को संगत का मुखी और सिक्खी का प्रचारक नियुक्त किया।

इस तरह गुरु जी चलते-चलते और जनता का भला करते मुलतान के पास तुलंबे गांव पहुंचे। वहां शेख सज्जन नाम का एक आदमी रहता था। वह दिखने में बड़ा नेक तथा ईमानदार लगता था परंतु था जालिम ठग। उसने राहगीरों के लिए एक सराय बनाई हुई थी। वो लोगों को वहां आदर-मान से रखता और रात को उनको मार कर लूट लेता। जब गुरु जी वहां ठहरे तो वह बड़ा खुश हुआ और उनको रात में लूटने का मन बनाया। गुरु जी सब जानते थे। गुरु जी रात में प्रभु की भक्ति में कीर्तन करने लगे। सज्जन सच्ची अलाही बाणी के झकझोर देने वाले बचन सुन कर हैरान रह गया। गुरु जी ने उसे समझाया कि तू अपने नाम की तरह व्यवहार कर। सज्जन का पत्थर-दिल कोमल हो गया। वह भी गुरु जी का सिक्ख बन गया। गुरु जी ने उसे वहां की संगत का मुखी नियुक्त किया। अब असल में उसकी 'धर्मशाल' बन गई और वह सच्चा सिक्ख बन गया।

प्रो. करतार सिंघ ने गुरु जी की उदासियों को कांड १२ से १९ तक पूरे विस्तार के साथ लिखा है। उन्होंने सबसे पहले कांड १२ और १३

में गुरु साहिब की पूरब की उदासी को अंकित किया है। पूरब की ओर गुरु जी सबसे पहले कुरुक्षेत्र की ओर गए। आप संवत् १५५४ में पूरब की यात्रा पर निकले, जिसमें प्रसिद्ध हिंदू-तीर्थों का भ्रमण किया। उस समय गुरु जी ने भगवा चोला, कमरबंद में सफेद पटका और सिर के ऊपर नोकदार टोपी, गले में हड्डियों की माला, दोनों पैरों में अलग-अलग ढंग के जूते और माथे पर केसर का टीका था, बल्कि लोग खुद ही उनकी ओर चले आते थे। लोगों का भ्रम तोड़ने के लिए गुरु जी ने जानबूझ कर आग जलाकर मांस पकाना शुरू किया जो हिंदू रीति के अनुसार शुभ नहीं था। जल्दी ही इस बात की खबर पूरे इलाके में फैल गई। बड़े-बड़े विद्वान पंडित आए और गुरु जी को ऊल-जुलूल कहने लगे। गुरु जी ने उन्हें बड़े शांत तरीके से समझाया कि ग्रहण के समय मांस क्या कोई भी वस्तु पकाना गुनाह नहीं है। लोगों को समझाते हुए गुरु जी ने कहा कि कोई भी ऐसी चीज न खाई-पी जाए जिससे तन में पीड़ा, रोग और खराबी पैदा हो और मन में बुरे ख्याल पैदा हों वरन् मांस और साग में कोई मूल अंतर नहीं है :

जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
(पन्ना १६)

गुरु जी ने अपने वचनों से सबकी तसल्ली की। पंडित और दूसरे विद्वानों के सब भ्रम दूर हुए और वे गुरु जी के सिक्ख बने।

कुरुक्षेत्र से पानीपत होते हुए गुरु जी हरिद्वार पहुंचे। वहां गुरु जी ने सूर्य को पानी देते हुए लोगों को समझाया कि आपका पानी पित्तरों तक नहीं पहुंचेगा। आप फजूल के वहमों-भ्रमों को छोड़ परमात्मा के नाम-सुमिरन में अपना मन लगाओ। फिर गुरु जी गोरखमता (नानकमता) पहुंचे। वहां सिधों से विचार-चर्चा हुई और सिध हार गए। फिर कांशी से होते हुए गुरु जी पटना पहुंचे। वहां सालिस राय चौधरी को अपना सिक्ख बनाया। वहां से आसाम पहुंचे। वहां नूरशाह जैसी सुंदरियों को सीधा रास्ता दिखाया। फिर ढाका पहुंचे। वहां से होते हुए जगन्नाथपुरी पहुंचे, जहां मंदिर के पुजारियों को देवताओं की आरती की जगह परमात्मा की आरती करने को कहा, जिसने तीनों लोकों की सृजना की है। फिर संवत् १५६५ को वापस गुरु जी पंजाब सुलतानपुर पहुंचे। यह पहली उदासी थी जो लगभग १२ साल की थी।

प्रो करतार सिंघ के अनुसार गुरु जी ने दूसरी उदासी पर जाने से पहले एक नगर बसाने का मन बनाया कि जहां वे उपदेश देकर लोगों को किरत करने, नाम जपने और बांट कर खाने का जीवन-नमूना पेश कर सकें। आपने रावी के दाएं किनारे पर एक नगर बसाने का फैसला किया और उसके मालिक करोड़िये को जमीन देने के लिए कहा। गुरु जी ने उसे उपदेश देकर कृतार्थ किया तो वह गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और इसके लिए तैयार हो गया। उसने गुरु जी को जमीन दी और गुरु जी ने एक नगर बसाया जिसका नाम 'करतारपुर' रखा।

कुछ समय करतारपुर ठहर कर गुरु जी संवत् १५६७ को दक्षिण की ओर दूसरी उदासी पर निकल पड़े। इस उदासी का समय संवत् १५६७ से १५७२ है। आप करतारपुर से चलकर सरसा पहुंचे। वहां पर आपने लोगों को पथ-भ्रष्ट करने वाले बहावलहक को परमात्मा की बंदगी करने की ओर लगाया। फिर वहां से गुरु जी अजमेर जा पहुंचे। वहां पर उन्होंने योगियों, नाथों के साथ आध्यात्मिक विचार-चर्चा की और सभी को एक परमात्मा की संतान होने का उपदेश दिया। वहां से चलकर गुरु जी

राजपूताने जा पहुंचे। वहां से इंदौर होते हुए दक्षिण की ओर निकल गए। रास्ते में जंगलों-पहाड़ों पर एक कौडा भील नामक व्यक्ति रहता था। वो मानस-खाना था। गुरु जी ने उसे भी सीधे रास्ते पर लाने का मन बनाया। कौडे ने गुरु जी को पकड़कर खाना चाहा, परंतु गुरु जी के नूरानी दीदार को देखते ही वह गुरु जी के चरणों में गिर गया। उसने गुरु जी के सामने किरत करने, नाम जपने और बांट कर खाने का प्रण किया।

वहां से होते हुए गुरु जी संगल द्वीप (श्री लंका) पहुंचे। वहां का राजा शिवनाभ गुरु जी का पहले से ही उपासक था। वहां पर कुछ साधु अपने आप को 'गुरु' कहकर उसे अपना चेला बनाना चाहते थे। कोई भी साधु उसकी परख पर खरा न उतरा। राजा ने गुरु जी की भी परीक्षा लेनी चाही, परंतु वह गुरु जी का उत्तर पाकर गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। उसका हृदय शांत हुआ। गुरु जी काफी समय वहां रहे और सिक्खी-प्रचार का काम राजा शिवनाभ को सौंप वहां से चल पड़े। गुरु जी वापस आते समय रास्ते में लोगों को कृतार्थ करते हुए संवत् १५७२ को वापस करतारपुर पहुंचे और दूसरी उदासी संपूर्ण की।

दूसरी उदासी से वापस आकर कुछ समय गुरु जी करतारपुर टिके। फिर तीसरी उदासी पर संवत् १५७३ में चल पड़े। अभी गुरु जी का जगत-जलंदे को शीतल करने का कार्य संपूर्ण नहीं हुआ था। आपकी यह उदासी उत्तर की ओर थी। आप चलते-चलते जम्मू के रास्ते कश्मीर में जा दाखिल हुए। वहां से मटन जा पहुंचे और मारतंड चश्मे पर जा टिके। वहां पंडित ब्रह्मदास को मिले जो बहुत विद्वान पुरुष था। अभी तक कोई भी उसके आगे टिक नहीं पाया था। उसने गुरु जी से विचार-चर्चा शुरू की और निरुत्तर हो गया। गुरु जी ने उसका अहंकार तोड़ कर उसे अपना सिक्ख बनाया और उसे धर्म प्रचार काम सौंपा। फिर वहां से चलते हुए तथा रास्ते में 'सतिनाम' का उपदेश देते हुए गुरु जी मान सरोवर जा पहुंचे। वहां सिधों को मिले। सिधों ने गुरु जी से सवाल किया कि आपको यहां कौन-सी शक्ति लेकर आई है जो हमारे अलावा किसी और के पास नहीं है? गुरु जी ने कहा कि मैं सर्वशक्तिमान और सब शक्तियों के मूल परमात्मा का ध्यान करने वाला हूं। उसी की कृपा और शक्ति के साथ यहां पहुंचा हूं। गुरु जी ने सिधों के सारे सवालों के जवाब बहुत ही दलील दे साथ दिए। सिधों ने गुरु जी को रिद्धियों-सिद्धियों से भी भ्रमाना चाहा और बहुत-से लालच दिए, परंतु गुरु जी ने सभी को हराते हुए उनको गुरसिक्खी-मार्ग का राही बनाया। मान सरोवर से गुरु जी वापस तिब्बत, लद्दाख, श्रीनगर, सिआल होते हुए संवत् १५७५ में करतारपुर पहुंचे।

प्रो. करतार सिंघ ने चौथी उदासी को दो कांडों (१७ और १८) में लिखा है। आप जी ने चौथी उदासी का समय संवत् १५७५ से १५७९ लिखा है। गुरु जी की चौथी उदासी पश्चिम दिशा में मुस्लिम धर्म-स्थानों की ओर थी। गुरु जी ने भी हाजियों जैसे वस्त्र पहने, कच्छ (बगल) में एक किताब और दूसरी में मुसल्ला, एक हाथ में आसा और दूसरे में लोटा पकड़ा था। भाई मरदाना जी भी आपके साथ थे। करतारपुर से पश्चिम की ओर जाते समय आप मक्का शरीफ जा पहुंचे और वहां पर आपने लोगों का भ्रम तोड़ना, अज्ञानता दूर करना और सच-धर्म का प्रचार करना शुरू कर दिया। आपने अपने नित्य ढंग की तरह ऐसा काम किया जिससे लोग आपकी तरफ आ जुड़े। आप काअबे की तरफ पांव फैला कर सो

गए। सभी जानते थे कि काअबे की तरफ कोई भी मुसलमान पांव पसार कर नहीं बैठता। गुरु जी को ऐसे सोया हुआ देख कर हाजी लोग चिल्लाने लगे। एक जीवन नाम के हाजी ने कहा कि "तू खुदा के घर की ओर पांव फैला कर क्यों बैठा है?" गुरु जी ने शांति से कहा कि "जिधर खुदा का घर नहीं है उस तरफ मेरे पांव कर दो।" उसने गुरु जी को लातों से पकड़ कर दूसरी तरफ कर दिया। उसने देखा कि अब काअबा भी उधर ही था। इस तरह उसने बारी-बारी चारों दिशाओं में गुरु जी के पैरों को घुमाया, तो काअबा भी चारों ओर घूमता गया। उन सबकी आंखें खुल गईं। उन सबको खुदा का वासा चारों दिशाओं में दिखने लगा।

अगली सुबह और भी बहुत-से हाजी इकट्ठे हुए और उन्होंने पूछा कि "तू हिंदू है कि मुसलमान?" गुरु जी ने कहा "ना मैं हिंदू न मुसलमान।" फिर उन्होंने पूछा कि "हिंदू बड़ा या मुसलमान?" गुरु जी ने कहा कि "न हिंदू बड़ा है न मुसलमान। अच्छा और बड़ा वही है जिसके कर्म ऊंचे हैं।" इस तरह हाजियों और गुरु जी के बीच बहुत सवाल-जवाब हुए जिसमें गुरु जी ने प्रत्येक प्रकार से उनकी संतुष्टि की और कहा कि खुदा सभी दिशाओं में रहता है और शुभ कर्म करने वालों को ही मरने के बाद परमात्मा की दरगाह में निवास मिलता है। गुरु जी ने अपनी यादगार के तौर पर खड़ांव बख्शिश में दी और फिर वहां से तुर्की होते हुए बगदाद पहुंचे। वहां पर गुरु जी ने सच-धर्म का प्रचार किया और झूठी नमाज पढ़ने वालों को परमात्मा के सच्चे नाम को जपने को कहा।

बगदाद से वापस आते समय आप ईरान, कंधार, अफगानिस्तान का भ्रमण करते और परमात्मा का संदेश देते अटक के पार हसन-अब्दाल पहुंचे। वहां पर वली कंधारी का अहंकार दूर किया। इसी दौरान हिंदोस्तान पर बाबर ने हमला कर दिया। उस समय गुरु जी सैदपुर में टिके हुए थे। बाबर की फौज ने सैदपुर में भी लूटपाट मचाई। गुरु जी और भाई मरदाना जी को भी पकड़ लिया गया और जेल में चक्की पीसने को दी गई। गुरु जी चक्की पीसते मीठी और सुरीली आवाज में परमात्मा की बाणी का जाप करते। जब बाबर को इस बारे में पता चला तो वह आया और गुरु जी का नूरानी दीदार पाकर हतप्रभ रह गया। बाबर ने मचाई लूटपाट के लिए माफी मांगी और लोगों पर दोबारा अत्याचार करने से तौबा की। कुछ समय गुरु जी सैदपुर (ऐमनाबाद) में रुक कर संवत् १५७९ को वापस करतारपुर पहुंचे।

प्रो. करतार सिंघ ने इसी साल (संवत १५७९ में) आप जी के माता-पिता के अकाल चलाणा करने के बारे में भी लिखा है।

चारों उदासियों को पूरा कर गुरु जी करतारपुर में टिक गए और अपना उदासियों वाला भेस उतार दिया और संसारी कपड़े पहन लिए। जो उपदेश दुनिया को देकर आए उसे कमाकर दिखाने लगे। मेहनत से धर्म की किरत करनी, रोजी कमानी, बांट कर छकना और प्रेम सहित परमात्मा का नाम जपना। लगभग आठ साल करतारपुर में रहकर गुरु जी संवत् १५८६ को शिवरात्रि के मेले पर अचल बटाला पहुंचे। गुरु जी भीड़ से जरा अलग होकर बैठ गए और बाणी का कीर्तन करने लगे। लोग उनके पास जुड़ने लगे। योगियों को गुस्सा आया तो वे लगे गुरु जी से बहस करने लगे। योगियों ने हर तरह से गुरु जी को भ्रमाने की कोशिश की परंतु सब निष्फल गई। फिर गुरु जी के

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

प्रिं सतिबीर सिंघ द्वारा लिखित पुस्तक 'बलिओ चिराग' के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी की जीवनी

-स जगजीत सिंघ*

सिक्खों के इतिहास के बारे में जानना हो तो सबसे पहले सिक्ख धर्म की स्थापना के बारे में जानना जरूरी होगा और इससे भी जरूरी है सिक्ख धर्म की स्थापना करने वाले तथा इसका लालन-पालन करने वालों के बारे में जानना। ऐसी ही जानकारियों से भरपूर हमारे पास कई विद्वानों द्वारा लिखित 'सिक्ख इतिहास' नामक पुस्तकें मौजूद हैं और इन्हीं में एक है प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ द्वारा लिखित 'सिक्ख इतिहास'। यूं तो प्रिं सतिबीर सिंघ द्वारा लिखित सिक्ख धर्म की स्थापना करने वाले श्री गुरु नानक देव जी से लेकर सिक्ख धर्म का लालन-पालन करने वाले अन्य नौ गुरु साहिबान के जीवन पर आधारित पुस्तक 'सिक्ख इतिहास' भी उपलब्ध है, मगर यदि हमने दसों गुरु साहिबान के जीवन के बारे में विस्तारपूर्वक जानना है तो इसके लिए प्रिं सतिबीर सिंघ ने ऐसी दस पुस्तकें अलग-अलग शीर्षक तले लिखी हैं। ये सभी पंजाबी भाषा व गुरमुखी लिपि में हैं। इनमें से पहली पुस्तक 'बलिओ चिराग' में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्तांत है। इन सभी पुस्तकों का प्रकाशन 'न्यू बुक कंपनी, माई हीरां गेट, जलंधर' द्वारा किया है तथा ये बाजार में मुख्य धार्मिक पुस्तक विक्रेताओं से आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। इस पुस्तक में लेखक ने गुरु जी के जीवन-विवरण को १३ खंडों में विभाजित किया है। 'गुरमति ज्ञान' के इस अंक के अनुसार आइए जानें कि प्रिं सतिबीर सिंघ 'बलिओ चिराग' नामक पुस्तक में श्री गुरु नानक देव जी के बारे में क्या बताते हैं :

प्रिं सतिबीर सिंघ ने पुस्तक के प्रथम खंड में श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पूर्व के हालात पर संक्षिप्तता व बड़ी गहराई से प्रकाश डाला है। उन्होंने तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों के बारे में खुलकर चर्चा की है कि कैसे २४ जुलाई, १२०४ को हिंदोस्तान गुलाम हो गया। उन्होंने मोहम्मद गौरी, पृथ्वी चंद जैसे राजपूत, कुतुबद्दीन ऐबक, अल्तमश, अलाउद्दीन खिलजी, फिरोज तुगलक, बहलोल खान, निजाम खान, सिकंदर लोधी आदि के बारे में बताते हुए लिखा है कि इन्होंने हिंदोस्तानी प्रजा को गुलाम बनाने एवं प्रताड़ित करने हेतु क्या-क्या किया। उसके बाद पंजाब की दशा का विशेष उल्लेख करते हुए प्रिं सतिबीर सिंघ ने तत्कालीन, राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक दशा का चित्रण किया है।

पुस्तक के द्वितीय खंड में दी गई जानकारी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी का जन्म गांव राय भोय की तलवंडी में वैसाख सुदी ३, संवत् १५२६ को हुआ। उस समय सन् १४६९ की १५ अप्रैल थी व दिन बुधवार था। (आज हम भले ही गुरु जी का जन्म-पर्व कार्तिक की पूर्णमासी के दिन मनाते हैं मगर इतिहासकारों में ये दोनों मत प्रचलित हैं।) गुरु जी के पिता श्री महिता कालू जी तथा माता श्री त्रिपता जी थीं। उस समय हिंदोस्तान में शासन बहलोल

*परूफ रीडर, गुरमति ज्ञान।

लोधी का था। राय भोय की तलवंडी का नाम गुरु नानक पातशाह के आगमन के बाद 'नानकाइणा' तथा बाद में 'ननकाणा साहिब' (वर्तमान पाकिस्तान में) प्रचलित हो गया। गुरु जी के बचपन के बारे में प्रिं. सतिबीर सिंघ लिखते हैं कि गुरु नानक साहिब जी आम बालकों की भांति नहीं थे। आप बहुत कम रोते तथा हर हाल में संतुष्ट रहने वाले थे। जन्म के नौ दिन बाद पंडित हरदिआल ने उनका नाम 'नानक' रखा। आयु बढ़ने के साथ-साथ बचपन की सारी घटनाओं का बयौरा देते हुए वे लिखते हैं कि सात वर्ष की आयु में पांधे (आचार्य) के पास पढ़ने के लिए भेजा। पांधे से बाबा नानक ने प्रश्न किया, "पांधे! तू कुछ पढ़ा है जो मेरे को पढ़ाता है?" गुरु साहिब के वचन थे, "उस विद्या का क्या पढ़ा यदि माया का जंजाल ही न टूटा? जिसके लिखने से विकार फैलते हैं, उसके लिखने का क्या लाभ?' यहीं पर गुरु जी ने 'पटी' नामक बाणी उच्चारण की, जिसमें गुरमुखी वर्णमाला के पैंतीस अक्षरों के क्रम में बाणी उच्चारण कर जीवन-उपदेश दिया गया। उसके बाद मुल्ला के पास पढ़ने भेजा। मुल्ला भी गुरु जी की विद्वता देख दंग रह गया। संस्कृत के अध्यापक पंडित बृजनाथ ने भी कहा कि गुरु नानक जी सारे आत्मिक ज्ञान का स्रोत हैं।

नौ वर्ष की आयु में जनेऊ पहनाने की रस्म आई तो गुरु जी ने डटकर इसका विरोध किया तथा बाणी उच्चारण कर इस अंधविश्वास से जग को मुक्त होने का उपदेश दिया। प्रिं. सतिबीर सिंघ ने उसके बाद ग्यारह वर्ष की आयु में भैंसें चराना, सर्प की छाया आदि घटनाओं का जिक्र कर गुरु जी की प्रतिभा को निखारने का यत्न किया है। 'बलिओ चिराग' में भाई मरदाना जी के मिलन के साथ गुरबाणी-कीर्तन के शुभारंभ का वर्णन भी मिलता है। भाई मरदाना जी के बारे में उन्होंने लिखा है कि उनका जन्म १४५९ ई में तलवंडी में हुआ। उनका देहांत १९ नवंबर, १५३४ ई के अनुसार १३ मार्गशीर्ष १५९१ वि. को हुआ।

प्रिं. सतिबीर सिंघ के अनुसार गुरु जी १८ वर्ष की आयु में चूहड़काणे की मंडी में नमक का व्यापार करने जाया करते थे। एक बार वहां 'अबदालों' (सूफी लोग) को भोजन छका आए। इस पर महिता कालू जी नाराज भी हुए।

लेखक ने गुरु जी का विवाह १५ वर्ष की आयु में बटाला गांव के भाई मूला जी की बड़ी सपुत्री बीबी सुलक्खणी जी के साथ वैसाखी वाले दिन तथा १५९६ ई में बाबा सिरीचंद का जन्म तथा दो वर्ष बाद बाबा लखमीदास का जन्म हुआ बताया है।

लेखक के अनुसार गुरु जी ने अपने जीवन के प्रारंभिक ३२ वर्ष तलवंडी में गुजारे तथा बाद के साढ़े चार वर्ष सुलतानपुर में व्यतीत किए। पुस्तक के तृतीय खंड में सुलतानपुर में किए निवास का सारा वर्णन है। सुलतानपुर में गुरु जी की बहन बेबे नानकी की ससुराल थी। गुरु जी के भाईआ भाई जैराम सुलतानपुर के नवाब दौलत खान लोधी के दीवान थे। भाई जैराम ने गुरु जी को दौलत खान के मोदीखाने (स्टोर) में मोदी (स्टोर-कीपर) की नौकरी पर लगवा दिया। वहां पर गुरु जी ने जनता के धन व अनाज की हो रही लूट-खसूट को बंद किया तथा दौलत खान के मोदीखाने को भी कोई घाटा न पड़ने दिया। यहीं पर गुरु जी ने भाई मरदाना जी को भेज अपने परिवार को भी बुला लिया। वेईं नदी में रोज स्नान करने जाना गुरु

जी का नित्य-कर्म था। यहीं पर वेईं नदी की घटना का जिक्र किया गया है।

प्रिं सतिबीर सिंघ के अनुसार गुरु नानक साहिब जी १५०५ ई में सुलतानपुर से हरिद्वार की तरफ रवाना हुए। लेखक ने यहां पर यह नहीं बताया कि गुरु जी की पहली उदासी यहां से शुरू होती है, बल्कि 'बाबा गइआ तीरथीं' शीर्षक तले खंड ४ में प्रचार-यात्राओं के शुभारंभ का विवरण मिलता है। लेखक का कहना है कि गुरु जी को अपनी प्रचार-यात्राओं में दो प्रमुख विरोधी शक्तियों के साथ टकराना पड़ा। एक थी, मुसलमानों की उच्च दर्जे की मजहबी कठोरता तथा दूसरी थी, हिंदुओं की पाताल को छूती वहमप्रस्ती। गुरु जी ने दोनों पर विजय प्राप्त की। उनके अनुसार गुरु जी प्रश्न नहीं करते थे बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देकर निहाल किया करते थे। सुलतानपुर से चलकर गुरु जी सर्वप्रथम गोइंदवाल, तरनतारन, रामतीर्थ होते हुए लाहौर पहुंचे। लाहौर में चीख-पुकार, जानवरों का कटना, शोर-शराबा, लहू, जहर बिखरता देखकर गुरु जी ने फरमाया: *"लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥"* लाहौर के शाहूकार दुनी चंद को उपदेश सेकर उसके द्वारा की जाती श्राद्ध की रस्म को आगे से बंद करवा नाम-दान-स्नान बख्शा। लाहौर में ही सिकंदर लोधी का पीर सय्यद अहमद तक्की गुरु जी को मिलने आया। सिकंदर लोधी के जुल्मों में उसका हाथ था। भक्त कबीर जी को जंजीर से बांध कर गंगा दरिया में इसी ने फिंकवाया था। गुरु जी ने उस कट्टर-ख्याली तक्की को प्रभु-उपदेश देकर सही रास्ता दिखाया।

लेखक के अनुसार गुरु जी बीस दिन लाहौर में रहकर सैदपुर (ऐमनाबाद) की तरफ चल पड़े। वहां के बढ़ई भाई लालो के घर गुरु जी ने ठहराव किया। एक तरफ था भाई लालो, जो अति गरीबी में मेहनत से कमाकर खाता था तथा दूसरी तरफ था मलक भागो, जो प्रजा से जबरी धन-उगाही कर रंग-बिरंगे पकवानों का भंडारा कर अपने नाम का डंका बजवाता था। गुरु जी ने मलक भागो के भोज में न जाकर भाई लालो की रूखी-सूखी रोटी को प्राथमिकता दी। मलक भागो के क्रोधित होने पर उसे मेहनत से कमाई करने का उपदेश देकर भला आदमी बनाया। लेखक आगे लिखता है कि गुरु जी को हरिद्वार पहुंचने में छः महीने लगे।

जब गुरु जी हरिद्वार पहुंचे तो वैसाखी का मेला लगा हुआ था। सभी लोग सूर्य को (पूरब दिशा में) पानी चढ़ा रहे थे। गुरु जी पश्चिम की तरफ पानी उलच-उलच कर फेंकने लगे। लोगों ने गुरु जी का विरोध किया। गुरु जी ने सभी को कहा कि "यूं ही पानी उलीचना सब भ्रम है, पाखंड है, इससे कुछ भी हासिल होने वाला नहीं।" लोगों ने कहा कि "हम सूरज को पानी दे रहे हैं।" गुरु जी ने कहा कि "मैं अपने गांव खेतों में पानी पहुंचा रहा हूं।" लोगों ने कहा कि "खेतों में पानी जाएगा कैसे?" गुरु जी ने फरमाया कि "ठीक है कि (इतनी नजदीक) खेतों में ऐसा करने से पानी नहीं जा सकता मगर सूरज तो बहुत दूर है, वहां पर पानी के पहुंचने की उम्मीद लगाना बिलकुल व्यर्थ है।" सब लोगों का भ्रम दूर कर गुरु जी आगे चल दिये।

प्रिं सतिबीर सिंघ पुस्तक के खंड ५ "हरिद्वार से जगन्नाथपुरी" में लिखते हैं कि गुरु जी 'गोरखमते' में जा पहुंचे। वहां पर सिधों के साथ गुरु जी की लम्बी-चौड़ी वार्ता हुई। गोरखपंथियों का गढ़ 'गोरखमता' श्री गुरु नानक देव जी के चरण-स्पर्श तथा शुभ वचनों द्वारा

'नानकमता' (आजकल उत्तराखंड राज्य में) बन गया। 'नानकमता' तथा 'रीठा साहिब' की साखी का लेखक ने पूरा विवरण दिया है।

सिधों का भ्रम तोड़ तथा 'गोरखमता' को 'नानकमता' बना बरेली, लखनऊ, कानपुर होते हुए प्रयाग (वर्तमान इलाहाबाद) पहुंचने पर लेखक ने गुरु जी की प्रतिभा का उल्लेख करते हुए लिखा है कि प्रयाग में गंगा, यमुना तथा सरस्वती तीन नदियों का संगम-स्थल है। तीसरी नदी सरस्वती के सूख जाने पर धर्म बेच खाने वालों ने भ्रम फैला दिया कि जो कोई उनके बताए ढंग से स्नान करेगा उसे गुप्त सरस्वती के दर्शन होंगे। इसमें 'जान देने' तक का भी भ्रम था। गुरु जी ने लोगों को इस भ्रम से मुक्त कर पाखंडियों के चंगुल से आजाद करवाया तथा पाखंड करने वालों को सत्य-मार्ग के दर्शन करवाए।

आगे लेखक ने गुरु जी के अयोध्या, बनारस, गोरखपुर, गया, पटना, राजग्रीह, मालदा, मखसूदाबाद (मुरशदाबाद), ढाका, धनपुर आदि में बसे पथ-भ्रष्टियों को सत्य-पथ दिखला तथा 'वाहिगुरु' नाम का प्रचार-प्रसार करते हुए आगे बढ़ते रहे। प्रिं सतिबीर सिंघ ने गुरु जी की कलयुग के साथ भेंट का वर्णन भी किया है जो कि बंगाल में हुई। इसके बाद गुरु जी भक्त जैदेव जी के जन्म-स्थान बीरभूम के नगर केंदूली गए। गुहाटी में झंडा बाडी से मुलाकात कर आसाम में शंकर देव नाम के एक भक्त से मिले। २ जनवरी, १५१० ई कलकत्ता में जाकर दुर्गा-पूजन के नाम पर हो रहे अंधविश्वासों के प्रति लोगों को सुचेत किया तथा परमात्मा की पूजा करने का राह दिखाया। इसके बाद जगन्नाथपुरी जाकर लोगों द्वारा मंदिरों में की जाती 'आरती' की गलत परंपरा को बंद करवाकर फरमाया कि "ये दीये परमात्मा की आरती क्या उतारेंगे, परमात्मा की आरती तो सारा ब्रह्मांड ही उतार रहा है *: गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥*"

पुस्तक के छठे खंड 'जगन्नाथपुरी से द्वारिका' के अनुसार गुरु जी के रामेश्वर जाने के बारे में वर्णन है। वहां पर लोगों ने गले में पत्थर के जूते पहने हुए थे और छाती तथा शेष शरीर पर पैरों के चिन्ह बनाए हुए थे। गुरु जी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि "इनसे परमात्मा खुश नहीं होता। ये सब बाहरी दिखावे हैं।" दक्षिण भारत के तमिलनाडु तथा केरल में लोगों का पार-उतारा करते हुए गुरु जी कोचीन होते हुए आंध्रा प्रदेश के कजली वन में जा पहुंचे। वहां के कौडा को सुधारा तथा किरत करके जीवन-यापन करने का उपदेश दिया। वहां से हैदराबाद तथा फिर बिदर गए, जहां आजकल "नानक झीरा" गुरुद्वारा सुशोभित है। वहां के पीर सय्यद याकूक तथा जलालुद्दीन ने पानी को अपने कब्जे में कर रखा था। गुरु जी ने लोगों की भलाई हेतु उनसे पानी मुक्त करवाया तथा उन्हें अहंकार छोड़ भलाई व परोपकार करने तथा सत्य-नाम का उपदेश दिया। उज्जैन में गुरु जी की मुलाकात भरथरी नामक योगी से हुई। गुरु जी ने उससे कहा कि "योगी वो है जिसके पास क्षमा, शील, संतोष, निर्भय तथा सहज है। योगी के पास माया तथा अहंकार का अंश-मात्र भी नहीं होना चाहिए।" फिर उज्जैन से सौराष्ट्र की तरफ गए।

खंड सात में दी गई यात्राओं के वर्णन के अनुसार आगरा में माता जस्सी से मिलकर गुरु जी ने उसे निहाल किया। माता जस्सी का भ्रम दूर करते हुए उसे उपदेश दिया कि इंसान के नजदीक यदि कोई है तो वो है भगवान। इसे

बाहर या किसी विशेष स्थान पर जाकर ढूंढना व्यर्थ है। १५१५ ई में मथुरा गए। तत्पश्चात दिल्ली गए। दिल्ली का वो पावन स्थान 'मजनू टिल्ला' के नाम से विख्यात है जहां गुरु जी आकर ठहरे थे। वहां के राजा इब्राहिम लोधी का हाथी मर जाने पर उसका गुरु जी के साथ दोबारा जिंदा करने को तर्क-वितर्क हुआ जिस पर गुरु जी ने कहा कि मारना-जिंदा करना सब परमात्मा की रजा है।

लेखक के अनुसार अब गुरु जी पानीपत, करनाल होते हुए कुरुक्षेत्र पहुंचे। कुरुक्षेत्र पहुंचने वाले दिन सूर्य-ग्रहण लगा हुआ था। उस समय की प्रचलित मर्यादा के अनुसार सूर्य-ग्रहण के समय लोग चूल्हा नहीं जलाते थे। गुरु जी ने लोगों का यह अंधविश्वास तोड़ने के लिए चूल्हा जला दिया। लोगों द्वारा गुरु जी का भारी विरोध किया गया। गुरु जी ने सबको समझाया कि "सूर्य-ग्रहण, चंद्र-ग्रहण ये सब कुदरत के नियमानुसार हो रहा है। यदि सूर्य की धूप हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकती तो सूर्य की छाया से कैसा डर? जो प्राकृतिक रूप से हो वो अशुभ नहीं होता।" गुरु जी के वचनों से सभी की शंकाओं का निवारण हो गया तथा गुरु जी के व्यक्तित्व की चर्चा चारों तरफ होने लगी। इसके बाद गुरु जी पिहोवा गए। वहां के पांडों ने एक बात फैला रखी थी कि तलाब में एक स्त्री का कांटा (झुमका) गिर गया। जब वो स्नान करके बाहर निकली तो कांटा रथ के पहिए जितना बना हुआ था। महाराज ने मुस्कराकर कहा कि "ऐ भले लोगो! यदि पुण्य इतनी जल्दी फलता है तो पाप तो कई गुना बढ़कर आगे से मिलता होगा।" इस प्रकार के वचन सुनकर सारे पांडे निरुत्तर हो गए तथा लोगों को इस अंधविश्वास से मुक्ति मिल गई। फिर गुरु जी सरसा होते हुए तलवंडी चले गए।

'बलिओ चिराग' पुस्तक के भाग ८ से दूसरी उदासी शुरू होने का जिक्र है। इसमें गुरु जी रवालसर, बद्रीनाथ, सप्तश्रिंग होते हुए सुमेर पर पहुंचे। यहीं पर सिधों के साथ गुरु जी की लम्बी विचार-चर्चा का होना लिखा है। उसके बाद नेपाल, तिब्बत, मटन, जम्मू होते हुए सिआलकोट पहुंचे। वहां का हमजा गौंस नाम का एक पीर यह कह कर चालीसा काट रहा था कि "यह शहर झूठे लोगों का है और चालीस दिन के व्रत के बाद जब वो अपनी गुफा से बाहर निकलेगा तो सारे शहर को करामाती शक्ति से तबाह कर देगा।" गुरु जी उसकी गुफा के दरवाजे के सामने जाकर बैठ गए और गुरबाणी-कीर्तन करने लगे। कीर्तन सुनकर वो बाहर निकला तो गुरु जी ने उसे समझाया कि "किसी एक झूठे की सजा सबको नहीं दी जा सकती।" फिर गुरु जी ने भाई मरदाना जी को दो पैसे देकर बाजार में भेजा कि एक पैसे का 'सच' तथा एक पैसे का 'झूठ' लेकर आओ।" मूला नामक खत्री ने दो पैसे लेकर एक कागज पर 'जीना झूठ' तथा दूसरे पर 'मरना सच' लिख दिया। गुरु जी ने दोनों कागज पीर हमजा गौंस को दिखाते हुए कहा कि "प्रभु की शक्ति को कभी भी ललकारना नहीं चाहिए। प्रभु खुद ही जानता है कि किसे, कैसे तथा कब सजा देनी है। फकीरों का काम बंदगी करना है, हिसाब-किताब करना नहीं।" इसी दरमियान लेखक लिखता है कि १५१८ ई में गुरु जी के सुलतानपुर पहुंचने पर दूसरे दिन गुरु जी की बहन बेबे नानकी परलोक गमन कर गए। गुरु जी ने खुद उनका दाह संस्कार किया। इसके बाद १५ मार्च, १५१९ को तलवंडी में माता त्रिपता जी के परलोक-गमन करने का समाचार

है तथा इसके तीसरे दिन बाद पिता महिता कालू जी के शरीर त्यागने का वर्णन है। माता-पिता का दाह संस्कार भी गुरु जी ने खुद किया।

खंड नौ के अनुसार फिर गुरु जी पाकपटन, तुलंभा होते हुए नगाहा नामक स्थान पर गए। वहां पर हाजियों में से एक शाह शरफ नामक फकीर था। उसने जीनव-तत्व को समझने के लिए गुरु जी से कई सवाल किए। प्रिं. सतिबीर सिंघ ने इन सवालों तथा गुरु जी के उत्तरों का बाखूबी वर्णन किया है। मक्का, काअबा तथा बगदाद की साखियों का लेखक ने चित्रण करते हुए गुरु जी की शख्सियत को उजागर करते हुए लिखा है कि गुरु जी ने कैसे वहां के हाजियों के भ्रम तोड़े। बगदाद से गुरु जी ने हसन-अब्दाल की तरफ रुख किया। वहां पर वली कंधारी जैसे अहंकारी का गरूर तोड़ गुरु जी ने उसे प्रभु के भय में रहने की जाच सिखाई।

प्रिं. सतिबीर सिंघ ने पुस्तक के खंड दस में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा करतारपुर बसाने तथा वहां निवास के बारे में लिखा है कि गुरु जी ने करतारपुर नगर बसाया तथा १५२२ ई में वहां पर पक्की रिहायश कर ली। यहां पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि प्रिं. सतिबीर सिंघ ने पुस्तक में न तो प्रथम उदासी शुरू होने का कहीं जिक्र किया है और न ही तीसरी, चौथी उदासी के समय-स्थान के बारे में बताया है। केवल खंड आठ में 'दूजी उदासी' लिखा मिलता है। सबको पता है कि करतारपुर का जीवन चारों उदासियों के बाद का है, इसलिए करतारपुर में पक्का निवास करने के समाचार चारों उदासियां पूर्ण करने के बाद में मिलते हैं। करतारपुर में रहकर गुरु जी ने वो सब व्यवहारिक रूप में कर दिखाया जो उन्होंने दुनिया भर को उपदेश देकर कहा था। गुरु जी ५३ वर्ष की आयु में जब बुजुर्ग अवस्था की ओर साधारण मनुष्य-मात्र बढ़ने लगता है प्रतिदिन अमृत वेला दीवान सजाते, नाम जपते तथा फिर दिन में खेतों आदि में किरत करते। किरत-कमाई में से रात-दिन संगत के लिए लंगर आदि की व्यवस्था थी। गुरु जी का करतारपुर का जीवन हमें आज भी दिशा दिखाता है कि इंसान को उम्र भर किरत करके ही निर्वाह करना चाहिए, खाली बैठना, आलसी तथा कामचोर बनाता है। यहीं पर गुरु जी का मिलन भाई लहिणा जी से होना दर्शाया गया है।

खंड ११ में वर्णित सूचना के अधार पर गुरु जी करतारपुर से अचल बटाला नामक स्थान पर शिवरात्रि के दिन पहुंचे। सारी संगत गुरु जी की ओर आकर्षित होने लगी। इससे वहां के योगियों में ईर्ष्या होने लगी कि हमारी तो दुकानदारी ही चौपट हो जाएगी। जिस जनता को हम पिछले लम्बे समय से गुमराह कर निजी स्वार्थ हेतु इस्तेमाल कर रहे थे वो जनता अब हमारे झांसे में नहीं आएगी। योगियों के मुखिया भंगरनाथ ने गुरु जी से कहा कि "आपने एक संत होते हुए गृहस्थ धर्म अपनाकर सही नहीं किया।" तब गुरु जी ने उन्हें कई तरह के प्रमाण देकर समझाया कि 'गृहस्थ धर्म' सर्वोत्तम धर्म है। यह इंसान को 'काम' से होने वाले कई प्रकार के विकारों से बचाता है। गुरु जी के भंगरनाथ के साथ काफी तीखे संवाद हुए जिनका प्रिं. सतिबीर सिंघ ने भाई गुरदास जी की वारों का हवाला देते हुए विस्तृत रूप से वर्णन किया है। लेखक का आगे कहना है कि करतारपुर वापिस जाने पर गुरु जी ने 'सिध गोसटि' नामक बाणी का उच्चारण किया, जिसमें ७३ पउड़ियां है और इनमें लगभग १५३

प्रश्न सिधों द्वारा उठाए गए हैं।

'बलिओ चिराग' पुस्तक के अनुसार गुरु जी मुलतान की फेरी पर भी गए। मुलतान का प्राचीन नाम प्रहलादपुरी था। मुलतान के पीर बड़े करामाती तथा अभिमानी थे। गुरु जी ने उनका अभिमान तोड़ उन्हें बताया कि "करामात दिखाना प्रभु-हुक्मों का उल्लंघन है। धर्मी पुरुष को सदा नम्र तथा सहनशील रहना चाहिए।"

पुस्तक के अंत में दिए खंड १२ में गुरु जी के ज्योति जोत समाने तथा श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी देने का वर्णन है। प्रिं. सतिबीर सिंघ ने बताया है कि गुरु जी संवत् १५९६, आश्विन वदी १० को सचखंड पिआना कर गए। समय अमृत वेला था तथा १५३९ ई. की ५ सितंबर तारीख थी। गुरु नानक साहिब जी के सचखंड पिआना कर जाने के बाद उनके द्वारा मनोनीत भाई लहिणा जी श्री गुरु अंगद देव जी बन कर द्वितीय गुरु-रूप में गुरगद्दी पर स्थापित हुए। खंड १३ में गुरु जी की शख्सियत का एक बार फिर वर्णन किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं प्रिं. सतिबीर सिंघ द्वारा लिखित पुस्तक सिक्ख इतिहास की पुस्तक 'बलिओ चिराग' में उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-चरित्र, शख्सियत, विचारधारा तथा जीवन की सारी घटनाओं का प्राचीन ऐतिहासिक स्रोतों को आधार बनाकर वर्णन किया है। श्री गुरु नानक देव जी के सम्पूर्ण जीवन का अध्ययन करने हेतु यह पुस्तक काफी लाभप्रद है तथा सरल भाषा-शैली में होने के कारण हर बात आसानी से समझ में आ जाती है। मैं तो कहूंगा कि यह पुस्तक सबके लिए पढ़ने योग्य तथा अति उपयोगी है। इस आधुनिक स्रोत का अध्ययन करने के लिए हम सबको प्रयत्न करना चाहिए।

प्रो. करतार सिंघ द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास

(पृष्ठ ९५ का शेष)

वचन सुनकर योगी निरुत्तर हो गए।

अचल बटाला के मेले पर सिधों-योगियों को झुका गुरु जी मुलतान गए। वहां पर पीरों-फकीरों से विचार-चर्चा हुई और गुरु जी उनको भी परमात्मा की बंदगी का उपदेश देकर संवत् १५८८ को वापस करतारपुर आए।

प्रो. करतार सिंघ ने संवत् १५८९ में भाई लहिणा जी का गुरु जी से मेल होना लिखा है। भाई लहिणा जी सिक्खी की दात प्राप्त कर, पूर्ण श्रद्धा और प्रेम के साथ आज्ञाकारी बन सेवा करने लगे। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को प्रत्येक परीक्षा में कामयाब होने के बाद संवत् १५९६ को उनका नाम 'अंगद देव' रखकर गुरगद्दी का वारिस बनाया।

गुरिआई सौंपने के बाद श्री गुरु नानक देव जी ने, श्री गुरु अंगद देव जी को खडूर साहिब जाने का आदेश दिया। श्री गुरु नानक देव जी आश्विन वदी १० (७ आश्विन), संवत् १५९६ तद्नुसार ७ सितंबर, १५३९ को करतारपुर में ज्योति-जोत समा गए।

निष्कर्षत: प्रो. करतार सिंघ द्वारा लिखित 'सिक्ख इतिहास' पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें श्री गुरु नानक देव जी की जीवनी को पूरे २० कांडों में लिखा गया है। प्रत्येक कांड में विस्तृत एवं ठोस जानकारी दी गई है और तिथियां आदि बताकर लिखा है। सच्ची बात तो यह है कि प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु नानक देव जी के बारे में इतनी भरपूर जानकारी देकर 'गागर में सागर' भर दिया है।

प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास में प्रस्तुत गुरु नानक साहिब का जीवन-वर्णन

-डॉ. कैप्टन मनमीत कौर*

आज भले ही गुरु नानक साहिब का जन्म कार्तिक की पूर्णमासी को हुआ माना जाता है मगर प्रि. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ ने सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक साहिब का जन्म वैसाख सुदी, संवत् १५२६ तद्नुसार १५ अप्रैल, १४६९ को राय भोय की तलवंडी के स्थान पर हुआ लिखा है, जिसको अब ननकाणा साहिब कहा जाता है तथा जो वर्तमान में पाकिस्तान में है। यह नगर लाहौर से दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग ४० मील की दूरी पर है। गुरु नानक साहिब के पिता का नाम श्री महिता कालू था व आप एक जागीरदार राय बुलार के पटवारी अथवा लेखाकार थे।

सात वर्ष की आयु में गुरु नानक साहिब को स्कूल में ब्राह्मण अध्यापक के पास पढ़ने के लिए भेजा गया जिनसे आपने देवनागरी लिपी पढ़ने व लिखने के अलावा गणित तथा बहीखाते के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। गुरु जी ने शीघ्र ही वह सब कुछ सीख लिया जो कि अध्यापक को आता था। फारसी तथा इस्लामी साहित्य की शिक्षा मौलवी से ली।

नौ वर्ष की उम्र में जब गुरु नानक साहिब को जनेऊ पहनाने की रस्म पूरी करने के लिये कहा गया तो उन्होंने यह कहकर जनेऊ को पहनने से इंकार कर दिया कि वे केवल ऐसा जनेऊ पहनने के लिये तैयार हैं जो टूटता व जलता नहीं :

ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
(पन्ना ४७१)

गुरु नानक साहिब के हर समय परमात्मा में लीन रहने की अवस्था के कारण पिता जी को शक हुआ कि उनके पुत्र को अवश्य ही कोई शारीरिक रोग है, इसलिये आपके इलाज के लिये वैद्य को बुलाया गया। इस गलतफ़हमी पर गुरु नानक साहिब हंस दिये तथा कहा :

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥
(पन्ना १२७९)

गुरु जी के पिता जी उन्हें किसी धंधे या व्यापार में लगाना चाहते थे परन्तु उनके समस्त प्रयत्न गुरु जी को उनकी आध्यात्मिक स्थिति से नहीं निकाल सके। पिता जी ने आपको कुछ पैसे देकर निकटवर्ती नगर चूहड़काणे में व्यापार करने के लिये भेजा। रास्ते में आपने भले पुरुषों की टोली को भोजन कराने के लिये समस्त धनराशि को खर्च कर दिया तथा इसे ही 'सच्चा (लाभदायक) सौदा' समझ कर घर वापस आ गये। उस स्थान पर अब 'गुरुद्वारा सच्चा सौदा' मौजूद है।

प्रिं. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार ऐसी बहुत-सी घटनायें व वृत्तांत हैं जो गुरु नानक साहिब की आलौकिकता को दर्शाने के लिये रचे गए प्रतीत होते हैं।

जब गुरु नानक साहिब बड़े हुये तो उन्होंने पास के जंगलों आदि में रहने वाले संतों व महात्माओं की संगत की। वे भारतीय ज्ञान में व अपने समकालीन भक्तों की रचनाओं में विशेष रूप से रुचि रखते थे। गुरु जी उन भक्तों की शिक्षाओं से अपनी शिक्षाओं की तुलना करते थे तथा उनके भ्रम ग्रस्त विचारों की कड़ी

*उपाचार्या, दर्शनशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेंद्र नगर, लखनऊ।

आलोचना भी करते थे।

पिता जी ने गुरु नानक साहिब के व्यवहार से असंतुष्ट होकर अपनी पुत्री बेबे नानकी व दामाद भाई जैराम के पास सुलतानपुर जाने की उन्हें आज्ञा दे दी। भाई जैराम ने स्थानीय नवाब दौलत खान के पास आपके पढ़े-लिखे होने की सिफारिश के आधार पर योग्य नौकरी दिलवा दी। गुरु जी को मोदीखाने में लगा दिया जहां कर के रूप में एकत्रित अनाज लोगों को बेचा जाता था। गुरु जी ने मोदीखाने के अपने कर्त्तव्यों को बड़ी योग्यता से निभाया तथा उस गलत विचार को, जो उनके माता-पिता ने उनके पहले के बर्ताव से बना लिया था, को दूर कर दिया।

प्रिं तेजा सिंघ व डॉ गंडा सिंघ के अनुसार १८ वर्ष की उम्र में आपका विवाह बटाला निवासी भाई मूलचंद जी की पुत्री बीबी सुलक्खणी जी के साथ हुआ तथा आपके घर दो पुत्र बाबा सिरीचंद व बाबा लखमीदास पैदा हुए। अपने कारोबार को बहुत ही अच्छे ढंग से चलाने के साथ-साथ गुरु जी का अकाल पुरख के प्रति प्यार हमेशा तीव्र ही रहा। जब भी ग्राहकों के लिये अनाज तौल कर देते समय आप 'तेरह' की गिनती पर पहुंचते (जिस शब्द का उच्चारण 'तेरा' की भांति ही होता है) तो गुरु नानक साहिब अंतरलीन हो जाते तथा 'तेरा-तेरा' को ही दोहराते रहते जब तक कि उनका ध्यान वापस 'तेरह' की गिनती की ओर न दिलाया जाता।

प्रिं तेजा सिंघ व डॉ गंडा सिंघ के अनुसार अपना मिशन पूर्ण व अख्तियार करने के लिये एक दिन प्रात: काल ही नित्य की भांति सुलतानपुर के निकट वेईं नदी में स्नान करने के लिये गये। आस-पास के दृश्यों ने उनके मन पर ऐसा प्रभाव डाला कि गुरु नानक साहिब सर्वव्यापी परमात्मा से एक सुर हो गये। उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि वे सर्वशक्तिमान परमात्मा के सम्मुख हैं तथा उनको अपने जीवन-उद्देश्य की पूर्ति के लिये परमात्मा से संदेश प्राप्त हुआ है। तीन दिनों के पश्चात जब गुरु नानक साहिब नदी से बाहर निकले तो बिलकुल बदले हुए थे। जब कभी उन्हें कोई कुछ भी कहने के लिये दबाव डालता तो वे यही कहते "ना कोई हिंदू न मुसलमान ॥" अपने जीवन-उद्देश्य को आरंभ करने के लिए इस वाक्य के माध्यम से गुरु नानक साहिब भारत के दो सम्प्रदायों में भाईचारा करवाना चाहते थे। आपके इस वाक्य ने शहर में हलचल मचा दी। शहर के काजी की शिकायत पर आपको नवाब के समक्ष पेश किया गया व अपने विचार प्रकट करने के लिए कहा गया। अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए गुरु नानक साहिब आलोचकों के साथ मस्जिद में चले गये जहां काजी ने नमाज पढ़ने के लिए नमाजियों की अगुवाई की। नमाज के पश्चात गुरु जी ने काजी से कहा कि आप नमाज पढ़ते समय घर में घोड़ी से पैदा हुए घोड़ी के शिशु की चिंता में थे तथा नवाब का मन तो काबुल में घोड़े खरीदने में लगा हुआ था। आप दोनों रस्मी तौर पर ही नमाज पढ़ रहे थे, इसलिए आपकी नमाज ईश्वर की दरगाह में स्वीकार नहीं हुई।

प्रिं तेजा सिंघ व डॉ गंडा सिंघ का मानना है कि गुरु नानक साहिब के जीवन में यह एक निर्णायक घटना थी। यह १४९६ ई की घटना है तथा इस समय उनकी उम्र २७ वर्ष की थी। उन्होंने दौलत खान की नौकरी छोड़ दी तथा अपना जीवन-उद्देश्य आरंभ किया। रबाबी भाई मरदाना जी को आपने अपने साथ ले लिया। सर्वप्रथम उन्होंने कुछ समय पंजाब में ही हिंदुओं तथा मुसलमानों को अपने विचारों से सहमत करने में बिताया तथा जहां भी गए वहां पर प्रचार-केंद्र के रूप में 'मंजीआं' (प्रचार-केंद्र)

स्थापित करते गए।

अपनी लंबी यात्राओं के दौरान आपने हिंदू तथा मुस्लिम धर्मों के अलग-अलग केंद्रों की यात्रा की तथा उनके सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त की। आपकी पहली यात्रा पूर्व दिशा की ओर थी जहां पर हिंदू धर्म के प्रसिद्ध केंद्र शामिल थे। गुरु जी इन पवित्र स्थानों पर त्योहारों के अवसर पर गये जिससे भारी संख्या में लोगों से मिल सकें। प्रिं. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ ने 'पुरातन जन्म-साखी' के अनुसार वर्णन किया है कि गुरु जी ने भगवे रंग का लंबा चोगा, सिर पर नोकदार टोपी, गले में हड्डियों की माला, पैरों में अलग-अलग प्रकार के जूते व माथे पर केसर का तिलक लगा कर अजीब तरह का रंग-बिरंगा लिबास धारण किया जिस कारण गुरु जी को अपने पहुंचने की घोषणा करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी।

सूर्य-ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में अंधविश्वास में फंसे लोगों को शिक्षा देते हुये, दिल्ली व पानीपत के रास्ते हुये प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान हरिद्वार पहुंच कर व्यर्थ के कार्यों में लीन व्यक्तियों को अपनी सैद्धांतिक स्पष्टता से निरुत्तर किया। तत्पश्चात बनारस पहुंच कर पंडित चतुरदास से मूर्ति-पूजा व प्रतीकवाद पर विचार-विमर्श करके उनके भ्रम को दूर किया। बनारस से चलकर, गया से होते हुये पटना में सालिस राय चौधरी को सिक्ख धर्म का प्रचारक नियुक्त किया। यहां से कामरूप (आसाम) पहुंच कर नूरशाह जैसी जादूगरनियों के तिलिस्म को तोड़कर उन्हें सच्ची सुंदरता अर्थात् आचरण की श्रेष्ठता का उपदेश दिया। गुरु जी ने इसके पश्चात जगन्नाथपुरी के प्रसिद्ध मंदिर में पहुंच कर मूर्ति के समक्ष की जा रही आरती में शामिल होने से इंकार कर दिया। कारण पूछने पर आपने परमात्मा की हर समय हो रही आरती की चर्चा करते हुये शबद गायन किया:

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ . . . (पन्ना १३)

इसके पश्चात गुरु जी पंजाब वापस आ गये तथा केंद्रीय भारत में से गुजरते हुये वहां के आदिवासियों में इंसानियत सिखाने वाले धर्म का प्रचार किया। कुछ समय पंजाब में गुजारने के बाद गुरु जी सूफी-फकीरों के केंद्र पाकपटन गये। फिर दीपालपुर, कंगणपुर, कसूर, पट्टी, सुलतानपुर, वैरोवाल, जलालाबाद आदि स्थानों से होते हुये कुछ समय के लिये कीड़ी पठाणा गांव में ठहरे।

पंजाब से बाहर एक और लंबी यात्रा पर जाने का विचार बनाने से पूर्व अपने परिवार के लिये गुरु जी एक घर का प्रबंध करना चाहते थे, क्योंकि उनका परिवार पक्खोके गांव में उनकी ससुराल में रह रहा था। रावी नदी के दाहिने किनारे पर पक्खोके के सामने उन्होंने एक नये नगर की नींव रखी, जिसका नाम 'करतारपुर' अर्थात् 'करतार या वाहिगुरु का नगर' रखा गया।

प्रिं. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार गुरु नानक साहिब की दूसरी यात्रा दक्षिण की ओर थी। इस यात्रा के दौरान संगलादीप से लंका तक समस्त राह में स्थान-स्थान पर गुरुद्वारे हैं। लंका के राजा शिवनाभ से मिलकर, उसे ज्ञान देकर कृतार्थ किया तथा उसने सिक्ख धर्म अपनाया। गुरु जी पश्चिमी तट के साथ-साथ चलते हुये पंजाब आ गये।

लेखक के अनुसार गुरु नानक साहिब जी की तीसरी यात्रा उत्तर की ओर थी। इस यात्रा के दौरान भी गुरु जी ने एक विशेष प्रकार का लिबास धारण किया। उनके साथ हंसू लोहार व सीहां धोबी भी गये थे। हिमालय की निचली पहाड़ियों से निकलते हुये व कई स्थानों पर

रुकते हुये गुरु जी गोरखमता पहुंचे, जहां वे योगियों से मिले। योगियों की केवल वेशभूषा धारण करने के खोखलेपन की आलोचना करते हुये गुरु जी ने फरमाया :

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ *(पन्ना ७३०)*

कुछ और विचार-विमर्श के पश्चात योगी पूरी तरह से हार गये तथा उस स्थान का नाम 'नानकमता' रखा गया जो कि सिक्ख मिशन का एक केंद्र बन गया।

वहां से गुरु जी हिमालय पहाड़ की ओर गये तथा नेपाल व पश्चिमी तिब्बत के कुछ हिस्से को पार करके कैलाश पर्वत व मानसरोवर झील पर पहुंचे। उस स्थान पर गुरु जी ने योगियों व साधुओं को यह समझाने का प्रयास किया कि आप खोखले भेष धारण करने व शरीर को कष्ट देकर तपस्या करने के स्थान पर संसार में रह कर व सामाजिक सम्बंध स्थापित करके मानवता की सहायता कर सकते हो। इस विचार-विमर्श को "सिध गोसटि" बाणी के नाम से जाना जाता है। इसके बाद गुरु जी लद्दाख, श्रीनगर, जम्मू व सिआलकोट के रास्ते वापस आ गये।

गुरु नानक साहिब की चौथी यात्रा पश्चिम की ओर थी। इस यात्रा में उनके साथ भाई मरदाना जी भी थे तथा उन्होंने हाजी का भेष धारण किया हुआ था। वे समुद्री सफर के द्वारा मक्का पहुंचे। वहां पहुंच कर गुरु जी काबा की तरफ पैर करके सो गये। यह देख कर लोगों को अत्यंत क्रोध आया तथा उन्होंने आपत्ति जाहिर की। उनमें से एक ने गुरु जी को पैर मारा व इस प्रकार काबे की तरफ पैर करके लेटने का कारण पूछा। गुरु जी ने उत्तर दिया कि "आप इतने क्रोधित न हों, मेरे पैर उठाकर उस तरफ कर दें जिस तरफ खुदा न हो।" इस प्रकार से गुरु नानक साहिब ने हाजियों के लिए परमात्मा की सर्वव्यापकता को स्पष्ट किया। उनके पूछने पर कि "वे हिंदू हैं या मुसलमान", तो गुरु जी ने उत्तर दिया कि "मैं केवल पांच तत्वों का पुतला हूं, न हिंदू हूं व न ही मुसलमान।" हाजियों ने फिर पूछा कि "दोनों में से कौन अच्छा है?" गुरु जी ने उत्तर दिया कि "केवल हिंदू या मुसलमान होने से ही कोई परमात्मा को स्वीकार नहीं होता। यदि उन्होंने अच्छे कर्म नहीं किये होंगे तो दोनों ही सजा भुगतेंगे।" भाई गुरदास जी की के शब्दों में :

बाबा आखे हाजीआ सुभि अमलां बाझहु दोनो रोई।
हिंदू मुसलमान दुइ दरगह अंदरि लहनि न ढोई।
(वार १:३३)

प्रिं. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ आगे लिखते हैं कि यहां से गुरु जी बगदाद गये, जहां आपकी मुलाकात फकीर शाह बहलोल से हुई। जिस स्थान पर उनकी वार्ता हुई वहां पर एक यादगारी चबूतरा बना हुआ है। इसके पश्चात गुरु जी भारत वापस आ गये तथा रास्ते में हसन अब्दाल में वली कंधारी से मिले। उस स्थान को अब गुरुद्वारा पंजा साहिब कहा जाता है। इसी समय बाबर ने पंजाब पर तीसरा हमला किया था। गुरु जी के शब्दों के अनुसार यह हमला १५२१ ई को हुआ। सैदपुर में हुई लूट व कत्लेआम को गुरु जी ने स्वयं अपनी आंखों से देखा। इस अवसर पर गुरु जी ने दिल हिला देने वाले कुछ शबद उच्चारण किये, जैसे कि:

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥

एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥
(पन्ना ३६०)

कहा जाता है कि लोगों के कष्टों का गुरु जी पर इतना गहरा असर हुआ कि वे मानसिक दुख से ग्रसित होकर समाधि में लीन हो गये।

प्रिं. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार आम तौर पर यह कहा जाता है कि गुरु नानक साहिब अमन-पसंद व्यक्ति थे तथा लोगों की सांसारिक जरूरतों के विषय में नहीं सोचते थे। यह बिलकुल गलत विचार है। गुरु जी ने लोगों पर लगी सामाजिक व राजनैतिक पाबंदियों पर विचार किया अन्यथा वे यह उच्चारण न करते:

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
(पन्ना ४६८)

गुरु जी ने लोधी पठानों की भारत के लिये कड़ा मुकाबला न करने के लिये आलोचना की :

रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥ *(पन्ना ३६०)*

जब गुरु जी के साथी भाई मरदाना जी ने उनसे पूछा कि "विदेशी हमले के समय लोगों को इतना कष्ट क्यों झेलना पड़ा", तो गुरु जी ने कहा कि "यह कुदरत का नियम है कि पतन होने से पूर्व परमात्मा मनुष्य से अच्छाइयां छीन लेता है।" गुरु जी के शब्दों में :

जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥ *(पन्ना ४१७)*

उनका मानना था कि जब तक लोग अज्ञानता व बदचलनी में फंसे हुये हैं तब तक उनके लिये कुछ भी नहीं किया जा सकता। गुरु जी ने मानवीय व्यवहार के अत्यंत ही सरल नियम निर्धारित किये जिनके द्वारा प्राचीन पाबंदियों के स्थान पर कोई नवीन पाबंदी नहीं लगाई गई। राग वडहंस में गुरु जी ने उच्चारण किया कि उस आहार, रीति-रिवाज को छोड़ देना चाहिये जिसके कारण परमात्मा का विस्मरण हो जाता है :

बाबा होरु खाणा खुसी खुआर ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
(पन्ना १६)

अपने विचारों को व्यवहारिक रूप देने के लिये गुरु जी ने संसार में रहते हुए शुद्ध जीवन जीने की निजी मिसाल कायम की। जिस धर्म की नींव गुरु नानक साहिब ने रखी वह धर्म कुछ व्यक्तियों की मुक्ति से ही संतुष्ट नहीं रह सकता। इसने अपने आप को एक सांसारिक शक्ति की तरह जत्थेबंद करना था तथा मानवता की उन्नति के लिये एक शक्तिशाली समाज का निर्माण करना था।

प्रिं. तेजा सिंघ व डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार गुरु नानक साहिब केवल सुधारक ही नहीं थे बल्कि उन्होंने एक नये शुद्ध धर्म की नींव भी रखी। यह बात इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि उन्होंने भारत के बाहर गैर-हिंदू देशों की भी यात्रा की। उन्होंने अपने ऐसे उत्तराधिकारी की परख करके उसकी नियुक्ति की जो उनके पश्चात उनके कार्य को जारी रख सके :

सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥
जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ (पन्ना ९६७)

गुरु नानक साहिब २२ सितंबर, १५३९ ई की ज्योति-जोत समा गये। उनकी बाणी में व्यंग्यात्मक शैली, जिसमें जीवन की समस्याओं के विषय में गूढ़ विचार कूट-कूट कर भरे हुये हैं, उनके एक विद्वान लेखक होने का भी प्रबल प्रमाण हैं। "जपु जी, आसा दी वार, सिध गोसटि तथा दखणी ओअंकार" गुरु नानक साहिब की विद्वतापूर्ण बाणियां हैं।

भट्ट-बाणी में गुरु नानक साहिब की महिमा

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

वो जो पूरी दुनिया का रहबर है मन के सबसे करीब है; वो जो अमृत का सागर है, अंतर का निर्झर अमृत-स्रोत है; वो जो पल-पल प्रकाशित और नूतन-नवीन है, हर जीवन की ललक है; जिसका नाम सुखों का खजाना है, जिसकी कृपा अनमोल है, उस सच्चे साहिब की महिमा का वर्णन करना किसी के वश में नहीं है क्योंकि उसका अपार आभा-मंडल दृष्टि में समा ही नहीं सकता। उसके गुणों की असीम ऊंचाइयां चिंतन की सीमाओं से कहीं परे हैं। उसकी दिव्यता मन में समा सकती है यदि मन निर्मल हो। उसकी श्रेष्ठता अनुभूति में बस सकती है यदि संवेदना सहज हो। उसकी कृपा रोम-रोम में रच सकती है यदि रोम-रोम उससे प्रीति रखे।

ऐसे साहिब श्री गुरु नानक देव जी की अतुलनीय कीर्ति को लेकर अब तक बहुत कुछ कहा गया है और युगों-युगों तक बहुत कुछ कहा व लिखा जाता रहेगा किन्तु वह भी पर्याप्त नहीं होगा। उस महान ज्ञान के प्रकाश और शक्ति के स्रोत को समझने के लिये निरछल, निर्मल प्रेम की दृष्टि चाहिये जो किसी विरले को ही प्राप्त होती है, क्योंकि ऐसी दृष्टि प्राप्त करना सरल नहीं है। ऐसी प्रेम-दृष्टि पूर्ण अडोलता, समर्पण, विश्वास और दासत्व भाव से ही उत्पन्न हो सकती है। गुरु नानक साहिब की ओर दृष्टि में प्रेम की जितनी गहराई होगी उतनी ही उनकी महिमा उजागर होगी। गुरु नानक साहिब किसी काल-खंड का हिस्सा नहीं हैं वे मानव सभ्यता के अंत तक उसे राह दिखाने वाले प्रकाश-पुंज हैं। वे उस सच के प्रतीक हैं जिसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इस सच की आवश्यकता आध्यात्मिक उन्नति के लिये भी है और सांसारिक प्रगति के लिये भी। गुरु साहिब ने इस सच की स्थापना अपने विचारों से भी की और अपने जीवन-व्यवहार से भी। उनकी जीवन-गाथा पुस्तकों-ग्रंथों में शोभायमान है और नये-नये तथ्य भी सामने आते रहते हैं जो विस्मय पैदा करते हैं। गुरु साहिब की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहीत है जिसका अनुराग बढ़ता जाता है। जैसे-जैसे हम उसमें लीन होते जाते हैं हमारी अनुभूति उसमें गहराती जाती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान, भक्त साहिबान के साथ ही भट्ट साहिबान की बाणी भी संकलित की गयी है। भट्ट साहिबान का कार्य मुख्य रूप से राजाओं-महाराजाओं की प्रशंसा का गायन करना और उनके ऐतिहासिक तथ्यों को सुरक्षित रखना था। वे अन्य ब्राह्मणों से निकृष्ट माने जाते थे। पंजाब के भट्ट साहिबान सारस्वत जाति के थे। बाद में अन्य स्थानों पर फैल गये। सिक्ख गुरु साहिबान की महिमा से प्रभावित होकर उस समय के प्रमुख भट्ट कवि गुरु अरजन देव जी के पास गये थे। इनकी भक्ति और प्रेम को देखकर गुरु साहिब ने ग्यारह भट्ट साहिबान की बाणी को

***E**-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित कर उनकी भावना को सम्मान दिया। उनकी बाणी सवैयों के रूप में है और वे गुरु साहिबान की महिमा का वर्णन करते हैं। इनमें दस सवैये भट्ट साहिबान के अग्रणी भट्ट कलसहार जी के हैं जिनमें गुरु नानक साहिब की स्तुति-महिमा का वर्णन है।

जिन भट्ट कवियों की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित है वे श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन-काल के थे। उन्होंने भले ही गुरु नानक साहिब के प्रत्यक्ष दर्शन न किये हों किन्तु थोड़ा ही अंतराल होने के कारण उनकी जानकारी की प्रमाणिकता पर विश्वास किया जा सकता है। दूसरी बात यह कि सिक्ख गुरु साहिबान की उच्चता का उन पर भली प्रकार प्रभाव पड़ा होगा और आश्वस्त होकर ही वे श्री गुरु अरजन देव जी के पास आये होंगे अन्यथा वे राजाओं के दरबार की शोभा बढ़ाते जहां उन्हें भौतिक उपलब्धियां प्राप्त हो सकती थीं। उन्हें वह आत्मिक धन अधिक मूल्यवान लगा जो गुरु साहिबान की उपमा में था।

गुरु नानक साहिब को भट्ट कवियों ने बिना किसी संदेह के एक अवतार के रूप में देखा जो कलयुग में मानवता को राह दिखाने के लिये अवतरित हुए। भट्ट कलसहार जी गुरु साहिब के अवतार का वर्णन इस तरह करते हैं:

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥
स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ ॥ (पन्ना १३९०)

गुरु नानक साहिब को परमात्मा की इच्छानुसार जन्म लेना मानते हुए भट्ट कलसहार जी कहते हैं कि सतयुग में परमात्मा की इच्छा से बौने रूप में अवतार धारण करके बल नामक राजा को भ्रमित किया। त्रेता युग में वे श्रीराम चंद्र जी के रूप में इस धरती पर आये। द्वापर युग में श्रीकृष्ण जी के रूप में अवतार धारण कर कंस को मुक्ति प्रदान की और उग्रसेन को राजपाट दिलाकर भक्त-जनों को निर्भय किया। अब कलयुग में गुरु नानक साहिब जी ने अवतार धारण किया है और जिनका नाम श्री गुरु अंगद साहिब और श्री गुरु अमरदास जी भी है। कलयुग में गुरु साहिब ने सच की जिस सत्ता की स्थापना की है वह अविचल और अटल है। ऐसा राज्य उस आदि-शक्ति की सहमति से हुआ जो इस सृष्टि के पूर्व की है अर्थात् स्वयं 'परमात्मा'। गुरु नानक साहिब का आभामंडल इतना सुदिव्य और सुशोभित था कि उनमें और परमात्मा में भेद ही समाप्त हो गया था। इस बात को यदि स्वयं गुरबाणी के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बार-बार कहा गया है कि भक्ति में ऐसी अवस्था आती है जब भक्त और पारब्रह्म एक हो जाते हैं।

उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥
बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥
जलु आकासी सुंनि समावै ॥
रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥१॥
ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥
भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥१॥रहाउ॥
सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥
सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥
गगनि निवासि समाधि लगावै ॥
पारसु परसि परम पदु पावै ॥२॥ (पन्ना ४११)

उपरोक्त वचन में गुरु नानक साहिब

कहते हैं कि मनुष्य कर्मकांडों, व्यर्थ के प्रपंचों का त्याग करके सच की शरण में जाये और परमात्मा के ध्यान में इस तरह लीन हो जाये जिस तरह आकाश में जल समाया रहता है। सच को सम्पूर्णता में धारण करके उसे महान आनंद की प्राप्ति होगी। मनुष्य सच को अपने आचार-विचार का केन्द्र बना ले क्योंकि सत्य (परमात्मा) सर्वत्र व्याप्त है और सर्वोपरि है। इससे आवागमन का भय समाप्त हो जाता है और समस्त विकारों का नाश हो जाता है। मनुष्य जब आत्मा के उच्च स्तर पर जाकर परमात्मा की उपासना में लीन हो जाता है तो वह परमात्मा की कृपा से परमात्मा जैसी अवस्था पा लेता है। साधारण मनुष्य के परम पद पाने की राह यदि गुरु साहिब दिखा सकते हैं तो उनमें परमात्मा का रूप देख पाना कोई संशय नहीं पैदा करता। गुरु नानक साहिब ने अपने इस वचन को पूर्णत: चरितार्थ भी किया जब उन्होंने अपने एक विनम्र सिक्ख भाई लहिणा जी पर कृपा करते हुए वह परम पद (गुरगद्दी) सौंपा जिसका उल्लेख उन्होंने उपरोक्त वचन में किया।

सोई पुरखु धंनु करता कारण करतारु करण समरथो ॥
सतिगुरू धंनु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥
त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥
मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ . . .
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥१॥ (पन्ना १३९१)

गुरु नानक साहिब ने गुरु की गद्दी पर भाई लहिणा जी को बिठाकर अपनी कृपा की बारिश कर दी जिससे आत्मिक श्रेष्ठता प्राप्त करके भाई लहिणा जी ने श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में समस्त विकारों से मुक्त होकर पूरे संसार में अपनी आत्मिक प्रभुता का राज स्थापित कर लिया और परमात्मा से एकाकार हो गये।

भट्ट कलसहार जी ने गुरु नानक साहिब जी के संसार-आगमन को अद्भुत घटना की संज्ञा दी।

गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥
धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥
(पन्ना १३९०)

युगों पहले हुए श्रेष्ठ ऋषियों और राजाओं ने भी गुरु साहिब के संसार-आगमन की प्रशंसा में उनके गुण गाये। वे इस युग का कल्याण करने के लिये संसार में विलक्षण रूप से आये। इससे दो बातें स्पष्ट होती हैं। एक तो यह कि जब गुरु साहिब का जन्म हुआ उस समय संसार कितने भीषण संकटों के दौर से गुजर रहा था। दूसरा यह कि गुरु नानक साहिब ने कैसी कुशलता से संसार को उन संकटों से उभार लिया। ऐतिहासिक तथ्य भी हैं कि किस तरह हिंदोस्तान सामाजिक विखंडन का सामना कर रहा था। सामाजिक असमानताएं और ऊंच-नींच के भेदभाव अपनी चरम सीमा पर थे। धर्म भी अन्याय का हथियार बन चुका था। वैयक्तिक तौर पर भी लोग पाखंड-आडंबर का सहारा ले रहे थे और सच के मार्ग से दूर जा रहे थे। राज-सत्ता अपने स्वार्थों की पूर्ति करते-करते जर्जर हो चली थी। इसका लाभ उठाते हुए विदेशी आक्रमण आरंभ हो गये थे। गुरु नानक साहिब ने आत्मा को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करने की बात की तो सामाजिक विषमताओं व धार्मिक आडंबरों का भी विरोध

किया और मुगल आक्रमणकारियों को भी सीधी चुनौती दी। गुरु साहिब ने तत्कालीन मनुष्य की मनोदशा का वर्णन इस तरह किया।

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥
(पन्ना १५)

अर्थात् मनुष्य लोभ, पाप-कर्मों में आकंठ डूबा हुआ है। वह पर-निंदा में व्यस्त है, दूसरों की सम्पत्ति पर उसकी निगाह टिकी हुई है, विकार प्रबल रूप दिखा रहे हैं। भोग-विलास में लिप्त होकर वह बस अपनी ओर ही देख रहा है। तत्कालीन सामाजिक विवशताओं का सशक्त वर्णन गुरु साहिब ने इस तरह किया।

इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥
चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥
रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥ (पन्ना ४१७)

सत्य के मार्ग पर न चलने के कारण समाज में अव्यवस्था फैल गयी। सच्चा धर्म इतना पीछे छुट गया है कि अब मांगने पर भी त्राण नहीं मिलता, सम्बल नहीं प्राप्त होता।

इन विषम परिस्थितियों में विषमताओं के विरुद्ध खड़े होना एक असाधारण कार्य था, किन्तु गुरु साहिब ने तो बचपन से ही अपनी राह चुन कर उस पर चलना आरंभ कर दिया था। वे जिस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये इस संसार में आये थे उसे पाने के लिये उन्होंने जीवन का एक पल भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। ऐसा इसलिये संभव हो सका क्योंकि वे परमात्मा के अमृत-रस से परिपूर्ण थे अर्थात् अथाह शक्तियों के स्वामी थे।

गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर
हरि रस पूरन सरब कला ॥
गावहि सनकादि साध सिधादिक
मुनि जन गावहि अछल छला ॥ (पन्ना १३८९)

भट्ट कलसहार जी ने उपरोक्त वचन में सर्व-शक्ति सम्पन्न कह कर उनकी महानता का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि गुरु नानक साहिब की शक्ति इस तरह अपार थी कि माया भी उन्हें छल नहीं सकी। गुरु साहिब सद्गृहस्थ थे। उन्होंने आवश्यक पारिवारिक कर्त्तव्यों का वहन किया। जीवन के अंतिम अठारह वर्षों में उन्होंने उदासी वेश भी उतार दिया और नित्य-प्रति कृषि कार्य करते रहे, अपना सारा दिन खेतों में व्यतीत करते रहे फिर भी माया-मोह उन्हें स्पर्श तक नहीं कर सकी और वे संसार का उद्धार करते रहे। उन्हें कभी माया का भय सताया ही नहीं कि वे कंदराओं में जा छिपें, वन में निवास करने लगें अथवा पर्वत पर जा बैठें। उन्होंने तो ऐसे स्थानों पर जा बसे सिधों, योगियों, तपस्वियों को भी उपदेश देकर सत्य का मार्ग दिखाया। गुरु साहिब ने एक आसान-सी बात माया के बारे में कह कर संसार को सुचेत किया:

बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥
(पन्ना ५९५)

गुरु साहिब ने कहा कि माया से उद्धार नहीं होने वाला है। जिसने इसे जान लिया उसे जीवन-फल प्राप्त हो जायेगा। वे चाहते थे कि मनुष्य माया के बारे में सही सोच पैदा करे। उन्होंने माया को त्यागने के फेर में पड़ने को नहीं उसकी उपादेयता को जानने के लिये कहा। असाधारण अध्यात्मिक मनोवृति होने के कारण गुरु साहिब जीवन के प्रथम चरण से ही माया के जाल को जानते थे इसलिये माया उन्हें अपने

मोहपाश में बांध नहीं पायी, माया उन्हें छल नहीं पायी थी, इसी लिये वे संसार में सच की बात कर सके, साधकों, सिधों, योगियों को उनके स्थानों पर जाकर सीधी चुनौती ही नहीं दी बल्कि अपनी बात से सहमत भी किया। तीर्थ-स्थानों पर जाकर ढोंग व आडंबरों से लोगों को सावधान किया और यहां तक कि हिंदोस्तान पर आक्रमण करके आतंक व अत्याचार का माहौल बनाने वाले शासक के सामने सीना तान कर खड़े होने का साहस किया। इसी लिये भट्ट कलसहार जी ने उन्हें 'सभी शक्तियों से सम्पन्न' कहा।

गुरु नानक साहिब का मिशन बहुपक्षीय और व्यापक था। उन्होंने संसार पर सम्पूर्ण दृष्टि डाली। वे धर्म या मात्र समाज की ही बात नहीं करना चाहते थे बल्कि उन्हें ज्ञात था कि एकांगी बात करना समस्या का समाधान नहीं है। उन्होंने मनुष्य के अंतर, उसके पारिवारिक-सामाजिक सम्बंधों, धर्म, समाज, राज्य के कर्त्तव्यों और मूल्यों की भी चर्चा की। उन्होंने जीवन के हर पक्ष पर अपनी दृष्टि डाली। भट्ट कलसहार जी इसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनकी दृष्टि में निरंतरता है।

गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरंतरि जाणिओ ॥
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥
राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदंतरि ॥
स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि ॥
(पन्ना १३९०)

गुरु नानक साहिब जी आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही क्षेत्रों के स्वामी थे। उन्होंने सारे संसार का उद्धार किया। गुरु साहिब अपने लक्ष्य को पाने के लिये जिस समय घर से बाहर निकले उस समय न तो यातायात के कोई सुगम साधन थे, न सुविधाजनक रास्ते थे और संसार-सम्पर्क के साधन भी नहीं थे। इसके बावजूद उन्होंने अन्य यात्राओं के अतिरिक्त चार बड़ी यात्राएं विभिन्न दिशाओं में कीं जिन्हें 'चार उदासियां' कहा जाता है। पहली उदासी लगभग बाहर वर्ष की थी, जिसमें वे कामरूप (आसाम) तक ही नहीं उसके आगे ढाका तक पहुंचे और जगन्नाथपुरी होते हुए पंजाब वापिस आये। दूसरी उदासी उन्होंने पांच वर्ष में सम्पूर्ण की और तीसरी उदासी दो वर्ष की थी। चौथी उदासी के चार वर्ष में वे बगदाद तक गये। इन उदासियों और पंजाब की आंतरिक यात्राओं में जहां तक पहुंचा जा सकता था वे पहुंचे और चारों दिशाओं में गये, विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों के लोगों से मिले। हर तरह के कष्ट सह कर, भूखे-प्यासे रहकर भी वे अविचल और प्रेम से परिपूर्ण रहे तथा अपने विचारों से लोगों के मन में ज्ञान की ज्योति जगाते रहे। ऐसा कर पाना किसी भी अन्य महापुरुष के हिस्से नहीं आ सका। आध्यात्मिक-सामाजिक उन्नति की बात करना अलग है और बात को प्रसारित करने के लिये पंजाब से चलकर हरिद्वार, गोरखमता, अयोध्या, प्रयाग, बनारस, गया, गोहाटी, ढाका, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम, सिंगलद्वीप, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, कुरुक्षेत्र, सिक्किम, तिब्बत, कशमीर, अमरनाथ, वैष्णव देवी, जम्मू, सियालकोट, पटन, मक्का, मदीना, बगदाद, मुलतान तक पहुंचना अलग ही बात है। फिर इस से भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि गुरु साहिब इतने विशाल और विभिन्नताओं वाले क्षेत्र में भी लोगों को अपनी बातों से प्रभावित कर सके और उनका हृदय परिवर्तित कर सके, इसी लिये कि उनकी दृष्टि सम थी और वैर-विरोध से मुक्त

थी।

गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥
नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥
भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥
जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ *(पन्ना १३९०)*

भट्ट कलसहार जी कहते हैं कि गुरु नानक साहिब सभी से समान नेह रखने वाले थे। इसी लिये उनकी महिमा का गायन श्रेष्ठ माने जाने वाले लोगों ने भी किया। सम दृष्टि मात्र समान मान की दृष्टि नहीं थी वरन् आनंद से परिपूर्ण दृष्टि थी। भट्ट कलसहार जी कहते हैं कि गुरु साहिब आत्मिक ज्ञान और परमात्मा के रस में लीन होने के कारण परमात्मा में ही रच-बस गये थे और यह सब कुछ इतना सहज और स्वाभाविक था कि वे आनंद की मूर्ति बन गये। उनके आनंदपूर्ण व्यक्तित्व से सारे संसार में आनंद की किरणें व्याप्त हो गयीं। एक ऐसा आनंद जो कभी भी समाप्त होने वाला नहीं और कभी भी विचलित होने वाला नहीं, सदैव नूतन, निर्झर और निरंतर।

सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥
कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥ *(पन्ना १३९०)*

भट्ट कलसहार जी ने गुरु नानक साहिब को *"नित नवतनु जगि छाइओ"* की जो उपमा दी वह आज भी सच सिद्ध हो रही है। गुरु नानक साहिब की ज्योति उनके पश्चात गुरु गोबिंद सिंघ जी तक, नौ गुरु साहिबान में प्रज्वलित होती हुई अंत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप धारण करके युगों-युगों की निरंतरता को प्राप्त हो गयी। आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'गुरु' मानकर उनके समक्ष शीश निवाने से अधिक नूतन और क्या हो सकता है! इस बात की कोई मिसाल ही नहीं दी जा सकती। 'शबद' को 'गुरु' बनाकर उससे हुक्म लेना सिक्ख कौम की एक गौरवमयी विरासत है जो सिक्ख कौम की बौद्धिक उन्नति के उत्कर्ष को सिद्ध करती है और प्रत्येक सिक्ख के लिये महान गौरव की बात है। ऐसी विरासत संसार के किसी भी अन्य धर्म के साथ नहीं जुड़ी हुई है और इसका पूरा श्रेय गुरु नानक साहिब को ही जाता है जिन्होंने नाम-सिमरन को धर्म माना और नाम-सिमरन को परमात्मा से जुड़ने का माध्यम बताया।

भट्ट कलसहार जी ने तो गुरु नानक साहिब की महिमा का वर्णन करते हुए अपने पहले सवैये में ही इस आशंका का निवारण कर दिया है कि गुरु साहिब की दिव्यता को कौन जान सकता है!

इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥
संत सहारु सदा बिखिआता ॥
तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥
तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥
(पन्ना १३८९)

भट्ट कलसहार जी कहते हैं कि जो संतों का आसरा है और सदा विद्यमान है उस कृपा करने वाले परमात्मा का स्मरण करके उसकी शरण में जाना है। परमात्मा की शरण में जाकर ही गुरु नानक साहिब की महिमा का ज्ञान हो सकता है और उसे दूसरे को बताया जा सकता है। उसे देखने के लिये पहले उसकी कृपा प्राप्त करनी होती है। यहां भट्ट कलसहार जी गुरु साहिब के गुणों की भी बात कर रहे हैं। परमात्मा अथवा परमात्मा के स्वरूप को जानने के लिये ही कई जीवन चाहियें अथवा परमात्मा की कृपा का बस, एक पल चाहिये जो

अंतर के युगों-युगों के अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से मिटा देता है। जिसे परमात्मा के प्रेम के रस का अनुभव हो जायेगा वही गुरु साहिब की दिव्यता को समझ सकेगा।

गावै गुण धोमु अटल मंडलवै
भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ (पन्ना १३८९)

उपरोक्त वचन में धोम नामक संत का उदाहरण देते हुए भट्ट कलसहार जी कहते हैं कि वह अपने स्थान पर स्थिर है और क्योंकि परमात्मा के प्रेम में डूबा हुआ है इसलिये गुरु नानक साहिब का गुण गायन कर रहा है। उनका तो सर्वत्र गुणगान हो रहा है।

गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥
महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जंगम ॥
(पन्ना १३९०)

गुरु साहिब के गुणों का गायन सर्वत्र हो रहा है। हर कोई उनकी महिमा को जान रहा है। यह उनकी आध्यात्मिक और सांसारिक सत्ता को स्थापित करता है और उनके उद्देश्य की महानता का भी परिचायक है।

गुरु नानक साहिब ने संसार पर सबसे बड़ा उपकार किया आध्यात्मिक अन्तर्विरोधों को समाप्त करके। उन्होंने परमात्मा के रूप को लेकर उठ रही सारी आशंकाओं का समाधान किया और उसे सहज रूप से प्राप्त करने का मार्ग दिखाया।

ब्रहमंड खंड पूरन ब्रहमु गुण निरगुण सम जाणिओ ॥
जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिओ ॥ (पन्ना १३९०)

भट्ट कलसहार जी ने कहा कि पूरे ब्रह्मांड में गुरु साहिब का यश इसलिये है कि उन्होंने सहज ही परमात्मा को पा लेने का मार्ग दिखाने की कृपा की। गुरु नानक साहिब ने स्वयं कहा कि परमात्मा को पाने, उसमें रम जाने के लिये किसी बुद्धि, युक्ति अथवा चतुराई की नहीं बस, उसकी कृपा की आवश्यकता है।

नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥
आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥
आतमा परातमा एको करै ॥
अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥ (पन्ना ६६१)

गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की कृपा से ही उसका ध्यान कर सकते हैं और आत्मा शुद्ध होकर इस तरह परमात्मा में रचती है कि एकाकार हो जाती है और सारी आशंकाएं समाप्त हो जाती हैं। गुरु साहिब ने यह भी स्पष्ट किया कि परमात्मा की कृपा मिल कैसे सकती है।

ऐसी सेवकु सेवा करै ॥
जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥
साहिब भावै सो परवाणु ॥
सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥ (पन्ना ६६१)

गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा ने जो भी बुद्धि, बल, क्षमताएं, योग्यताएं दी हैं मनुष्य उन सबको परमात्मा के चरणों में भेंट चढ़ा दे और स्वयं उनसे विहीन हो जाये। इस तरह अपना सम्पूर्ण समर्पण परमात्मा के समक्ष करे और उसके हुकम में आनंद का अनुभव करने लगे।

मनुष्य इस तरह परमात्मा की सेवा करके उसे अपनी भावना का परिचय दे। ऐसी ही सेवा परमात्मा के दरबार में प्रशंसा पाती है और ऐसा सेवक ही कृपा का पात्र बनता है। इस तरह कृपा पाकर जो मनुष्य परमात्मा को अपने हृदय में बसाता है उसकी सारी इच्छाएं पूर्ण होती हैं और परमात्मा की कृपा के कारण वह काल के भय से भी मुक्त हो जाता है।

ऐसी सधी, स्पष्ट और गहन दृष्टि गुरु

नानक साहिब के उपरोक्त वचन में ही नहीं, पूरी गुरबाणी में प्रकट होती है और जैसे-जैसे हम उससे जुड़ते जायें मन सच्चे आनंद से विभोर होता जाता है और आत्मा तृप्त होती जाती है। इसी लिये गुरबाणी को 'धुर की बाणी' अथवा 'परमात्मा की बाणी' कहा गया है। गुरु साहिब की पूर्णत: निर्मल सोच ने हरेक तपते मन को शीतलता प्रदान की और अलभ्य परमात्मा को मन में बसा लेने का अद्वितीय विचार देकर सारी जिज्ञासाओं को शांत कर दिया। इससे एक बड़ी आबादी जो परमात्मा की कृपा पाने के लिये बीच के लोगों पर आश्रित थी अथवा परमात्मा की कृपा की बात सोच भी नहीं सकती थी, गुरु साहिब की सोच को बड़ी आशा से देखने लगी और उस ओर मुड़ गयी।

गुरु नानक साहिब ने मनुष्य के मन और उसके व्यवहार से जुड़ी छोटी-बड़ी बात का जिक्र किया। उन्होंने यदि मांस खाने को लेकर उपजे भ्रम, सूतक के भ्रम, अहंकार, क्रोध, कठोर वचन, पर-नारी-आसक्ति, काम, परिवार के मोह आदि अवगुणों, भ्रमों पर प्रहार किया तो सामाजिक भेदभाव, धार्मिक पाखंडों का भी खंडन किया। उन्होंने राज-सत्ता के मद को पाप की संज्ञा दी। इससे भी बड़ी बात थी कि उन्होंने अपने आचरण से यह सिद्ध किया कि किस तरह मान-अपमान, क्रोध-मोह से ऊपर उठा जा सकता है। इसी कारण भट्ट कलसहार जी को कहना पड़ा कि उनका यश तो कण-कण में सहज ही समा गया।

कबि कल सुजसु नानक गुर
घटि घटि सहजि समाइओ ॥ *(पन्ना १३९०)*

निश्चय ही गुरु नानक साहिब जी का प्रभाव इतना व्यापक और सघन था कि भारी संख्या में लोग उनके अनुयायी हो गये। उनके प्रभाव के पीछे मुख्य उनके शक्तिशाली विचार थे। उनकी बाणी जिसके भी कानों में पड़ती वह उनकी ओर आकर्षित होकर खिंचा चला आता था और उनका होकर रह जाता था। उनकी कृपा ऐसी थी कि भाई लहिणा जी भी एक गुरसिक्ख को गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चरित बाणी का गायन करते सुनकर ही गुरु साहिब के दर्शन करने गये जहां उन्हें ऐसे आत्मिक सुख की प्राप्ति हुई कि वे गुरु-दरबार के सेवक बन गये और अपनी सेवा-भावना के बल पर ही गुरु नानक साहिब की कृपा के ऐसे हकदार बने कि गुरु की पदवी पर जा विराजे। भाई लहिणा जी के ज्ञान ने उन्हें 'गुरु अंगद देव' जी बना दिया। गुरु नानक साहिब ने कहा भी कि इस संसार में उसी की प्रतिष्ठा है जिसे परमात्मा का ज्ञान हो गया है।

रजि न कोई जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥
गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥
सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥
नानक किस नो आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥ *(पन्ना १४१२)*

मनुष्य की चतुराई काम नहीं आती। पता ही नहीं लगता कब काल का फंदा आ पड़ता है और जीवन व्यर्थ जाता है। सच का ज्ञान ही जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है। गुरु नानक साहिब की महिमा भट्ट कलसहार जी के शब्दों में इसलिये भी है क्योंकि वे सच में समाये हुए हैं। इसके लिये सभी गुरु साहिबान का गुणगान करते हैं:

गुण गावहि नव नाथ धंनि गुरु साचि समाइओ ॥
मांधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥
(पन्ना १३९०)

श्री गुरु नानक देव जी : अंग्रेज शल्य चिकित्सक की दृष्टि में

-डॉ. नवरत्न कपूर*

अंग्रेज इतिहासकार

भले ही अंग्रेजी शासकों की धींगामुश्ती के कारण भारतीय जनमानस लगभग एक शताब्दी तक आतंकित रहा हो, फिर भी तत्कालीन प्रशासनिक भाषा 'अंग्रेजी' में भारतीय इतिहास को विश्व जनीन बनाने में अंग्रेज विद्वानों की देन को भुलाया नहीं जा सकता। 'सिक्ख इतिहास' को लेखनीबद्ध करने वालों में निम्नलिखित व्यक्ति सुप्रसिद्ध हैं, जिनके नामों और ग्रंथों का परिचय इस प्रकार है :

1. Hew Maclead : Sikhism
2. J. D. Cunnihngam : A History of the Sikhs from the origin of the Nation to the Battle of Satluj
3. John Malcolm : Sketch of the Sikhs
4. M. A. Macauliff : The Sikh Religion : Its Gurus, Sacred Writings and Authors
5. W. L. M. 'Gregor : The History of the Sikhs

इनमें से मेलकोलम (संख्या ३) तथा मैकालिफ (संख्या ४) वाली पुस्तकें क्रमश: ऑक्सफोर्ड तथा लंदन से छपी थीं, जो कि अंग्रेजों के इंग्लैंड देश के प्रमुख नगर हैं। इसके अतिरिक्त जॉर्ज फॉरस्टर ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक 'A Journey from Bengal to England through the Northern part of India & Kashmir' में 'सिक्ख इतिहास' पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। यह पुस्तक लंदन से सन् १७५८ में प्रकाशित हुई थी। जॉर्ज फॉरस्टर की इसी पुस्तक एवं जॉन मेलकोलम की उपर्युक्त पुस्तक के आधार पर डब्ल्यू. एल. एम. 'ग्रेगर नामक अंग्रेज ने 'The History of the Sikhs' में गुरु नानक साहिब से लेकर सिक्ख मिसलों तक के इतिहास पर प्रकाश डाला है। ग्रेगर वस्तुत: भारत स्थित अंग्रेज सेना की घुड़सवार शाखा में एक शल्य-चिकित्सक के पद पर कार्यरत था। भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला द्वारा सन् १९७० में प्रकाशित एम. 'ग्रेगर की पुस्तक में जो तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं, वे उसके चिकित्सा-विज्ञान जैसी ऐतिहासिक परख की सुगंधि बखेरते नजर आते हैं।

एम. 'ग्रेगर ने लगभग ७० पृष्ठों में दस सिक्ख गुरु साहिबान का जीवन-वृत्तांत प्रस्तुत किया है। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ब्यौरा विस्तृत है, जबकि अन्य आठ गुरु साहिबान का बड़ा संक्षिप्त है। 'गुरु' एवं 'शिष्य' शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ-प्रस्तुति के पश्चात इतिहासकार ने पहले गुरु साहिब के बेदी एवं दशमेश पिता के सोढी गोत्र का उल्लेख इस प्रकार किया है :

"कुछ स्थानीय इतिहासकार 'गुरू' शब्द की व्युत्पत्ति गिरोह, भीड़ अथवा विभिन्न वर्णों के लोगों के समूह से मानते हैं, किन्तु 'गुरू' शब्द का सामान्य अर्थ है 'गुरू की विशिष्टता' और इस गुरू के पैरोकारों को 'सिक्ख' अथवा 'शिक्षार्थी' कहा जाता है।

सिक्खों के पहले गुरू अथवा अध्यापक (गुरु) नानक (बेदी) और उनमें से अंतिम

*फ्लैट सं. ९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल, नवीं मुंबई

(गुरु) गोबिंद सिंघ (सोढी) थे। (Some native historians explain the word Gooroo to be derived from Giroh, a crowd or assemblage of people of different castes. But the more general acceptation of the word 'Gooroo' is that significant of teacher and the followers of this teacher are named Sikhs or Learners. The first Gooroo or teacher, among the Sikhs was Nanak (Bedee) and the last was Govind Singh (Sodee).)[1.] (page 27)

प्रथम गुरु साहिब की जीवन-चर्चा

भले ही एम. 'ग्रेगर गुरु अंगद देव जी के त्रेहण गोत्र तथा तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के भल्ला गोत्र में जन्मे होने की बात से अपरिचित रहा हो, फिर भी उसने गुरु नानक साहिब के जीनव-वृत्तांत की परख बड़े आदर-सम्मान के साथ की है। उसका कथन है कि गुरु नानक साहिब का जन्म ८९२ हिजरी में बहलोल लोधी के शासन-काल में हुआ था। उस समय सन् १४६८ ई* तथा संवत् १५२५ वि. थी और बहलोल लोधी के शासन-काल का ३२वां वर्ष था। गुरु साहिब के पिता जी का नाम श्री कालू जी था। अंग्रेजी उच्चारण में लेखक ने यह शब्द 'कुल्लू' (Kulloo) लिखा है, किन्तु माता का नाम नहीं बताया।

गुरु साहिब के चार वर्ष की अवस्था में ग्रामीण पाठशाला में प्रवेश करने और गुरु जी के आध्यात्मिक विचारों से प्रभावित होकर उनके अध्यापक के संसार से उचाट होने की बात भी लेखक ने की है। उन्हें व्यापार-कार्य में डालने हेतु गुरु साहिब के पिता ने सुलतानपुर (बिस्त जलंधर) में एक दुकान बनवाकर उसमें तरह-तरह का सामान भरवा दिया। किन्तु गुरु साहिब ने अर्जित धन और बहुत-सारा सामान फकीरों को मुफ्त बांट दिया। आखिर पिता ने उन्हें दुनियादार बनाने के लिए बटाला के एक खत्री परिवार की बेटी से गुरु साहिब की शादी कर दी, जिसने दो पुत्रों बाबा सिरीचंद तथा बाबा लखमीदास को जन्म दिया। अभी गुरु साहिब ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही थे कि उनकी विद्वता से प्रभावित होकर भाई मरदाना जी (Murdana, a musician); बाबा बुड्ढा जी और भाई लहिणा जी उनके शिष्य बन गए और इन्हें गुरु साहिब ने परम पुरख के प्रत्यक्ष दर्शन होने सम्बंधी अपने सिद्धांत सिखाए। इस संबंध में इतिहासकार का कथन है :

"Two others of his followers are celebrated: the one named Boodha, and the other Lehna. To these Nanak taught his doctrines, which were those of pure Deism." (page 35)

इस अंग्रेजी स्रोत द्वारा लिखे अनुसार गुरु नानक साहिब ने कुल ७१ वर्ष की आयु भोगी। मुगल सम्राट अकबर के शासन-काल के पहले वर्ष ९६३ हिजरी (सन् १५३९ ई) में वे परलोक सिधारे। फॉरस्टर तथा मेलकोलम का उद्धरण देकर एम. 'ग्रेगर ने उनके गुरु-काल का समय साठ साल पांच महीने और सात दिन बताया है। उनके समाधि-स्थल का उल्लेख भी इस प्रकार किया है :

"He reigned as Gooro sixty years, five months, and seven days. His tomb (Summad) is on the bank of the Ravee, five miles from Kulanoor. Vast crowds collect annually to perform certain ceremonies in commemoration of the day of his decease -

**अधिकतर अन्य स्रोतों के अनुसार सन् १४६९ ईसवी लिखा मिलता है।*

(Forster). The place is named Keertipore; and according to Malcolm, "a small piece of Nanak's garment is exhibited to pilgrims as a sacred relic, at his Dhurmsala, or temple."

(page 41)

गुरु साहिब के धार्मिक सिद्धांत

शांतिपूर्ण धर्म-सिद्धांत (Peaceful tenets) के अधीन एम. 'ग्रेगर ने लिखा है :

"(गुरु) नानक के उपदेश (The precepts of Nanuk) मानव-प्राणियों में परस्पर शांति बनाए रखने से संबद्ध थे। उन्होंने ईश्वर में आस्था रखने वाले लोगों को लड़ाई-झगड़े से घृणा करने की शिक्षा प्रदान की और उन्हें हर चीज की प्राप्ति के लिए प्रभु पर दृढ़ विश्वास रखने हेतु प्रेरित किया। . . . समग्र रूप में यही कहा जा सकता है कि गुरु नानक साहिब के धर्मोपदेशों में यही प्रबल इच्छा झलकती है कि हिंदुओं की सभी बुराइयां (जो मूर्ति-पूजा; Idolatries of Hindus के कारण उभरी हों) और मुसलमानों की असहिष्णुता (Intolerance of the Musalmans) दूर हो जाए। गुरु नानक साहिब ने हिंदुओं और मुसलमानों में सामंजस्य भाव (conciliate or reconcile) बनाए रखने के लिए हिंदुओं को मूर्ति-पूजा से हटने . . . और मुसलमानों को गौ-हत्या से दूर रखने के लिए उपदेश दिया। जीव-हत्या तो आज भी सिक्ख धर्म में अपराध मानी जाती है और ऐसा करने वाले को कड़ी से कड़ी सजा देने का विधान है। (. . . the slaughter of the cow, an offence which is this day visited by the severest punishment among the Sikhs . . . the loss of life being often penalty incurred for killing the animal.) (page 35)

यही नहीं, इतिहासकार ने अपने विचारों की पुष्टि के लिए जॉन मेलकोलम की पुस्तक 'Sketch of the Sikhs' का संदर्भ देकर तत्कालीन मुस्लिम शासकों की धर्मान्धता का भी संकेत इस प्रकार किया है :

"Nanak believed in metempsychosis and that really good men would enjoy paradise . . . and that the bad would animate the bodies of animals, particularly dogs and cats, but it appears from the Punjabee auhtors, that Nanuk was acquainted with the Mahomedan doctrine regarding the fall of man and a future state." (page 39)

अपने ज्योति-जोत समाने से पहले गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी को गले लगाकर और 'अंगद' पुकार कर गुरु-पदवी प्रदान की। इसके बारे में लेखक द्वारा 'अंगद' (Ungut) शब्द का अर्थ दर्शाने में उसकी कुशलता देखिए :

"On seeing with what readiness Lehna had obeyed his command, Nanuk embraced him, and from that time called 'Ungut', or 'own body'. This is considered a miracle by Sikhs, who believe that the body of Nanuk passed into that of Lehna. He was thenceforth appointed by Nanuk to succed him."

(page 49)

भले ही एम. 'ग्रेगर ने गुरु नानक साहिब का नाम 'नानुक' (Nanuk), उनके पिता का नाम 'कुल्लू' (Kullo) तथा श्री गुरु अंगद देव जी का नाम 'अंगुत' (Ungut) एवं नगरों के नामों का उच्चारण ठीक से न समझा हो, फिर भी ऐतिहासिक तथ्यों के विश्लेषण में उसकी शल्य-चिकित्सक वाली प्रतिभा उभर कर सामने आती है।

तीन आधुनिक पंजाबी काव्य-कृतियों में गुरु नानक साहिब के जीवन तथा व्यक्तित्व के कुछ चुनिंदा विवरण

*-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा**

गुरु नानक साहिब का जीवन एवं व्यक्तित्व, उनके जीवन-काल से आज तक के धर्मों, संप्रदायों तथा देश-काल की सीमायें पार करता हुआ कुल आलम को आकर्षित तथा प्रभावित करता आ रहा है। आपने सर्वपक्षीय अराजकता के युग में सर्व-सांझीवालता के गुणों से माला-माल 'सिक्ख धर्म' का एक अमूल्य उपहार मानवता को दिया। आप युगपुरुष थे। आपका जीवन एवं व्यक्तित्व विश्व भर में अपना उदाहरण स्वयं ही है। गुरु जी ने अपना कुल जीवन मानवता के कल्याण को अर्पित कर दिया। उनकी असीम देन को मानवता उनकी महिमा-गायन करते हुए उनके द्वारा दर्शाये नये-निराले गुरमति-मार्ग को अपना कर तथा अन्य विभिन्न ढंगों से सिर झुकाती है। मानवता का एक अत्यंत संवेदनशील हिस्सा हैं हमारे 'कवि-जन'। गुरु-काल से आधुनिक काल तक विभिन्न भाषाओं के अनेकों कवियों-कवयित्रियों ने युगपुरुष गुरु जी की अपने-अपने अनुभव तथा क्षमता अनुसार उनके जीवन का वृतांत और उनके व्यक्तित्व का वर्णत करते हुए महिमा की है। वे सभी अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं। यहां बीसवीं, इक्कीसवीं सदियों के तीन पंजाबी कवियों की गुरु जी की महिमा में रची काव्य-कृतियों पर अत्यंत संक्षिप्त विचार करने का छोटा-सा प्रयास किया जा रहा है। इसलिए कि हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि के ज्ञाता पाठक इन काव्यों के विषय-वस्तु तथा भावावेश एवं संवेदना से परिचित हो सकें।

पहला काव्य पंजाबी भाषा और गुरमुखी लिपि में रचित पंजाबी के बीसवीं सदी के एक विख्यात कवि स. अवतार सिंघ आजाद द्वारा रचित है। आजाद जिला अमृतसर के गंडीविंड गांव में मार्च १९०६ में जन्मे। ये अपने समय के एक प्रसिद्ध पत्रकार और दस स्वीकृत पंजाबी पत्रिकाओं के समय-समय संपादक रह चुके थे। इनका अनुभव गहरा और जीवन-तजुर्बा बहुत व्यापक होने के कारण इन्होंने महाकाव्य जैसी बहुत ऊंची विधा को हाथ में लिया, सकुशलता सहित निभाया और पंजाबी महाकाव्य के दामन को मालामाल किया। आपके द्वारा रचित चार महाकाव्य हैं : 'मरद अगंमड़ा' (१९५१), 'विश्व नूर' (१९५७), 'महाबली' (१९५९), 'रत्त का कुंगू' (१९६७)

इनमें से 'विश्व नूर' गुरु नानक साहिब के जीवन एवं व्यक्तित्व पर आधारित है। गुरु जी का जीवन एवं व्यक्तित्व अपने आप में बाकमाल है। इसको बाकमाल रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य आजाद जी के हिस्से आया है। काव्य-रचना में आवेश का सदुपयोग हो सके तो सोने पर सुहागे वाली अनुकूलता की आशा होती है। आजाद जी ने इसका आवश्यक ध्यान रखते हुए यह रचना आवेश की मनोस्थिति में रची है। उन्होंने 'विश्व नूर' को वस्तुत: अपनी अंतर-प्रेरणा का प्रतिउत्तर देते हुए बहुत मनमोहक तथा रसमयी रूप में रचा है। आजाद द्वारा स्वयं नि:संकोच रहस्यो-दघाटन किया गया है कि 'मरद अगंमड़ा' की रचना के बाद वे तत्काल

**सहायक संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश*

'विश्व नूर' रचना चाहते थे, परंतु इसको आशय अनुसार रचने हेतु उनको आवेश की प्रतीक्षा करनी पड़ी। दूसरे शब्दों में जब हृदय तथा मन-मस्तिष्क इच्छित रूप में अन्य सभी व्यस्तताओं तथा सरोकारों को छोड़कर गुरु-जीवन एवं व्यक्तित्व पर केंद्रित हुए, तभी उन्होंने कलम हाथ में पकड़ी और रचना-प्रवाह प्रवाहित किया।

वस्तुत: समस्त महाकाव्य ही विह्वल भावावेश में रचा गया है। भावावेश में रचा होने के कारण यह हमें ऊंचा रस तथा आनंद प्रदान करता है। यह महाकाव्य शांत रस और अद्भुत रस से पूर्णत: भीगा हुआ है। महाकाव्य के नायक गुरु नानक साहिब के जग-तारक कल्याणकारी व्यक्तित्व और उनके सभी ओर ठंडक बरताने वाले मनोभावों और विचारों के निरंतर प्रवाह से इस महाकाव्य का पाठक शांत रस और अद्भुत रस के प्रवाह में अपने चौगिर्दे को विस्मृत कर देगा। फिर विषय तथा प्रसंग के अनुसार करुणा रस का प्रवाह भी कई जगह महसूसा जा सकता है। पीड़ित जनसाधारण के प्रति गुरु बाबा जी की असीम सहानुभूति का मनोभाव इस करुणा रस का आधारभूत प्रेरक बनता है।

महाकाव्य 'विश्व नूर' को आजाद ने कुल बीस सर्गों अथवा अध्यायों में प्रस्तुत किया है। पहले सर्ग में गुरु जी के मातलोक में प्रकाश होने, उनके बालपन के चोजों और विद्या-प्राप्ति आदि का काफी विस्तृत तथा मनोहर वृत्तांत व वर्णन मिलता है। कवि राय भोय की तलवंडी की भाव-भीनी उपमा से महाकाव्य का आरंभ करता है :

रावी अते झनां रस-रती, जिस नूं लइआ कलावे,
जिस दे सुहज सुवंने उत्तों, दाता नूर लुटावे।
(पृष्ठ ३)

गुरु जी का प्रकाश वैसाख मास में लिखा है जिसकी पुष्टि हेतु फुट नोटों में प्रो. करतार सिंघ द्वारा रचित 'सिक्ख इतिहास' और 'पुरातन जन्म-साखी' का संबंधित उल्लेख करते हुए कवि मूल विषय पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का पक्षधर सिद्ध होता है। वस्तुत: गुरु जी का प्रकाश पर्व कार्तिक पूर्णिमा को मनाने की एक काफी लंबी परंपरा विद्यमान है।

कवि आजाद ने गुरु जी का प्रकाश चमत्कारी अथवा करामाती ढंग में न दर्शाकर उनकी मनोहर मुख-आकृति को सुंदर कलात्मक रूप में वर्णन किया है जिससे आजाद का यथार्थ उन्मुख विचारधारा का पक्षधर होना प्रतिबिंबित होता है:

किंना रूप अनूप ए, लख चंदों दहि चंद,
की रस-रत्ते नैण ने, डोलन्ह रस आनंद।
लिशके तप मत्थे उत्तों, मुखड़ा मनों गुलाब,
नजरां दे विच लिशकणी, हंसों उजली आब।
(पृष्ठ ४)

बाल गुरु नानक के मनोहर रूप को देखकर दौलतां दाई आचंभित होती है तथा मां तृप्ता को बधाई देती है। पिता श्री महिता कालू को प्रसन्नता में प्रभु को धन्यवाद देते दर्शाया है। इस अवसर पर पिता अपनी पुत्री नानकी जी को हृदय से उपजा पैतृक प्यार-दुलार प्रदान करते हैं :

नाल गले दे घुट्ट के, मुसके कालू चंद,
पावां वीरे वालीए, मूंह तेरे विच खंड।

वस्तुत: पुत्र-जन्म का अवसर भारतीय समाज में विशेषत: एक असीम हर्ष का अवसर है और पिता श्री महिता कालू इसी समाज के प्रतिनिधि हैं। कवि ने महिता जी की ईमानदारी को विशेष रूप में अंकित करके उनका समूचा व्यक्तित्व एक यथार्थवादी दृष्टि से उसारा है अथवा उनकी बेहद सांसारिक वृत्ति के अवगुण के साथ कुछ गुण भी दर्शाये हैं। यह स्वाभाविक

पात्र-चित्रण सुनिश्चित करता है।

महिता कालू जी के घर पुत्र के जन्म के अवसर पर गृह अथवा कुल पुरोहित पंडित हरदिआल आते हैं। पंडित जी जन्म लेने वाले बालक के गुरु-रूप में जगत का सुधार करने की भविष्यबाणी करते हैं। यूं पंडित हरदिआल का पात्र भी महाकाव्य की प्रकृति के अनुरूप ऊंचाइयों को स्पर्श करता है।

कवि ने बाल-गुरु के विस्मादी चोजों का अत्यंत मनोहर विवरण भाव-भीने रूप में दिया है। बाल-गुरु 'अमीं' शब्द उच्चारण करते, नयन बंद करते, चौकड़ा लगाते हैं। घर की वस्तुएं खुले दिल से द्वार पर आये साधु-अभिलाषियों को देते हैं तो माता-पिता अपनी सांसारिक दृष्टि से इसका बुरा मनाते और उनको रोकते हैं। यूं बाल-गुरु जी का बाल-आयु में ही सांसारिक वृत्ति के धारक परिवार के मंच पर समय के समाज के साथ टकराव शुरू होता है। यही आने वाले समय में समाज-कल्याण के पीछे कार्यशील है।

छात्र गुरु नानक देव जी के विद्या-प्राप्ति के विभिन्न प्रसंगों के द्वारा उनके द्वारा जहां निर्धारित पाठ्यक्रम कुशलता सहित शीघ्र ही संपूर्ण करके अपने शिक्षकों के साथ संवाद रचाया गया है वहां तत्कालीन शैक्षिक व्यवस्था में अध्यात्म ज्ञान के अभाव का संकेत है। सभी शिक्षक पांधा, पंडित बैजनाथ और मौलवी अबुलकलाम उनके अध्यात्म-ज्ञान के समक्ष नत्मस्तक होते हैं।

दूसरे कांड में गुरु जी भैंसें चराते हैं तो भैंसों द्वारा कृषक के खेत का नुकसान होने पर उसको सभी जीव-जंतुओं को प्यार के भाव सहित सहन् करने की प्रेरणा देते हैं :

मित्रा, एना रिंज न हो तूं, जेरा कर, घबरा ना, . . .
जिस मालक पैदा तूं कीता, एह वी उस दीआं जाईआं,
चर गईआं तद वी की होइआ, उस दीआं बेपरवाहीआं। *(पृष्ठ २७)*

वैसे आजाद जी द्वारा खेत हरा-भरा होने की साखी के मूल रूप को भी पूर्णत: विश्वास के साथ वर्णन किया गया है। इस तरह साखी परंपरा और मौलिक गुरमति चिंतन का अच्छा समायोजन किया है। आगे भी विभिन्न साखियों के प्रसंग में यही व्यवहार दृष्टिगोचर होता है।

देश और समाज की चिंताजनक स्थिति पर अधिक चिंतन करते श्री गुरु नानक देव जी को माता-पिता बीमार समझ लेते हैं और वैद्य को बुलाते हैं। दरअसल बीमार तो समाज था। गुरु जी इस बीमार समाज के लिए कारगर वैद्य बन कर पहुंचे।

तीसरे सर्ग में व्यापार करने के लिए भेजे गए गुरु जी द्वारा कई दिनों से भूखे साधुओं को व्यापार के लिए दिये गए बीस रुपयों से भोजन कराने का सच्चा सौदा करते वर्णन किया है। सांसारिक वृत्ति की शिखर पर पहुंचे पिता श्री महिता कालू पुत्र गुरु नानक देव जी को इस सच्चे सौदे पर जोर से तमाचे लगाते हैं तो बहिन नानकी जी भाई नानक जी के बचाव हेतु आगे आने का साहस करती हैं। राय बुलार भी महिता कालू जी को पुत्र की महान आत्मा को पहचानने का परामर्श तथा शिक्षा देता है। वस्तुत: बहिन नानकी जी और राय बुलार ही मात्र दो ऐसे व्यक्तित्व हैं जो गुरु नानक साहिब के महान व्यक्तित्व और जीवन-उद्देश्य को समझ सकते हैं।

चौथे सर्ग अथवा कांड में नवाब दौलत खान लोधी का यथार्थवादी चित्रण उस युग अनुरूप भी है और गुणों-अवगुणों का मिश्रण भी। भाईआ जैराम जी गुरु नानक साहिब को

सुलतानपुर के इस नवाब के मोदीखाने का मोदी लगवाते हैं। मोदी होने की सभी आवश्यक योग्यतायें आप जी में होने के कारण आप सफल मोदी सिद्ध होते हैं। इससे माता-पिता खुश होते हैं परंतु देश तथा समाज की बहुपक्षीय गिरावट वाली स्थिति आपको अंत में यह सरकारी नौकरी छोड़ने पर विवश कर देती है। इसमें तत्कालीन कारण विरोधियों की शिकायतें भी बनती हैं परंतु लेखा होने पर गुरु जी की ईमानदारी सिद्ध हो जाती है। अब गुरु जी अपना जीवन मानवता के कल्याण हेतु लगाने का निश्चय कर लेते हैं।

सुलतानपुर रहते ही गुरु नानक साहिब गृहस्थ धर्म में प्रवेश करते हैं। यह गुरु जी के गुरमति-मार्ग का महत्वपूर्ण चरण है। सुलतानपुर में आने की सबसे अधिक खुशी बहिन नानकी जी को है। भाईआ जैराम जी उनकी खुशी में ही खुशी मनाते हैं अपितु स्वयं उनके आने का स्वागत भी करते हैं। सुलतानपुर रहते ही गुरु जी के गृह में दो बच्चे--बाबा सिरीचंद और बाबा लखमीदास जन्म लेते हैं। अब यह एक संतुष्ट परिवार है परंतु गुरु जी का जीवन-मिशन परिवार की पालना तक सीमित नहीं। उदासियों अथवा सच-प्रचार यात्राओं पर जाने के समय माता-पिता और ससुर-सास विरोध करते हैं परंतु धीरे-धीरे गुरु जी के महिल माता सुलक्खणी जी पति के महान जीवन-उद्देश्य को समझते हुए उनका घर से बाहर लंबे समय तक रहना हृदय से स्वीकार कर लेते हैं :

सिर निहुड़ा सुलक्खणी जी ने, आखिआ- "जिवें रजाईं।
विचरो सुक्ख नाल जग अंदर, सिर मेरे दे साईं।" *(पृष्ठ ७८)*

उदासियों का वर्णन करने वाला 'विश्व नूर' का कांड ६ से कांड १९ तक का २४० से अधिक पृष्ठों में फैला भाग अत्यंत महत्वपूर्ण और धीरे-धीरे पढ़ने, सुनने, समझने वाला है। उसको खोलकर यहां न लिख पाना इस सीमित आलेख की सीमा है। सर्वप्रथम महत्वपूर्ण भेंट सैदपुर में जाकर भाई लालो द्वारा की जा रही ईमानदार व निर्मल किरत की प्रशंसा और लूट की दौलत एकत्र करके ब्रह्म-भोज का आडंबर रचने वाले सैदपुर के हाकिम मलक भागो के निर्भीक विरोध के कारनामे को अंजाम देते हुए दर्शायी गई है। गुरु जी भाई लालो की रूखी-सूखी को सहर्ष स्वीकारते और मलक भागो की चिकनी-चुपड़ी को नकारते हैं :

अड्डे उत्ते लालो बैठा, भारा तेसा वाहुंदा;
धरम-किरत विच लूं लूं रुझा, सच्चे ताईं धिआउंदा।
मजलूमां दी रत्त विच डुब्बीआं, रत्त दीआं ही बणीआं;
असीं नहीं इह मुंह पा सकदे, बेशक खाए दुनीआं। *(पृष्ठ ८३)*

धर्म के नाम पर पाखंड चलाकर लोगों को लूटने-मारने वाले सज्जन ठग को सुधार कर गुरु जी लोक-कल्याणकारी मार्ग का पथिक 'सिक्ख' बना देते हैं :

इह धन, इह सभ दौलतां, इह सारा ही कुहड़;
तज बुरिआईआं बदां नूं, साहिब दा लड़ लोड़।
(पृष्ठ ९८)

हिंदू तीर्थों कुरुक्षेत्र और हरिद्वार पर तथाकथित पंडितों, ब्राह्मणों द्वारा तथाकथित सुच्च तथा वैष्णोवादी वृत्ति के दिखावे के भीतर उनको उनके वास्तविक लुटेरा किरदार का शीशा दिखाते हैं :

वौंडा मारि होम जग कीए, देवतिआं दी बाणे,
मास छोडि बैसि नकु पकड़हि, राती माणस खाणे। *(पृष्ठ १०९)*
जै गंगे! भागीरथी, तेरी जै जै कार!

बिना समझ बिन मतलबों, नाउंदे रहे उचार।
अंदर है अगिआनता, मूढ़ता विच गइ फस्स,
उस सच साजणहार दी, किधरों पई न दस्स।
(पृष्ठ १११-११२)

पंजाब के हाकिम सिंकदर लोधी से गुरु जी की भेंट जेल में दिखाई है। हाकिम को गुरु जी के निर्भीक सच-प्रचार की सूचना पहुंची थी कि उन्होंने *'राजे सीह मुकदम कुते'* कहा है, *'कलि काती राजे कासाई'* कहा है। जेल में चक्की पीस रहे गुरु बाबा जी सिकंदर लोधी को लोक-कल्याणकारी शासन-प्रणाली का मार्ग दर्शाते हैं:

तख़त दे लाइक उह राजा, जो परजा नूं पाले;
सुख देवे लोकां नूं, रक्खे बंदे नेक सुखाले।
(पृष्ठ १२१)

गुरु जी उदासियों में गृहस्थ मार्ग के निंदक बने बैठे योगियों के साथ कई जगह संवाद रचाते हैं और उनके भटकाव का उनको सच सुनाते हैं, जैसे गोरखमते के योगियों के बारे में कहते हैं:

विहलड़ कंम न कार कुई, मंग खाण, डकराण;
निंदण जिन्हां तईं इह, घर उन्हां दे जाण।
(पृष्ठ १२५)

गुरु जी बनारस के पंडित चतर दास को विद्या के अहंकार से मुक्त करते हैं :

किउं कल्लर नूं वाधू सिंजो, किउं पए समां गवाओ;
रेते विच घिओ काहनूं सुट्टो, किउं पए पुट्ठे राह ओ!
(पृष्ठ १२९)

अर्थात् यदि ज्ञान को जीवन-ढंग तथा व्यवहार का अभिन्न अंग न बनाया जाए तो वह लाभ की जगह उल्टा नुकसान करेगा।

यूं ही विभिन्न उदासियों में गुरु जी के अद्वितीय जीवन-कारनामों का उद्देश्यपूर्ण वृत्तांत तथा वर्णन 'विश्व नूर' महाकाव्य में हुआ है और यह महाकाव्य अंत में यह अनुभूति कराता है कि गुरु जी वस्तुत: विश्व के नूर थे जिन्होंने अज्ञानता के, पाप-कर्मों के, पाखंडवाद के अंधकार को एक बार मिटाकर सभी ओर ज्ञान, शुभ कर्मों और सच्ची प्रभु-भक्ति का प्रचलन सुनिश्चित किया। इस प्रकार यह महाकाव्य गुरु जी के महान जीवन और उनके अद्वितीय व्यक्तित्य का भावभीना चित्रण करता हुआ हमको गुरु जी द्वारा दर्शाये सच-मार्ग के हृदय से अनुगामी बनने के लिए प्रेरित करता है। यह एक बहुत उच्च स्तर का और अति विस्तृत महाकाव्य है जो ३४२ पृष्ठों में संपूर्ण होता है।

(क्रमशः . . .)

कविता

गुरु नानक देव जी

कार्तिक पूर्णिमा के दिन हुआ,
जिनका जग में अवतार।
गुरु नानक ने है दिया,
विश्व को प्रभु-नाम उपहार।
भक्ति-भावना से भीगे-भीगे,
उनके थे उच्च विचार।
सरलता और सरसता उनकी,
भाषा के गुण अपार।

लिखा उन्होंने सत्य जीवन का,
इस दम का भला क्या भरोसा।
आया-आया, न-आया-न-आया,
कहीं देखा, कहीं नहीं दिखाया।
मस्तक ऊंचा हुआ हिंद का,
जग में गूंजी उनकी बाणी।
आज उन गुरु के चरणों में,
अर्पित कविता कल्याणी।

-प्रो डॉ दीननाथ 'शरण', दरियापुर गोला, पटना-८०००४ (बिहार)।

'गुर रतनावली' में श्री गुरु नानक देव जी सम्बंधी ऐतिहासिक जानकारी

*-डॉ. मनविंदर सिंघ**

'गुर रतनावली' कृत कवि भाई तोला सिंघ भल्ला १७७६ ई (१८३३ वि.) के लगभग लिखी गई रचना है। इसे इसी आलेख के लेखक द्वारा वर्ष १९९५ में संपादित करके पुस्तक रूप में पाठकों की भेंट किया जा चुका है। इस रचना में दस गुरु साहिबान की शख्सियत, गुण, स्वभाव, उनकी सांसारिक एवं आध्यात्मिक प्राप्तियां, उनके जन्म, वंशज, गुरुआई का समय, ज्योति जोत समाने की तारीखें, प्रसिद्ध शहरों के बारे में विवरण और महत्वपूर्ण घटनाएं आदि अंकित हैं। सारी रचना में लेखक ने एक इतिहासकार की विधि नहीं अपनाई बल्कि एक कवि होने के नाते सांकेतिक रूप में ही ऐतिहासिक जानकारी दी है। यह सारी रचना एक साधारण स्तर की काव्य-रचना है।

कवि तोला सिंघ के जीवन-काल के बारे में पर्याप्त सूचना नहीं मिलती, लेकिन यह स्पष्ट है कि कवि तोला सिंघ श्री गुरु अमरदास जी की नौवीं पीढ़ी में से थे। आप बाहड़ मल के पुत्र तथा भाई सरूप दास भल्ला (लेखक 'महिमा प्रकाश') के छोटे भाई थे। कवि भाई तोला सिंघ एवं भाई सरूप दास भल्ला दोनों को श्री गुरु अमरदास जी की वंश में से होने की गवाही इनकी अपनी रचनाओं में ही मिल जाती है :

१. गुर अमर कुलि कूकरो तोलै कहि दीओ नाम।
सिंघ लै कहि रतनावली गुर बहिता उरि धाम।
(गुर रतनावली, पृष्ठ ४४-अ)

२. तब स्री अमरदास कुल चार।
मोहरी सुत सनमुख परवार।
दसो सरूप की महिमा कीना।
सरूप दास गुर चरन अधीना।
(महिमा प्रकाश, हस्तलिखित खरड़ा)

मौजूदा समय में हमें 'गुर रतनावली' के तीन हस्तलिखित खरड़े (मसौदे) प्राप्त होते हैं। इनमें से एक मसौदा डॉ. देविंदर सिंघ विद्यार्थी (नाभा, पटियाला) की निजी लायब्रेरी में पड़ा हुआ है। इस मसौदे का आकार कशमीरी है और पोथी खस्ता हालत में है। 'गुर रतनावली' का दूसरा मसौदा गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर की लायब्रेरी के 'रेयर बुक सेक्शन' में संख्या ८४२ पर उपलब्ध है। 'गुर रतनावली' का तीसरा हस्तलिखित मसौदा भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला की लायब्रेरी में संख्या ३४७ पर संभाला हुआ है। एक अन्य मसौदा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी में संख्या ११५ पर उपलब्ध था मगर यह मसौदा १९८४ में श्री हरिमंदर साहिब पर हुए फौजी हमले में अन्य कीमती ग्रंथों-मसौदों के साथ तबाह हो गया था।

'गुर रतनावली' में अंकित गुरु नानक साहिब वाले अध्याय का अध्ययन कर यह जानने की कोशिश करेंगे कि लेखक ने गुरु जी के जीवन की किन-किन मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जिक्र किया है:

कवि भाई तोला सिंघ 'गुर रतनावली' में गुरु साहिब का जन्म तलवंडी में (बाबा) कालू जी के घर हुआ बताता है। 'गुर रतनावली' में गुरु नानक साहिब की जन्म-तारीख चाहे अंकित नहीं मगर गुरु नानक साहिब जी के ज्योति जोत समाने की तारीख में से गुरु जी की आयु

**गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर।*

के समय को घटा कर जो तारीख निकलती है वो गुरु नानक साहिब जी की जन्म-तारीख ही है, जैसे कि लेखक ने गुरु नानक साहिब की ज्योति जोत समाने की तारीख सं. १५९६, आश्विन सुदी १० (१५९६-०७-१० सुदी) बताई है:

पंद्रां सै छिनवै बरख संमतु बिक्रम राइ।
असू सुदी दसमी तिथै नानक गुरू समाइ।

तथा गुरु साहिब की सांसारिक उम्र को इस प्रकार दर्शाया है :

सत्र बरख अरु सातु दिन मास पाच है जोइ।
कीओ राज नानक गुरू भगति गिआन युत होइ।
(गुर रतनावली, पृष्ठ ४१३-अ)

गुरु नानक साहिब की ज्योति जोत समाने की तारीख में से आयु के समय अर्थात् ७० वर्ष, ५ माह, ७ दिन को घटाने के बाद इस स्रोत के अनुसार गुरु नानक साहिब जी की जन्म-तारीख सं. १५२६ वि:, वैसाख सुदी ३ (१५२६-०२-०३ सुदी) बनती है।

लेखक ने गुरु साहिब के पिता का नाम (बाबा) 'कालू' लिखा तथा माता का नाम 'त्रिपता' की बजाय 'तिपरो' बताया है:

बेदी कुल कालू पिता माता तिपरो तास।
(गुर रतनावली, पृष्ठ ४१३-अ)

'गुर रतनावली' के लेखक ने गुरु साहिब की पत्नी नाम 'घुमी' बताया है :

नानक घुमी पते सुत स्री चंद लखमी दास।
(उपरोक्त)

एक अनुमान अनुसार हो सकता है कि 'घुमी' नाम मायके-घर का हो तथा 'सुलक्खणी' ससुराल-घर का।

'गुर रतनावली' के लेखक ने गुरु साहिब के दो पुत्रों सिरीचंद तथा बाबा लखमीदास का जिक्र किया है। जाहिर है कि इनमें से सिरी चंद बड़ा तथा बाबा लखमीदास छोटा पुत्र था।

यह बात भी सिद्ध हो रही है कि जितनी भी 'गुर प्राणलीआं' स. रणधीर सिंघ ने संपादित की हैं वे सब 'गुर रतनावली' के बाद की लिखी हुई हैं। गुर-इतिहास लिखते समय इस रचना में आई सूचनाएं काफी सहायक सिद्ध हुई हैं। सारी रचना में लेखक ने गुरु साहिबान की स्तुति की है। रचना में प्राप्त होती ऐतिहासिक जानकारी चाहे संकेत रूप में ही मिलती है लेकिन ये सूचनाएं वैज्ञानिक इतिहास के अविष्कारकों के लिए अपनी महत्ता रखती हैं।

कविता

मैं गाऊं सोहिले

मैं गाऊं गीत आदि गुरदेव गुरु नानक के।
शबद संजीवन शबद-सुरति माणक के।
कुल जगत का था चक्कर लगाया।
देखा जगत जलंदा, इसकी माया।
शबद-सुरति का संकल्प सजाया।
संपूर्ण मानस की कल्पी काया।
साचा किरत-कर्म जो भी करता जाता।
करता सेवा-साधना सर्व-सुहाता।
दिनस-रैणि सत्य शबद अराधे।
सर्वप्रथम मन अपना साधे।
इसके आगे फिर ही चल पाए।
चार वर्णों के भेदभाव मिटाए।
माहल, पूड़े, रत्त, गरीब ही की पाई।
न बहा पसीना न ही करी कमाई।
मलक भागो के दरबार न जाना।
मान-सम्मान भाई लालो का बढ़ाना।
कोधरे की रोटी अति मीठी लागे।
जैसे भाग्य भाई लालो जी के जागे।
मैं गाऊं गीत आदि गुरदेव गुरु नानक के।
मैं गाऊं सोहिले शबद-सुरति माणक के।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर, मो. : ९४१७१-७५८४६

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-चरित्र को चरितार्थ करती मिहरबान वाली जन्म-साखी

*-स. जसपाल सिंघ, स. प्रेमजीत सिंघ**

किसी विशेष व्यक्ति के जीवन के पूरे इतिहास को लिखित रूप में लाने के कार्य को 'जन्म-साखी' कहा जाता है। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'महान कोश' में 'जन्म-साखी' का अर्थ 'जीवन-वृत्तांत' लिखा है। 'जन्म-साखी' किसी महापुरुष की हो तो वो इतिहास के खोजियों के लिए अति लाभदायक साबित होती है, क्योंकि जन्म-साखी में तारीख, स्थान व आयु आदि की पूरी जानकारी उपलब्ध होती है।

मिहरबान, पांचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के बड़े भाई प्रिथी चंद का पुत्र था। उसका जन्म सं. १६३७ माघ सुदी बसंत पंचमी के दिन हुआ लिखा मिलता है। मिहरबान का नाम चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने रखा था। भाई संतोख सिंघ ने 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में लिखा है कि मिहरबान का श्री गुरु अरजन देव जी के साथ अति स्नेह था। मिहरबान का स्वभाव अपने पिता प्रिथी चंद से काफी अलग होने के कारण वो साधु-संतों की सेवा करने वाला, पढ़ने-लिखने में ज्यादा रुचि रखने वाला था।

गुरु नानक साहिब के जीवन के बारे में सबसे प्राचीन स्रोत मुख्यत: साखियों को ही माना जाता है। मिहरबान ने भी गुरु नानक साहिब के जीवन के बारे में लिखने का जो यत्न किया उसे आज "मिहरबान वाली जन्म-साखी" कहा जाता है। यह जन्म-साखी उसने केशोदास नामक लिखारी से लिखवाई।

'मिहरबान वाली जन्म-साखी' की तीन पोथियां इस प्रकार हैं :

१) पोथी सचखंड, पतरा (पृष्ठ) १ से ३०१ तक है।
२) पोथी हरि जी, पतरा ३०२ से ५२४ तक है।
३) पोथी चतरभुज, पतरा ५२५ से ६७६ तक है।

'पोथी सचखंड' के लिए मिहरबान श्री गुरु नानक देव जी के बारे में लिखवाते रहे और केशोदास ने लिखने का काम बाखूबी निभाया। इस पोथी का रचना-काल १६१८ ई है जो मिहरबान ने अपने समय में ही पूरी कर ली थी। शेष दो पोथियां उनके पुत्र हरि जी तथा चतरभुज ने उनके देहांत के बाद लिखवाई थीं। ये तीनों पोथियां एक ही जिल्द में हैं तथा इन तीनों पोथियों का विषय भी एक जैसा ही है। इनमें गुरु नानक साहिब के जीवन-वृत्तांत तथा उनकी बाणी की व्याख्या मिलती है। यह बात भी पक्की है कि इन तीनों पोथियों का लिखारी केशोदास ही है। "मिहरबान वाली जन्म-साखी" की शैली बहुत ही श्रद्धात्मक है जिसकी कुछ उदाहरणें इस प्रकार हैं :

"तब गुरू बाबा नानकु कालू कै घरि तिपता कै उदरि बेदी के बंसि खत्री कै जनम पंजाब की धरती चाहला वाले, संमत १५२६ वैसाखि मासि थिति त्रितीए चानणी कउ, पहरु राति पिछली रहती कउ अंम्रित वेला जनमु लइआ, कलि कैलि कै बिखै आइ अवतरे, अनाहद शबद वाजे, त्रेतीस करोड़ी देवतिअहु नमसकारु कीआ . . . कई बंदी जन मुकते भए। . . . प्रिथमी कउ बहुत सुखु उपजिआ गुरू बाबे के जनम के साथि . . . जब बालक पंजि छिआं बरसां का हुआ तब खेलै बालकहु साथि अरु बोलै ब्रहम गिआनु, नसीहति दे बालकां कउ अरु वडिआ कउ बिगिआनीआ कउ . . .।"

**गांव-डाक : ढड्ढे, जिला : श्री अमृतसर। मो. ९८५५५-२२५२६*

अत: गुरु नानक साहिब का जन्म-स्थान राय भोय की तलवंडी नामक गांव में हुआ सर्वप्रवानित है मगर इस जन्म-साखी में गुरु जी का जन्म गांव चाहल में हुआ लिखा मिलता है जहां गुरु साहिब की ननिहाल थी। इसके अलावा यह भी नहीं लिखा मिलता कि गुरु साहिब तलवंडी कब आए। इसमें पांच वर्ष की आयु में पांधे के पास तथा आठ वर्ष की आयु में मुल्ला के पास पढ़ने का वर्णन है।

जनेऊ संस्कार के बारे में वर्णन इस प्रकार मिलता है:*"जदों बाबा नौं बरसां दा होइआ तां रीती अनुसार जंझू (जनेऊ) की रस्म अदा करने लगे तो तब गुरू बाबे नानक जी कहिआ जि ए पंडित! खत्री ब्राहमण का धरमु जनेऊ सउ रहता है कि करम करि करि धरमु रहता है? . . . तब गुरू बाबे नानक जी बाणी बोली उपदेसी।" (दइआ कपाह संतोख सूतु . . ॥)*

गुरु साहिब द्वारा दस वर्ष की आयु में भैंसें चराने जाने का विवरण है। खेत को हरा-भरा दिखाने का भी वर्णन मिलता है। पंद्रह वर्ष की आयु में गुरु साहिब के विवाह का जिक्र है और बारात की चढ़ाई तलवंडी राय भोय से हुई दर्शायी है। बाबा सिरीचंद तथा बाबा लखमीदास का जन्म भी तलवंडी का लिखा है। इसके अलावा इस जन्म-साखी में गुरु जी द्वारा तीन उदासियां करने का वर्णन मिलता है, पहली पूरब तथा दक्षिण की, दूसरी उत्तर-पश्चिम की तथा तीसरी केवल पंजाब में ही करने का इशारा किया है।

इस जन्म-साखी में कौडा राक्षस वाली साखी में वर्णन है कि *"तब मरदाने की बेनती सुणि करि गुरू बाबा नानकु दखण की भूमि, राखशां की धरती आए। राखश फड़ि लै गए मरदाने अरु बाबे कउ। लै जाइ करि बाबे नालहु विछोड़ के मरदाने नो कड़ाहे विचि घतिओ कै, कड़ाहा ठंढा होइ गैआ। तब गुरू बाबे आखिआ जि तुसी असाडा भखु अहहु। तब कड़ाहे हेठि अगि बालि रहे, कड़ाहा तपै नाही। सारा दिन लोचि रहे। अगि बले नाही मूले। तब राखश आइ पैरी पए गुरू बाबे नानक जी की। तब गुरू बाबे उना पासहु परमेसरु खिम राइआ। ओइ राखश कीते सिख नानक पंथी हूए। गुरू -गुरू लगे जपण।"*

इस जन्म-साखी की गोसटि नं: ७२ में मिहरबान ने गुरु साहिब का विलायत जाने का भी जिक्र किया है। बाबा मिहरबान जी गुरु-वंश में से होने के कारण गुरु नानक साहिब की बाणी की प्रति इनके पास अवश्य रही होगी, क्योंकि मिहरबान के पुत्र हरि जी तथा चतरभुज ने गुरु नानक साहिब की बाणी के तीन सौ आठ के लगभग शबदों के परमार्थ लिखे हैं। इस प्रकार इन्होंने परमार्थ-प्रणाली का आरंभ किया। प्रत्येक साखी में शबद तथा परमार्थ रच कर गुरु साहिब की बाणी को किसी न किसी के साथ विचार-गोष्ठि करके उच्चारण की बताया है।

समूची जन्म-साखी में भाई बाला जी का नाम एक बार भी नहीं आया। गुरु नानक साहिब द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी की परीक्षा लेने का जिक्र तो आया है मगर गुरु नानक साहिब के ज्योति-जोत समाने का जिक्र नहीं आया। इस जन्म-साखी में प्रत्येक विचार-गोष्ठि (गोसटि) के आखिर में बाबा मिहरबान तथा उनके पुत्रों ने अपने श्लोक दर्ज किए हैं, जिनमें 'दास नानक' या 'जनु नानक' आदि पद लिखे हैं जो गुरबाणी होने का भ्रम पैदा करते हैं।

निष्कर्षत: इस जन्म-साखी में बेशक गुरमति की कसौटी पर खरी न उतरती कई बातें दर्ज हैं, 'कच्ची बाणी' भी दर्ज है, मगर फिर भी 'मिहरबान वाली जन्म-साखी' में से गुरु नानक साहिब के जीवन के अनेक पहलुओं की ऐतिहासिक जानकारी मिल जाती है। पाठक वर्ग इस जन्म-साखी से गुरमति ज्ञान-चक्षुओं द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में सहजता से जान सकता है।

पाकिस्तान में श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित ऐतिहासिक स्थान : गुरुद्वारा साहिबान

*-बीबा मनमोहन कौर**

श्री गुरु नानक देव जी ने जनसाधारण को अंधकार में से निकालने के लिए लगभग २५ वर्ष तक लम्बी प्रचार-यात्राएं कीं। उनकी इन लम्बी प्रचार-यात्राओं को उदासियां कहा जाता है। अपनी इन उदासियों के दौरान वे भारत, पाकिस्तान के अलावा चीन, बंगला देश, श्रीलंका, इराक तथा अफगानिस्तान आदि देशों में गए। गुरु जी ने इन क्षेत्रों में सिक्खी के प्रचार के लिए प्रचारकों को नियुक्त किया तथा जहां-जहां भी गुरु जी ने पड़ाव किया संगत ने वहीं पर गुरु जी की याद को ताजा रखने हेतु उनकी स्मृति में गुरुद्वारा साहिबान का निर्माण करवाया। वैसे तो गुरु नानक साहिब के प्रचार संदेशों में भी यह बात शामिल होती थी कि संगत एक धर्मशाल बनाए और वहां पर आए हुए अतिथि की सेवा-संभाल के अलावा लंगर आदि का योग्य प्रबंध किया जाए। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के समय ये धर्मशालाएं काफी विकसित हो चुकी थीं तथा ये अतिथि-गृह के अलावा भजन-बंदगी करने का केंद्र भी बन गई थीं। छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय से 'धर्मसाल' को 'गुरुद्वारा' के नाम से पुकारा जाने लगा। गुरुद्वारा अपने नाम से अपने अर्थ को स्पष्ट करता है कि गुरु+द्वारा= गुरु का दर, घर। 'गुरशबद रतनाकर महान कोश' के कर्त्ता भाई काहन सिंघ नाभा के अनुसार सिक्खों के गुरुद्वारे शिक्षार्थियों के लिए स्कूल, रोगियों के लिए शफाखाना, आत्म-जिज्ञासा वालों के लिए ज्ञान-उपदेशक-आचार्य, भूखों के लिए अन्नपूर्णा, स्त्री जाति की इज्जत रखने के लिए लोह दुर्ग तथा मुसाफिरों के लिए विश्राम-स्थल हैं।

आज के इस विषय में हम गुरु नानक साहिब से सम्बंधित उन गुरुद्वारा साहिबान का वर्णन करेंगे जो अब पाकिस्तान में स्थित हैं और १९४७ के देश के बंटवारे के समय हम भारतवासियों से दूर चले गए। सिक्ख तब से ही अपनी अरदास में पंथ से बिछुड़े गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन-स्नान की इच्छा व्यक्त करता आ रहा है।

पाकिस्तान के गुरुद्वारा साहिबान का वर्णन करें तो सर्वप्रथम मुख्य रूप से ननकाणा साहिब का जिक्र आता है। गुरु जी के पवित्र नाम पर गुरु जी के प्रकाश-स्थल गांव को ननकाणा साहिब के नाम से पुकारा जाता है। दूसरे शब्दों में ननकाणा साहिब का प्राचीन नाम 'राय भोय दी तलवंडी' था। गुरु नानक साहिब के आगमन पर इस स्थान का नाम पहले 'नानकिआणा' हो गया तथा यूं हीं समय-अंतराल पर 'ननकाणा साहिब' के नाम से आज हर नानक नाम लेवा सिक्ख की जुबान पर श्रद्धापूर्वक आकर गुरु नानक साहिब की याद ताजा करवाता है। आओ, ननकाणा साहिब में स्थित गुरु नानक साहिब से संबंधित गुरुद्वारा साहिबान के अलावा पाकिस्तान के अन्य क्षेत्रों में स्थित गुरु जी की याद में निर्मित गुरुद्वारा साहिबान के बारे में ज्ञान प्राप्त करें:

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी

यह वो पावन स्थान है जहां पर श्री गुरु नानक देव जी का जन्म श्री महिता कालू जी

**८३६३, गली नं: २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर। मो : ९८१४८-९८१२४*

के घर माता त्रिपता जी के उदर से हुआ। इस गुरुद्वारा साहिब का निर्माण सर्वप्रथम गुरु साहिब के सपुत्र बाबा लखमीदास तथा बाबा धरमचंद ने करवाया। तब इसे कालू का कोठा कहा जाता था, बाद में नानकिआणा तथा अब ननकाणा साहिब के नाम से विश्व-विख्यात हुआ। वर्तमान गुरुद्वारा साहिब की जो इमारत है वो महाराजा रणजीत सिंघ ने बनवाई थी। पाकिस्तान के प्रसिद्ध लेखक जनाब इकबाल केसर के अनुसार गुरुद्वारा साहिब के नाम ९२४ एकड़ जमीन है जो ननकाणा साहिब में स्थित है। इसके अलावा लगभग ८३८ एकड़ तथा ६ दुकानों की तथा और भी जायदाद है जो कि गुरुद्वारा साहिब के नाम है। गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध पहले उदासी महंतों के पास रहा, बाद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास आ गया। आज़ादी के बाद पाकिस्तान अलग देश बन जाने से, यहां का प्रबंध पाकिस्तान वक्फ बोर्ड के पास चला गया। इस स्थान पर एक कुआं है जिसे बेबे नानकी जी का कुआं कहा जाता है। यहां पर जंड का एक यादगारी अथवा ऐतिहासिक पेड़ भी है जिसके साथ स. लछमण सिंघ धारोवाली को महंत नरैण दास ने उल्टा बांध आग लगाकर शहीद कर दिया था। प्रत्येक वर्ष सिक्ख संगत के बड़े जत्थे विशेषत: श्री गुरु नानक देव जी के जन्म-पर्व पर विश्व भर से इस पावन स्थान पर नत्मस्तक होने आते हैं।

गुरुद्वारा बाल लीला, ननकाणा साहिब

गुरुद्वारा बाल लीला साहिब गुरुद्वारा जन्म-स्थान से लगभग ३०० मीटर दूरी पर दक्षिण-पूर्वी सिरे पर स्थित है। यहां गुरु साहिब बचपन में खेलते रहे हैं। गुरुद्वारा साहिब के पूर्व की तरफ एक तालाब है, जो राय बुलार ने खुदवाया था। इसकी पहली इमारत और सरोवर को महाराजा रणजीत सिंघ की आज्ञा से बाबा गुरबखश सिंघ ने पक्का करवाया था। बाद में इस गुरुद्वारा साहिब की चारदीवारी संत गुरमुख सिंघ (पटियाला) ने करवाई। गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल पाकिस्तान का वक्फ बोर्ड कर रहा है। यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नहीं होता, यादगार के तौर पर केवल इमारत ही मौजूद है।

गुरुद्वारा पटी साहिब, ननकाणा साहिब

गुरुद्वारा पटी साहिब, गुरुद्वारा बाल लीला के पास ही है। यहीं गुरु साहिब को पांधे पंडित गोपाल दास से हिंदी, पंडित ब्रिज लाल से संस्कृत और तलवंडी के मौलाना कुतुबदीन से अरबी, फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया। गुरु साहिब के आत्मिक ज्ञान के आगे इन उस्तादों ने भी श्रद्धापूर्वक शीश झुकाया। गुरु साहिब ने यहीं पर 'आसा राग' में 'पटी' बाणी उचारी थी। इस गुरुद्वारा साहिब को 'गुरुद्वारा मौलवी पटी' भी कहा जाता है। इस गुरुद्वारा साहिब में अफगानिस्तान से प्रवास करके आए सिक्ख परिवारों के बच्चों की शिक्षा के लिए 'गुरु नानक स्कूल' चल रहा है। यहां गुरमुखी लिपि व पंजाबी भाषा में शिक्षा दी जाती है।

गुरुद्वारा किआरा साहिब, ननकाणा साहिब

गुरुद्वारा किआरा साहिब, गुरुद्वारा बाल लीला से दो किलोमीटर पूर्व की तरफ स्थित है। यह वो स्थान है जहां गुरु नानक साहिब अपने मवेशियों को चरागाह में ले जाया करते थे। इसी स्थान के साथ आपके मवेशियों के द्वारा क्षतिग्रस्त फसल को आप जी द्वारा हरी-भरी करने की घटना जुड़ी हुई है। गुरुद्वारा साहिब के नाम ४५ मुरब्बे जमीन लगी हुई है। पहले सिक्ख राज्य के समय और बाद में बाबा गुरमुख सिंघ जी ने गुरुद्वारा साहिब का निर्माण करवाया। यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का

प्रकाश नहीं होता, यादगार के तौर पर केवल इमारत ही मौजूद है।

गुरुद्वारा माल जी साहिब, ननकाणा साहिब

इस स्थान पर गुरु नानक साहिब चरागाह में मवेशियों को चराया करते थे। यह स्थान गुरुद्वारा जन्म स्थान से डेढ़ किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित है। यहां वे वृक्ष आज भी मौजूद हैं जिनको वण कहते हैं और जिनकी छाया में गुरु जी विश्राम किया करते थे। इस गुरुद्वारा साहिब का निर्माण पहले दीवान कौड़ा मल ने और बाद में महाराजा रणजीत सिंघ के समय हुआ। गुरुद्वारा साहिब के पास ही सरोवर है, जो जमीन से पांच फुट ऊंचा है। गुरुद्वारा साहिब के नाम तीन हजार एकड़ जमीन है। आजकल यहां प्रकाश नहीं होता, यादगार के तौर पर केवल इमारत ही मौजूद है।

गुरुद्वारा तंबू साहिब, ननकाणा साहिब

गुरुद्वारा तंबू साहिब, गुरुद्वारा जन्म स्थान से एक किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित है। यहां पर श्री गुरु नानक देव जी ने चूहड़काणा के भूखे साधुओं को खाना खिला कर उनके साथ विचार-गोष्ठि कर, सच्चा सौदा करने के उपरांत भाई मरदाना जी समेत ननकाणा साहिब में वण के एक वृक्ष के नीचे आकर बैठे थे। यह वृक्ष आज भी मौजूद है और तंबू की तरह दिखाई पड़ता है, इसलिए इस गुरुद्वारा साहिब का नाम 'तंबू साहिब' प्रसिद्ध है। आजकल यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नहीं होता, यादगार के तौर पर केवल इमारत ही मौजूद है।

गुरुद्वारा सच्चा सौदा साहिब, चूहड़काणा

पाकिस्तान के जिला शेखूपुरा में गांव चूहड़काणा में गुरुद्वारा साहिब सच्चा सौदा सुशोभित है। गुरु जी को उनके पिता श्री महिता कालू जी ने बीस रुपए देकर व्यापार करने के लिए भेजा। जब गुरु जी चूहड़काणा पहुंचे तो उन्होंने वहां पर भूखे साधुओं को, व्यापार करने के लिए मिले पैसों से खाना खिला कर सच्चा सौदा किया था। महाराजा रणजीत सिंघ के समय इस गुरुद्वारा साहिब की इमारत का निर्माण किया गया था। इस गुरुद्वारा साहिब के नाम १२५ एकड़ जमीन है।

गुरुद्वारा सचखंड, चूहड़काणा

गांव चूहड़काणा में ही एक ओर श्री गुरु नानक देव जी की आमद की याद में गुरुद्वारा सचखंड साहिब सुशोभित है। गुरुद्वारा साहिब की हालत बहुत जर्जर है। पाकिस्तान सरकार को इस ऐतिहासिक स्थान की महत्ता को ध्यान में रखते हुए शीर्घ ही इसकी मुरम्मत की तरफ ध्यान देना चाहिए। यदि ऐसे स्थानों की संभाल न की गई तो इनका जिक्र मात्र पुस्तकों तक ही सीमित रह जाएगा।

गुरुद्वारा रोड़ी साहिब, ऐमनाबाद

गुरुद्वारा रोड़ी साहिब ऐमनाबाद शहर के पास स्थित है। इस स्थान पर श्री गुरु नानक साहिब जी रोड़ां के आसन पर विराजे थे। इस स्थान पर अब बहुत ही सुंदर गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। सिक्ख राज्य के समय गुरुद्वारा साहिब के नाम ५ हजार की सालाना जागीर के अलावा २२५ एकड़ जमीन लगी हुई थी।

गुरुद्वारा चक्की साहिब, ऐमनाबाद

गुरुद्वारा चक्की साहिब ऐमनाबाद में सुशोभित है। यहां गुरु नानक साहिब को बाबर ने कैद करके चक्की पीसने की सजा लगाई थी। जब बाबर को गुरु साहिब की शख्सियत के बारे में मालूम हुआ तो वह बहुत प्रभावित हुआ। इस गुरुद्वारा साहिब के नाम १४ एकड़ जमीन है।

गुरुद्वारा खूही भाई लालो जी, ऐमनाबाद

गुरुद्वारा खूही भाई लालो जी ऐमनाबाद में गुरु नानक साहिब की यादगार के रूप में सुशोभित है। भाई लालो जी सैदपुर ऐमनाबाद

के रहने वाले एक बढ़ई थे। जब गुरु नानक साहिब यहां आए तो उन्होंने भाई लालो जी के घर निवास किया था। ऐमनाबाद में ही गुरु साहिब ने मलक भागो द्वारा गरीबों का लहू निचोड़ कर एकत्रित किए पैसों से तैयार शाही पकवान को ठुकरा कर भाई लालो जी द्वारा खून-पसीने की मेहनत की कमाई से तैयार सादा भोजन ग्रहण करने को प्राथमिकता दी थी। यहां पर गुरु जी के कर-कमलों की पवित्र छोह प्राप्त एक कुआं आज भी मौजूद है।

गुरुद्वारा नानक गढ़, बदामी बाग, लाहौर

पाकिस्तान में लाहौर के पास बदामी बाग है। यहां गुरु नानक साहिब की याद में गुरुद्वारा नानक गढ़ सुशोभित था। सिक्ख इतिहास के अनुसार इस स्थान पर गुरु साहिब ने भाई दुनी चंद के पिता को उपदेश देकर मुक्ति का रास्ता प्रदान किया था। इस स्थान का प्रबंध स्थानक महंत किया करते थे। गुरुद्वारा साहिब का जिक्र अब केवल इतिहास के पन्नों पर ही मिलता है।

गुरुद्वारा साहिब पातशाही पहिली, लाहौर

गुरुद्वारा साहिब पातशाही पहिली लाहौर में गुरु नानक साहिब जी की आमद की याद में सुशोभित है। सिक्ख इतिहास के अनुसार यहां पर गुरु जी सन् १५७० को अपने प्रेमी दुनी चंद के घर विराजे थे। यह ऐतिहासिक स्थान लाहौर-दिल्ली दरवाजे के भीतर चौहटा मुफती बाकर में सुशोभित है। इस स्थान को उस समय सिरीआं वाला बाजार या चौहटा जवाहर मल कहा जाता था। यहां गुरु साहिब ने दुनी चंद को फोकट के कर्मकांड न करने की शिक्षा देकर एक अकाल पुरख की उसतति करने की प्रेरणा दी थी। इस ऐतिहासिक स्थान पर गुरु नानक साहिब की केवल तस्वीर ही सुशोभित की गई है।

गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब धर्मपुरा, लाहौर

श्री गुरु नानक देव जी की पवित्र चरण-स्पर्श प्राप्त गुरुद्वारा चुबच्चा साहिब लाहौर शहर के धर्मपुरा मुहल्ला में स्थित है। गुरु नानक देव जी ने जिस तालाब से अपने पांव धोये थे, संगत ने उस स्थान पर गुरुद्वारा साहिब सुशोभित कर दिया। गुरुद्वारा साहिब की इमारत की हालत आजकल बहुत जर्जर है।

गुरुद्वारा डेहरा जन्म स्थान बेबे नानकी जी, चाहल

पाकिस्तान में लाहौर से १५ किलोमीटर दूर दक्षिण-पूर्व दिशा में गांव चाहल मौजूद है। यहां गुरु नानक साहिब की ननिहाल थी। गुरु साहिब की बहन बेबे नानकी जी का जन्म भी १५२१ ई में इसी गांव में हुआ था। गुरु नानक साहिब कई बार इस गांव में आए। गुरुद्वारा डेहरा चाहल असल में बाबा रामा जी (माता त्रिपता जी के पिता) का घर है। इस गुरुद्वारा साहिब को जन्म स्थान बेबे नानकी जी भी कहा जाता है। इस गुरुद्वारा साहिब के नाम १५ एकड़ जमीन है।

गुरुद्वारा लूहड़ा साहिब, घविंडी

पाकिस्तान के जिला लाहौर के गांव घविंडी में गुरु नानक साहिब का ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा लूहड़ा साहिब सुशोभित है। 'महान कोश' के अनुसार गुरु साहिब गांव जाहमण से चल कर यहां आए थे। गुरु साहिब के समय यहां लूहड़े का वृक्ष होता था, जिससे गुरुद्वारा साहिब का नाम लूहड़ा साहिब प्रसिद्ध हो गया। गुरु नानक साहिब ने इस गांव में वणजारों को अकाल पुरख की रजा में रहने का उपदेश दिया और यहीं पर ही उन्होंने सिरीरागु में शबद अथवा पहरे बाणी का उच्चारण किया था। गुरुद्वारा साहिब के नाम २० बीघा जमीन है।

गुरुद्वारा रूड़ी साहिब पातशाही पहिली, जाहमण

गुरुद्वारा रूड़ी साहिब पातशाही पहिली पाकिस्तान के जिला लाहौर के गांव जाहमण से आधा किलोमीटर

की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि गुरु नानक साहिब इस गांव में तीन बार आए थे। गुरुद्वारा रूड़ी साहिब, पातशाही पहिली गांव की पूर्व दिशा में स्थित है। गुरुद्वारा साहिब के नाम ५० एकड़ जमीन लगी हुई है।

गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा, मांगा

श्री गुरु नानक देव जी सिक्खी का प्रचार करते हुए लाहौर से मुलतान के बीच पड़ते गांव मांगा में आए थे। इलाके की संगत ने गुरु जी की आमद की याद में गुरुद्वारा सुशोभित किया जो 'गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा' के नाम से प्रसिद्ध है। बाद में यहां छठी पातशाही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने गुरुद्वारा साहिब के साथ ही सरोवर का निर्माण भी करवाया था। जनाब इकबाल केसर के अनुसार गुरुद्वारा साहिब के नाम ५०० घुमा जमीन लगी हुई है।

गुरुद्वारा पहिली पातशाही, माणक

लाहौर से रायविंड जाने वाली सड़क पर लाहौर से ४५ किलोमीटर की दूरी पर माणक गांव स्थित है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी प्रचार-यात्रा के दौरान इस गांव में ठहरे थे। जिस टिल्ले पर गुरु जी विराजमान हुए थे उस टिल्ले का नाम माणक पड़ गया। यहीं पर इलाके की संगत ने गुरु जी की याद में गुरुद्वारा साहिब की स्थापना की जो आजकल गुरुद्वारा पहिली पातशाही के नाम से प्रसिद्ध है। गांव निवासियों की तरफ से गुरुद्वारा साहिब के नाम ८२ घुमा जमीन लगवाई हुई है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत और सरोवर की हालत जर्जर है।

गुरुद्वारा साहिब, भैलग्राम

पाकिस्तान के जिला कसूर के एक गांव भैलग्राम में गुरु नानक साहिब अपनी प्रचार-यात्रा के दौरान आए थे। गुरु नानक साहिब मांगे से राम थंमण जाते समय इस गांव में ठहरे थे। आप जी की याद में बहुत ही सुंदर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण किया गया है। जनाब इकबाल केसर के अनुसार आजकल गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नहीं होता।

गुरुद्वारा बाबा राम थंमण जी

गुरुद्वारा बाबा राम थंमण जी पाकिस्तान के जिला कसूर में गांव कालूखारा में सुशोभित है। बाबा राम थंमण जी एक साधू थे जो श्री गुरु नानक देव जी की मौसी के पुत्र थे। श्री गुरु नानक देव जी यहां कई बार आए। गुरुद्वारा साहिब के नाम हजारों एकड़ जमीन और जागीर लगी हुई है।

गुरुद्वारा होलां साहिब, भरनावां

गुरुद्वारा होलां साहिब पाकिस्तान के जिला कसूर में गांव भरनावां में गुरु नानक साहिब की आमद की याद में स्थित है। यहीं पर गुरु साहिब को एक सुलतान नामक बालक ने होलां (हरे चने) भून कर खिलाई थीं। यह गुरुद्वारा भाई फेरू से लाहौर की तरफ दो किलोमीटर की दूरी पर मुलतान रोड पर स्थित है। गुरुद्वारा साहिब के नाम ७०० एकड़ जमीन लगी हुई है।

गुरुद्वारा पहिली पातशाही अलपा (छोटा ननकाणा)

पाकिस्तान के जिला कसूर के मांगा गांव के पश्चिम दिशा में २७ किलोमीटर दूर एक गांव अलपा बसा हुआ है। इस गांव में गुरु नानक साहिब अपनी एक प्रचार-यात्रा के दौरान आए थे। यह स्थान पहले अलपा गांव से लगभग चार किलोमीटर बाहर की तरफ था। यहां आजकल छोटा ननकाणा अलपा नाम का गांव आबाद हो चुका है। यहां के गुरुद्वारा साहिब में १९४७ ई से पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता था। इस पावन गुरुद्वारा साहिब के नाम इस गांव और इसके अलावा

अन्य कई गांवों में भारी मात्रा में जागीर लगी हुई है। इस गुरुद्वारा साहिब को गुरुद्वारा पहिली पातशाही (छोटा ननकाणा) कहा जाता था।

गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा, नानक जागीर, जिला उकाड़ा सतघरा

पाकिस्तान के जिला उकाड़ा में एक कसबा 'सतघरा' है। यहां गुरु नानक साहिब की याद में ऐतिहासिक गुरुद्वारा है। गुरु नानक साहिब अलपा से चल कर यहां आए थे। यहां गुरु साहिब ने एक शाहूकार के परथाए *'सहंसर दान दे इंद्रु रोआइआ'* शबद उचारा था। यह स्थान गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा, नानक जागीर, सतघरा जिला उकाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरुद्वारा माल जी साहिब, कंगनपुर

पाकिस्तान के जिला कसूर में कंगनपुर गांव में ऐतिहासिक गुरुद्वारा माल जी साहिब, कंगणपुर स्थित है। गुरु नानक साहिब की इस गांव में आमद की याद में यह गुरुद्वारा बनाया गया था। १९४७ से पहले इस गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल नामधारी सिक्खों द्वारा की जाती रही है। भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के पश्चात यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश नहीं हो रहा।

गुरुद्वारा मंजी साहिब, माणक देके

पाकिस्तान के जिला कसूर में गांव माणक देके है। यह गांव कंगनपुर से दो किलोमीटर की दूरी पर है। जब गुरु साहिब को कंगनपुर के लोगों ने अपने गांव में जगह न दी तो वे वहां से यहां माणक देके चले आए। यहां के लोगों ने उनका बहुत ही आदर-सत्कार किया। गुरु नानक साहिब की आमद की याद में गुरुद्वारा मंजी साहिब गांव से बाहर ही सुशोभित है।

गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा साहिब, हुजरा शाह मुकीम

पाकिस्तान के जिला उमाड़ा में हुजरा शाह मुकीम शहर से बोगा अवान जाने वाली सड़क पर यह पवित्र स्थान सुशोभित है। गुरु नानक साहिब माणक देके से चल कर यहां विराजे थे। इस स्थान को गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा साहिब कह कर याद किया जाता है। इस गांव की १० एकड़ जमीन के अलावा और भी बहुत सारे गांवों की जमीन इस गुरुद्वारा साहिब के नाम लगी हुई है। अब इस ऐतिहासिक स्थान पर केवल एक कुआं और बरगद का एक पेड़ ही दिखाई पड़ता है।

गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा साहिब, दिपालपुर

पाकिस्तान के जिला उकाड़ा में गांव दिपालपुर पड़ता है जिसके दक्षिण-पूर्व दिशा के बाहरवार गुरु नानक साहिब का पवित्र स्थान छोटा नानकिआणा साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब यहां आकर जिस पीपल के वृक्ष के नीचे बैठे थे वह आज भी मौजूद है। यहीं गुरु साहिब ने एक नूरी (नौरंगा) नामी कोहड़ी को स्वस्थ किया था। इस गुरुद्वारा साहिब के नाम से २५ एकड़ जमीन गांव मंचारीआ सिंघां में और एक एकड़ जमीन शहर से बाहर लगी हुई है। गुरुद्वारा साहिब के नाम और भी बहुत सारी जागीर लगी हुई है। आजकल यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नहीं होता।

गुरुद्वारा पहिली पातशाही, पाकपटन

गुरुद्वारा पहिली पातशाही पाकिस्तान के जिला साहीवाल और तहसील पाकपटन के गांव 'खराहट' में स्थित है। इस गांव में गुरु नानक साहिब अपनी एक प्रचार-यात्रा के दौरान आए थे। जिस स्थान पर गुरु साहिब ठहरे थे वहां पर गुरु साहिब की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित किया गया है। १९४७ ई. के बाद से यहां पर प्रकाश नहीं हो रहा और यह गुरुद्वारा साहिब बंद पड़ा हुआ है।

गुरुद्वारा टिब्बा नानकसर, पाकपटन

पाकिस्तान के जिला साहीवाल (मिंटगुमरी)

में पाकपटन एक मशहूर शहर है। पाकपटन का पुराना नाम अजोधन था। जिस स्थान पर गुरु नानक साहिब की मुलाकात बाबा इब्राहिम फरीद सानी से हुई वहां पर गुरु साहिब की याद में गुरुद्वारा टिब्बा नानकसर सुशोभित है जो शहर की पश्चिम दिशा में छ: किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत के अंदर ही बाबा फरीद जी की वंश के एक दरवेश बाबा फतेहउल्ला शाह नूरी चिशती की मजार और मस्जिद है। गुरुद्वारा साहिब की हालत जर्जर है। गुरुद्वारा साहिब का गुंबदनुमा कमरा आज भी मौजूद है जिसके द्वार पर आज भी 'दरबार श्री गुरु नानक देव जी' गुरमुखी लिपि में लिखा हुआ देखा जा सकता है। गुरुद्वारा साहिब के नाम आठ एकड़ जमीन जागीर के तौर लगी हुई है।

गुरुद्वारा साहिब नानकसर, टिब्बा अभोर

गुरुद्वारा नानकसर साहिब पाकपटन-आरिफवाला रोड पर टिब्बा अभोर में सुशोभित है। यह पाकपटन से ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अब इस गांव का पूरा नाम वन ई बी टिब्बा अभोर *(1-E.B. Tibba Abhor)* है। गुरुद्वारा साहिब के बाहर एक सुंदर सरोवर, एक कुआं और एक बाउली मौजूद है। गुरुद्वारा साहिब के नाम पर आस-पास के गांवों में काफी जागीर है। १२ एकड़ जमीन गांव की तरफ से भी लगी हुई है। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य द्वार के ऊपर गुरमुखी में *'सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ'* शब्द उकरे हुए हैं।

गुरुद्वारा साहिब नानकसर, हड़प्पा

पाकिस्तान के जिला साहीवाल (मिंटगुमरी) में पुरातन सिंधु घाटी की संस्कृति से संबंधित शहर हड़प्पा मौजूद है। यह शहर हजरत ईसा से कई हजार साल पहले भी आबाद था, जो प्राकृतिक आपदा के कारण मिट्टी में दफन हो गया। इस मिट्टी के ढेर (थेह) से दक्षिण दिशा की ओर कोई सवा किलोमीटर की दूरी पर श्री गुरु नानक साहिब जी की याद में सुशोभित ऐतिहासिक स्थान 'नानकसर' की बहुत ही सुंदर और आलीशान इमारत दिखाई पड़ती है। इस स्थान के पास ही एक विशाल सरोवर भी है। इस समय इस पवित्र स्थान में कालेज चल रहा है, जो सरकारी कालेज, हड़प्पा के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुद्वारा साहिब के नाम एक विशाल बाग और कुएं के अलावा १० एकड़ जमीन लगी हुई है।

तप स्थान गुरु नानक साहिब, बूरेवाल

पाकिस्तान के मुलतान में जिला विहाड़ी में तहसील बूरेवाल नाम के गांव में आजकल चक्क दीवान साहिब चावली मशाइख है जिसे चक्क हाजी शेर भी कहते हैं। इस स्थान पर दीवान हाजी शेर मुहम्मद की मजार भी है। इस मजार से कोई आधा किलोमीटर की दूरी पर गुरु नानक साहिब अपनी एक प्रचार-यात्रा के दौरान पधारे थे। यहां गुरु जी की आमद की याद में सुंदर दरबार सुशोभित है। इस स्थान को तप स्थान गुरु नानक साहिब कह कर याद किया जाता है। आजकल यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश नहीं होता।

गुरुद्वारा साहिब मखदूमपुर पहोड़ा, तुलंबा

पाकिस्तान के जिला मुलतान में लाहौर-मुलतान सड़क पर गांव तुलंबा मौजूद है। आजकल इसको मखदूमपुरा पहोड़ा भी कहा जाता है। यहां श्री गुरु नानक साहिब का ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा साहिब मखदूमपुर पहोड़ा सुशोभित है। श्री गुरु नानक देव जी पाकपटन से आते समय तुलंबा नामक इस स्थान पर पधारे थे। सिक्ख ऐतिहासिक साखियों के अनुसार यहां यात्रियों के विश्राम के लिए सज्जण और कज्जण नाम के चाचा-भतीजा ने

एक विश्राम घर बनाया हुआ था। वे यहां ठहरने वाले यात्रियों का धन और कीमती सामान चुरा कर उन्हें मार देते थे। गुरु साहिब ने उन्हें ऐसे अपराधिक कार्य न करने की शिक्षा देकर धर्म के मार्ग पर चलने की सीख दी। यहीं गुरु साहिब ने सूही म: १ के निम्न शबद की रचना की थी:

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥

सज्जण पर गुरु जी की शिक्षा और शख्सियत का इतना प्रभाव हुआ कि उसने अपने घर को ही धर्मशाला के रूप में तबदील कर दिया और गुरु नानक साहिब की शिक्षाओं का प्रचार करने लग पड़ा। यह स्थान बहुत ही सुंदर बना हुआ है। इकबाल केसर के अनुसार इस समय गुरुद्वारा साहिब की इमारत में सरकारी स्कूल चल रहा है। गुरुद्वारा साहिब के नाम २५० एकड़ जमीन लगी हुई है।

गुरुद्वारा थड़ा साहिब, मुलतान

मुलतान पाकिस्तान का प्रमुख प्राचीन शहर है। श्री गुरु नानक साहिब जब अपनी एक प्रचार-यात्रा के दौरान मुलतान में आए थे तो उनकी आमद की याद में यहां ऐतिहासिक गुरुद्वारा थड़ा साहिब, मुलतान सुशोभित किया गया। यह पवित्र स्थान शाह शमस रोड पर हजरत शाह शमस सबजवारी की मजार के बरामदे में स्थित है। जब श्री गुरु नानक देव जी यहां पहुंचे तो बड़ी रुकले आलम ने आपकी परीक्षा लेने के लिए आपकी सेवा में दूध का भरा एक कटोरा भेजा, जिसका अर्थ था कि इस स्थान पर पहले ही पीरों-फकीरों की बहुत भीड़ है। इसके जवाब में गुरु साहिब ने उस दूध के कटोरे में फूल की एक पत्ती डाल कर कटोरा वापस भेज दिया, जिसका अर्थ था कि जिस तरह फूल दूध भरे कटोरे में समा गया है, उसी तरह हम भी इस शहर में अपना स्थान बना लेंगे। इसी स्थान पर गुरु साहिब का अनेकों पीरों-फकीरों के साथ विचार-विमर्श हुआ। यहां गुरुद्वारा साहिब की कोई अलग इमारत नहीं है। यहां मजार शाह शमस के बरामदे में ही गुरुद्वारा थड़ा साहिब सुशोभित है। महाराजा रणजीत सिंघ के समय इस बरामदे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता था। बरामदे में गुरुद्वारा थड़ा साहिब आज भी गुरु नानक साहिब की मुलतान-यात्रा की याद में मौजूद है।

गुरुद्वारा थड़ा साहिब, उच्च शरीफ, बहावलपुर

पाकिस्तान के जिला बहावलपुर का एक बहुत प्रसिद्ध शहर उच्च शरीफ श्री गुरु नानक देव जी के पवित्र चरण-कंवलों की मुबारक स्पर्श प्राप्त है। इसकी उतर दिशा में गुरु नानक साहिब की याद में एक कुआं है, जिसको लोग कराड़ी का कुआं कह कर याद करते हैं। यहां गुरु साहिब की पांच यादगारी वस्तुएं पीरों के वंशजों के पास बताई जाती हैं: १. एक जोड़ा खड़ांव २. एक बैरागण, जिसके ऊपर हाथ रख कर विश्राम किया जाता है, ३. पत्थर का एक गुरज ४. दो पत्थर के कड़े और ५. एक बेड़ी, जो डेढ़ फुट लंबी और एक फुट चौड़ी है।

यहां पर गुरु साहिब ने पीरों के साथ विचार-विमर्श किया था। यहां पर गुरु साहिब की याद में गुरुद्वारा थड़ा साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा पहिली पातशाही, शिकारपुर

सिंध प्रांत के सक्खर जिले का एक बड़ा नगर 'शिकारपुर' है। इस नगर में गुरु नानक साहिब का पवित्र स्थान है जिसको सिंधी में 'पूज उदासीआं समाधां आश्रम' भी कहा जाता है। इस स्थान के पास बरगद का वो वृक्ष आज भी मौजूद है जिसकी छाया में गुरु साहिब ने विश्राम किया था। यहां आजकल श्री गुरु ग्रंथ

साहिब जी का प्रकाश होता है। गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध उदासी साधू कर रहे हैं।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, जिंदपीर

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही भी सक्खर गांव में ही स्थित है। रोहड़ी सक्खर, सिंध दरिया के रोहड़ी सक्खर पुल के पास की सड़क पर यह गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब अपनी तीसरी प्रचार-यात्रा के समय सिंध दरिया को पार करके यहां साधुओं के स्थान पर पहुंचे थे। आजकल यह स्थान उदासी साधुओं के पास है।

गुरुद्वारा साधू बेला

यह ऐतिहासिक स्थान सिंध दरिया के टापू में स्थित है। इस स्थान पर जाने के लिए नाव का प्रयोग किया जाता है। जिस स्थान पर गुरु नानक साहिब विराजे थे वहां पर बहुत सुंदर संगमरमर की इमारत का निर्माण किया गया है। यह वो स्थान है जहां गुरु साहिब ने साधुओं का मार्गदर्शन किया था। यहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य द्वार पर 'सिरीराग महला १ घर १' का शबद संगमरमर में उकरा हुआ है। मौखिक इतिहास के अनुसार प्रचलित है कि गुरु जी ने उपरोक्त शबद की रचना इसी स्थान पर की थी। इस समय इस स्थान की देख-रेख वक्फ बोर्ड कर रहा है।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, मीरपुर खास

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही सिंध प्रांत के प्रसिद्ध शहर मीरपुर खास में सुशोभित है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी एक प्रचार-यात्रा के समय इस स्थान पर पधारे थे। आजकल गुरुद्वारा साहिब की सुंदर इमारत के भीतर मतरूका वक्फ बोर्ड का कार्यालय स्थित है।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, कराची

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में एक प्रसिद्ध बंदरगाह व शहर कराची है। श्री गुरु नानक साहिब यहां आए। जिस स्थान पर वे विराजे वहां आजकल जस्टिस कियानी मार्ग है। गुरु जी की आमद की याद में वहां पर गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही शोभायमान है।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, कलिफटन

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही कराची की कलिफटन सैरगाह के पास शोभायमान है। गुरु नानक साहिब के यहां पर पधारने से पहले इस स्थान पर समंदर की देवी का मंदिर था। इस मंदिर के भीतर कोई भी मूर्ति आदि स्थापित नहीं थी, केवल एक दीया ही जलता था जिसकी लोग पूजा करते थे। सिंध के हाकिम तालपुर की तरफ से हर महीने साढ़े सात सेर तेल दीये को जलाने के लिए दिया जाता था। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने इस दीये से आगे गुफा के भीतर अंदर बैठ कर एक अकाल पुरख की आराधना की थी। गुरू जी की आमद की याद और निशानी के तौर पर वह दीया अब भी जल रहा है जिसे अब गुरु-ज्योति कहा जाता है। इस स्थान का प्रबंध नानक-पंथी (सिंधी) करते हैं।

गुरुद्वारा साहिब गुरु नानक दरबार, कलात

कलात, बलोचिस्तान का एक प्रमुख नगर है, जो पहले रियासत कलात के नाम से प्रसिद्ध था। इस नगर में श्री गुरु नानक देव जी का ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार सुशोभित है। यहां हर रोज श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया जाता है। गुरुद्वारा साहिब के नाम काफी जमीन और जागीरें हैं, जो खान कलात की तरफ से लगाई हुई हैं। गुरु के लंगर को भी जागीरें दी हुई हैं जो अभी तक निरंतर जारी हैं। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य प्रवेश द्वार पर अंग्रेजी और उर्दू में 'श्री गुरु नानक दरबार' लिखा हुआ है।

गुरुद्वारा तिलगंजी साहिब, कोयटा

बलोचिस्तान के कोयटा में मस्जिद मार्ग पर गुरु नानक साहिब का ऐतिहासिक गुरुद्वारा तिलगंजी साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब अपनी तीसरी प्रचार-यात्रा के समय यहां पधारे थे। जब गुरु साहिब यहां पर पहुंचे तो स्थानीय लोगों ने आपको बहुत सम्मान दिया। यहीं पर एक सिक्ख ने आपको तिल का प्रशादा छका कर प्रसन्न किया था। इसी कारण गुरुद्वारा साहिब का नाम भी तिलगंजी अर्थात् तिलों का खजाना प्रसिद्ध हो गया। इस समय इस स्थान पर सरकारी संडेमन हाई स्कूल चल रहा है।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, बुलाणी

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में लड़काणा जिले के प्रसिद्ध नगर बुलाणी में गुरु नानक साहिब की याद में गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही सुशोभित है। गुरु नानक साहिब ने इस गांव के लोगों को एक अकाल पुरख की भक्ति करने के लिए प्रेरित किया था। इस गांव में ही नूर नुसरत नामक एक आजड़ी ने गुरु साहिब की बहुत ही तनदेही से सेवा की थी और इसी स्थान पर ही दाऊद नामक एक जुलाहे ने गुरु साहिब को एक सुंदर गलीचा भेंट किया था। गुरुद्वारा साहिब में रोजाना श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है। गुरु का लंगर आजकल भी चल रहा है।

गुरुद्वारा नानकवाड़ा साहिब, कंधकोट : सिंध प्रांत के जैकबाबाद में सर्वन बाजार के भीतर गुरु साहिब की याद में पवित्र स्थान सुशोभित है। इस मोहल्ले को नानकवाड़ा भी कहा जाता है। भाई काहन सिंघ नाभा ने इसको जिला लरकाना का एक नगर लिखा है, जो रोहड़ी रेलवे जंक्शन से १४२ मील की दूरी पर पुराने जिले के भीतर है तथा इसे गुरु नानक साहिब का पवित्र स्थान नानकवाड़ा बताया है। इसको सभी धर्मों के लोग बराबर सम्मान देते हैं। गुरु नानक साहिब अपनी सिंध की प्रचार-यात्रा के दौरान यहां पहुंचे थे। करनल टाड ने अपनी पुस्तक हिस्टरी ऑफ राजस्थान में भी इस गुरुद्वारा साहिब का जिक्र किया है। आजकल इस स्थान को नानक दरबार के नाम से भी याद किया जाता है।

गुरुद्वारा थड़ा साहिब, सखी सरवर

डेरा गाजी खान जिले का एक नगर सखी सरवर है। इस गांव में गुरु नानक साहिब का ऐतिहासिक गुरुद्वारा थड़ा साहिब है। उस समय इस शहर को 'निगाहा' कहा जाता था। जनाब इकबाल केसर के अनुसार, हजरत सखी सरवर की मजार के बरामदे के भीतर ही जगत-गुरु जी की आमद की याद में ऐतिहासिक स्थान सुशोभित है। यह स्थान मस्जिद और मजार के मध्य में स्थित है। अब यहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नहीं होता।

धर्मशाला गुरु नानक देव जी, डेरा इस्माईल खां

धर्मशाला गुरु नानक देव जी डेरा इस्माईल खां शहर में सुशोभित है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी चौथी प्रचार-यात्रा के दौरान यहां पर पधारे थे। जिस स्थान पर आप विराजमान हुए वहीं पर संगत ने धर्मशाला की उसारी कर दी। धर्मशाला की बहुत ही सुंदर इमारत आजकल महिकमा औकाफ के पास है।

गुरुद्वारा साहिब काली देवी, डेरा इस्माईल खां

गुरुद्वारा साहिब काली देवी, डेरा इस्माईल खां शहर में स्थित है। कहा जाता है कि जब श्री गुरु नानक देव जी अपनी चौथी प्रचार-यात्रा के समय यहां पर आए थे तो यहां काली देवी की मूर्ति स्थापित थी और लोग उसकी पूजा करते थे। इस स्थान पर गुरु जी ने लोगों को कर्मकांड का त्याग कर एक अकाल पुरख की आराधना करने के लिए प्रेरित किया। गुरु

नानक देव जी की आमद की याद में उस मंदिर को गुरुद्वारा काली देवी कहा जाने लगा। आजकल गुरुद्वारा साहिब की इमारत के भीतर स्कूल चल रहा है।

गुरुद्वारा साहिब छोटा नानकिआणा, सिकरदू

सिकरदू आजकल पाकिस्तान में स्थित कशमीर का एक प्रमुख नगर है। यह नगर लाहौर से लगभग साढ़े चार सौ किलोमीटर दूर है। सिकरदू की एक छोटी-सी पहाड़ी पर एक विशाल इमारत है। यह इमारत ही असल में गुरुद्वारा छोटा नानकिआणा के नाम से प्रसिद्ध है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी चीन की प्रचार-यात्रा के बाद इस नगर में पहुंचे थे। इस स्थान के लोग गुरु जी को नानक पीर कह कर पुकारते हैं। इमारत की हालत बहुत ही जर्जर है। प्रकाश-स्थान आलोप होता जा रहा है।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, बालाकोट

पाकिस्तान के जिला हजारा, तहसील मानसहिरां के गांव बालाकोट में श्री गुरु नानक देव जी, भाई बाला जी समेत कुछ समय के लिए अपनी प्रचार-यात्राओं के दौरान यहां पर ठहरे थे। गुरु साहिब की याद में यहां गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही सुशोभित है। इस गांव में दो चशमे हैं, एक गुरु नानक साहिब का और दूसरा भाई बाला जी का। दरबार के बरामदे में एक चशमा बाला पीर के नाम से प्रसिद्ध है। बाला पीर का थड़ा भी मौजूद है। यहां लोग आकर मुरादें मांगते हैं। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य द्वार के ऊपर उर्दू में दरबार सखी हयात अमर बाला पीर साहिब, बालाकोट लिखा हुआ है।

गुरुद्वारा नानकसर साहिब, तिलकपुर

पाकिस्तान के जिला सिआलकोट के एक गांव तिलकपुर में श्री गुरु नानक देव जी का ऐतिहासिक गुरुद्वारा नानकसर साहिब सुशोभित है। यह गुरुद्वारा साहिब सिआलकोट-चपराड़ मार्ग पर है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत की हालत बहुत जर्जर है, केवल कुछ दीवारें ही बची हैं। इस गुरुद्वारा साहिब को 'गुरुसर' के नाम से भी याद किया जाता था, जो अब केवल ऐतिहासिक पन्नों में ही एक यादगार बन कर रह गया है।

गुरुद्वारा बेर साहिब, सिआलकोट

सिआलकोट, पाकिस्तान का एक प्राचीन शहर है। इस शहर में गुरु नानक साहिब कई बार आए। जब गुरु साहिब यहां आए तो यहां के लोग हमजा गौस नाम के एक फकीर के गुस्से के कारण डरे हुए थे। उस समय गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी को दो पैसे देकर 'सच' और 'झूठ' की खरीद करने के लिए बाजार भेजा, जिसके जवाब में मूला नामक एक दुकानदार ने दो पैसों के बदले एक पर्ची पर 'जीवन झूठ है' और दूसरी पर 'मृत्यु सच है' लिख दिया। जब हमजा गौस ने यह पढ़ा तो उन्होंने सिआलकोट के लोगों को माफ कर दिया। यह गुरुद्वारा उस स्थान पर सुशोभित है जहां गुरु नानक साहिब विराजे थे। गुरु साहिब जिस बेरी के वृक्ष के नीचे बैठे थे वो आज भी मौजूद है और उस नगर को आज भी बाबा की बेर कहा जाता है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत बहुत सुंदर व भव्य है। बेरी का वृक्ष गुरुद्वारा साहिब के पीछे है। शहीद नत्था सिंघ का शहीदगंज भी गुरुद्वारा साहिब के बरामदे के भीतर है। नत्था सिंघ की आठ हजार की जागीर गुरुद्वारा साहिब के नाम लगी हुई है। गुरुद्वारा साहिब के नाम २५० एकड़ जमीन फैसलाबाद (लायलपुर) में भी है।

गुरुद्वारा बाउली साहिब, सिआलकोट

गुरुद्वारा बाउली साहिब, गुरुद्वारा बेर साहिब से २०० मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां मूले खत्री का घर था। यहीं पर मूला खत्री गुरु

साहिब का मुरीद होकर कशमीर और अफगानिस्तान गुरु साहिब के साथ गया था और यहीं गुरु साहिब ने *"नालि किराड़ा दोसती"* शबद का उचारण किया था। यहां एक बाउली भी है, जिसके नाम पर गुरुद्वारा साहिब को गुरुद्वारा बाउली साहिब, सिआलकोट कहा जाने लगा। जनाब इकबाल केसर के अनुसार अब इस इमारत में पाकिस्तान सरकार की ओर से अंधों के लिए स्कूल चल रहा है।

गुरुद्वारा नानकसर साहिब, साहोवाल

गुरुद्वारा नानकसर साहिब, पाकिस्तान के जिला सिआलकोट के गांव साहोवाल की पूर्व दिशा की तरफ कोई आधा किलोमीटर की दूरी पर सुशोभित है। गुरु नानक साहिब सिआलकोट से चल कर यहां आए थे। भाई काहन सिंघ नाभा के अनुसार इस स्थान पर गुरु जी ने सात दिन ठहर कर सिक्खी का प्रचार किया था।

गुरुद्वारा साहिब छोटा नानकिआणा, सिउदा

पाकिस्तान के जिला सिआलकोट और तहसील डसका का एक गांव सिउदा है। यहां जिस स्थान पर गुरु नानक साहिब पधारे वहां गुरु जी की पवित्र याद में गुरुद्वारा साहिब छोटा नानकिआणा स्थित है। गुरु नानक देव जी पूरे नामक सिक्ख की श्रद्धा व प्रेम से प्रभावित होकर पसरूर से ऐमनाबाद जाते हुए कुछ समय के लिए यहां ठहरे थे। ग्रामीणों की तरफ से गुरुद्वारा साहिब के नाम १६ एकड़ जमीन है। जब गुरु साहिब इस गांव आए थे उस समय गांव का नाम भारोवाल था। गुरु साहिब गांव से बाहर बेरियों के झुंड के पास ठहरे थे जो अब भी मौजूद है। जहां गुरु साहिब विराजे उस पवित्र स्थान पर गुरु साहिब की याद में ऐतिहासिक यादगारी स्थान सुशोभित था, जो अब आलोप हो गया है।

गुरुद्वारा पहिली पातशाही, मल्ला

गुरुद्वारा पहिली पातशाही, मल्ला पाकिस्तान के जिला नारोवाल में श्री गुरु नानक देव जी की आमद की याद में स्थित है। श्री गुरु नानक देव जी करतारपुर से सिआलकोट को जाते समय रास्ते में यहां एक बेरी के वृक्ष के नीचे विश्राम के लिए ठहरे थे। गुरु जी की चरण-स्पर्श प्राप्त इस पवित्र स्थान पर ग्रामीणों की तरफ से गुरुद्वारा साहिब की स्थापना की गई। महाराजा रणजीत सिंघ के खालसा राज्य के समय इस गुरुद्वारा साहिब के नाम ५० घुमां जमीन लगाई गई थी। जनाब इकबाल केसर के अनुसार जब उन्होंने स्थान की यात्रा की तो उसको गुरुद्वारा साहिब की कोई भी निशानी दिखाई नहीं दी। गुरुद्वारा साहिब की जमीन महिकमा मतरूका वक्फ बोर्ड के अधीन है।

गुरुद्वारा साहिब, दिउका (पसरूर)

यह गुरुद्वारा पाकिस्तान के जिला सिआलकोट के शहर पसरूर में दिउका नामक स्थान पर सुशोभित था जहां गुरु नानक साहिब सिआलकोट से आकर विराजमान हुए थे। इस स्थान पर गुरु साहिब को मुसलमान सूफी हजरत मीआं मिट्ठा जी मिले थे। गुरु जी और मीआं मिट्ठा जी के बीच विचार-विमर्श हुआ बताया जाता है। जिस स्थान पर विचार-विमर्श हुआ वह स्थान कोटला मीआं मिट्ठा के नाम से प्रसिद्ध था। गुरु जी की आमद के पश्चात इस स्थान पर जो गुरुद्वारा साहिब सुशोभित किया गया उसका नाम गुरुद्वारा साहिब, दिउका प्रसिद्ध है। जनाब इकबाल केसर के अनुसार इस गुरुद्वारा साहिब में पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता था, पर अब यह स्थान डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन है।

गुरुद्वारा गुरहटड़ी, पेशावर

पाकिस्तान के पुरातन शहर पेशावर में गुरुद्वारा गुरहटड़ी साहिब गुरु नानक साहिब की

प्रचार-यात्रा की याद में बना हुआ है। गुरु साहिब ने यहां सिध योगियों से विचार-विमर्श किया था। इस स्थान पर बाबा सिरीचंद जी भी आए थे। उनकी याद में धर्मशाला बाबा सिरीचंद जी भी गुरुद्वारा साहिब की इमारत के भीतर स्थित है। गुरुद्वारा गुरहटड़ी का अब केवल मुख्य द्वार ही बचा है। जनाब इकबाल केसर के अनुसार बाकी सारी इमारत को गिरा कर पाकिस्तान सरकार ने बच्चों के लिए स्कूल का निर्माण करवा दिया है। यह ऐतिहासिक स्थान पेशावर शहर के मोहल्ला गंज में है।

गुरुद्वारा पंजा साहिब, हसन अबदाल

पाकिस्तान के जिला अटक (कैंबलपुर) में हसन अबदाल में श्री गुरु नानक देव जी का ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा पंजा साहिब सुशोभित है। यहां गुरु साहिब अपनी एक प्रचार-यात्रा के दौरान अपने साथी भाई मरदाना जी के साथ मक्का और बगदाद से वापसी के समय ठहरे थे। यहां गुरु साहिब ने एक पहाड़ी के नीचे पीपल के वृक्ष की छाया में निवास किया था। उस पहाड़ी की चोटी पर उस समय वली कंधारी का निवास था। जन्म साखियों के अनुसार यहां पर गुरु जी ने वली कंधारी का अहंकार चकनाचूर किया था। इस ऐतिहासिक स्थान पर वह पत्थर व चशमा आज भी मौजूद है, जिसे गुरु साहिब का पवित्र स्पर्श प्राप्त है। वह पत्थर जो वली कंधारी ने गुरु जी की तरफ फेंका था, उस पर गुरु जी के हाथ की छाप आज भी देखी जा सकती है। इस समय गुरुद्वारा पंजा साहिब का प्रबंध पाकिस्तान के महिकमा औकाफ बोर्ड की तरफ से किया जाता है। यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है। साल में देश-विदेश से चार बार संगत यहां पर दर्शन-दीदार करने एकत्रित होती है।

गुरुद्वारा पहिली पातशाही, कटास : गुरुद्वारा पहिली पातशाही पाकिस्तान के जिला चक्कवाल में, जहां श्री गुरु नानक साहिब ने अपने मुबारक चरण डाले थे, वहां गुरु साहिब की आमद की याद में सुशोभित है। इस यादगार को लोग 'नानक निवास' कहते हैं। कहा जाता है कि यहां पर बहुत सारे ऋषियों, योगियों और मुनियों ने तप किया था, जिनके स्थान यहां पर बने हुए हैं। इन स्थानों को अलग-अलग करना कठिन कार्य है। यह भी कहा जाता है कि इस स्थान पर अबू रेहान अलबैरूनी ने धरती का घेरा नापा था। कटास हिंदुओं का प्रमुख धार्मिक स्थल भी है।

गुरुद्वारा साहिब बाल गुंदाई, टिल्ला जोगी

गुरुद्वारा साहिब बाल गुंदाई पाकिस्तान के जेहलम शहर से २४ किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा की ओर एक पहाड़ी पर स्थित है, जिसको लोग 'टिल्ला जोगीआं' कहते हैं। बताया जाता है कि श्री गुरु नानक साहिब यहां पर एक परउपकारी साधु बाल गुंदाई के आश्रम में पधारे थे। 'श्री गुर नानक प्रकाश' में भी इसका जिक्र आता है- 'बाल गुंदाई ढिग पुंन गए।' जिस स्थान पर गुरु नानक साहिब विराजे थे, वहां पर उनके चरण-कंवलों के पवित्र निशान एक पत्थर पर उकरे हुए हैं। इसके साथ ही एक सुंदर सरोवर भी है। गुरुद्वारा साहिब के नाम १५ एकड़ जमीन लगी हुई है।

गुरुद्वारा चौहा साहिब, रोहतास

रोहतास का ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा चौहा साहिब पाकिस्तान के जिला जेहलम में स्थित है। श्री गुरु नानक देव जी 'टिल्ला जोगीआं' से चल कर यहां आए थे। यहां श्री गुरु नानक देव जी ने एक चशमा प्रकट किया था जिसे चौहा साहिब के नाम से याद किया जाता है। गुरुद्वारा साहिब की इमारत का निर्माण सिक्ख राज्य के समय महाराजा रणजीत

सिंघ ने करवाया और २७ एकड़ जमीन जागीर के तौर पर गुरुद्वारा साहिब के नाम लगाई थी।

गुरुद्वारा नानकसर, डिंगा (गुजरात)

गुरुद्वारा नानकसर गुजरात (पाकिस्तान) के एक कसबे डिंगा में गुरु नानक साहिब की आमद की याद में सुशोभित था, जो अब आलोप हो चुका है। इस स्थान पर गुरु नानक साहिब ने एक योगी का अहंकार तोड़ा था। आज केवल गुरुद्वारा साहिब के सरोवर को पानी देने वाला कुआं ही यादगारी चिन्ह के तौर पर शेष बचा है।

गुरुद्वारा केर साहिब: गुरु नानक साहिब का ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा केर साहिब पाकिस्तान के जिला मंडी बहाउदीन के एक प्रसिद्ध नगर जैसुख वाला में स्थित है। गुरु साहिब गांव डिंगा से प्रस्थान कर यहां पहुंचे थे। गुरु साहिब ने यहां एक मुसलमान सूफी फकीर को परमात्मा के कार्यों में हस्तक्षेप न कर उसकी रजा में राजी रहने का उपदेश दिया था। सिक्ख राज्य के समय महाराजा रणजीत सिंघ ने इस गुरुद्वारा साहिब की इमारत का निर्माण करवाया और इस गुरुद्वारा साहिब के नाम चालीस मुरब्बे (१००० एकड़) जमीन लगाई।

गुरुद्वारा नानकसर साहिब, झंग

गुरुद्वारा नानकसर साहिब, पाकिस्तान के प्राचीन और प्रसिद्ध जिले झंग में स्थित है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी प्रचार-यात्रा के दौरान जिस स्थान पर ठहरे थे वहां उनकी यादगार के रूप में गुरुद्वारा साहिब की स्थापना की गई, जिसको आजकल गुरुद्वारा नानकसर साहिब कहा जाता है। जनाब इकबाल केसर के अनुसार इस समय गुरुद्वारा साहिब की इमारत में प्राइमरी स्कूल है।

गुरुद्वारा साहिब सच्ची मंजी पहिली पातशाही, हफ्तमदर : गुरुद्वारा सच्ची मंजी पहिली पातशाही पाकिस्तान के जिला शेखूपुरा और तहसील ननकाणा साहिब के गांव हफतमदर में स्थित है। यहां के एक जमींदार के पास गुरु नानक साहिब का यादगारी पलंघ था। गुरुद्वारा साहिब की इमारत आलोप हो चुकी है, केवल कुछ दीवारें ही शेष बची हैं।

गुरुद्वारा साहिब पहिली पातशाही, फतहि भिंडर

श्री गुरु नानक देव जी की एक ऐतिहासिक यादगार गुरुद्वारा पहिली पातशाही पाकिस्तान के जिला सिआलकोट में गांव फतहि भिंडर में स्थित है। गुरु साहिब सिआलकोट को जाते समय यहां ठहरे थे। गुरुद्वारा साहिब के नाम एक एकड़ जमीन लगी हुई है।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, करतारपुर (नारोवाल)

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब पाकिस्तान के जिला सिआलोकट में दरिया रावी के किनारे गांव करतारपुर में सुशोभित है। आजकल इस ऐतिहासिक स्थान को गुरुद्वारा करतारपुर साहिब, श्री दरबार साहिब, नारोवाल कहा जाता है। गुरु नानक साहिब ने अपनी सांसारिक यात्रा के अंतिम दो दशक अपने परिवार समेत यहीं गुजारे। इस स्थान पर ही भाई लहिणा जी (बाद में गुरु अंगद साहिब) ने गुरु नानक साहिब से शिक्षा ग्रहण की और इसी स्थान पर ही गुरु नानक देव जी ने उनको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इसी स्थान पर श्री गुरु नानक साहिब अपनी सांसारिक यात्रा संपूर्ण कर अलाही ज्योति में विलीन हो गए। यह गुरुद्वारा साहिब भारत-पाकिस्तान की सीमा से भी दिखाई पड़ता है। गुरुद्वारा साहिब के नाम सालाना जागीर के अलावा ७० एकड़ जमीन कई गांवों में मौजूद है। यहां पांच ऐतिहासिक यादगारें हैं: १. चोला साहिब २. बाबा सिरीचंद जी के विराजने का स्थान ३. टाहली (शीशम) के वृक्ष ४. डेरा साहिब (देहरा) ५. धर्मशाला गुरु नानक साहिब।

पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥

*-बीबी गुरमीत कौर**

परमात्मा ने मनुष्य को बहुत-सी वस्तुएं वरदान में दी हुई हैं, परंतु दुख की बात है कि आज का मनुष्य फिर भी परेशान है। स्वाभाविक ही प्रश्न उत्पन्न होता है, "क्यों?" इसका उत्तर यह है कि उसने अपनी आवश्यकताओं के अतिरिक्त बहुत बड़ी गिनती तथा मात्रा में अपने ऐश-ओ-आराम की वस्तुओं को एकत्र कर लेने की इच्छा धारण कर ली है तथा उसकी इनके प्रति लालसा बढ़ती ही जा रही है। दुनिया में वह जो कुछ भी देखता है तो चाहता है कि वो सब कुछ मेरे पास भी हो परंतु यह तो असंभव-सी बात है। मनुष्य के पास परमात्मा का दिया बहुत कुछ होता है, परंतु प्राय: वह उस सब कुछ के बारे में ख्याल ही नहीं करता। उसको उपयोग में लाये बगैर और जो उसके पास नहीं तथा जिसकी उसको आवश्यकता भी नहीं, उसको जैसे-कैसे भी काबू में कर लेने के लिए बेचैन है। समझने की बात यह है कि हरेक व्यक्ति के पास सब कुछ नहीं हो सकता। कई बार हम किसी धनवान व्यक्ति की तरफ देखकर सोचते हैं कि काश! हम भी ऐसे होते। परंतु नहीं! यदि ध्यान से उस व्यक्ति को देखें अथवा उसको पूछ कर देखें तो हमको ज्ञात होता है कि वह भी खुश नहीं है। गुरु नानक साहिब का कथन है :

नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ (पन्ना ९५४)

ऊपर संकेत की गई मानव-प्रकृति हमारे सुख, आनंद, चैन को खत्म किये जा रही है। इसके होते हुए हम परमात्मा अथवा कुदरत की ओर से दी गई अत्यंत मूल्यवान तथा उपयोगी वस्तुओं को न केवल भूले हुए हैं बल्कि उनके सदुपयोग के बारे में भी बेहद लापरवाही बरत रहे हैं। उनमें से एक अत्यंत मूल्यवान वस्तु है 'पानी'। पानी ही जीवन है। 'आसा की वार' में सूतक के भ्रम का निवारण करते हुए गुरु नानक साहिब ने कथन किया है कि घर-परिवार में बच्चे के पैदा होने से ओस-पड़ोस के लोगों को उस घर से दूरी बनाने का भ्रम छोड़ देना चाहिए, चूंकि गोबर और लकड़ी में भी कीट होता है, अन्न के दाने में भी जीव है। जिस भी वस्तु में पानी है वहां ही जीव है। पानी प्रथम जीव है। पानी से ही सभी हरे-भरे हैं अथवा जीवित हैं। अत: सृष्टि अथवा जीवन-रचना संबंधी यह तत्व-ज्ञान है जो हमारा सूतक का भ्रम दूर कर सकता है:

जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥
गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥
जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥
(पन्ना ४७२)

मैं स्वयं बचपन में पानी के प्रति इतनी संवेदनशील नहीं थी, परंतु पानी का क्या महत्व है अब मैं इसके बारे में बहुत अच्छी तरह जान चुकी हूं। अपने विवाह के बाद जब मैं अपने ससुराल चमकौर साहिब गई तब पता चला कि वहां पानी की किल्लत आ जाया करती है। पानी की तंगी का गहरा अहसास हुआ तो पानी के महत्व के बारे में बहुत महसूस भी हुआ। हमारे घर हाथ से चलाने वाला हैंड पम्प था। उसको हाथ से चलाने से हमको उपयोग करने के लिए पानी तो मिल जाता

**पत्नी स. हरपिंदर सिंघ, म. सं. ३००, वार्ड सं. ६, ग्रीन इन्क्लेव, मोरिंडा, जिला रोपड़-१४०१०१ (पंजाब)*

परंतु यह पानी परिश्रम से प्राप्त होने के कारण अधिक मूल्यवान महसूस होता था। अब मुझे अहसास हुआ कि मुझे पानी को आवश्यकता के अनुसार ही संयम के साथ उपयोग में लाना चाहिए। पानी को लापरवाही के साथ प्रयोग में लाना और अधिकतर व्यर्थ बहा देना गलत है। हम सबके घरों में जब टैंकी का पानी आता है तो हम अधिकतर उसे सही रूप में आवश्यकता अनुसार प्रयोग नहीं करते। स्नान करने लगें तो कई बार नल पहले ही चला देते हैं। नहाना अभी शुरू भी नहीं किया होता कि उससे पहले ही बहुत-सा पानी व्यर्थ बहा देते हैं। नहाते समय हम में से कितने लोग ऐसे हैं जो टब भर जाने पर पानी का प्रवाह रोक देते हैं? मेरे ख्याल में ऐसे लोग अभी भी बहुत कम संख्या में हैं वरन् अधिकतर लोग एक समय के स्नान में ही बहुत सारा कीमती पानी व्यर्थ गंवा देते हैं। कपड़े धोने या घर के फर्श की धुलाई के समय भी पानी का सदुपयोग करना अभी हमने कम ही सीखा है। रसोई का काम करते हुए और विशेषत: बर्तन धोते हुए बहुत कम स्त्रियां हैं जो संयम के साथ पानी का उपयोग करती हैं। ऐसा करते हुए नल को पूरी तरह घुमा दिया जाता है यानी फुल स्पीड पर छोड़ा जाता है जिसकी जरूरत नहीं होती। और तो और हम लोग वाश बेसन पर जब हाथ-मुंह धोते हैं तो न जाने कितना पानी व्यर्थ ही बहा देते हैं। पानी के बारे में मेरी चेतना बढ़ाने में मेरे सूझबूझ वाले और देश भर में काफी घूमे-फिरे मेरे जीवन-साथी का काफी हिस्सा है। वे मुझे देश में और पंजाब में पानी की वर्तमान स्थिति से गाहे-बगाहे अवगत कराते रहते हैं।

गुरबाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने पानी का महत्व बताते हुए जहां हवा को गुरु का दर्जा दिया है वहां पानी को पिता का, धरती को माता का दर्जा दिया गया है और दिन तथा रात सारे संसार को खेलाने वाले कहे हैं। जपु जी साहिब के अंतिम श्लोक में फरमाया है:

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
(पन्ना ८)

'सोच कर देखो कि क्या पानी के बिना जीवन संभव है?' उत्तर होगा, 'नहीं, बिल्कुल नहीं!' प्रात: उठ कर हमें जिस चीज की सर्वप्रथम आवश्यकता महसूस होने लगती है वह पानी है। स्वास्थ्य के बारे में चेतन्य लोग सर्वप्रथम पानी ही पीते हैं, जिससे पेट साफ रहता है। फिर पानी से ही दातुन या ब्रुश आदि करते हैं तथा फिर स्नान करते हैं। स्नान के समय जल मिल जाने से सचमुच परमेश्वर के मिलाप का अनुभव हो जाता है। शरीर पर जल का प्रथम स्पर्श मुंह से 'वाहिगुरु' कहलवा देता है।

मुंबई में रहते समय तो पानी की कीमत का बहुत ही अहसास हुआ, क्योंकि जिस दिन पानी नहीं आना होता था, एक दिन पहले ही घोषणा हो जाती थी कि कल पानी नहीं आयेगा। वहां सब लोग पानी को बहुत संयम के साथ प्रयोग में लाते हैं। वहां सबने प्लास्टिक या लोहे का ड्रम रखा होता है और पानी मात्र प्रात: १० से ११ बजे तक और कभी-कभी तो १०-१५ मिनट के लिए और कभी केवल ५ मिनट के लिए ही आता है। यदि उस समय किसी ने पानी भर लिया तो ठीक नहीं तो जो पानी भरने से रह जाता था उसको इतनी मुश्किल आती थी कि आगे से वह पानी भरने और संभालने के लिए सजग हो जाता था। पानी का महत्व हम सबको समझना ही होगा। पानी के बिना जीवन जीना किसी प्रकार संभव ही नहीं। सचमुच ही, यदि पानी न होता तो यह दुनिया, जो आज हमें रंग-रंगीली नजर आती है, वो ऐसी न होती! बल्कि इस दुनिया का अस्तित्व ही न होता!

ख़बरनामा

सिक्ख इतिहास वो जो सिक्ख विचारधारा के अनुसार लिखा हो

चंडीगढ़। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा चालित "सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट" द्वारा चंडीगढ़ स्थित कार्यालय में करवाई जाती मासिक लेक्चर लड़ी के अंतर्गत सितंबर माह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। "सिक्ख इतिहास के प्राचीन अहम स्रोत" विषय पर मुख्य वक्ता डॉ. गुरबचन सिंघ (नईयर) ने गुरमुखी, फारसी तथा अंग्रेजी के प्रमुख स्रोतों के बारे में जानकारी दी। मुख्य वक्ता ने बताया कि १८वीं सदी में अंग्रेजों ने सिक्ख इतिहास के प्रति बहुत दिलचस्पी दिखाई और इस्लामिक लेखकों ने १९वीं सदी में रिवायती मगर तत्वपूर्वक इतिहास दृष्टिमान किया। फारसी लेखकों का ज्यादा ध्यान बाबा बंदा सिंघ बहादर पर केंद्रित रहा। उन्होंने कहा कि सिक्ख रिवायतों को बिना दलील रद्द नहीं किया जा सकता। ऐतिहासिक लिखतें अतीत को जिंदा रखती हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' बहुत अहम स्रोत है, बशर्ते इसमें से घुसपैठ कर चुकी बातों को निकाल दिया जाए। कार्यक्रय की आरंभता में श्रोतागण का स्वागत करते हुए प्रोजेक्ट प्रभारी डॉ. किरपाल सिंघ (चंडीगढ़) ने कहा कि सिक्ख रिवायतें लिखित रूप में आम तौर पर परिपक्व हैं। इन्हें सिक्ख इतिहास का मूल स्रोत माना जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिक्ख इतिहास के मूल स्रोत फारसी व पंजाबी में हैं, इसलिए फारसी स्रोतों का गुरमुखी व अन्य भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए। मुख्य मेहमान के तौर पर पहुंचे ज्ञानी जोगिंदर सिंघ, भूतपूर्व जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब ने अपने भाषण में बताया कि हमारे पास अभी तक पूर्ण शुद्ध ऐतिहासिक पुस्तक (स्रोत) नहीं है जो गुरमति की कसौटी पर खरा उतरता हो। मिश्रित हो चुके इतिहास में से सच को निकालना आवश्यक हो गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भाई अशोक सिंघ बागड़ीआ ने कहा कि सिक्ख सिद्धांतों की व्याख्या सनातनी सोच के अनुसार हो रही है। सिक्खी सिद्धांतों में बदला लेने की भावना को कहीं भी स्थान नहीं है। सिक्ख इतिहास को सिक्खी विचारधारा तथा सिक्खी नियमों के अनुसार लिखा जाए। कार्यक्रम में धर्म प्रचार कमेटी के अपर सचिव स. हरजीत सिंघ के अलावा संपादना प्रोजेक्ट कार्यालय में कार्यरत रीसर्च स्कालर तथा अन्य गणमान्य विद्वान श्रेणी के लोग उपस्थित थे।

जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा बीबी लखबीर कौर (ढिल्लों) का सम्मान

अमृतसर। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने ८ अक्तूबर को श्री हरिमंदर साहिब के सूचना केंद्र में इग्लैंड निवासी बीबी लखबीर कौर (ढिल्लों) को उनकी पंथ प्रति सेवायों के बदले चांदी की तश्तरी तथा सिरोपा देकर सम्मानित किया। बीबी लखबीर कौर श्री हरिमंदर साहिब में बड़ी श्रद्धा-भावना से उच्च स्तर के साऊंड सिस्टम की सेवा के अलावा अलग-अलग शताब्दी समारोहों में शमूलियत करके शिरोमणि कमेटी को भरपूर सहयोग देती रही हैं। स्वास्थ्य ठीक न होने के बावजूद भी वे परिवार सहित श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश-पर्व के समारोह में शामिल होने पहुंचीं। उन्होंने मानवता की सेवा को ध्यान में रखते हुए आंखों के रोगों के इलाज के लिए आधुनिक किस्म की ८ लाख रुपए की मशीन भेंट की है। यह मशीन श्री गुरु रामदास चेटीटेबल अस्पताल, श्री अमृतसर को सौंप दी गई।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-११-२०१०